Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HINDI PRADEEP 1906

G.K.V.
LIB.
HARDWAR

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
078019
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078012

STOCK VERIFICATION 2024
LIBRARY, GKDU, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २८ सं० १ } प्रयाग { जनवरी सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।-) —०*०— पीछे देने से ४।-)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक सं० हि० प्रदीप
आगत सं० [illegible]
तिथि० [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक सं०..........
आगत सं०..........
तिथि०..........
गुरुकुल ग्रन्थालय काँ...
078042
HL
Hindi Pradeep
1906
G.K.V.
Lib.
HARDWAR

हि

जि० २८
सं० १

प्र ... ई०

धर्म समा...

आज हम अपना नया ... करते हैं-बुढ़ाई में अंग प्रत्यंग ... धर्म और परलोक की ओर बहु... बहुत ख्याल दौड़ता है-जब तक हट्टे कट्टे रहे ऊंचे से ऊंचे हौसिले और उमंग के वेलून पर सवार जोश खरोश के आसमान में झोंका खाते उड़ा किये-दिमाग में यही समाया हुआ था कि मुशकिल से मुशकिल आसान है-क्या कोई ऐसे भी कठिन काम हैं जो यत्न साध्य न हों-कहो एक ही बार के पादप्रहार से पाताल का पानी काढ़ लें; धस कर अथाह समुद्र की थाह लावें; पर्वत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज हिमालय को चूर २ बुकनी सा बना दें; सूर्यमण्डल की कई करोड़ और कई मिलियन मील की दूरी पर पल भर में पखेरू सा हो पहुंच जांय; "किंदूरंव्यवसायिनाम्"-किन्तु ५० के ऊपर नांघते ही नस २ ढीली पड़ने लगी; पहले का सब जोश खरोश विदा हो न जानिये कहां जा छिपा; धीरे २ शान्ति के सोपान पर पांव रखने लगे "धातुषु क्षीयमाणेषु शमः कस्य न जायते"—अब धर्म और परलोक की ओर ध्यान जमने लगा—पर चिरकाल के अभ्यास से बासना तो मन में कुछ और ही तरह की समाई है निरा परकाल का साधन ऐसे धर्म को धर्म मानना पसन्द न आया उसके साथ यह एक पख लगी रहनी चाहिये कि धर्म समाज का एक अंग है जिसके आचरण से समाज का कुछ सम्बन्ध न हुआ वह रूखा धर्म किस काम का वरन वह धर्मही न कहा जायगा—और वह जिसके अनुसार चलने से समाज जर्जरित छिन्न भिन्न और क्षतिग्रस्त होती जाती है उसे तो धर्म कहेंहींगे नही वरन वह प्रत्यक्ष में महाअधर्म पाप और अनिष्ट है-प्रत्यक्ष इसे इसलिये कहते हैं कि बहुत से धर्म या अधर्म ऐसे हैं जिनका परिणाम स्वर्ग या नरक परोक्ष है-इस जीव लोक संसार से सिधार जाने पर उसका फल हमें मिलता है किन्तु अधर्म के रूप में बहुतेरे धर्म का फल तो "इस हाथ दे उस हाथ ले" की भांति सद्यः और तत्काल मिल रहा है-जैसा आठ नौ या दस वर्ष की कन्या का बिवाह खान पान में पराकाष्ठा की छिलावट कुपात्र में दान की श्रद्धा आदि-कन्या ८ वर्ष की हो गई ऐसा न हो कि रजोदर्शन हो पड़े तो सात पुरखे नरक में जा गिरें उधर कुलीनता का ख्याल सोंटा लिये पीछा कर रहा है-बाप मा जेठे भाई चाचा ताऊ सब के सब व्यग्र हैं खाई रोटी नहीं पचती अपनी ही जाति या फिरके में हाड़ मांस का पुतला भी कोई मिल जाय तो लड़की का हाथ पीला कर कुअरगंर किसी तरह उतार सुचित्त हों धर्म जो जी छोड़ भागा जा रहा है उसे किसी तरह क़ैद कर लें-धर्मशास्त्रों में जो २ बातें उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्त बर के खोज करने की लिखी हैं जैसा स्नातक हो मृदु शान्त दान्त युवा बलवीर्य संपन्न पूर्ण विद्वान् आदि एक भी काम में न लाई गई देव कन्या सदृश रूपवती अनेक गुणों की खान बालिका एक ऐसे निर्गुणी उजड्ड मूर्ख महाराक्षस को देदी गई कि यावज्जीव उस बेचारी को सुख सपने के से ख्याल हो गये—आजन्म वे दोनों दुखी दंपति UNHAPPY PHIR रहे—जिन्हें कुल पुत्र होना चाहिये था वे आवारों के सिरताज हुये—अस्तु उन दोनों का दाम्पत्य भाव तो बिगड़ा ही आगे को कोई भलाई की सूरत पैदा होती सो भी नहीं—उनसे औलाद जो पैदा हुई वह सब भांति निःसत्व और वही क्रम उसका भी रहा—जहां समाज की समाज इस ढंग की है उस देश की अधोगति DOOMED दैवोपहत है—कहिये कैसी अच्छी धर्म की रक्षा हुई ॥

आगे चलिये विद्या और चरित्र दो कुलीनता की कसौटी हैं यहां दोनों की कहीं चर्चा भी नहीं हम कैसेही सच्चरित्र और प्रज्ञावान् हैं किन्तु पंक्ति में हमारा सहभोजन नहीं है कदाचित् हो जाय तो डर है नरक में ढकेले जांयगे - और आगे बढ़ने के पहिले हम अपने पढ़नेवालों को सूचित कर दिया चाहते हैं कि सहभोजन से हमारा प्रयोजन सर्व भक्षी हुताशः बन जाने से नहीं है न यही कि "सबै भूमि गोपाल की यामें अटक रहा--जाके मन में अटक है सोई अटक रहा"—वरन ईर्षा या कोई पुराना बैर को मूल में रख जो लोग अपनी ही बिरादरी या जाति वालों के साथ बैठ सहभोजन में धर्म की हानि मानते हैं उनके प्रति हमारा यह उद्देश्य है--अपनी ही जाति वालों के साथ सहभोजन को हम यहां तक पुष्ट करते हैं और धर्म शास्त्र द्वारा सिद्ध कर दे सक्ते हैं कि जाति का हिन्दू शूद्र भी कहार अहीर इत्यादि के हाथ का बनाया या छुआ खा लेने में किसी तरह धर्म की हानि नहीं है पर हां उच्छिष्ट या जूठा न हो--इस समय विलाइत अमेरिका जापान जाने का प्रश्न सब ओर गूंज रहा है हमारे नवयुवक फड़क रहे हैं कि कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहाना समाज से विदेशों में जाने का उन्हें मिल जाय और वे अपने मन की कर गुज़रें किन्तु याद रहे आत्मत्याग SELF SACRIFICE को आगे रख शुद्ध देश सेवा के प्रयोजन से विदेशों में जाय और शूद्र के हाथ का पक्का या कच्चा भोजन करता रहे पीछे यहां आय प्रायश्चित्त कर फिर उस आचरण को छोड़ दे तो किसी तरह उसके धर्म में हानि न कही जायगी--सो तो नहीं वरन केवल ६ महीने विलाइत में रहे और पल्ले दरजे के आज़ाद बन घोर पियक्कड़ होने का अभ्यास वहां डालते रहे चलते समय एक मेम से गंठबन्धन कर यहां आय साहब बन बैठे--छोटी हाज़िरी और बड़ी हाज़िरी में कांटा चम्मच और अण्डों के विना कौर नहीं उठाते हम लोगों को असभ्य अर्द्धशिक्षित कहने लगते हैं अपने साहबपन के जोश में हम लोगों से घिनाने लगे ऐसे साहब बहादुर का मुंह फूंक हम उन्हें काली के खप्पर में न झोंक दें॥

याद रहे ऐसे सहभोजन के हम पोषक नहीं हैं किन्तु आठ कनौजिया नौ चूल्हा अलबत्ता चाहते हैं कि न रहै॥

अब दान का प्रकरण लें तो हमारे धर्मशील दानी असंख्य धन प्रति वर्ष और प्रति मास दान करते हैं पर वह दान किन्हें दिया जाता है जिन का एक पैसा कभी किसी भले काम में नहीं उठता वरन ऐसे २ उन्माद और अत्याचार के काम उनसे बन पड़ते हैं जिन्हें देख यही मन में आता है कि अवश्यमेव हम पर कोई ईश्वरीय कोप है नहीं तो कोढ़ के रूप ऐसे लोग हमारी समाज में क्यों पैदा होते--तो निश्चय हुआ कि उन २ बुराइयों के कराने वाले वेही दानी हैं जो उन्हें दान देते हैं धर्म बुद्धि से तो दान देते हैं पर परिणाम उसका महा अधर्म होता है--तो यह सिद्ध हुआ कि धर्म वही जो समाज के लिये हित हो या जिसके अनुष्ठान अथवा जिसके अनुसार चलने से समाज सुधरती हो समाज के लोगों का कल्याण हो--किन्तु अन्धी समाज में गतानुगतिक के क्रम पर चलना ही धर्म है–विदेशी चीनी के साथ मनो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाड़ खा गये विदेश की बनी बस्तु प्रतिक्षण काम में लाते हैं हमारे धर्मधुरन्धरों का कभी इसपर ध्यान न गया कि देश का धन बिलाइत में ढोया चला जा रहा है देश दरिद्र होता जाता है कितना भारी पाप हम कर रहे हैं--इस पाप से बचैं पर पोथियों में नहीं लिख दिया गया किसी का ध्यान इस पर नहीं जाता कि यह हम अधर्म कर रहे हैं--"धर्मस्य सूक्ष्मा गतिः" इसका यही तात्पर्य है कि हम अपनी विचार दृष्टि को काम में लाय सोचैं कि देश की बनी बस्तु को न काम में ला कितना अधर्म हम कर रहे हैं--सब से बड़ा धर्म्म देश में कौमीयत पैदा कर देना है जिस काम के करने से "नेशनालिटी" हमारे में आवे हमको अपने स्वत्व रक्षा का ज्ञान हो वही मुख्य धर्म है सो नहीं है इसकी बड़ी त्रुटि हमारे में है ॥

युबराज स्वागत ।

स्वागत प्रमुदित चित्त लखहु यह सुन्दर जोरी ।
चिरजीवहु प्रिय अहो वर्ष बहु लाख करोरी ॥
धन्य हमारो भाग धन्य तुव दर्शन पाये ।
हर्षित कहि यहि भांत प्रजागन तुव ढिग धाये ॥ १ ॥
किन्तु कष्ट युबरानिहि हित कछु भेट न पायो ।
युबराजहिं सन्तोष काज तिनपै न लखायो ॥
तबहि संकुचि इमि करत सोक दुख गिरा उचारी ।
फटी जात छाती भारत तुव दशा निहारी ॥ २ ॥
हाय कहां तव धन वैभव विद्या गुनखानी ।
विजय बैजयन्ती जासु रही चहुं दिशि फहरानी ॥
सोइ भारत जहां आज रही कौड़िहु नहिं कानी ।
कासों कहैं पुकारि सुनत आरत यह बानी ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां रतन मनिखान रहे जो इतै न थोरे ।
बचे न एकौ कहूं विदित जो बीरबांकुरे ॥
चांदी सोनो सबहि उलटि कांचहि पलटायो ।
हाय महादुर्भाग्य अबै भारत को आयो ॥ ४ ॥
अधिक कहैं अब कहा बच्यो नाहीं कछु बुधिबल ।
जब भारत कहं मिलति नांहि मुट्ठी इक चावल ॥
पेट भरन के काज करत हैं कोटिन छल बल ।
ताहू पै नहिं चलत रहत हैं नित चित चंचल ॥ ५ ॥
चार बरन को देश अहै यह जग विख्याती ।
ब्राह्मन छत्री वैश्य शूद्र यह चारो जाती ॥
तिनमें एकौ रही नाहिं निज निज करतूती ।
डूबो आरज झुंड सुनत यह सालत छाती ॥ ६ ॥
ब्राह्मन गन निज पंथ छांड़ि दूसर अनुसरहीं ।
वेद न पढ़हिं पढ़ावहिं निज मन मारग धरहीं ॥
भये अहंकारी क्रोधी अरु वेद विरोधी ।
रहयो न तिन महं सत्व कछुक अति भये अबोधी ॥ ७ ॥
बल विद्या नसि गई पराक्रम तनिक न बांचो ।
ब्राह्मण नाम भरत माता कहं डूबत सांचो ॥
छत्रिनहूं महं नाहिं कोऊ जो तुव ढिग आवै ।
अर्जुन भीषम भीम तुल्य रण विद्या दिखरावै ॥ ८ ॥
वीर्यहीन सब भये दुराचारी अरु लंपट ।
करैं न रक्षा धर्म प्रजा बहु पावत संकट ॥
वैश्यगनन ह्वै लोभ ग्रस्त इक पाइहु नहिं देहीं ।
कल बल छल करि सदा अन्य धनहूं लैलेहीं ॥ ९ ॥
कहुं जो खेती करत हाय बरसत नहिं पानी ।
सकत बीजहूं फिरन नाहिं होवत अति हानी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूद्रन की का दशा भये जब सबै भिखारी ।
भिक्षाहू नहिं मिलत हाय दुख पावत भारी ॥ १० ॥
भये अनेकन चोर शोर जो घोर मचावहिं ।
महाराज युबराज आज का तुव दिखरावहिं ॥
कलुक न यद्यपि रह्यो पास हे हे सुखरासी ।
राज भक्ति की भेंट देत तुव भारतबासी ॥ ११ ॥
प्रमुदित देत असीस मोद युत कहि इमिबानी ।
चिरजीवहु युबराज हमारी प्रिय युबरानी ॥
बिनय यही जगदीश ईश जग आरत त्राता ।
जोरी रहै अनन्त काललौं बनी बिधाता ॥ १२ ॥

लोचन प्रसाद पाण्डेय,

रायपूर ।

हमारी झिनगही खाट के मोटेमल खटमल की रिपोर्ट

पाठक! यह तो कदाचित् आप जानते होंगे कि कभी २ गुदड़ी में भी लाल मिल जाते हैं—आज कल जाड़े की सनसनाती रात में सी सी करते हुये जहां लिहाफ के भीतर धंसने का समय मिला तो आप अनुभव कर सक्ते हैं कि उस सुख के आगे ब्रह्मानन्द क्या बस्तु है? ऐसे समय चित्थड़ गुद्दड़ से भरी लिहाफ के भीतर मस्त पड़े रहो और उस समय आप का कोई कठिन से कठिन भी काम आपड़े तो कदाचित् ही आप इच्छा पूर्वक उठ सकेंगे--गहरी नींद में पड़े हुये हैं और जो कहीं पेशाब की हाजत मालूम पड़ी तो उस समय उठना मानो लङ्का की मुहिम फतह करना है--ऐसे समय कहीं से खटमल जी आप के बगलगीर हो तुम से बात चीत करने को सतावें तो तुम्हें क्या न अखरैगा—पाठक यही हाल मेरा हुआ—झिनगों से सिढ़ी खाट में फटी सी रज़ाई के भीतर पड़ा हुआ ब्रह्मानन्द का सहोदर गाढ़ी नींद के सुख का अनुभव कर रहा था कि पीठ के बगल में एकबारगी जलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने लगी--नींद उचट गई और खुजलाहट शुरू हुई--थोड़ी देर में खुजली बन्द हो गई फिर नींद लेने लगे तो पैर में जलन शुरू हुई तबियत बड़ी झुंझलाई दिया लेकर देखा तो एक मोटेमल से खटमल बहादुर नज़र पड़े--मेरे बदन का लहू चूस बतौड़ी सा फूल उठे थे--मैंने उन्हें चुटकियों से थांबना चाहा तो छिटक कर दूर हुये--खैर ज्यों त्यों मैंने उन्हें गिरफतार किया तब वे अजीब स्वर से नाक के बल बोले--मुझे और भी अचरज हुआ कि यह कैसा यह तो हम लोगों की सी बोली बोलता है--पूछा भाई तुम कौन हो कहां से आ रहे हो?

तब आदमी का चोला धर उसने अपना हाल यों कह सुनाया--मैं कलकत्ते का एक माड़वारी हूं विलाइती कपड़ों को बेंच मैंने अज़हद्द मुनाफा कमाया इसी पाप से खटमल कर दिया गया--जब मैंने बहुत सी प्रार्थना किया और शपथ किया कि आगे से ऐसा न करूंगा तब मुझसे कहा गया कि तुम्हें अपनी जाति का स्मरण रहेगा और जब तुम्हारे सम्बन्ध में हिन्दीप्रदीप में कुछ लिखा जायगा तब तुम इस खटमल की योनि से उद्धार पाओगे सो आपने बड़ी कृपा की मैं आप का बड़ा कृतज्ञ हूं--आपने पूछा कहां से आ रहे हो--सो मैं इस समय बड़ी २ दूर सैर करने के बाद पहले समालोचक की आलमारी में पहुंचा फिर प्रयाग के राघवेन्द्र के बस्ते में थोड़ी देर ठहर वहां से रेंगता हुआ आप के शरण में आया हूं॥

मैंने उससे फिर पूछा जहां २ गये वहां २ आपने क्या देखा और क्या पाया?

यह बोला समालोचक के आलमारी में मुझे बहुत सी अनोखी चीज़ें देख पड़ीं पर दो बात सब से अधिक थी एक तो यह कि आलमारी भर में यत्र तत्र सर्वत्र की भरमार थी दूसरे भट्ट के लेख में भटपने की खोज--ऐसाही राघवेन्द्र के बस्ते में भी बहुत से अद्भुत पदार्थ देखे गये जिनमें सब से अधिक यह था कि उनके कपोल कल्पित धर्म के के सिद्धान्तों का विरोध जिसमें हो वह चाहो अथाह गुणों की गरिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भरा पुरा हो पर उनके बिरुद्ध हुआ तो वह किसी काम का नहीं इस तरह के उनके सिद्धान्त की कई एक बातें हैं जिन में दत्त कृत इतिहास भी है । कुछ और भी कहा चाहता था कि चार जन जिनकी भव्य मूर्ति और दीप्यमान् आकार से बोध होता था कि ये कोई देव योनि हैं आ उपस्थित हुये और बोले । "तुम ने अपने पापों से छुटकारा पाया एडिटर महाशय को प्रणाम करो यह विमान तैयार है सिधारो"—उन चारों की आज्ञा पाय प्रणाम कर यह चंपत हुआ ॥

M. P. BHATTA

बन्दे मातरम् का पद्यात्मक छाया अनुवाद ।

बन्दौं मात तुम्हैं ।
स्वच्छ मधुर जल भरे जलाशय, हरियाली लह लहात ।
चांद उजास छिटिक चहुं ओरा, कुसुमित कानन अधिक सोहात ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।
मलयज रज मकरन्द बहाये, उपबन वीथिन बहत बयार ।
सुखदाता बरदाता अम्बे, करण रसायन शबद तुम्हार ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।
तीस करोर मनुज सुनि कलकल, दुखित दशा महँ तिनहि निहार ।
गहि कर बाल दुहू कर माता, करन चहो तिन कर उद्धार ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।
रिपु दल घालक तव विशाल भुज, कहत तोहि कत सब जग अबला ।
संपद सुख जब तुव अधीन तब, क्यों न कहैं तुहि प्रबला ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।
निगम अगम विद्या सब हमरी, आरज धरम हमारो ।
विभव वित्त धन धान्य सबहि महँ, निज महिमा विस्तारो ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहहि प्रान, हृदय महँ भक्ती, बाहु दुहुन महँ शक्ती ।
सब मे व्याप रही हौ जननी, अदभुत तुव करतूती ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।
दुर्गा सब दुर्गति की हरनी, दशभुज आयुध धरनी ।
घर घर प्रतिमा लसत तुम्हारी, तब क्यों न होहु मन हरनी ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।
कमला कमल बिहारिनि माता, बिमल अतुल तुव भासा ।
सुस्मित गात सरल चित ह्वैके, करहु कृपा निज दासा ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।
सुफल मनोरथ ते जन होवहिं, जे बिनवैं तुहि धरनी ।
पोषन भरन सबहिं तव करगत, किमि चुकवौं तुव करनी ॥
बन्दौं मात तुम्हैं ।

—:o:—

चीनी ।

अंगरेज़ी में चीनी को शुगर कहते हैं जो शर्करा से निकला शर्करा से फारसी शब्द शक्कर हुआ शक्कर से शुगर बना । रसायन वि जानने वाले इसे कारबन हैड्रोजिन और आक्सीजिन का मेल बतला हैं । ये तीनो रसायनिक पदार्थ स्वाद में मधुर और जल में पि जाने वाले पदार्थ हैं । चीनी बहुधा बनस्पतियोंही में पाई जाती और ऊख तथा Beet root (चोकन्दर) से जो चीनी निकलती आदमियों के खान पान में वही लाई जाती है । हिन्दुस्तान में चीन बहुत प्राचीन समय से प्रचलित है बल्कि इसकी उत्पत्ति यहीं से हु है । चीन वालों ने चीनी का उपयोग पहले पहल यहीं से सीखा है इसाइयों की धर्म पुस्तक के उस भाग में जिसे Old Testament (पुरान इंजील) कहते हैं उसमें मिठाई के बारे में Calamus (केलेमस) लिखा शायद उसका इशारा इसी चीनी ही से है । यूनान के प्रसिद्ध इतिह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक और दार्शनिक हिराडटस और प्लइनी लिखते हैं कि सरकिंडे से एक प्रकार का शहद निकाला जाता है जो रंग का सुफेद और गोंद सा होता है। ऐसा जाना जाता है कि इटली देश के प्राचीन नगर वीनिस में ९९० ईसवी में चीनी वहां अन्य देशों से आई। बारहवीं शताब्दी में यूरोप के उत्तरीय भागों में चीनी सिसिली और ईजिप्ट के देशों से आती थी किन्तु बहुत थोड़ी मात्रा में। स्पेन के मुसलमान मुअर्स लोग ऊख ईजिप्ट से स्पेन में लाये और स्पेन वालों ने चीनी को काम में लाना उन्ही मुअर्स लोगों से सीखा। स्पेन वालों ने ऊख का प्रचार पन्द्रहवीं शताब्दी में केनरी के टापुओं में किया और पोर्चुगुल वालों ने मदीरा में ये दोनो टापू अमरिका के समीप हैं। इन टापुओं से चीनी का प्रचार अमरिका के ब्रेज़िल और वेस्टइंडीज़ आदि कई देशों में किया गया। हाकिन नाम का एक अंगरेज़ १५६० ई० में पहले पहल चीनी इंगलेण्ड में वेस्ट इण्डीज़ से लाया। पर १९वीं शताब्दी के पहले तक ग्रेट ब्रिटेन के समस्त टापुओं में चीनी का काम में लाना जारी नहीं हुआ था। ऊख जिस से चीनी निकलती है ८ से २० फुट की लम्बाई तक उगती है। और पत्तियां ५ या ६ फुट तक लम्बी होती हैं। चोकन्दर शलजम या प्याज़ के किसम का सुफेद रंग का गांठदार होता है। और शकरकन्द की तरह यह भी धरती के नीचे२ फैलता है। यह जरमनी, फ्रांस, हालेण्ड, बिलजियम, आस्ट्रेलिया आदि कई देशों में बहुतायत से उपजता है और जरमनी में तो इसकी खेती बहुतही अधिक की जाती है। जरमनी से उतर कर फ्रान्स और वेलजियम में इसकी खेती की जाती है। ऊख की तरह इसे भी कल में धर पेरते हैं इसके रस बड़े २ कड़ाहों में उबाल जानवरों की हड्डी के कोइले से साफ करते हैं। मिठास इस चीनी की उतनी नहीं होती जितनी ऊख की चीनी की होती है। जरमनी और अमेरिका के कनडा टापू में एक प्रकार की चीनी अंगूर के रस से बनाई जाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे बैल के रुधिर से साफ करते हैं। इस समय जरमनी की बनी चोकन्दर वाली चीनी इतना चल पड़ी है कि जो ऐसा ही हम लोगों की शिथिलता उसका प्रचार बन्द करने में बनी रही तो कदाचित ऊख वाली चीनी बिलकुल उठ जायगी और धीरे २ ऊख की खेती भी बन्द हो जाय तो क्या अचरज। हम लोगों की शिथिलता और विदेशियों के परिश्रम और मुस्तैदी का परिणाम यहां तक देखा जाता है कि चीनी जो आदि में केवल हिन्दुस्तान की पैदावार थी वह दुनिया के प्रायः समस्त देशों में फैल गई और वे लोग निज परिश्रम के बल हम से आगे बढ़ गये। जितनी चीनी जरमनी आदि देशों में पैदा होती है और दूसरे २ देशों में भेजी जाती है उतनी यहां नहीं अपनी हड़ही चीनी हमे दै चपत मार हम से रुपया छीने लेते हैं और उस चीनी को काम में ला हम पतित और धर्म च्युत होते जाते हैं सो अलग पर कोई इसका खयाल नहीं करता लाचारी है॥

——:o:——

सोशल कानफेरन्स हम क्यों नहीं चाहते।

अब तो इसका समारोह काशी में होही गया हम लोगों ने बहु कुछ लिखा पढ़ा उसका कोई असर न हुआ हो कैसे! प्रवाह जो ब निकला उसे रोक देना किसकी सामर्थि है। किन्तु हमे हर्ष इस बा का है कि सिवाय दो एक के सहयोगियों में सबी हम से सहमत रहे हम तो प्रारंभही से इसका प्रतिबाद करते आये हैं नागपूर की कान ग्रेस में तिलक महाशय ने बड़े ज़ोर के साथ इसका प्रतिबाद किया मरहट्टा केम्प में रात भर चांव २ होती रही। पूना में कानफेरेन्स पण्डाल अलग रचा गया कानग्रेस के पण्डाल में इसका जलसा न होने पाया। पारसाल बाम्बे के कानग्रेस में गइकवार की महा न स्पीच सुन कौन हिन्दू सन्तान होगा जो "आर्थौडाक्स" कुलीनता दम भरता हुआ इसका अनुमोदन करेगा। कानफेरेन्स के प्रवर्तक श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमोदन करनेवाले प्रायः वेही हैं जो कुलीनता की प्रथा को खो बैठे हैं और दल या समूह से निकासे हुये हैं जिन्हो ने अपनी नाक कटा डाला है तो वे चाहते हैं कि किसी के नाक रही न जाय। वे चाहते हैं कि हम उछल कर सब नांघ डांक स्वर्ग द्वार पर पहुंच इन्द्र महाराज के सिंहासन पर जा बैठें । यूरोप के देशों ने कई सौ बर्ष के उपरान्त जो तरक्की किया उसे हम दोही चार बर्ष इसी तरह कानफेरेन्स का जलसा कर पा जांय । दूसरे यह कि उनका मानसिक भाव ऐसा मालूम होता है कि हमारे में मुलकी जोश और कौमीयत की ताकत आ जाय इसकी कोई आवश्यकता नहीं है कि हमारे में यह अभिमान बाकी रहे कि हम आर्य जाति हैं हम उन महात्मा ऋषियों के सन्तान हैं और हमारी वह श्रेष्ट जाति है जिसमें चार बर्ण की प्रथा है । हम कहते हैं सो हमारा रूपान्तर हो गया अपने रूप को भूल गये तब हम ने तरक्की ही किया तो क्या । बरन अपने रूप में रह कर जब तरक्की करैं तो उसे तरक्की करना कहैंगे । आर्यावर्त संपादक ने बेतरह हम पर हाथ फेरा है पर वे कदाचित् हमारे भाव को भली भांत समझे नहीं । न हम को इसका खेद है कि हम से उनकी राय मिलती नहीं । उस उतने भाग को उन्हो ने बहुत पल्लवित किया जिसमे हमने काशी के पण्डितों को उत्तेजना दी है । किया चाहैं वह तो उन्हे अभीष्ट ही है अपने रूप के प्रकाश करने में उन्होंने कहीं से कोई कोर कसर न रख छोड़ा । अब हम पूछते हैं हमारे पुराने क्रम बालों मे क्या कोई भलाई हई नहीं? महा अत्याचरण करनेबाले आप के नये क्रम बालों से भी गये बीते हैं । जैसा नये क्रम मे दो एक बड़े विद्वान् वक्ता सुसंयमी और सच्चरित्र हैं और वेही दो एक उनके दल के अगुआ Leader बन रहे हैं उनके ग़ैल में ऐसे २ नार्किक हैं जिनका मुख देखने का पाप है । वैसांही पुराने क्रम में भी दो एक क्या दस पांच ऐसे पवित्र चरित्र बाले निकल आवेंगे जो विद्या और चरित्र में ऋषि तुल्य हैं । इनके ग़ैल बाले उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नार्किकों से फिर भी कितनी बातों में अच्छे होंगे केवल इतनीही कमी है कि वे अपढ़ हैं। यह न समझिये कि ये पुराने क्रम वालों के अगुआ संशोधन की सामयिक बातों को समझते नहीं किन्तु वे बेचारे निष्किंचन हैं न किसी उच्च पद पर हैं हिम्मत और सामयिक शिक्षा भी उनमें नहीं है इस्से आप लोगों के सब ओर के आक्रमण से अपने संकुचित दल को जिस्में प्रति दिन घाटा होता जाता है बचाये रखना यही उनकी पालिसी है। आप लोग विद्या विविध विज्ञान राजकीय शिक्षा उच्च पद प्रतिष्ठा और धन सब में बढ़े हो तो सब कुछ कर सकते हो। यही चाहते हो कि पुराने क्रम वाले उच्छिन्न हो जांय प्रति वर्ष कान्फरेन्स कर गोले चला रहे हो उन्हें हर तरह बनाते हो जैसा तुम्हें भावै करते रहो। तुम अपनी ओर से न चूको होगा वही जो उचित और न्याय है॥

॥ साहित्यआलोचना ॥

। हमारी एडवर्ड तिलक यात्रा ।

महाराजाधिराज एडवर्ड सप्तम के राजतिलक महोत्सव के अवसर पर यहां की फ़ौज के साथ ठाकुर गदाधर सिंह भी गये थे। उस राजतिलक तथा समुद्र यात्रा के रास्ते में दर्शनीय स्थानों और निर्माणों को उन्होंने ऐसी रोचकता से इस पुस्तक में बर्णन किया है कि एक बार हाथ में उठा लो तो बिना अन्त किये जी नहीं मानता। पुस्तक बहुत अच्छी है पर ठाकुर साहब से इस पुस्तक के बारे में मुझे केवल दो बातें कहना है-एक यह कि अंगरेज़ों की हर एक बातों के मुक़ाबिले अपने हिन्दुस्तानी भाइयों को तुच्छ समझना उन्हें नहीं सोहता दूसरे भाषा को जहां तक हो सकता यदि सहज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते तो बहुत अच्छा होता क्योंकि पुस्तकों के प्रचार का मुख्य कारण सरल भाषा है मूल्य ॥=) है।

हरिश्चन्द्र।

निस्सन्देह इस नाम के पुरुष श्रेष्ठ हिन्दुस्तान की भूमि में ऐसे हो गये हैं कि यह कहना कदाचित् अत्युक्ति न होगा कि "चिरकाल तक भारतवर्ष का शिर इनके सबब से ऊंचा रहेगा" और एक बार इनका स्मरण करतेही चित्त गद्गद् हो जाता है—

"जिन श्री गिरधर दास कबि, रचे ग्रन्थ चालीस।
ता सुत श्री हरिचन्द्र को, को न नवावे सीस" ॥

धन्य है इस आत्म गौरव युत दीर्घवाद को यह ऐसों ही को सोहता है। भारत भूषण भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी का जीवन चरित्र उन्हीं के फूफेरे भाई बाबू राधाकृष्णदास ने लिखा था पर वह सूक्ष्म व छोटा समझा गया इससे इख़ियारपूर ज़िला आरा निवासी पटना जजी के ट्रेन्सलेटर बाबू शिवनन्दन सहायं वर्मा ने इनके जीवन चरित्र को अति विस्तार से लिखा है। ऐसे महाभाग्य का जीवन चरित्र जितना विस्तार से लिखा जाय व जितना उनका गुणगान हो सब थोड़ा है साथ ही और २ बड़े २ प्रसिद्ध पुरुषों की जीवनी टिप्पणी में दी गई है पुस्तक हिन्दी के प्रेमियों को अवश्य पढ़ना चाहिये। इस पुस्तक की विशेष आलोचना फिर कीजायगी मूल्य १॥) बहुत अधिक है। प्रकाशक को भारतेन्दु बाबू का अनुकरण करना चाहिये था कि "थोड़ा मूल्य रख पुस्तक का प्रचार कराना"—तिस्में ऐसे की जीवनी का प्रचार तो जितना हो उतनाही अच्छा है॥

यन्त्री १९०६।

के० वी० रेले कम्पनी हर साल अपने कारखाने की दवाइयों की तारीफ के साथ साल भर की यन्त्री छापते हैं साथही कुछ श्रृङ्गार रस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण एक तस्वीर भी रहती है। पर कम्पनी के अध्यक्ष को आज कल स्वदेशी आन्दोलन में तथा रविवर्मा के एक से एक सुन्दर चित्रों के रहते जर्मनी की भट्टी तस्वीरें देना कुछ अनुचित जान पड़ता है — यह यंत्री) ॥ का टिकट भेजने से नीचे लिखे पते से मिलेगी। के० वी० रे कम्पनी जुबिली मेडिकल हाल-बम्बई ॥

——

भवभूति।

ये संस्कृत के एक सुप्रसिद्ध कवि हैं। पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने इनकी गिनती कालिदास, माघ, भारवि, श्रीहर्षदेव और बाणभट्ट आदि के साथ की है और उनका सीता बनवास इन्हीं के उत्तर चरित का अनुवाद या छाया है। भवभूति के लेख अति विचित्र और मनोहर हैं। विद्यासागर के मत में भवभूति की बड़ी प्रशंसा इस बात में है कि जैसे और २ कवियों ने निष्प्रयोजन तथा बिना अवसर के निज ग्रन्थों में शृङ्गार रस को भर दिया है वैसा भवभूति ने नहीं किया। इस विषय में वे बहुत सावधान रहे। उन्होंने कभी निष्प्रयोजन अपनी रचना में शृङ्गार रस नहीं भरा और प्रयोजन पड़ने पर भी उसे बड़ी सावधानता से निबाहा। एक बात भवभूति की रचना में औरों से विलक्षण पाई जाती है कि दृश्य काव्य के भीतर भी उनने दीर्घ समास और गम्भीर अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया है। भवभूति के बनाये तीन प्रसिद्ध नाटक वीरचरित, उत्तरचरित और मालतीमाधव हैं। वीरचरित में वीर रस, उत्तरचरित में करुणारस और मालतीमाधव में शृङ्गार रस दर्साया गया है। इसमें उत्तरचरित में करुणारस दर्साते समय भवभूति ने ऐसी निपुणता दिखलाई है कि निःसन्देह कह सकते हैं कि कालिदास भी उनके सामने मन्द पड़ जाते हैं। ये तीनों नाटक उत्तम हैं पर उत्तरचरित सबों में बढ़ कर है "उत्तरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते"। मालतीमाधव की प्रस्तावना में भवभूति इस प्रकार से अपने अहङ्कार का परिचय देते हैं—

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां
जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यते ऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा
कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥

अर्थात्

जो लोग आदरहिंना रचना हमारी जानैं कहा जतनये तिन लागि नाहीं। मो सो गुणी कतहुं होवइ होइहै वा निःसीमकाल अरु विस्तृत धरा है ॥

यदि बिचार पूर्वक देखा जावे तो वास्तव में भवभूति का कहना कुछ अनुचित वा डींग मारना नहीं है उनकी रचना अवश्य आदरणीय और जो इसे न माने उन्हें अबोध कहना अत्युक्ति न होगी ॥

वीर चरित के प्रारम्भ में भवभूति ने अपना परिचय इस प्रकार से दिया है ॥

दक्षिण देश की ओर (विदर्भ देश में) पद्मपुर नाम का एक नगर है। यहां यजुर्वेद की तैत्तरीय शाखा के अध्ययन करने हारे काश्यप गोत्र में उत्पन्न, धर्म कार्यों में परायण, पंक्तिपावन (पंक्ति अर्थात् भोजनादि करने हारों के समूह को पवित्र करने वाले अर्थात् मुखिया) पञ्चाग्नि (अर्थात् दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य) इन ५ अग्नि के पूजन करने हारे, सोमलता का पान करने वाले, प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानी (वेदान्ती) ब्राह्मण बसते हैं। उनके वंश में वाजपेय यज्ञ करने हारे आदरणीय महाकवि गोपाल भट्ट का जन्म हुआ गोपाल भट्ट के पुत्र का नाम नीलकण्ठ और नीलकण्ठ के पुत्र भवभूति हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी उपाधि श्री कण्ठ थी । इनकी माता का नाम जतूकर्णी था
भवभूति ने अपने गुरु का नाम ज्ञाननिधि लिखा है ॥

निदान भवभूति के निज वर्णन से निर्णय होता है कि ये विदर्भ
देश बरार के रहने वाले थे । बरार में अब पद्मपुर नाम का कोई नग
नहीं है । भवभूति के समय तक बरार की राजधानी कुण्डिनपुर
नाम से प्रसिद्ध थी । दक्षिण देश ही में होने के कारण भवभूति ने उत्त
चरित के द्वितीय अङ्क में दण्डक बन और गोदावरी का वर्णन कि
है जो पढ़ने वाले सहृदयों का चित्ताकर्षक है । मालतीमाधव में
भवभूति ने पाश, लवणा, मधुमती और पाटलावती नदियों का न
लिखा है । पाश का नाम अब तक वही बना है । पर लोग लवणा
लूण और मधुमती को आज कल की मधुवर बतलाते हैं । पाटलाव
का ठीक २ पता नहीं मिलता । भवभूति का 'श्री पर्वत' कदाचि
नीलगिरि की कोई चोटी होगी ॥

भवभूति के प्रादुर्भाव काल के विषय में खोज करने से राजतरङ्गिणी
में एक श्लोक मिलता है कि जिसके द्वारा उनका समय निर्णय किय
जा सकता है । राजतरङ्गिणी का वह श्लोक यथा--

कविर्वाक्पतिराज श्रीभवभूत्यादिसेवितः ।
जितोययौ यशोवर्मातद्गुणस्तति बन्दिताम् ॥

अर्थात

सेवत जिहिं कवि वाक्पति राज श्री भवभूति ।
जित यश वर्मा बन्दि बनि जासु करी गुणनूति ॥

उक्त श्लोक में कश्मीर के राजा ललितादित्य के प्रताप का वर्ण
है कि उसने कनौज के महाराजा यशोवर्मा को युद्ध में परास्त किया
भवभूति यशोवर्मा के सभासद थे । कनिङ्गहम साहिब के मत
ललितादित्य ने सन् ६९३ ई० से लेके ७२९ ई० तक कश्मीर का राज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। निदान भवभूति आठवीं शताब्दी ख्रीष्टीय के प्रारम्भ काल के व्यक्ति सिद्ध होते हैं। इन्हीं के समय में जो कवि वाक्पतिराज हुए उनने निज रचित 'गौड़ वहा' नाम ग्रन्थ में भवभूति का उल्लेख किया है। बाल रामायण के रचयिता राजशेखर सन् ९६१ ई० में वर्त्तमान थे और उनके वर्णन से जान पड़ता है कि राजशेखर के प्रगट होने से पहिले ही भवभूति का देहान्त हो चुका था। गोबर्द्धनाचार्य ने भी अपनी सप्तशती में भवभूति की अद्भुत कविता शक्ति का उल्लेख किया है। भोजप्रबन्ध में भी भवभूति का नाम मिलता है। एक कथानक का उल्लेख ऊपर कालिदास के वर्णन में किया जा चुका है कि जिससे भवभूति कालिदास के समकालीन जान पड़ते हैं। पर ये कालिदास रघुवंश आदि के रचयिता से भिन्न होंगे। भवभूति के मालतीमाधव में शकुन्तला का उल्लेख और मेघद्वारा सन्देश भेजने का भाव कालिदास के ग्रन्थों से लिया गया हो तो अचरज नहीं। प्रयाग में त्रिवेणी तट के अक्षयवट का नाम श्याम था ऐसा कालिदास और भवभूति दोनों ने लिखा है। भवभूति के उत्तर चरित में वेदान्त के भाव और विवर्त आदि शब्दों का प्रयोग पाके लोगों ने उन्हें शङ्कराचार्य के समकालीन समझ रक्खा है पर शङ्कराचार्य के पूर्व भी वेदान्त के विवर्त्तवाद की चर्चा होना असम्मत नहीं है। भवभूति के ग्रन्थों से उनके समय में बौद्ध समाज की अवस्था, तान्त्रिकों की दशा, स्त्रीशिक्षा का प्रचार, अन्वीक्षिकी विद्या (न्याय शास्त्र) का पठन पाठन तथा उज्जयिनी के भगवान् कालप्रियनाथ की प्रसिद्धि आदि बातें भली भांति जानी जाती है॥

बनारस में २१वां कानग्रेस और प्रदर्शनी।

लखनऊ की कानग्रेस के कई वर्ष उपरान्त युक्त प्रदेश में बनारस में कानग्रेस के समारोह की बारी आई। आहा यह समय बनारस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कैसा सुहावना था मानो विश्वनाथ जी समस्त देव मण्डली केसमाने
साथ लिये प्रत्यक्ष हो आ बिराजे थे-लोग बनारस का अर्थ करते हुई संस्क
"बना हुआ है रस जिसका" कदाचित् और किसी समय रस न भी बनानग्रेस
रहा हो किन्तु इस समय तो जितने रस सब साङ्गोपाङ्ग पूरा २ अपनर्ष से अ
भाव दरसा रहे थे काशी में सदा से धर्मसम्बन्धी रस प्रधान था पर इहावत
समय अंगरेज़ी शिक्षा और अंगरेज़ी सभ्यता सब में प्रधान थी-सब ठौपने बी
गली कूचों तक जिसका जोश छाया हुआ था-सब तरह के कानफेरेनरण स्वदे
सभा सोसाइटी और कमेटी की भरमार थी। जिधर जाओ उधरही तरगालन पा
और उन्नति का शब्द कानों में गूंज रहा था। पण्डाल दूर से ऐसा सोहती जाती
बना मालूम होता था मानो विश्वनाथ जी का दूसरा स्वर्णमन्दिर होननी का
गोखले महाशय महादेव के रूप में कुल अपने गणों को साथ लिस बालक
पीड़ित भारत भूमि के उद्धारार्थ मानो आ बिराजे थे-एक समय जाबुओं क
भारत भूमि पर बड़ा कष्ट आ पड़ा था तब भगवान् कृष्णचन्द्र ने अवांय और
तार ले सबों का उद्धार किया था वैसाही इस समय भी कृष्ण भगवाक हो सबे
के कई नाम गोपाल कृष्ण गोखले मानो इसकी पुकार कर रहे हैं औग की
दुखी भारतबासी मात्र प्रार्थना कर रहे हैं कि भारत का ऐसा कठिं-अन्त
समय कभी न आवेगा अब अपने नाम की सार्थकता दिखलाइये-गौहिन्दुआनी
बड़ी दुखी हैं गोपाल हो गौओं की रक्षा और पालना करो कृष्ण होण्डाल में
सबों के दुःख का आकर्षण करो गौओं के जो शत्रु हैं उनके साथ खलानिये क
का सा बर्ताव करो--अथवा गोखले से और भी यह मतलब निकलता हैंगरेज़ी
कि गौयें लक्ष्मी हैं गौओं के द्वारा भारत लक्ष्मी का उद्धार करो भारत-डेलीगे
के लिये कुछ कर दिखाओ तभी आप की लम्बी २ स्पीच झाड़ना जो रह
सफल है॥

बहुधा लोग पूछा करते हैं कि इतने दिनों से कानग्रेस हो रहा है इस
इसका कोई फल अब तक न प्रगट हुआ-अस्तु इसके फल तो बहुआ-प्रण
से हुये हैं पर उनका विस्तार यहां न कर हम ऐसे भोंड़ी समझवालों को बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ण्डली को समझाने के लिये मान लो कि जब किसी का जन्म होता है तो उसके
...करते ...ई संस्कार किये जाते हैं उन संस्कारों में सब से मुख्य बिवाह है
...भी बनारनग्रेस का वह बिवाह संस्कार प्रदर्शनी के साथ किया गया जो कई
...२ अपनर्ष से अर्द्धांगिनी के रूप में इसके साथ २ रहती है—और भी एक
...ा पर कहावत प्रचलित है कि "जो न हुआ बीसा वह का करी पचीसा" ठीक
...सब ठौंपने बीसवें वर्ष इस युगल जोड़ी ने एक बच्चा जना जिसका नाम
...ानफरेन्सरण स्वदेशी आन्दोलन किया गया और इस अभिनवजात कुमार के
...ही तत्पालन पालन का सब बोझ वन्देमातरम् ने अपने ऊपर ओढ़ा--आशा
...ा सोहती जाती है यह बालक ज्यों २ बढ़ता जायगा त्यों २ अपने जनक
...न्दिर होननी कानग्रेस और प्रदर्शनी की सफलता को पुष्ट करता रहेगा—अब
...ाथ लिस बालक को हंसाते खिलाते हुये प्रसन्न रखना हमारे नवयुवक
...समय जाबुओं का काम है जिन्हें चाहिये कि होटलों में जा टी का पीना भूल
... ने अवांय और भारत की तथा अपनी माटी पलीद न करें। प्राण पण से जहां
... भगवाक हो सके भारत की माटी को भी बाहर न जाने दें और विलाइत के
... हैं औग की Tea टी पीने के बदले अपनी मा की टी को पीने का दम
...ा कठिं—अन्त को इतना हमें अवश्य कहना पड़ता है कि युक्त प्रान्त तथा
...इये-गौहिन्दुस्तानी का केन्द्र काशी के लिये यह बहुत ही लज्जाकर है कि कानग्रेस
... कृष्ण होपडाल में एक भी स्पीच हिन्दी में न हुई दूसरे कई एक वालंटियर न
...साथ खलानिये कहां से पकड़ बुलाये गये जिन से लोगों को बड़ा दुख मिला--
...कलता अंगरेज़ी की ज़रा सी छौंक पाये हुये हर दम पतलून के बाहर रहते
...रो भारत-डेलीगेटों को सुख पहुंचाना और उनके खाने पीने का इन्तिज़ाम
...व झाड़ता जो रहा हो अच्छे २ इज्ज़तदार विज़िटरों को ढकेलना और उनके
...ाथ बुरी तरह पर पेश आना यही उन्हें सिखा दिया गया था॥

...ो रहा है इस बार कांग्रेस का समारोह बड़े उत्तम ढंग से ४ दिन में समाप्त
...ता बहुआ—प्रथम दिन सभापति के अनुमोदन की स्पीच जो आर० सी० दत्त
...वालों की बहुत थोड़े में कहा श्लाघनीय थी—उक्त महाशय के कथन का क्रम

07 8012

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत Majestic चटकीला था उपरान्त सभापति की स्पीच भी बस किसी
सारगर्भित थी--दूसरे दिन कोई स्पीच ऐसी नहीं हुई जिस पर विकसी की
लक्ष्य किया जाता--तीसरे दिन बायकाट वाले रिज़ोल्यूशन रने का
प्रस्ताव करने में पं० मदन मोहन मालवीय की स्पीच बहुत ही रहता है
गर्भित थी--बायकाट का जन्म क्यों हुआ और क्यों लोगों में स्वदे चंचल
वस्तु के वर्त्तने की लाग पैदा हुई इसे मालवीय जी ने बहुत आण्डित्य
तरह कह सुनाया--उपरान्त लाला लाजपतिराय की स्पीच बड़ी उत्तेसरों को
थी जिसे सुन कौन होगा जिसके मन में अपने देश की उन्नतिहज है
उत्तेजना न आई हो--प्रदर्शनी यद्यपि बाम्बे और अहमदाबार चलना
की प्रदर्शनी से बढ़ कर न थी किन्तु उन प्रदर्शनियों में बिलाता अनुष्ठा
चीज़ें भी दिखाई गई थीं इसमें शुद्ध देश की बनी चीज़ें थीं यही असर होत
विशेषता थी। प्रदर्शनी को देख निश्चय हो गया कि हमारे प्रति दिनसदीक्षिते
बर्ताव की वस्तु कोई ऐसी नहीं है जो देश में न बनती हों तब बिलज या ज
यत की बनी चीज़ों को काम में लाना बड़ी भूल है। पर इसे हमारे अनुष्ठान
लोग जिन्हें नफासत पसन्द है नहीं समझते--अस्तु अमीर लोगों के किये गये
में नहीं आती वैभवोन्माद में उन्मत्त हैं तो साधारण लोग इसके वर्गों को
में क्यों न प्रवृत्त हों। बंगाल में तो गांव तक के लोग इसे समझ गयेप तप
हमारे यहां शहर के लोगों को भी इसके नफा नुकसान का ज्ञान नया २ कु
हुआ तब दिहात के लोग तो दूर रहे॥ एक रिपोहीं है--

"सन्तापसो यः परतापनाशनः
सपण्डितो यः करणैरखण्डितः।
सदीक्षितो यः सकलं सदीक्षते
सधार्मिको यः परमर्म नस्पृशेत्"॥

तपस्वी वही है जो दूसरे का ताप मिटा सके। सच है जो कुहात्मा
तपस्या या धर्म के कार्य हैं सबों का निचोड़ यही निश्चय होता है बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

च भी बस किसी न किसी उपाय से दूसरों का भला कर सकैं । जो हम से
पर किसी की कुछ भलाई न हुई तो लम्बी २ जटा बढ़ाय तपस्वी का भेष
ल्यूशन रने का यही मतलब है कि दंभ दिखलाय दुनिया को ठगैं--आगे
हुत ही कहता है पण्डित वही है जिसकी इन्द्रियां खण्डित नहीं हुई अर्थात्
में स्वभा चंचल इन्द्रियों को चलायमान् होने से रोके हुए हैं--"परोपदेशे-
बहुत पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम्--धर्मस्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मनाम्"
ड़ी उत्तेसरों को उपदेश देने में पण्डित और बुद्धिमान् बनना सबों के लिये
उन्नति सहज है किन्तु अनेक दुख और हानि सह जो वास्तव में धर्म है उस
अहमदाकार चलना कठिन है--कोई ऐसे हैं जो अपनी हानि सहकर उस धर्म
बिलाका अनुष्ठान करते ही हैं--कहने या सुनने से कर के दिखाने का बड़ा
यही असर होता है इसी से कहता है "धर्मस्वीयमनुष्ठानम्" फिर कहता है--
ति दिनसदीक्षितो यः सकलं सदीक्षते"--दीक्षित उसे कहते हैं जो किसी
तब बिरक्ष या जप तप आदि की दीक्षा लिये हो और जब तक उसका वह
मारे अनुष्ठान पूरा न हो तब तक जो २ नियम उस कृत्य के लिये नियत
ोगों के कये गये हैं उन्हें निबाहै--यहां कहता है दीक्षित उसी को कहेंगे जो
इसके वस्तों को सत् अर्थात् अच्छे भाव से देखता हो। बड़े से बड़े यज्ञ और
समझ गयेप तप आदि की दीक्षा लिये हैं पर चित्त बिमल नहीं है न जानिये
ज्ञान तथा २ कुटिल भाव मन में लगा है तो उनको उस दीक्षा का कोई फल
क रिपोर्हीं है--हमारा मानसिक भाव ही तो जितनी भलाई या बुराई सब
ी जड़ है सद्भाव या शुद्ध भाव वालों को उस बड़े ज्ञानी और दार्श-
निक से हम अच्छा समझेंगे जो शुष्क तर्क के द्वारा तुम्हें कायल कर
तुम्हारा मुंह बन्द कर देसक्ता है पर सद्भाव वाला Earnest नहीं है--
विश्वास में "अर्नेस्ट" शुद्ध भाव हो और किसी से द्वेष न रखता हो तो
॥ सको ईश्वर का साक्षात्कार हो जाना सुलभ है और ऐसे ही को हम
है जो कुमहात्मा कहेंगे--और देशों की अपेक्षा ऐसे सरल चित्त वाले हमारी भूमि
ोता है मे बहुत अधिक हुये हैं पर अब इस अंगरेज़ी शिक्षा के समय ऐसे लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न रह गये न आगे को होंगे क्योंकि अब यह समय दर्शन अ विज्ञान की उन्नति का है सद्भाव हमसे निरन्तर तिरोहित हो जायगा ॥

चौथी बात है "सधार्मिको यः परमर्म नस्पृशेत्" धर्मशील वही जो किसी का मर्मोद्घाटन कर पीड़ा न पहुंचावे--ठीक है ईर्षी असू काहे का धार्मिक ठहरा जिसको दूसरे का मर्म ताड़न कर ज़ीट उड़ की आदत पड़ी है--मर्मोद्घन ऐसी बुराई है कि बहुधा लोग जि का मर्म ताड़न किया गया है दुखी हो अपने जीवन से हाथ बैठे हैं ॥

— —

मनोविनोद ।

पं॰ श्रीधर पाठक की कविता के संग्रह का यह दूसरा खण्ड है--इ पुस्तक को पढ़ यही जी चाहता है कि पं॰ श्रीधर को हिन्दी साहि के टेनिसन कहैं तो अनुचित न होगा--प्रथम खण्ड जिसमें इन फुटकर कविता के ४४ विषय हैं उसका मूल्य ॥) है इस दूसरे खण्ड दाम ।) है इसमें ३९ विषय हैं ॥

— —

सहयोगियों की सहानुभूति ।

हम अपने सहयोगियों के बड़े कृतज्ञ हैं विशेष कर भारतमित्र जिसने कई बार हमारे पत्र के सम्बन्ध में कई तरह पर लिखा है और अपने पढ़ने वालों से प्रदीप के ग्राहक होने की शिफारिस की है। हम इसके संपादक महाशय को धन्यबाद देते हैं--सच्ची गुण की परख इसी का नाम है धन्य है। उसी कलकत्ते में वैश्योपकारक एक मासिक कुछ दिनों से निकलता है जो हमसे बदला भी नहीं चाहता तो हमारी कदर कहां रही हम भी उससे एकान्ततो निस्पृहः हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—306.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २८ सं० २ } प्रयाग { फरवरी सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहांय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥) समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ सं० २ | प्रयाग | फरवरी सन् १९०६ ई०

देशसेवा सम्पत्ति ।

रुपया पैसा राज पाट वैभव प्रभुता आदि सम्पत्ति सुलभ हैं—धन धान्य आदमी के हाथ पांव की मैल हैं—जिनका संचय कुछ कठिन काम नहीं है सहज में मिलने लायक हैं—पर वह सम्पत्ति जिसे देशसेवा कहैंगे उसका मिलना सब के भाग्य में नहीं रहता ऐसे ही कोई बड़ भागी हैं जो इसके अधिकारी होते हैं—जापान और योरप के देशों में इसका सुख बहुतों को प्राप्त है--लार्ड करज़न का भला हो हिन्दुस्तान में बंगाल वालों को इसका स्वाद चखने की शिक्षा दे चले—पंजाब आदि कई प्रान्त के लोगों को भी कुछ २ इसका रस मिलने लगा है—दैवोपहत हतभाग्य एक हमारा ही प्रान्त बच रहा जहां इसका ज़ायका लोगों में फैलता ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं-पहले पहल जब इसका स्वाद चखने का चस्का लोगों में फैलना आरम्भ हुआ तब यह इतना दुर्घट नहीं था-मुसलमानों के शासन समय गुरू गोविन्द सिंह इसके राह दिखाने वाले गुरुगुरु हो गये-उपरान्त हाल के ज़माने में पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर स्वामी दयानन्द प्रभृति कई एक माननीय पुरुषसिंह इस सम्पति को मन मानता बटोर अन्तर्ध्यान होगये—तब तक यह इतना कठिन काम न था ॥

क्योंकि ऐसे समय जब कि जो राजा है वह प्रजा का नहीं और जो प्रजा का है उसे राजा कब चाहेगा-इस तरह के तुल्य बल विरोध में ऐसा पुरुष दुर्लभ है जो दोनों को राज़ी रख देशसेवा का काम साध सकै-ऐसी सावधानी से काम करने वाले इस समय महामान्य आनरेबुल गोपालकृष्ण गोखले प्रगट हुये हैं या हमारे प्रान्त में मालवीय कुलभूषण हैं—जैसा कहा है ॥

"नरपतिहितकर्ता द्वेष्यतां जाति लोके
जनपदहितकारी त्यज्यते पार्थिवेन्द्रैः ।
इति महति विरोधे विद्यमाने समाने
नृपतिजनपदानां दुर्लभः कार्यकर्ता" ॥

पढ़नेवाले कहैंगे आज इसको क्या खफ़ सवार है कि पत्र पूरा करने को जो मन में आता है खुराफात बक रहा है-प्रिय पाठक महाशय सो नहीं धन्य हैं वे बड़भागी जो देशसेवा सम्पत्ति के लोभी हैं-देशसेवा आत्मत्याग का अन्तिम छोर है जिसको अपना सर्वस्व अर्पण करने की हिम्मत है उसी से देशसेवा बनती है—जो देशसेवा में प्रवीण हैं वे सब कामों में प्रवीण हो सक्ते हैं उनके सुयश की पताका चारो ओर फहराती हुई देश भर को वे अपना बशंबद सेवक कर लेते हैं स्वच्छन्दता का अटल साम्राज्य इस महापुण्य का फल है-भाग्यवानों को देशसेवा की बुद्धि उपजती है—देशसेवा स्वच्छन्दता के साम्राज्य का अंकुर है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वच्छन्दता का साम्राज्य ।

मनुमहाराज ने कहा है--"सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्" तुलसीदास का भी कथन है "पराधीन सपनेहु सुखनाहीं"-सब कुछ जो परअधीन है दुःख है जो स्वतंत्र और अपने वश का है सुख है--हत भाग्य भारत को अपनी स्वतंत्रता गंवाये सहस्त्र वर्ष के ऊपर हो गया तब से इसके दासत्व की शृंखला अधिक २ बढ़ती ही गई पर इधर सौ वर्ष से वह शृंखला इतना जकड़ के कस दी गई है कि हिलना डोलना तक दुशवार हो रहा है--ऐसे समय इस गुलामी की जंज़ीर से छुटकारा पाने को देशसेवा बड़ा सहज लटका हाथ लगा है--दीनवत्सल भगवान् को अपने दीनदयालु इस नाम की सार्थकता यदि मंजूर हुई और हमारे दुष्कर्मों का कदाचित् ओर आलगाहो तो इसका अंकुर देश के एक २ आदमियों के मन में जम आना कोई बड़ी बात नहीं है—देशसेवा को मन में अवकाश पाते ही इसकी छोटी बहन देश की ममता और बड़ा भाई देशानुराग चिरकाल के बिछुरे हुये तत्क्षण आ मिलते हैं इस दशा में सहानुभूति बन्धु प्रेम एकमत्य एकत्र हो ऐसा दृढ़ कुनबा सब मिल जोड़ लेते हैं कि विरुद्ध दल वाले स्वार्थनिष्ठा द्रोह ईर्ष्या फूट अनैक्य आदि फिर वहां ठहरने का साहस नहीं करते-स्वातंत्र्य साम्राज्य के सहकारी ये सब गुण देश में तभी स्थान पाते हैं जब देशसेवा का जोश पैदा हो जाता है-पुरानी तवारीखों को क्यों खोमने जांय हाल में हमारा परोसी जपान इसका उदाहरण मौजूद है--जब यह तै है कि सच्चा सुख केवल स्वतंत्रता ही है तब इसका साम्राज्य स्थापित होना किस अधम को न भावेगा-जिसकी एक मात्र पहली सीढ़ी देशसेवा संपत्ति है बल्कि दोनों का इतना गाढ़ा संबन्ध है कि एक बिना दूसरे के कभी रही नहीं सक्के-हम अपने वैदिक समय को जो सदा सुमिरा करते हैं और वैदिक समय के ऋषियों को राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम सा रटा करते हैं सो इसीलिये कि उन ऋषियों में देशसेवा का महत्व पाते हैं और जब तक उनके महत्व का अनुकरण हम करते रहे तब तक हमारे देश और जाति का गौरव नहीं घटा--यजु और ऋक् दोनों में ईश्वर से प्रार्थना की अनेक ऐसी ऋचायें पाई जाती है जिन में रोज़ की रोटी मांगने के बदले यही प्रार्थना है कि हे ईश्वर तू हमारे यहां के ब्राह्मणों को ब्रह्मवर्चसवाले पैदा कर क्षत्रियों को राज्य में शूर बाण चलाने में निपुण और महारथी कर--गौवें बहुत दूध देनेवाली और बैल बड़े बोझा ढोनेवाले घोड़े तेज़ी से दौड़नेवाले; स्त्रियां राज्य में पति पुत्रवती हों-- रथी संग्राम में विजय पानेवाले हों; वृष्टि समय २ से हुआ करे औषधियां अच्छी तरह फूलैं फलैं अर्थात् शस्य संपत्ति सदा बढ़ती रहे; प्रजा में योग क्षेम रहे अर्थात् जो नहीं प्राप्त है लोग उसके उपार्जन का देश में प्रयत्न करैं और जो प्राप्त है उसकी रक्षा में प्रवृत्त रहैं--इस तरह का उदारभाव जिसमें देशानुराग भरा हुआ है अनेक ठौर वेदों में दर्शाया गया है और वह सब देशसेवा के सिद्धान्त या उसूल पर कायम है--रोज़ की रोटी और इससे कितना अधिक अन्तर है रोज़ की रोटी का मांगना निरा स्वार्थमूलक है--जहां प्रजामात्र के साधारण रीति पर ऐसे सरल और सच्चे भाव हैं वहां स्वातंत्र्य का साम्राज्य कौन सी बड़ी बात है केवल परमात्मा की प्रेरणामात्र अपेक्षित है--जैसा कहा है—

"नदेवा दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्।
यन्तु रक्षितुमिच्छति सुबुद्ध्या योजयन्ति तम्"॥

देवता लाठी हाथ में ले लोगों की वैसी रखवाली नहीं करते जैसा गाय बकरी आदि पशुओं का चरानेवाला अपने पशु की रक्षा करता है वरन देवता जिसकी रक्षा किया चाहते हैं उसे बुद्धि देते हैं--हम लोगों का मूल मंत्र गायत्री का भी यही सिद्धान्त है "धियो यो नः प्रचोदयात्"॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वार्थ की सीमा का छोर नहीं है ।

प्रिय पाठक बड़े ऊंचे २ ख्यालों की बातें हम आप के साथ बक गये आप हमें शेखचिल्ली न समझे हो तो आसमान के सातवें तबक से ज़रा नीचे को उतरिये और अब अपनी तथा अपने सहबासियों की मौजूदा हालत पर नज़र दौड़ाइये-सातवें तबक से उतरने की मिन्नत हमने इसलिये की कि आप का दिमाग फिर गया होगा कि हम आर्य जाति हैं और उन बड़ों के वंशधर हैं जिन के चरित्र के गान में इसने पत्र के पत्र रंग डाले-"सिद्धि रही सो गोरख लेगये खाक उड़ावें चेले"-आप अभी उसी गुलामी की गिरी दशा में पड़े सड़ रहे हो स्वार्थ के कीड़े आत्मसुखरत दस भाइयों का बनता हुआ काम बिगाड़ केवल अपना भला चाहते हो-उस कूचे की रास्ता पर कभी भटक कर भी आप नहीं जा निकले जहां आपस की हमदर्दी का खज़ाना खुला हुआ है-उदार भाव की हुंडी प्रतिक्षण सकारी जारही है-शायद यह समझ रक्खा हो हम तालीमयाफ़्ता हैं बड़े २ पोलिटिशन और स्टेट्समेन के उसूलों को हल किये हुये हैं तरक्की की बुनियाद डालनेवाली पोलिटिकल एकानोमी पोलिटिकल साइन्स में डिगरी हासिल किये हैं; खूसट ज़बान हिन्दी देहकानियों की बोल चाल में अनापशनाप गोंच हमें रास्ता दिखलाने और रहनुमाई करनेवाला बना चाहता है-भद्र मुख इस तरह के ख्यालों को जी में जगह न दे ज़रा चित्त की वृत्ति को सावधान कर सोचो तो कि बड़े विद्वान् हो देश का क्या उपकार आपने किया-क्या सोने की कटारी हो तो उससे पेट चीर लेना होता है? तालीम की झलक से आप में अंगरेज़ीयत बेतरह आ समाई-मूर्ख नासमझ भाइयों पर दया के बदले उनसे घिनाना आपने अलबत्ता सीखा--वह अंगरेज़ीयत कहां तक आ समाई सो कलकत्ते के बाबुओं को देख समझ जाइये-बिलाइत के लोगों का अनुकरण तो आपने सीखा पर उनका सा देश वात्सल्य देशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाइयों में परस्पर का प्रेम उनका सा आत्मत्याग आदि भले गुण कोई भी न आये–इसका अभ्यास पहले से आप को पड़ा रहता तो इस समय वन्देमातरम् की दौड़ न दौड़ना पड़ता--अस्तु सुबह का भूला सांझ की भांत यह दौड़ आपकी सदा के लिये क़ायम रहती तौभी बड़ी बात रही पर हमें सन्देह है कि यह भाव आप का चिरस्थायी रहे--यही भाव यदि दृढ़ रहा तो स्वार्थ की सीमा बहुत कुछ घट जायगी--अघटित घटना पटीयान् परमेश्वर का यह भी कोई लीलाताण्डव है कि एकबारगी ऐसा नेत्रोन्मीलन तुम्हें मिल गया है, अब भी राह पर न आये तो इसमें सन्देह नहीं देश के दुर्भाग्य हैं--अस्तु इन सुशिक्षितों की चरितावली का गान फिर भी कुछ सोहावना लगता है--जब देश के अधिकांश अपढ़ समाज पर दृष्टि फेरो तो यही कल्पना मन में उठती है कि हमसे कौन सा ऐसा बड़ा पाप बना पड़ा जो ऐसी समाज में हमारा जन्म हुआ--सच है ॥

"वरं शरावहस्तस्य चाण्डालागारवीथिषु ।
भिक्षार्थमटनं राम नमौढ्यहतजीवितम्" ॥

सुशिक्षा फिर भी बड़ा रत्न है बड़ी बरकत है देश में जो उससे सुशोभित हो गये हैं उन से बहुत कुछ आशा की जासक्ती है पर जिन का मौढ्योपहत जीवन है उन से कोई बश नहीं चलता इसी से हम कहते हैं स्वार्थ की सीमा का छोर नहीं है--उदारभाव जो इसकी सीमा का परिच्छेदक है देश के सुशिक्षितों में भी अभी रुपये में एक आना है तब अपढ़ों का क्या कहना ॥

बात की करामात ।

सोना है; चांदी है; तहखाने सेहखाने खज़ानों से भरे हैं; हीरा जवाहिर कंकर पत्थर की कमी नहीं; न प्रभुता और हुकूमत का ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोर है; एक बार के भ्रू विक्षेप में इधर का सब उधर हो सक्ता है; पदवी और अलकाब जो पूरे २ लिखे जांय तो पत्र की एक फुट जगह छिक जाय, शील और सौजन्य दूसरों के लिये मानो नमूना है; रूप माधुरी का ख्याल कर कन्दर्प का भी दर्प खण्ड २ हो जाता है; मान और प्रतिष्ठा में सब के अगुआ दरबारों में पहले दर्जे की कुरसी पाते हैं; बेटे एक से एक लियाक़त में बढ़ चढ़ के हैं नाती पोतों से घर भरा है; आज एक का उपनयन से कल दूसरे का बिवाह परसों तीसरे का कोई दूसरा मंगलकार्य--इस तरह पर कोई साल कोई महीना नहीं जाता जिसमें कुछ न कुछ उत्सव घर में न हो--कहां तक गिनावें भागवानी की पराकाष्ठा है--बात बनी है बराबर पहिया ढुलकती जा रही है--ईश्वर सब का सानुकूल रहे दिन के फेर का असर न पहुंचे बिधाता यदि बाम नहीं है तो सूत का बांधा हाथी रह सक्ता है--विश्वंभर की अपार महिमा का पार कौन पा सक्ता है न जानिये क्यों अकस्मात् पर्वत को राई कर देनेवाली चाल उसे भाई बात बिगड़ गई भाग ने ऐसा पलटा खाया कि सब उलटा होने लगा--सोना चांदी न जानिये कहां बिलाय गया हज़ार कोशिश करते हैं कि बिगड़ी बात फिर बनावें पर एक नहीं सम्हाले सम्हलता जहां मिट्टी छूते सोना होता था वहां उसके विरुद्ध होने लगा--हीरा जवाहिर कांच के भाव बिकना शुरू हो गया जहां किसी की हिम्मत न थी कि आंख मिला सके वहां अब जहां जाते हैं धकियाये जाते हैं कोई बात नहीं पूछता--घर की एक २ ईंट बिक गई लड़के जो लियाक़त के पुंज थे शराबखोरी और आवारगी के दृष्टान्त बन बैठे--जिस घर में मगल की गीत और शहनाई की आवाज़ गूंजती थी वहां सियापे की लर नहीं टूटती--रुदन और क्रन्दन ध्वनि छाई रहती है गरमी निकल गई जोशखरोश सब बुत गया कौड़ी के तीन दर २ मारे फिरते हैं--जो घराना साहुत और मेल के लिये प्रसिद्ध था वहां ऐसी फूट छाई कि सब लोग तीन तेरह हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये--बात बनी थी तब दूर के लोग भी आय नाता जोड़ते थे अब अपने भी पराये हो गये--सच है ॥

"अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव।
त्वन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत्" ॥

ईश्वर कुशल करै जिस बात की करामात दिखाने को हम इतना गा गये सो किसी की न बिगाड़े नहीं तो बिगड़ी बात के आघात से बचने को फिर कहीं ठिकाना नहीं है ॥

— —

कुम्भमेला।

हज़ारों आदमियों के मुख से जै गंगे मात गंगे आदि हिन्दू धर्म की प्रौढ़ता के प्रकाशक कर्ण रसायन शब्दों को सुन किस हिन्दू सन्तान के मन में अपने धर्म में श्रद्धा और भक्ति न उपज आती होगी--इस पर हमें अचरज हर्ष तथा विषाद एक साथ पैदा हो सब मिल हमारे चित्त की वृत्ति में एक अनोखा भाव उपजाते हैं--अचरज और हर्ष इसलिये कि जब यह सोचते हैं कि धन्य हैं हमारे पहले के वे ब्राह्मण जिन्होंने न जानिये किस शुभ मुहूर्त में इस ब्राह्मण प्रभुत्व की नेव डाली है कि प्रजा में इसकी ओर से श्रद्धा टूटने की कौन कहै प्रत्युत प्रति दिन बढ़ती ही जा रही है--भिन्न २ समाज तथा सभा, नये २ धर्म इसके उच्छेद करने में तन मन धन से लग रहे हैं कोई ऐसे नगर या कस्बे नहीं बचे जहां इस तरह की समाज या सभा नहीं कायम है जिसका मुख्य उद्देश्य यही समझा जाता है कि हिन्दू धर्म घटै और ब्राह्मणों की प्रभुता छीन ली जाय-पर उसमें कहीं से अणुमात्र भी घटाव अब तक न पाया गया न इन हिन्दू धर्म के विरोधियों की स्पीच अथवा लम्बे २ व्याख्यानों का कुछ असर पहुंचा--१२ वर्ष पहिले जो कुम्भ हो गया उससे इस बार के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुम्भ मेले में ज़रा भी कमी न देखने में आई—अब बिषाद इसलिये होता है कि जब हमारी अच्छ प्रजा की जैसी श्रद्धा इसमें है वैसा हिन्दू धर्म के स्तम्ब स्वरूप ये बड़े २ नामी सन्त महन्त पंडे तथा दूसरे लोग जो हिन्दू धर्म की बदौलत गुलछर्रे उड़ा रहे हैं उनके भीतर पैठ के देखो तो बहुत ही बहुत ढोल में पोल पाई जाती है वरन् ऐसे निषिद्ध आचरण इनके देखे जाते हैं कि कौन विवेकीजन होगा जिसके मन में इनके भीतरी चरित्र देख घिन न पैदा हो जाय--सौ में ५ भी यदि विद्या चरित्र और तपस्या की संपत्ति से संपन्न होते तो किसी को मुंह खोलने का साहस न होता किन्तु इस दशा में तो जो कोई कुछ कहे लाचार हो सुननाहीं पड़ता है—यों तो धर्म का दंभ के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है इसी से बुद्धिमानों ने "धर्मस्य निर्व्याजता" कहा है अर्थात् शुद्ध धर्म वही है जो किसी छल या बहाने से न किया जाय—धर्म का विमल स्थान अकलुषित सरल चित्त है जिस पर दंभ का आवरण होने से उसका शुद्ध रूप नहीं प्रगट होने पाता—विविध भेख धारी इन कई लाख फ़क़ीरों का दल देख यही चित्त में आता है कि उस धरती की कुशल ईश्वर ही करै जिसमें इतने लोग कोई काम न कर दूसरों के उपार्जित धन से चैन उड़ा रहे हैं-दूसरी बात यहां पर यह भी ध्यान देने लायक है कि यह भारत ही का देश है जहां अब भी धर्म का इतना प्रभाव है कि मज़हबी जोश में आय सिन्ध पंजाब बांबे ऐसे दूर २ देश के लोग इतना क्लेश सह और बहुत सा धन खरच पर काल बनाने की आस्तिक्य बुद्धि के अनुयायी हो तीर्थ यात्रा की बुद्धि से यहां आये हैं--इतने लोगों का ख़्याल यदि कहीं मुल्की जोश की ओर झुक पड़े तो न जानिये ये लोग क्या कर डालैं पर सो काहे को कभी यहां होगा अस्तु ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा !!!

हमारे शुद्ध सनातन वैदिक धर्म में घाटा होते जाना कुछ ईश्वर ही की इच्छा है या पुराने लोगों के कथन के अनुसार कलिधर्म का यह कुछ प्रभाव हो--जिस महानुभाव विरक्त के स्वर्गबास का शोक सम्बाद मैं अपने पढ़ने वालों को सुनाया चाहता हूं वह उदासीन वर्य श्री स्वामी बालक राम जी हैं उक्त स्वामी जी संस्कृत के असाधारण पण्डित और बड़े अच्छे अध्यापक थे-व्याकरण में सिद्धान्त कौमुदी मनोरमा और शेखर पर नई २ उपज की बहुत सी टिप्पणियां इन्होंने तैयार की हैं पर वह अब तक मुद्रित नहीं हुईं-धर्मशास्त्र में गंगास्थिति मीमांसा और धर्म दो ग्रन्थ इन्होंने लिखकर मुद्रित करा दिये हैं-योग सूत्र पर संस्कृत में एक अलग तिलक की भांति लिखा है और उसी का अनुवाद सरल भाषा में किया है ये सब पुस्तकें छपकर धर्मार्थ बांट दी गई हैं-सांख्यकारिका का अनुवाद भी ये कर रहे थे उसमें सांख्यतत्व कौमुदी की ३० कारिकाओं का तिलक अब तक छप चुका था कि इस समय माघ कृष्ण दशमी को रात के ८ बजे ये महानुभाव सुरधाम सिधार गये--आप यहां कुम्भ के मेले में यात्रा करने आये थे और गङ्गा तट पर जहां और विरक्तों की मण्डलियां पड़ी थीं कल्पबास की इच्छा से रहना स्वीकार किया था-बीमार आप कई महीनों से थे पर बीच में कुछ अच्छे होने लगे थे २ दिन पूर्व कुछ ऐसी शिरोवेदना और ज्वर आप को आया कि वह प्राणान्त ही के साथ गया—आप ने एक ग्रन्थ परिणय समय दर्पण नाम का लिखा है जिसमें बाल्यबिवाह के होने से सब तरह की हानि का बहुत अच्छा निरूपण किया है यह ग्रन्थ अभी छपा नहीं-इस से मालूम होता है कि ये विरक्ताग्रगण्य निरे पुराने ही ख्याल के न थे वरन् समाज संशोधन पर भी इनका बहुत कुछ ध्यान था-बारह वर्ष पहले जो कुम्भ का मेला हो गया तब भी ये यहां आये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे और तब से पढ़ने वाले विरक्त और ब्राह्मणों की मण्डली साथ लिये देशाटन किया करते थे-रामेश्वर और वदरिकाश्रम आदि तीर्थों में इसी तरह बारह वर्ष तक भ्रमण किया और अब यह इनकी इच्छा थी कि मण्डली को तोड़ कहीं एकान्त में निवास कर ग्रन्थ रचना और उपदेशात्मक लेख लिख अपना शेष जीवन समाप्त करेंगे—पर बीच ही में काल कराल इनको निगल बैठा अस्तु इश्वरेच्छा–विरक्त मण्डली में हम ऐसे बहुत कम लोगों को पाते हैं जो इतने परोपकारी विद्वान् और धर्म के सच्चे अनुष्ठान करने वाले हों—कदाचित् इस त्रुटि को पूरी करने वाला दूसरा पुरुष विरक्त मण्डली में न निकलेगा-पण्डित चाहे हों भी पर उपदेशक और स्वयं उस उपदेश पर चलने वाले यही देखे गये ॥

धर्म महासभा ।

बड़े लम्बे चौड़े पण्डाल में २० जेनुअरी शनिबार को इसका समारोह आरम्भ हुआ मंदराज बम्बई पंजाब मध्यप्रदेश मैसूर गुजरात सिन्ध आदि देशों से भिन्न २ संप्रदाय के साधु विरक्त पण्डित और शास्त्री इसमें आये थे जगन्नाथपुरी से गोवर्द्धन पीठ के स्वामी शंकराचार्य भी आये और वेही इस महासभा के सभापति किये गये–मन्ध्यान्होत्तर ३ बजे प्रति दिन इसका जलसा होता था—प्रथम दिन सभापति की वक्तृता के उपरान्त दण्डीस्वामी हरिहरानन्द ने अपनी वक्तृता में अनधिकारी को दान देने के सम्बन्ध में बहुत अच्छा कहा और भी कई एक् सामयिक बातें जो धर्म के आभास में महाअधर्म हैं उनको अच्छे ढंग से कहा--हमें बड़ा हर्ष इस बात का है कि साम्प्रदायिक झगड़े बिलकुल इस सभा में नहीं उठाये गये सब लोग एक मत हो शुद्ध धर्म के प्रतिपादन में प्रवृत्त रहे--साम्प्रदायिक विरोध से यह सभा इतनी मुक्त थी कि स्वामी शंकराचार्य के सभापति होने का अनुमोदन रामानुज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्प्रदाय के एक परमाचार्य महानुभाव ने किया जो राजा रीवां के गुरुघराने में से हैं--इसी तरह प्रति दिन का कार्य उत्तम रीति से किया गया--सभा का समारोह प्रारंभ होने के पूर्व २४ लक्ष गायत्री के जप का अनुष्ठान और सात दिन निरन्तर रूद्रयाग किया गया काशी से चारो वेद के जानने वाले वैदिक ब्राह्मण बुलाये गये थे--सभा में कई एक लाभकारी मन्तव्य "रिज़ोल्यूशन" पास किये गये जिनमें नगर२ ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत पाठशाला और काशी में विश्वविद्यालय स्थापित करने का भी एक मन्तव्य था जिसे सबों ने मुक्तकण्ठ हो स्वीकार किया--आनरेबुल गोखले का भेजा पत्र जो सभा में पढ़ा गया उससे विदित हुआ कि बम्बई के एक प्रतिष्ठित मुसलमान ने ५ सहस्र रुपया विश्वविद्यालय के लिये देना स्वीकार किया-पत्र में मुसलमान महाशय ने इस बात पर बड़ा हर्ष प्रकाश किया कि अलीगढ़ और बनारस दोनों इङ्गलैंड के आक्सफोर्ड और केम्ब्रिज हिन्दुस्तान में होंगे-एक जैन संन्यासी ने अपनी स्पीच में विश्वविद्यालय के साथ बड़ी सहानुभूति प्रगट की जिस का अनुमोदन काशी के कई एक शास्त्रियों ने भी किया-इस कार्य के संपादन निमित्त कई एक लोगों ने अपना जीवन समर्पण किया-अब तक ९ लाख की संपत्ति विश्वविद्यालय के लिये इकट्ठी हो चुकी आशा है जल्द इसका आरम्भ कर दिया जायगा-रात को प्रति दिन हरिकथा और संकीर्तन हुआ करता था २७ तारीख से २९ तारीख तक बराबर इसका उत्सव होता रहा-धन्य हैं हमारे मालवीय कुलभूषण ईश्वर ऐसे सत-पुरुष को दीर्घायु करे लोकोपकार में इनके सदुद्योग की चेष्टा नित्य २ बढ़ती जाय और अपने काम में सदा कृतकार्य होते रहैं-दूसरी प्रार्थना परमेश्वर से हमारी यह है कि वह हमारे ब्राह्मणों का नेत्र खोले, जिस हिन्दूधर्म के पुनरुज्जीवन तथा उसकी कमज़ोरी दूर करने के लिये मालवीय महाशय ने इतना उद्योग किया उसके तत्व को ये समझैं-इस सब का मुख्य उद्देश्य यही है कि हिन्दू धर्म में ऐक्य हो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशिक्षित समाज को वैदिक धर्म की SPIRIT रूह दिखलाई जाय जिस सुशिक्षित समाज के मन में अब तक यही धसा हुआ है कि और धर्मों के समान हिन्दू धर्म भी निरा आडम्बर मात्र है वास्तविक तत्व इसमें कुछ नहीं है ॥

——:o:——

विश्वास और प्रेम ।

किसी ने बहुत ठीक कहा है कि विश्वास मन महा मकरालय की उमंगों के पार जाने को हमारे जीवन जलयान का लंगर के समान है– जैसा बिना लंगर का जहाज़ तूफान में हिलकोरे खाता हुआ किसी चट्टान से टक्कर खा चूर २ हो जाता है वैसा ही मन बिना विश्वास रूई से भी अधिक हलका हो अनेकानेक विपद संकट का सामना करता हुआ हमें सदेह मृत्यु के मुख में जा गेरता है–इतना हीं नहीं वरन् यह भी कि जब तक हम जीते हैं संसार में भार रूप होकर रहते हैं जहां जाते हैं कुत्ता बिल्ली सा दुतकारे जाते हैं अस्तु–

प्रत्येक मनुष्य का यह स्वाभाविक धर्म है कि वह निज हितू मित्र प्रभु वा स्वामी का विश्वासपात्र बना रहा चाहता है–मालिक मुझ पर विश्वास रक्खे यह वह सदा चाहता है और भरसक इसके लिये यत्न करता है–पत्र व्यवहार में नये क्रम के अनुसार अन्त में लिखते हैं "आपका विश्वासपात्र अमुक" किन्तु ऐसा लिखने से लिखने वाला सच २ विश्वासपात्र बन जाता है यह विचार करने योग्य है–हमारी समझ में तो यह नई सभ्यता की एक परिपाटीमात्र है क्योंकि ऐसे मनुष्य बहुधा कम देखे जाते हैं जो केवल इतनाही लिख देने पर आंख मूंद उसका विश्वास कर लें–मनुष्य किसी का विश्वासी बनने में दो प्रयोजन रखता है एक अपने निज का स्वार्थ दूसरा उसी को कुछ लाभ पहुंचाना जिसका वह विश्वासी बनता है–जो सरल स्वभाव के हैं उन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास चिरस्थायी रहता है पर जो खोटे और कपटी हैं उनको पहले तो किसी पर विश्वास होता ही नहीं हुआ भी तो बहुत ही क्षणिक-जो मनुष्य चरित्र का शुद्ध है जैसा समझता है वैसाही करता है बनावट का लेश भी अपने में नहीं रखता वह थोड़े ही में सब का विश्वासपात्र हो जाता है उसे लोग आप्त समझने लगते हैं--किन्तु जो मतलब का यार है अपना मतलब गांठने को विश्वासपात्र बना चाहता है वह तभी तक विश्वासपात्र बना रहता है जब तक उसका मतलब नहीं गंठा--जो मतलब की गांठ बांध विश्वास दिलाना चाहता है वह निश्चय विश्वासघाती है एक न एक दिन गला काटेगा-ऐसे का कोई साथ नहीं देता न कोई उस से प्रेम रखता है--चाहो कुछ समय तक जब लों उसका खोटापन छिपा रहा कई एकों का विश्वासपात्र वह बना रहा हो पर जब उसकी वह खोटाई उघर पड़ेगी तब उसे कोई पूछेगा नही पूछना तो दूर रहे उसकी ओर कोई चितवैगा भी नहीं-जो सदाचारवान् हैं मन वच कर्म से जिनका व्यवहार और बर्ताव शुद्ध और निष्कपट है वे आप से आप दूसरों के विश्वाशपात्र बन जाते हैं और सब लोग उन्हें प्यार करते हैं ऐसे महापुरुष समाज की शोभा हैं ॥

विश्वास के उपरान्त प्रेम का उदय होता है प्रेम और विश्वास दोनों में कुछ ऐसा परस्पर का सम्बन्ध है कि बिना विश्वास के प्रेम नहीं न बिना प्रेम विश्वास वद्ध मूल हो ठहर सक्ता है-सच पूछो तो प्रेम का पन्थही बिल्कुल निराला है प्रेमी अपने प्रेमपात्र का विश्वास कर लेता है प्रेम में अन्धा हो यह नहीं सोचता कि इसका विश्वास हमें करना उचित है वा अनुचित-पर यह क्रम विचारवानों का नहीं है विचारवान् पहले मनुष्य को अपने विंचार की कसौटी में कस तब उस का विश्वास करते हैं विश्वास हो जाने उपरान्त वह उनका प्रेमपात्र बनता है-पर जहां विचार नहीं है किसी कारण केवल प्रेम ही प्रेम है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां बादलों में बिजली सा प्रेम पहले दौड़ जाता है तब विश्वास उस प्रेम का फल फूल के समान फलता और फूलता है—किन्तु वह मनुष्य उस अपने प्रेमी को छोड़ सर्व साधारण का विश्वासपात्र नहीं कहा जा सक्ता तस्मात् प्रेम के कारण जो विश्वास होता है उस विश्वास की कोई प्रतिष्ठा नहीं न उस प्रेम ही की अधिक सराहना है जो विश्वास की कसौटी में बिना कसे हो गया॥ अनन्तराम पांड़े रायगढ़।

नये ढंग के पंचपातक।

बीसवीं सदी की सभ्यता के ज़माने में सभी अपना २ दल बढ़ा रहे हैं और तरक्की कर रहे हैं—इस सूत्र के अनुसार पातकों ने भी अपनी तरक्की पर कमर कस लिया और ब्रह्मवध सुरापान स्तेय आदि ५ महापातकों के होते भी अभी बहुत से नरक खाली पड़े हैं उनको भरने के लिये पंचपातकों में ये ५ पातक और अनुस्यूत से देख पड़ते हैं—और वे अनुस्यूत पातक ये हैं १ कर्मचारियों की हां में हां २ पातक के पुञ्ज अमीरों की खुशामद ३ जोरू की गुलामी ४ घुने ख्याल वाले बूढ़ों की पैरवी ५ दूध मुहे स्तनन्धय छोटे २ गेदों को व्याह के आंख का सुख—आशा है इन अनुस्यूत पातकों की सृष्टि होने से वे नरक सब अब भर जांयगे॥

पांच महाविष।

संसार शब्द के कई अर्थों में संसृति अर्थात् आवागमन भी इसका एक अर्थ है तब पंचामृत ५ अमृत की कल्पना संसृति का बड़ा बाधक जान संसृति के परिचालक विधाता ने यह सोचा कि पंचामृत पान कर सबी अमर हो बैठैंगे तो हमारा यह संसार काहे को चलैगा—इसलिये उसने ५ महाविषों को पैदाकर उन विषों को आज्ञा दिया कि तुम जाय भारत में घर २ अपना दखल जमाओ—उद्भिज अण्डज स्वेदज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरायुज इन चार प्रकार की सृष्टि मैंने पैदा की है उसमें जरायुज या पिण्डजों में ये मनुज बड़े चतुर सयाने निकले कि एक नहीं पांच अमृत की कल्पना कर मेरा सब कारखाना उलट दिया चाहते हैं इसलिये ये ५ महाहालाहल मेरा मतलब पूरा कर देने में बड़े उपकारी होंगे और पांचो महाविषों का नाम करण उसने इस भांत किया-पहिले का स्वार्थसाधन कहा "स्वार्थं समुद्धरेत्प्राज्ञः स्वार्थभ्रंशोहिमूर्खता" बुद्धिमान् वही है जो स्वार्थसाधन में न चूके-संसृति का परिचालक बिधाता ने सोचा यह तो मेरे बड़े काम का होगा इन दिनों कूड़ा करकट की भांत हिन्दुस्तान में तालीम की झलक पाय ऐसे २ लोग उपजे हैं जो देशहित का रोला मचाये हुये हैं और निज स्वार्थ को भंग की शिक्षा दे रहे हैं इसीलिये श्लोक का दूसरा टुकड़ा कह रहा है अपना स्वार्थ बिगाड़ना निरी मूर्खता है ॥

दूसरे विष का नाम करण विधाता ने "पार्टीफीलिंग" किया और यह स्वार्थसाधन का बड़ा सहायक है-लोग किसी तरह स्वार्थ त्याग लोकोपकार के बहाने कुछ करने भी लगते हैं तो जल्द दो दल हो जाने का ऐसा अड़चन उनमें आ लगता है कि फिर आगे बढ़ना कठिन हो जाता है--वैष्णव शैव शाक्त आदि सांप्रदायिक झगड़े इसी पार्टी फीलिंग के अंग पहले भी थे जिन सांप्रदायिक झगड़ों से देश का पिछले ज़मानों में कैसा सत्यानाश हुआ है--वही अब भी बड़ी २ सभ्य समाजों में अपना दखल जमाये है--कोई सभा कमेटी या जमात नहीं देखी गई जिसमें कुछ दिन के उपरान्त दो दल न हो गया हो और अन्त को जिस उद्देश्य पर वह समाज चलाई गई थी उसमें बड़ा बिघ्न न हो गया हो तस्मात् यह भी उस संसृति का महोपकारी है--

तीसरे का नाम "हेरिडेटरी" परंपरागत किया-यह ऐसा उल्वण विष है कि बड़े २ संशोधक और उपदेशक दांत पीस रह जाते हैं और पछताते हैं कि हाय हमारी हिन्दूजाति को यह कहां का दुराग्रह घेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुये हैं जिस्से हम लोग कोई नई बात करी नहीं सक्के नये का नाम सुनते ही लोग छनक उठते हैं–दासत्व की शृंखला में जकड़े रहने को यह परंपरा गत बड़ा अच्छा सहाड़ा है–इस परंपरा से पिण्ड छुटाने को बंगाल में राजा राय मोहन ने बहुत कुछ प्रयत्न किया पर उन की एक न चली कतिपय इने गिने लोगों को छोड़ उन का कहना सर्व संमत न हुआ–जिन्होंने उन के कहने पर कान दिया वे जन समूह से अलग कर दिये गये और वह समाज ही ब्रह्म समाज और धर्म ब्राह्म धर्म कहलाया–ऐसा ही इधर के लोगों को राह पर लाने को स्वामी दयानन्द उठ खड़े हुये और वेद की ऋचाओं का अर्थ पलट २ बहुत चाहा कि परंपरागत दुर्वासना दूर करें। किन्तु पूज्य पाद भगवत शंकराचार्य के समान सर्वमान्य सर्वग्राह्य न हुये–जिन्होंने उन के कहने की पैरवी की अन्त को उन का एक अलग दल आर्य समाज के नाम से कहलाया पीछे पार्टी फीलिंग ने भी जाय इस दल को ऐसा रगेदा कि घास पार्टी और मास पार्टी दो दल इस में हो गये तो सिद्ध हुआ यह परंपरा संसृति का महोपकारी है–यह परंपरा भूतिन का प्रभाव है जो लंठ दासों को मालामाल कर रही है–पण्डे पुरोहित और पाधा पुजाते हुये गुलछर्रे उड़ाते हैं पढ़े लिख विद्वान् संयमी सच्चरित्र कड़ाके पै कड़ाके करते मुंह बांधे बैठे रहते हैं–इस परंपरा से देश में जैसा संस्कृत के पठन पाठन की रेढ मारी गई वैसा किसी दूसरे कुसंस्कार से नहीं—अचछे २ संपन्न धनवानों के घरानों में परंपरा से जिन्हें मानते आये उन्हें ही मानते रहेंगे तब ये पुजवानेवाले पण्डे या पुरोहित क्यों पढ़ने लिखने में परिश्रम कर अपने आराम और सुख में खलल छोड़ैं–बढ़िया पुजैानी विद्या संस्कृत को सिवाय दान दक्षिणा के दूसरा कोई सहारा नहीं पढ़ैं तो भूखों मरैं तब ब्राह्मणों में किसे शामत सवार जो पढ़ै–इस न पढ़ने का हमारे ब्राह्मणों में यह परिणाम हुआ कि १०८ में १० ऐसे निकलेंगे जिन्हें गायत्री और सन्ध्या तर्पण आदि द्विज कर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आता होगा-क्या कहना कैसा अच्छा परिणाम इस परंपरा पिशाची का प्रजा में फैल रहा है—अब रहे दो महाविष दंभ और दर्प उनके महत्व की कथा हम अपने श्रोताओं को फिर कभी सुना देंगे दंभ की गीत तो हम कई बार कई तरह पर आगे गा भी चुके हैं अस्तु ॥

विरक्तों में विद्यानुराग ।

यहां व्याघ्राम्वरी नाम का एक पुराना मठ है, आदि पुरुष इस मठ के व्याघ्राम्वरी जी बड़े महात्मा हो गये हैं-इस समय इस मठ के उत्तराधिकारी पुरुषोत्तमगिरि विद्या के बड़े अनुरागी मालूम होते हैं एक बार पहले ये संस्कृत की पाठशाला भी स्थापित कर चुके हैं-इस बार महासभा के अधिवेशन में आये हुये काशी के पण्डितों का यथाशक्ति अच्छा सत्कार इन्हों ने किया—सौ पण्डितों को एक एक रुपया और एक वस्त्र दे सबों के साथ बड़े विनीत भाव का बर्ताव किया-इस तरह के यहां कई एक अखाड़े और मठ हैं जो वैभव और संपत्ति में बहुत अधिक हैं-पर उन अखाड़े के महन्तों को यह कभी नहीं सूझता कि इस तरह की बातें कभी करैं फकीर होकर भी अमीरों का कान काटना भलेही सीखे हैं-व्याघ्राम्वर मठ के अधिष्ठाता पुरुषोत्तमगिरि अवश्यमेव सराहना के योग्य हैं जो साल में दो एक बार इस प्रकार का भला काम कर गुज़रते हैं धन्य हैं ! ॥

दृढ़ संकल्प ।

"अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे नदैन्यं नपलायनम्" संकल्प की कैसी दृढ़ता इस वाक्य में प्रगट हो रही है "अर्जुन की दोही प्रतिज्ञा है न दीन होना न रण से पीठ फेरना" दीन हो गिड़गिड़ाते और शत्रु को देख भाग जाते तो अर्जुन में फिर बीरता ही क्या रह जाती-इसी संकल्प की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृढ़ता से कौरवों के सैन्य सागर को अर्जुन गोष्पद समान तैर के पार हो गये और भारत के युद्ध में भीष्म द्रोण करण आदि महारथियों को जीत अपनी विजय पताका गाड़ दिया—नेपोलियन बोनापार्ट वीराग्रगण्य महाविजयी क्यों हुआ इसी से कि वह अपने विचार और संकल्प का बड़ा दृढ़ था—कहावत चली आ रही है "तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार" यह हठ और है क्या यही सिद्ध संकल्प और इरादे का पक्का होना—दुर्बल चित्तवाले के मन में कभी धसैहीगा नहीं कि यह संकल्प की दृढ़ता है क्या बला-लाख और करोड़ में कोई ऐसे बिरले पुरुष सिंह उपज खड़े होते हैं—कोई ऐसी बीर प्रसविनी माता हैं जो इस तरह के संस्कारी पुत्र पैदा करती हैं—बहुत विद्या पढ़ने से अनेक भाषा जानने से विविध विज्ञान में प्रवीणता से यह उत्कृष्ट गुण मनुष्य में नही आता किन्तु न जानिये क्यों देश और जाति के सौभाग्य के उदय होने पर यह विशिष्ट भाव मन में जिस किसी के आप से आप आ जाता है—जिस समय किसी नेशन का उदय रहता है तब उस जाति में अनेक बरन शतसः इस तरह के महापुरुष उस में उपज खड़े होते हैं और निरन्तर ऐसे लोग जो महान् कल्याण के रूप हैं होते रहते हैं—हम कई बार अपने कई एक लेख में इसे दिखा चुके हैं कि हमारे पहले के ऋषियों में ऋषित्व या तपोबल और क्या था यही सिद्ध संकल्प या बिचार की दृढ़ता का होना और यह ऋषि परंपरा हिन्दुस्तान में दो हज़ार वर्ष पहले तक कायम रही-बौद्धों का ज़ोर होना कि ऋषि परंपरा का उच्छेद हो गया और तब से हमारी तनज्जुली बराबर अब तक होती ही जाती है-ऐसा मालूम होता है कि केवल वीर्य की रक्षा का इस के साथ कोई बड़ा गाढ़ा सम्बन्ध है-देश से ब्रह्मचर्य का उठ जाना हमारा बड़ा हानिकारक हुआ और अब तो उर्द्ध रेता कहीं रहे ही नहीं जब १२ वर्ष की उमर से आजन्म दुखी दम्पति का बिवाह हो जाने से वीर्यस्राव शुरू हो जाता है—यूरोप के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशों में अब भी दृढ़ अध्यवसाय और दृढ़ संकल्प वाले हैं सो इसी से कि वहां प्रौढ़ अवस्था तक वीर्य रक्षा रहती है-यद्यपि वे हम से बहुत अधिक भोगलिप्सू हैं किन्तु परिपक्क अवस्था में दोनों का दांपत्य संयोग किया जाता है तो उनके बल बुद्धि साहस विचार की गम्भीरता स्थिर अध्यसाय में कसर नहीं पड़ती-बहुत लोग सात्विक आहार को भी इस्का हेतु मानते हैं सात्विक भोजन और सात्विक आचार में भी कदाचित् यह शक्ति हो किन्तु वीर्य रक्षा के सदृश नहीं सो वीर्य रक्षा की यहां जड़ कटी हुई है तब दृढ़ संकल्प प्रजा में क्योंकर जगह पा सक्ता है "लतायां पूर्व लूनायां कुसुमस्यागमः कुतः" लाचारी है ॥

संस्कारजन्य और अभ्यास ।

संस्कारजन्य और अभ्यास दोनों जुदी २ बातें हैं-इन दोनों का ऐसा ही अन्तर है जैसा Nature and Art स्वाभाविक और कृत्रिम में है-कृत्रिम कभी २ स्वाभाविक को मात कर देता है किन्तु बहुत बातों में स्वाभाविक कृत्रिम को बढ़ने ही नहीं देता जैसा कवि की प्रतिभा जैसी उत्तम संस्कारजन्य है वैसी कृत्रिम नहीं-कालिदास की प्रतिभा को कवि मण्डली आज तक तरस रही है- इसे संस्कारजन्य कहो या ईश्वर की देन Geft कहो किसी पुरुष विशेष में कोई ऐसी विच्छित्ति विशेष आ जाती है जो सर्व साधारण में हज़ार बार अभ्यास करने पर नहीं आती-हमारे यहां किसी २ लोहार या बढ़ई में कोई स्वाभाविक विच्छित्ति विशेष ऐसी है कि कितने काम जो वे बना देते हैं उसे देख विलाइत के बड़े कलाकोविद Artist जिन्होंने वर्षों तक कारीगरी की विद्या स्कूलों में सीखी है दंग हो जाते हैं-रविवर्मा में जो चित्रकारी की असाधारण प्रवीणता है उसे भी हम यही संस्कारजन्य कहैंगे-नेपोलियन या रणजीतसिंह में विश्वविजेता बनने की शक्ति भी वही ईश्वरीय देन थी ऐसाही न्यूटन ने जो आकर्षणशक्ति प्रगट किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेम्स वाट ने भाफ की ताकत ज़ाहिर किया जिस से इस समय संसार का कितना उपकार साधन है यह सब भी वही संस्कारजन्य हम मानेंगे–साधारण सी साधारण बात जो प्रति क्षण हुआ करती हैं उस ने इन बड़े लोगों के मन में इस तरह पर जगह कर लिया और उस पर बुद्धि दौड़ाय ऐसे भारी २ सिद्धान्त और उसूल निकाले जिन से संसार का रूप एक प्रकार और का और हो गया यह सब उसी अद्भुत शक्ति का कार्य है जिसे हम संस्कारजन्य कहेंगे पीछे फिर उस पर अभ्यास ने उसे और अधिक बढ़ाया और उसको विशेष उन्नति पर पहुंचाया–डेग के ऊपर का बर्तन जिस्से डेग का मुंह ढांपा हुआ था भाफ से हील खटखटाते हुये हम सब लोग प्रति दिन देखा करते हैं पर किसी को इस पर कोई कौतुक नहीं होता न कोई इस को ख्याल करता है जेम्स वाट को यह अत्यन्त कौतुकावह जो बोध हुआ उसे हम संस्कार ही मानेंगे ऐसा ही सेव के फल का पेड़ से नीचे को गिरना न्यूटन को कौतुकावह हुआ इत्यादि बड़ी २ ईजादों के प्रथम प्रवर्तक सब संस्कारी जीव थे अभ्यास ने पीछे उसे शतगुण बढ़ाया ॥

पुस्तक प्राप्ति

भारतमित्र का उपहार।

हर साल भा–मि–वार्षिक मूल्य २) से १) अधिक लै निज ग्राहकों को उपहार दे विनोदित करता है–यह उपहार चार पुस्तकों में करीब ४८० पेज के है–एक तो भारतमित्र योंही जितने साप्ताहिक पत्र सबों में चढ़ा बढ़ा है, इस के संपादक की लेखचातुरी और टटकी से टटकी खबरों को पढ़ कौन न सन्तुष्ट होता होगा दूसरे यह उपहार तो मानो सोना में सुगन्धि हो गया है–इस वर्ष के उपहार में ४ पुस्तकें हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ली जहांगीरनामा ।

जिस को मुन्शी देवीप्रसाद जी मुनसिफ जोधपूर ने बड़े परिश्रम से संग्रह किया है-बादशाह जहांगीर ने अपना सब हाल अपने ही हाथ से फारसी भाषा में सविस्तर लिखा है उसी को मुन्शी जी ने संग्रह कर इतिहास प्रमियें की इच्छा पूर्ण की है ॥

२री स्फुटकविता ।

इस पुस्तक में इस पत्र के सम्पादक बाबू बालमुकुन्द गुप्त जी की हिन्दी में कुल तुकवन्दियें का संग्रह है इस की तुक बन्दियां भी कहीं२ बड़े ही मज़ेदार हैं जिस में दो एक खड़ी बोली की कविता तो अति रोचक है ॥

३री दशकुमार चरित्र ।

जिस को कलकत्ते के श्री विशुद्धानन्द विद्यालय के संस्कृत अध्यापक पं० अक्षयवट मिश्र ने अति सरल हिन्दी भाषा में उपन्यास के रूप में लिखा है इस गद्य काव्य का और भी हिन्दी अनुवाद हुआ है पर भाषा जैसी इस की सरल है दूसरे अनुवाद की नहीं ॥

४थी शिव शम्भु का चिट्ठा ।

दिल्ली दरबार से अब तक में शिव शम्भु शर्मा ने लार्ड कर्ज़न को कई हास्य मय पत्र लिखे थे जो भारतमित्र में समय २ पर छपता था वही अब अलग पुस्तकाकार छाप कर उपहार में दिया गया है यह चिट्ठा लोगों को इतना रुचा कि इस का अंगरेज़ी में तर्जुमा हुआ है ॥

उर्दू बेगम ।

बी उर्दू भाषा को धानी रंग का दुपट्टा ओढ़ाय प्रिया के रूप में बना एक अति मनोहर उपदेशावह हास्य मय उपन्यास लिखा गया है जिस में बी उर्दू के चटक मटक दार चरित्र का चित्र अच्छा खींचा गया है-साथ ही साथ कुछ उर्दू के प्रेमियें का भी चित्र इस में खींचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है जिस को एक बी० ए० ने लिखा है और पं० अमरनाथ शर्मा के प्रबन्ध से एडवर्ड प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ है पुस्तक व्यंग युक्त सब के पढ़ने योग्य है मूल्य ॥)

लिपि बोध।

इस पुस्तक के दो खंड हैं पहिले में हरेक अक्षरों के आकार कई तरह के दिये गये हैं जिस का नाम आकृति खंड है दूसरे खंड में उन्हीं हरेक अक्षरों के बनाने या किस तरह से बनाये जाते हैं इस का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है-इस के सिवाय हरेक अक्षरों की उत्पत्ति कि पहले उन का क्या रूप था और फिर क्या क्या हुआ आदि बातों को ससवानपूर-कानपूर निवासी लालता प्रसादात्मज गौरी शंकर ब्रह्मभट्ट ने बड़े श्रम से रचा है और इस ढंग की पहिली पुस्तक कदाचित् हिन्दी भाषा में रची गई है जो सब के उपयोगी वा संग्रह योग्य है-चित्र विद्या सीखने वालों को इस पुस्तक से बहुत कुछ सहायता मिल सकती है मूल्य आकृति खण्ड का मय डाक महसूल १) और विवरण खण्ड का मूल्य मय पोष्टेज ॥=) है ॥

नेपोलियन की जीवनी।

इस जीवनी का आदि काण्ड कलकत्ते के श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के प्रधान अध्यापक पाण्डेय उमापति दत्त शर्मा बी० ए० ने एवाटूसलाइफ आफ् नेपोलियन का अविकल हिन्दी अनुवाद किया है और हिन्दी ट्रैन्सलेटिङ्ग कम्पनी कलकत्ता द्वारा यह पुस्तक प्रकाशित हुई है निस्सन्देह आज दिन ऐसों ही की जीवनी पढ़ना चाहिये जिसे पढ़ कर लोग कुछ तो आलस्य निद्रा छोड़ें-भाषा सर्व साधारण के पढ़ने योग्य कुछ और सरल हिन्दी होती तो अच्छा था मूल्य ।) आना ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HAIR DYE SOAP.

बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन

इस साबुन के मलते ही सुफ़ेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं। एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफी है। मूल्य प्रति टिकिया १) रुपैया।

इसने दुनियां के ख़िजाबों (कल्फों) की कदर घटा दी।

केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गेरेंटी ३ साल मुफ़्त मिलेगी। मिलने का पताः-

मैनेजन हेअर डाई सोप कम्पनी लाहौर।

——:o:——

फोटो का काम।

फोटो में बहुत तरह के काग़ज वा रंग होते हैं जिन को बहुत से ग्राहक नहीं समझ सकते इस में जो ब्रोमाइड का काम होता है वह बहुत ही पायदार होता है पर इस में दाम अधिक खर्च होने के कारण कारीगर वा ग्राहक ज्यादे नहीं पसन्द करते-इसलिये हमने इस का दाम खास तौर पर रक्खा है कि सबों की इच्छा पूर्ण हो और कुछ दिन ठहरे-ब्रोमाइड खचित पुरुष को एक दफे देख लीजिये मानो सामने मुलाकात हो गई और उस की पुरानी बातें याद आ जांयगी इस तरह की पायदार ब्रोमाइड इनलार्जमेंट १०×१२ इञ्च का फोटो रहेगा और उस का कार्ड बोर्ड १४×१८ का दाम ६) रहेगा-और भी और बड़े २ साइज़ों की फोटो कम दाम में तैयार हो सकती है मेरे यहां काम रंग का भी होता है बतलाया भी जाता है पत्र द्वारा मालूम हो सकता है॥

हिं-प्र-के बहुत से ग्राहक इस के सम्पादक की फोटो मंगा भेजते हैं जिन को हम सूचित करते हैं कि सम्पादक महाशय की फोटो हमने ले लिया है जिन को लेना हो पत्र द्वारा सूचित करैं-मैं उन को वी० पी० से भेज सकता हूं और भी अयोध्या आदि स्थानों के बड़े २ महात्मा वा महानुभावों की फोटो मेरे यहां तैयार रहती है जिन की इच्छा हो मंगा सकते हैं॥ M. L. Bishwakarma.

नं० ६४ जान्स्टनगंज रोड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० २८ सं० ३ } **प्रयाग** { मार्च सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ सं० ३ | प्रयाग | मार्च सन् १९०६ ई०

तीर्थों की तीर्थता ।

पुण्य पुंज तीर्थीभूत जिन महात्माओं के नाम से या जिन की याद-गारी में इतने तीर्थ नियत किये गये हैं वे न जानिये कैसे महापुरुष रहे होंगे कि युगानयुग समय बीत जाने पर भी उस तीर्थ का महत्व अब तक बना है-श्रद्धालू विश्वास रखने वाले के मन में तीर्थ की पुण्य भूमि में पहुंचते ही कैसे २ पवित्र भाव उदय होते हैं वरन कलु-षित हृदय के लोग भी थोड़ी देर के लिये वहां पहुंच सात्विक प्रकृति के हो जाते हैं—जन्म पर्यन्त जो वैसी ही तबियत उन की बनी रहे तो उन के जीवनमुक्त होने में कोई सन्देह न रह जाय-तीर्थों में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असर देख प्रश्न उठता है कि इन तीर्थों में कौन सी ऐसी बात है जिस का इतना प्रभाव है—कितनों का मत है कि इस तीर्थता की कोई और बात नहीं है वरन Association of idias. वहां पहुंच भूत पूर्व वहां के वृत्तान्त या वहां के पुण्य पीयूषवारिधि समान उन महापुरुषों का स्मरण जिन के सुकृत का अखाड़ा वह भूमि है तीर्थता कही जायगी-जिन का मन सदा सुकृत की ओर झुका है पाप और किल्विष से कलुषित न हो सदा पवित्र वायु के संपर्क से हरा भरा और तरोताज़ा है उन्हें तीर्थ क्या पवित्र करेगा वरन वेही उस तीर्थ में जाय उसे पवित्र कर देते हैं जैसा कहा है ॥

"प्रायेण तीर्थाभिगमापदेशैःस्वयं ।
हि तीर्थानि पुनन्ति सन्तः" ॥

गंगा जी स्वयं कहती हैं ऐसा पुरुष कब आय स्नान से मुझे पवित्र करेगा जो पराई स्त्री परायाद्रव्य पराये द्रोह से मुंह फेरे हुये है ॥

"परदार परद्रव्य परद्रोह पराङ्मुखः—
गंगा ब्रूते कदागत्य मामयं पावयिष्यति" ॥

और भी "शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्" मन पवित्र है तो तीर्थ से क्या "आत्मैवतीर्थं शुचिमानसानाम्"-तात्पर्य यह कि तीर्थ में तीर्थता संपादन करने वाले ऐसे ही सात्विक जन हैं जो मन के पवित्र हैं-ऐसे महापुरुष केवल तीर्थ में तीर्थता संपादन के हेतु हुये तो कौन सी बड़ी बात हुई अपिच ऐसों से तो समस्त जनपद पवित्र है जहां होंगे उस देश या भूमि को सनाथ किये होंगे—जिस देश या काल में ऐसे लोग अधिक हों वही देश तीर्थ और काल पुण्य काल है-दान शील श्रद्धालुओं को चाहिये ऐसे पुण्य तीर्थ और पुण्य काल को हाथ से न जानें दें जहां तक हो सके इस का लाभ उठावें। अनधिकारियों में दान का असद्व्यय कर पुण्य के बदले पाप न बटोरैं-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहां ऐसे विवेकी दानियों के न रहने ही से देश निरन्तर क्षति ग्रस्त होता जाता है-इस भूमण्डल में यूरोप और अमरिका के कई एक देशों का सिर ऊंचा है और समस्त जन समूह में उस देश में जो जाति बसती है वह सब के ऊपर चमक रही है सो इसी से कि उन के बीच ऐसे विवेकी दान शील विद्यमान् हैं-दानियों की कमी हमारे यहां भी नहीं है पर विवेक नहीं है तो "विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः" देश का देश नीचे को गिरा जाता है और अनधिकारियों में उन के कुढंगे दान से तीर्थ की महिमा भी घटती जाती है यही लीला जो कुछ दिन और रही तो इन पुण्य तीर्थों पर श्रद्धा काहे को बाकी रह जायगी-और २ देशों में धर्म संबन्धी या समाज संबन्धी बातों में उपयोगिता Utility. का बहुत ख्याल लोग रखते हैं हमारे यहां भी जितनी बातें धर्म या समाज से सम्बन्ध रखती थीं सबों में उपयोगिता पर ध्यान रहा। ऋषियों ने जिस का जब जैसा उपयोग समझा तब तैसा उसे प्रचलित किया अब वही Custom. निरा प्रचार से उस का बर्ताव देखा जाता है-अन्ध परम्परा में जो चल पड़ा सो चल पड़ा तले तक दृष्टि फैलाय उस के उपयोग पर किसी का ध्यान जाता ही नहीं जिस किसी ने उपयोग पर नज़र दौड़ाया तो "यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धम्" उपस्थित हो ऐसा गला घोटने लगता कि उस तत्व जिज्ञासू की एक नहीं चलती और यह प्रचार ही अब इस समय हमारा धर्म कर्म आचार विचार रहन सहन सब कुछ हो रहा है-धन्य अज्ञता महाराक्षसी तेरा बोल बाला रहे तू साम्प्रत बड़ा उपकार कर रही है नहीं तो यह अभागा भारत कभी का उठ खड़ा होता "कस्टम्" प्रचार के नाम से हज़ार मन का पत्थर लिये तू भारत की छाती पर सवार रिवाज की गुलामी में तत्पर है ॥

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिवाज की गुलामी।

रिवाज की गुलामी भी क्या ही मज़ेदार चरपरी चटनी है हम चाहते हैं आज अपने ग्राहकों को इस का ज़ायका चखाते चलैं। यावत् विज्ञान दर्शन और तर्क सब इस रिवाज राक्षसी का मुंह जोहते रहते हैं। वैज्ञानिकों की टटकी से टटकी ईजाद दार्शनिक और तत्ववेत्ताओं के गम्भीर से गम्भीर सिद्धान्त रिवाज के अनुकूल हुए तो सब भांत माननीय और शिरोधार्य हैं, प्रतिकूल हुए तो चाहो वेद वाक्य भी क्यों न हो त्याज्य है-देवदूत, नबी, फरिश्ते, आचार्य, गुरु, उपदेष्टा सबी अपनी २ नबूअत, उपदेश, और बाज़ के लिये रिवाज का सहारा ढूंढ़ते रहते हैं Hereditery. परम्परागत रिवाज का पृष्ठपोषक या पुश्त पनाह बन इस में दूनी दमक पहुंचाता है। रिवाज ही का दूसरा नाम सनातन है हमें रिवाज से कोई द्रोह नहीं है जो इस का योग उपयोगिता के साथ निबहा जाय। जहां २ और जिस में रिवाज का उपयोग प्रत्यक्ष है वहां वह किसी तरह त्यागने के योग्य नहीं वरन् सर्वथा ग्राह्य है। कनौजियों में रिवाज है घी का पका हुआ अन्न जिस समय पकाया जाय या जिस समय उसे भोजन करने लगैं पवित्रता से पकावैं और भोजन करैं-बीच में उस के ले जाने या उठाने धरने में शूद्र का स्पर्श हो जाय तो उसे किसी तरह दूषित नहीं मानते। अच्छा है एक तरह पर झूरी आचार की छिलावट से बहुत कुछ गला छुटा रहा। ऐसा ही महाराष्ट्रों में चलन है जल-पात्र हाथ में लिये हों तो कच्चा अन्न दाल भात एक स्थान से दूसरे स्थान पर कोसों ले जाने पर भी अनाचार नहीं है पर पंक्ति में भोजन करते समय एक का दूसरे से स्पर्श हो जाय तो भोजन करने वाले उठ खड़े होंगे। पंचद्रविड़ मात्र का सह भोजन है पर स्पर्श एक दूसरे का न हुआ तो सह भोजन में कौन सी बाधा पड़ी यह काम महाराष्ट्रों का अवश्यमेव सराहना के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग्य है–मथुरिया चौबों में जूठे मुंह किसी खाद्य वस्तु को छू लें तो वह भी जूठी समझी जायगी पर किसी तकरीब बिवाह आदि में कुल बिरादरी भर एक ही ग्लास में पानी पी लें कभी उसे उच्छिष्ट न मानगे। उन के समग्र मण्डल के ऐक्य साधन का बड़ा उपयोग इस में पाया जाता है। जल के शत्रु गुजरातियों में माघ पूस की आधी रात को भी बिना घड़ों पानी से नहाए मुंह में ग्रास न देंग न जानिये इस रिवाज का क्या उपयोग समझा गया है? गायत्री जपने को कौन कहै शायद आती भी न हो पर नहायंगे दिन में छ बार अवश्य॥

सर्वस्व बिगड़ रहा है; हम लोग रद्दी हो गये घूर में मिले जाते हैं पर ८ या ९ वर्ष के भीतर कन्या ब्याह देने की रिवाज जो निकल पड़ी उसे हम नही छोड़ते। मुसलमान बादशाहों के अत्याचार के समय अलबत्ता इस की उपयोगिता रही होगी पर वह अब रिवाज हो गया। केवल रिवाज हो यह कुरीति रह गई हो सो नहीं वरन् इस ने यहां तक टांग पसारा कि स्वर्ग को सीधा सिधारना या नरक में जा गिरना इसका परिणाम हो गया। अब सोशल कानफ्रेंस वाले बिधवा बिवाह की भी रिवाज निकाला चाहते हैं यह नहीं सोचते कि बाल्य बिवाह का बुरा रिवाज जारी ही है जिस से समाज रसातल में पहुंचती जाती है तब इस दूसरी बुराई का बीज हम क्यों बो रहे हैं? कुलवती अक्षतयोनि वाली बिधवायें बैठी रह जांयगी; जारिणी जिन के आंख का पानी ढुरक गया है, नये २ पति को बराबर करती और छोड़ती रहेंगी। कुलवती बाल बिधवाओं को भ्रूण हत्या का पाप आरोपण किया जाता है और पुरुषों में कोई दोष नहीं लगाया जाता–निश्चय मानिये स्त्रियों में इतना ज़ब्त रहता है कि वे अपना सतीत्व निबाह लेंयदि उन्हें कोई दुष्ट पुरुष उन का सतीत्व भंग करने वाला न बहकावै। मसल है "न सूत न कपास कोरियों से लठिं लठा" बिधवा बिवाह पर बड़ी २ वक्तृतायें होती हैं लम्बे चौड़े लेख लिखे जाते हैं किन्तु जिन बाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिधवाओं को व्याहना है उन की राय कभी किसी ने ली है। बिधवा बिवाह का रिवाज न होने से मैं समझता हूं वे मर जायंगी और इसे कभी मंजूर न करगी समाज में अपनी हेठी होना सौ बार मर जाने के बराबर है-दूसरे बाल्य बिवाह की कुरीति से देश में जन संख्या बढ़ती जाती है बिधवायें भी जो व्याही जाने लगेंगी तो जन संख्या और भी बढ़ैगी-और अभीष्ट देश के लिये यही है कि जन संख्या कम हो। प्रति चौथे पांचवें वर्ष अकाल की कृपा से और भूमि कर उगाहने में अंगरेज़ी शासन की कड़ाई भूमि से इतनी उपज नहीं होने देती कि प्रति दिन बढ़ती हुई जन संख्या को पाल पोख सकै बंगाली बिधवाओं में एकादशी को निराहार रहने का रिवाज़ है जल पीने की यहां तक कड़ाई है कि कदाचित् कोई बिधवा एकादशी के दिन मरती हो तो मुंह में गंगाजल देने के एवज़ कान में जल छोड़ते हैं-महाराष्ट्रों में बिधवा बालिका भी हो तो उसका सिर मुड़ा देते हैं। खत्रियों में महीनों और बरसों तक घर में कोई मौत हो जाने पर लंघन अर्थात् दिन भर फाका और सियापा रखने का रिवाज है। प्रत्यक्ष में इस तरह की निर्दय रिवाजों का क्या उपयोग है कुछ मन में नहीं आता पर किसकी ताकत जो उन्हें रोक सके-रिवाज़ समाज ग्रथन का एक अंग सा हो गया है इस की गुलामी केवल हिन्दुस्तान ही में हो सो नहीं यूरोप के देशों में भी समाज रिवाज की गुलामी से बरी नहीं है-जैसा एक पुरुष के दो स्त्री नहीं हो सक्ती-बंगाल में कुलीन लोगों के १८ व्याह तक हुये हैं-विलाइत में एक साहब दो मेम नहीं कर सक्ते उस की उपयोगिता प्रत्यक्ष है हज़ारों तनखाह पाने पर भी एक का बोझ नहीं सम्हाले सम्हलता कर्ज़दार रहते हैं तब दो का बोझ कैसे उठा सकते हैं-स्त्री के मर जाने पर दूसरा व्याह उस की बहन के साथ करने का रिवाज अंगरेज़ों में नहीं है जो कर लें तो समाज में मुंह दिखलाने लायक नहीं रहते इस से क्या उपयोग है कुछ समझ में नहीं आता-मातुल कन्या परिणय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पलांडु भक्षण दोनो शास्त्र निषिद्ध हैं पर दाक्षिणात्यों में इस का रिवाज होने से समाज में दूषित नहीं; कुलीन घराने वाले भी मामा की लड़की व्याह लेते हैं और वेद की समग्र संहिता कण्ठाग्र किये हैं पर प्याज खाने से नहीं हिचकते-ऐसा ही मुसल्मानों में सिर्फ दूध का बरकाव रखते हैं सगे चचा की लड़की व्याह लेना शरा के अनुकूल है-इत्यादि चलन या रिवाज के सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं जिन में कहीं २ तो उस चलन का उपयोग बिल्कुल साफ और प्रत्यक्ष है कहीं उस का उपयोग समाज में ढूंढने से भी नहीं मिलता बल्कि उपयोग के बदले समाज को उस्से बड़ी हानि पहुंच रही है॥

भारत का त्रिकाल।

हमारे यहां पहले के ऋषि मुनि को भूत भविष्य वर्तमान् तीनों काल का ज्ञान था और वे त्रिकालज्ञ कहलाते थे बल्कि भविष्य का ज्ञान उन के तपोबल या ऋषित्व का एक अंग था। अद्भुत प्रतिभा वाले इतिहासवेत्ता प्राकृतिक नियमों के हेर फेर और अदल बदल से महीनों और वर्षों पहले किसी नई घटना को बता देते हैं और जैसा वे पहले से बता देते हैं या लिख देते हैं प्रत्यक्षर तदनुकूल होता है वाराह मिहर ने अपनी संहिता में लिखा है कि जो हमारे लिखने के अनुसार प्रति दिन भचक्र मिलाता रहे तो भविष्य के कथन में उस की वाणी कभी मिथ्या न हो-वर्षा के विचार में नारद ऋषि कृत मयूर चित्रक एक ग्रन्थ है बरसात का भविष्य ज्ञान उस के द्वारा भरपूर हो जाता है-अस्तु अब भारत के सम्बन्ध में भूत वर्तमान् और भविष्य कैसा था है और होगा यह इस समय उद्देश्य या उपादेय विषय है। तहां भूत भारत का कैसा था यह किसी से छिपा नहीं है धरती सोने फूल फूली थी सब ओर अमन चैन था घर २ आनन्द बधाई बज रही थी किसी को किसी बात की कमी न थी-वर्तमान् जैसा दुर्गति का है सो भी किसी से छिपा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है आध्यात्मिक आधि दैविक आधि भौतिक त्रिविध तापतापित प्रजा शासन की कड़ाई से पेट की अग्नि से झौंस रही है-जहां मणिमुक्ता प्रवाल का कंकर पत्थर के समान ढेर था वहां अब कारखानों में चिमनियों के सुलगाने को जहां तहां पत्थर के कोइलों का ढेर पाया जाता है-कदाचित् वेही हीरे समय के प्रभाव से बदल कर अब कोइले हो गये हैं "किमिस्ट" रसायन विद्या जानने वाले कहते भी हैं कि कोइला और हीरा दोनों में एक ही रसायनिक पदार्थ है-पहले छोटे २ गाम्रों में भी लक्ष्मी का प्रकाश था सब लोग प्रफुल्लित अपनी गाढ़ी मिहनत की कौड़ी गांठ बांध सन्तुष्ट घूमते फिरते थे एक कमाता था दस खाते थे समस्त देश लक्ष्मी का विलास स्थान था-अब मुल्क का मुल्क उजाड़ हो कलकत्ता और बंबई बसा है लक्ष्मी का प्रकाश केवल इन्हीं दो स्थानों में पाया जाता है-देश भर श्मसान सा सूना पड़ा है असन्तोष यहां तक छाया है कि एक घर में दस हैं तो दसौ गाढ़ी मेहनत से कमांय तब पेट पाल सक्ते हैं पहले घर २ ब्राह्मणों के वेद पाठ की कलरव ध्वनि स्थान २ में गूंजा करती थी-अब मियां लोगों के बांग देने का कठोर शब्द और गिरजाघर के घण्टाओं का घोर नाद कानों की चैलियां झारता है-उस समय सौत्रामराय आदि यज्ञों में सोमपान की चाल थी अब ह्विस्की और शांपेन की भरमार है-कोई साल नहीं जाता जिस में बड़े २ शहरों में शराब की दो चार नई दूकान न खुलती हों-ईश्वर का निराकरण करने वाला नास्तिक भाव प्रजा में न फैले इस की चैाकसी के लिये उस समय मनु ने अपने धर्मशास्त्र में नास्तिक को बध दण्ड का नियम रक्खा था अब ख्याल का आज़ाद और नेचरिया न हुआ तो उस के पूर्ण शिक्षित होने में कसर समझी जाती है—कोई समय पहले हम दुनियां भर को अपने यहां की कारीगरी से रोज़मर्रे के काम की चीज़ें कपड़े आदि मुहैया करते थे अब यहां तक अपाहिज आलसी और निकम्मे हो गये कि हाथ भर तागा और एक सूई के लिये तरसते हैं

ÇC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशियों का मुंह ताक रहे हैं। ढाका का मलमल कश्मीर का शाल लखनऊ का चिकन बनारस की कारचोबी उजड़ि गई। दूर २ के राजा और बादशाह यहां के सम्राज चक्रवर्ती नरेशों की चरण धूलि को अपने लिये मान और प्रतिष्ठा का द्वार समझते थे अब दो अक्षर की कोई उपाधि पाने को या तोपों की सलामी बढ़ जाने को राजा लोग लाखों चन्दा दे डालते हैं और उच्च पदाधिरूढ़ कर्मचारियों की खुशामद करते हैं। भूत पूर्व यहां के योगी और संयमी अपनी दलन शक्ति और उपदेश से पृथ्वी भर के लोगों को अचंभित किये थे। यहीं बुद्ध देव हुए जिन्हों ने आधे से अधिक एशिया खण्ड को बौद्ध मता-वलम्बी कर डाला। मोक्ष मार्ग बतलाने में उपनिषद् और गीता से बढ़ कर आज तक किसी देश के दार्शनिक और बुद्धिमान् ने कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं रचा। जहां के आचरण की नकल सब लोग करते थे और आचार विचार रहन सहन के क्रम को भू भाग के सब लोग सीखें ऐसा मनु ने अपनी स्मृति में लिख दिया है यथा–

अस्मिन्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥

कहते शरम और हंसी आती है अब उन्हें पादरी साहब मुक्ति का रास्ता दिखलाने और "मोरालिटी" सिखलाने आए हैं। गंवारू कहावत है "सत्तर दांव बसन्ता जानै तेहका सिखावैं ननकू"। उस समय ब्राह्मण तीनो वर्ण के लोगों को अपने मूठी में किये थे, किसी की सामर्थि न थी कि इन से आंख मिला सके। अब इस समय बनिया बक्काल भी ब्राह्मण बना चाहते हैं, और काछी कुनबी खत्री। सच है "धोबी के घर धरम दास हैं, बाह्मन पूत मदारी" हम आर्य हैं, धन्य हमें जो भारत की पुण्य भूमि में जन्मे हैं, ऐसा कहते हम अपना भाग्य सराहते थे वही अब हमें शरम आती है जब ... तक ... र से घिनाते हुये उद्धार पाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमे नेटिव कहते हैं। शुशिक्षित हो यही जी चाहता है कैसे हिन्दू समाज से निकल भागैं और विलाइत की रास्ता पकड़ैं। डासन के घर के बने बूट के मुकाबिले दिल्ली की बनी जूतियां पांव में भद्दी मालूम पड़ती हैं लुधियाना और मुरादाबाद के बने मोटे कपड़े हमारे नव युवकों के कोमल अंगों में गड़ते हैं। अस्तु गाई गीत को अब कहां तक गावैं इस में सन्देह नहीं भारत का भूत काल बड़ा चमकीला था पर यह सब तो वही बात हुई कि हमारे बाप ने घी खाया था न बिश्वास हो तो हमारा हाथ सूंघ लो। अवनति के इस धुंधले ज़माने में पड़े २ टटोलते हुये आप के इस बढ़ावा देने से अब कुछ काम चलेगा? "बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले" आगे के लिये अब क्या होनहार है सो ईश्वर जाने पर यह अवश्य कहा जा सक्ता है कि सदा सब के दिन एक से नहीं रहे जो उठा है वह गिरेगा और जो गिरा है वह कभी न कभी उठैगा भी। यह किसी तरह असंभव नहीं है कि भारत अपना पहिले का महत्व और गौरव अब न प्राप्त कर सके। और उस महत्व को फिर पा जाना किसी तरह दुष्कर नहीं यदि हम में Perseverance दृढ़ अध्यबसाय या दृढ़ संकल्प, आत्म गौरव Self respect, आत्म निर्भर Self helf; आत्म त्याग Self Sacrifice और स्वत्व की पहचान स्थान पावे। अच्छा कहा है–

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूतिकर्मसु।
भविष्यतीत्येवमनः कृत्वा सततमव्यथैः॥

हमारा काम अवश्य होगा ऐसा मन में ठान उठना चाहिये, जागते रहना चाहिये, जो काम सम्पत्ति का बढ़ाने वाले हो उस में जुट जाना चाहिये। और वेही अपना काम भरपूर करने लायक होते हैं जो मुह से बहुत बड़बड़ाया करते ... गये कि हाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहत्यग्निरवाक्यस्तु तूष्णीं भाति दिवाकरः ।
तूष्णीं धारयते लोकान् वसुधा सचराचरान् ॥

आग चुप चाप जला देती है ; सूर्य चुप चाप प्रकाश पहुंचाता है ; धरती चुप चाप चराचर स्थावर जंगम समस्त संसार का बोझ अपने ऊपर लिये है । सच है जो गरजी सो बरसी क्या ॥

गर्जति शरदि नवर्षति वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः ।
नीचो वदति नकुरुते नबदति सुजनः करोत्यवश्यम् ॥

शरत् काल के मेघ बरसते नहीं गरजते बहुत हैं, बरसात के मेघ बरसते हैं पर गरजते नहीं । नीच लोग कहते बहुत हैं पर करते नहीं पर सुजन करते हैं कहते नहीं । बिपत्ति में पड़ा अपने पुत्र से कोई कहता है—

बहुकृत्ये निरुद्योगः जागृतव्ये प्रसुप्तकः ।
निर्भयस्त्वं भयस्थाने हा पुत्रक विहन्यसे ॥

जब तुम्हें बहुत काम करना है तब तुम निरुद्योग बैठे हो ; जागना चाहिये तब तुम सो रहे हो जहां भय है वहां तुम निडर बैठे हो पुत्र तुम व्यर्थ मारे जाते हो । हम हिन्दुस्तानियों के लिये यह ऊपर का पछतावा बहुत ठीक है । इस अंगरेज़ी राज्य के स्वास्थ्य और सुप्रबन्ध में जब सब तरह का सुबीता है और ज़ाहिरा में सब द्वार हमारे लिये खुले हैं तब हम निरुद्योग हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं, हमारे चारो ओर जितने देश और जितनी कौमें सब उद्योग में लगी जागती हुई अपना २ काम कर रही हैं पर हम घोर निद्रा में सो रहे हैं । गूढ़ पालिसी से हमें सशंकित रहना था सो हम निःशंक हैं । अभी बहुत ही थोड़े लोग हैं जो इस राजकीय पालिसी के मर्म तक पहुंचे हों तब हमारी दीन दशा क्यों न हो । इस दीनता से उद्धार पाने को हमे सर्वथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराश न होना चाहिये केवल इतना ही कि हम पुरुषार्थ बिहीन हो गये हैं, हमारे पौरुषेय गुणों में मुरचा लग गया है, उसे साफ कर डालें, तब अचरज क्या कि हमारा भविष्य गौरव और महत्व भूत पूर्व महत्व से भी अधिक चमकीला हो जाय। स्वदेश पर अनुराग भास्कर के प्रकाश का अरुणोदय अब हो चला है ईश्वर सानुकूल रहा तो देश से "अभूतिमसमृद्धिंसर्वांनिर्णुद मे गृहात्" जो गुलामी का कष्ट झेल रहे हैं वे प्रभु बन बैठेंगे जिसे हम लम्बे चौड़े व्याख्यानों में केवल मुह से कहते हैं उसे करके दिखा देंगे। प्रत्येक नगरों में स्वदेशी आन्दोलन मच रहा है स्वदेशी बस्तुओं के कारखाने खुलते जाते हैं जापान आदि देशों में नव युवक कला कौशल सीखने को जा रहे हैं। भविष्य के लिये यह सब बहुत अच्छा है किन्तु हमारे में Nationality जातीयता या मुल्की जोश आने में फिर भी अभी बड़ी कसर है। देश में लोग नौकरी के लिये लालयित हो रहे हैं इस का एक कारण यह भी मालूम होता है कि यहां काम न रहने से न पास भरपूर पूंजी रहने से पढ़ लिख लोग और करैं क्या सिवा इसके कि बंगले २ नौकरी तालाश करते डोलते फिरैं। पहले के लोगों ने सेवा वृत्ति को अधम ठहराया था और व्यापार को उत्तम पर इस समय व्यापार में बहुधा टूटा पड़ जाने की भय से नौकरी को लोग अधिक चाहते हैं। सब के ऊपर एक बात यह बड़ी त्रुटि की हमारे में है कि राजकीय प्रसाद को हम बहुत अधिक चाहते हैं। छोटे लोगों का तो कुछ कहना ही नहीं बड़े २ लोग गवर्नमेंट की दी हुई दो अक्षर की कोई पदवी के लिये लाखों खरचने को उद्यत रहते हैं। राजा लोग रेज़ीडेन्टों की खुशामद में साहब का मुह जोहा करते हैं पर बहुधा कृत कार्य नहीं होते। कौमीयत तथा मुल्की जोश का हमारे में कहां तक अभाव है यह इस से बहुतही स्पष्ट है। व्यापार में घाटा की संभावना यह हमारी भूल है बुद्धि परिश्रम और ईमानदारी से रोज़गार करनेवाले को कभी घाटा नहीं होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापार की कुंजी केवल ईमानदारी Honesty है जिस का अभाव हम अपने में बहुत अधिक पाते हैं। नही तो विलाइत की अपेक्षा हमें सब बातों का सुबीता है मज़दूरी यहां सस्ती है चीजें कच्चा बाना यहीं की पैदावार है केवल आपस की हमदरदी और सब के ऊपर ईमानदारी की ज़रूरत है। यह सब एक दिन यहां होगा और उसी को देदीप्यमान् भारत का भविष्य कहेंगे॥

बलीबर्द ।

बलीबर्द तुम धन्य हिन्द के तुम्ही सपूत कहाये।
तुम से हारे सबै रहे जे वाहक भारी भरके॥
तुम्हरो अटल लगाव भूमि से कर्षक तुम्हे लगाये।
जोतैं भूमि हर्ष निर्भर ह्वै मुठिया हल की धर के॥

गर्दभ ।

गर्दभ तुम्हरी सहन शीलता किमि कोउ करै बखान।
रजक केर तुम संपत सगरी है यह बात पुरान॥
लाद पीठ पै लादी वाकी पहुंचायो तेहि घाट।
तहू कृतघ्न रहै धोबी वह यहै जगत को ठाठ॥

श्वान ।

धन्य श्वान है भाग तुम्हारे घूमहु चढ़ चढ़ गाड़ी।
तनिकहु सो जो रोग होय तुम देखहिं डाकृर नाड़ी॥
आदर तुम्हरो देख २ सब लोग रहे भौचक्के।
सिखी खुशामद तुम से बहु जन ह्वै साहब के कुत्ते॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उष्ट्र ।

तुम्हरी दशा उष्ट्र जी ऐसी जैसे भारत बासी ।
लादौ फांदौ गठरी ढोवहु तबहू सदा उदासी ॥
कबहुं मगन तुमहि नहि देखा काम करहु चहे कितनो ।
कारण यही नकेल तुम्हारी रही अन्य के कर मो ॥

आदमी ।

पै लीला है अद्भुत तेरी हे आदम के पूत ।
बड़ी घमण्डी बातें करता तू शैतां का दूत ॥
पूरब पश्चिम कहीं क होवै आादत मे तू वन्दर है ।
पशुओं के सब ऐगुन तुझ मे तू भी अजब मुछन्दर है ।

सुशीला सौदामिनी अथवा स्नेह विजय ।

(शिक्षाप्रद एक सामाजिक बार्ता)

खंडवावास्तव्य–चम्पा लाल उपनाम सुधाकर कवि लिखित

दारिद्र और अपमान ।

हे दयाधाम परमात्मन् ! इस दुःखिता अबला को अभी और दुःख पहुंचाने की क्या तेरी इच्छा है ? समाज से जो मुझ पर लोगों का सद्भाव था बिदा हो गया, मित्र शत्रु हो गये, धन भी पास न रहा, अब मैं भिक्षुकी सी भिक्षा मांग अपना जीवन अपकीर्ति के साथ बिता रही हूं । कितना निंद्य मेरा जीवन और कैसी अधम यह मेरी वर्तमान दशा है मैं क्या थी क्या हो गई, हाय यह विचार मुझे पागल किये हुये है। इस तरह एक बूढ़ी स्त्री एक झोपड़ी में बैठी हुई आपही आप बड़बड़ा रही थी । कुछ देर बाद "सौदा अरी सौदामिनी यहां तो आ" कह वह चिल्ला उठी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्काल षोड़श वर्षीया रूपवती नव यौवना बाला उसके सामने आ खड़ी हो गई। सर्वांग सुन्दर कोमलाङ्गी इस बाला की रूप माधुरी इस कारण और भी अधिक देदीप्यमान थी कि यह इस के वयः सन्धि का समय था। इस के एक २ अङ्ग सुडौल और हृष्ट पुष्ट थे विधाता ने इसके एक २ शरीरावयव में सौंदर्य और तरुनाई की लवनाई कूट २ के भर दी थी। इसकी रूप माधुरी का विशेष बर्णन न कर केवल इतना ही कहना बहुत है कि बिधाता ने इस के निर्माण में उपमेय बस्तुओं में किसी को शेष न रक्खा यह मानो परमेश्वर की अलौकिक लेखनी का लिखा हुआ एक चित्र थी। इसकी सुन्दरता के बर्णन में लेखक की कल्पना शक्ति छोर को पहुंच अन्त को बिवश मौन धारण कर लेती है सो इसी एक बात से स्पष्ट है कि केवल मुखारविन्द की रचना में बिधाता को किन २ बस्तुओं की आवश्यकता पड़ी थी जैसा इस कवित्त से स्पष्ट है॥

कोमलता कंज तें सुगन्ध ले गुलाबन तें चन्द्र तें प्रकाश लीन्हो उदित उजेरो है। रूप रति आनन तें चातुरी सुजानन तें नीर लै निपानन तें कौतुक निबेरो है। ठाकुर कहत यों मसालो विधि कारीगर रचना निहारि को न होत चित चोरो है। कंचन को रंग ले सवाद ले सुधा को बसुधा को सुख लूटि कै बनायो मुख तेरो है॥

केवल मुख के बनाने में ब्रह्मा ने इतनी बस्तुओं की योजना की है। तब हमारे विज्ञ पाठक तथा पाठिकायें अनुमान कर लें कि कामिनी के इतर अंग बनाने में विधि ने अपनी कितनी कारीगरी खरच की होगी। अस्तु सौदामिनी ने आते ही माता से बिनय पूर्बक पूछा, "क्या मां! मुझे किस लिये बुलाया? क्या मुझ से कुछ अपराध हो गया है?"

मा-अपराध क्यों होगा। पुत्री! तू आज खाय गी क्या? घर में तो अन्न का एक कण भी नहीं है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौदामिनी क्या चिन्ता यदि तेरे पास पैसे न हों तो मैं धनंजय से थोड़ा धान ले आऊं। जब तक वो जीता है तब तक अपने को किस बात की फिक्र है।

माता को इस से सन्तोष नहीं हुआ, बोली, "मूढ़ छोकरी रोज़ तुझे उधार वस्तु देकर धनंजय पैसे किन के पास से लेगा? वह भी बेचारा गरीब ठहरा, आज तक वह अपने को पचास रुपये का माल तो दे चुका है" ॥

सौदामिनी–ऐसा भी हो तो क्या? क्या धनंजय न देगा तो अपन भूखे मर जायगे? जिन का धनंजप ऐसा सहाय कर्त्ता नहीं होता वे सब क्या मर थोड़े जाते हैं। परमात्मा अपना पालक है उसी ने अपने को जीवन दिया है, तो धनंजय अथवा दूसरे किसी के द्वारा वो अपने जीवन के साधनों को पूरा करही देगा! इस की क्या चिन्ता। ओः! अपने को तो अपनी ही फिकर है, किन्तु उसे जो सब संसार की फिकर है ॥

मा–"पुत्री! तू ये कैसी मूर्खता भरी बातें कर रही है? परमेश्वर ने अपने को हाथ, पैर, आंख, मुख तथा इन से भी अधिक उपयोगी बुद्धि और सारासार का विवेक पृभति साधन, प्रदान किये हैं। इस से यदि अपने को जीना हो तो अपना निर्वाह स्वयं अपने ही से करना चाहिये। यदि सो नहीं हो सके तो मृत्यु तो बनी बनाई है ही। परमेश्वर क्या लाके अपने घर में थोरे डाल जायगा? उसने मनुष्यों को साधन प्रदान कर दिया है जिस का प्रयोग करना उनके आधीन है" ॥

सौदामिनी–"मृत्यु? मृत्यु तो अमिट है अमीर और ग़रीब सभी के सिर पर चढ़ी नाचा करती है। किसी से भी टल नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती। तब मृत्यु से क्या डर। मुझे मृत्यु से किसी प्रकार का खेद नहीं होता"॥

मा–हां ठीक है तुझे अपने मानापमान तथा किसी की चिन्ता तो है ही नहीं॥

सौदामिनी कुछ काल तक चुप रह बोली "कदाचित् अब धनंजय उधार न दे तो जीवन का निर्वाह किस प्रकार होगा? किन्तु नहीं दीन दयाल भगवान् ऐसा क्रूर नहीं होगा। अपने निराधार बालकों को भूखे मरते वो नहीं देख सकेगा!"

मा–"भूख से मर जाना क्या तुझे असंभवित लगता है? क्षुधा की पीड़ा से सहस्त्रों मनुष्यों को मरते मैंने अपनी आखों से देखा है। अपने भाग्य में भी इसी प्रकार मृत्यु बदी हो तो क्या आश्चर्य! बेटी! यदि तू न होती तो मुझे खाने पीने की कुछ भी परवाह नहीं होती। बिना खाये केवल पानी पी कर ही मैं बहुत दिन तक अपना जीवन टिका सकती हूं। निर्वाह के लिये नौकरी भी कर सकती हूं। परन्तु तू ही मेरे निर्भय मार्ग में भय उत्पन्न करने हारी है तू वह गांठ है, कि जिस ने मुझे इस संसार स्तम्भ से जकड़ कर बांध रक्खा है॥

"ये सब उद्गार तथा बीती बात का स्मरण निरुपयोगी है" सौदामिनी ने ज़रा स्तब्ध रह कर कहा "परन्तु मां! अपन ऐसा न कर पटना चल दें तो क्या हो?"

"पटना" इस शब्द उस वृद्धा स्त्री के हृदय में सोते हुये क्रोध रूपी विकराल सिंह को जगा दिया। वो अत्यन्त शोकाकुल हो गई नेत्रों से आसुओं की धारा उसके शुष्क कपोल पर बहने लगी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतर अनेक दुःखों को वो सहन कर सकती है, किन्तु इस "पटना" का नाम मात्र उस से नहीं सहा जाता सो इसलिये कि पटना में एक धनाढ्य गृहस्थ के पुत्र के साथ सौदामिनी का संबन्ध हुआ है। वह धनाढ्य महा अभिमानी है। अभिमान से सौदामिनी के माता पिता के दारिद्र होने के कारण उस ने इस से अपना सब प्रकार का सम्बन्ध तोड़ डाला था। हाय! दारिद्र भी इस अवनि पर एक प्रकार का पाप ही है, जिस के कारण धनवान् लोग दारिद्र्य पीड़ितों को स्पर्श करने से भी हिचकिचाते हैं। इसलिये यदि सौदामिनी के पिता के परलोक होने पर दरिद्रता के कारण अपनी निर्धन पुत्र वधू को अपने सब सांसारिक वैभव के भंडार रूप राज महल समान सुन्दर सदन में उस के श्वशुर ने प्रवेश करने को मना कर दिया हो तो क्या आश्चर्य! अब सौदामिनी एक धनाढ्य पिता की पुत्री न रही, किन्तु दीन, दरिद्र तथा दुखी भिक्षुकी की सुता है। इस भयंकर घटना को आज पांच वर्ष बीत गये हैं। इस दुखद दीर्घ काल में निाधार मां बेटी दरिद्रता के अथाह समुद्र में डूबती जाती थीं। यहां लो कि आज हम उन्हें अन्न बिना भूखे मरते देख रहे हैं। शोक!

सौदामिनी की माता कुछ न कह थोड़े समय तक आप ही आप रोती रही। उपरान्त अपने मन में कुछ विचार कर उस ने पुत्री से पूछा, "क्या बिना बुलाये ही तू पटना जाना उचित समझती है? और अगले साल तो तेरे पति ने दूसरा बिवाह भी कर लिया है. यह सुन कर भी तू वहां रहना योग्य समझती है"?

मुग्धा सौदामिनी ने जल पूर्ण नेत्र तथा गद्गद् हृदय से मनो विकार की प्रवलता रोक कहा "अयोग्य क्यों मां मेरे लिये वही स्वर्गीय स्थान है, मुझे वहां रहना ही उचित है। मैं वहां एक दासी के समान रहूं तो उस में भी मेरी काया का कल्याण है। स्त्री का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति ही परमेश्वर है, और उस की एक निष्ठा सेवा करना ही आर्य पत्नी का मुख्य कर्त्तव्य है। पति के समक्ष स्त्री को भय, अपमान तथा शोक नहीं टिक सकता। नीच लोग चाहे जो बका करें, परन्तु पति की पूजा ही में स्त्री को स्वर्ग का सुख है। कदाचित् मेरे पति मुझे मान सहित न बुलावें, तथा शय्या सुख की भागिनी नहीं बनावें और सुख दुःख में भी भाग लेने से पृथक रक्खें, किन्तु अपने चरणों की शरण में तो स्थान अवश्य देहीं गे अस्तु वही मेरा स्वर्ग और वही मेरा सर्वस्व है" ॥

अपनी शुद्ध चरित्रा पुत्री के ये पवित्र तथा उच्च विचार सुन वृद्ध माता का हृदय आनन्द से परिपूर्ण होने लगा। पुत्री के कथन का प्रभाव उस के हृदय पर इस प्रकार पड़ा कि जिस की आशा सौदामिनी को स्वप्न में भी नहीं थी। आनन्द से उन्मत्त हो माता ने सप्रेम पुत्री को दृढ़ालिंगन कर बार बार उस के कपोलों का चुम्बन करने लगी। थोड़ी देर चुप रह बोली यदि तेरी यही इच्छा है तो मैं इस के विरुद्ध नहीं हूं। पति पत्नी के कर्त्तव्य पवित्र ही होना चाहिये इस लिये कि संसार एवं स्वर्ग में पति ही स्त्री का परमेश्वर माना जाता है। पुत्री ! आज ही अपन पटना को रवाना हो जांय और वहां जा कर देखें कि तेरे समान धर्म पत्नी को तेरा गर्विष्ट स्वामी कितने और कैसे आदर सत्कार से बुलाता है ॥

मां बेटी दोनो ने इस तरह बात चीत कर पटना जाने की तैयारी कर दीं। ऊपर के कहे अनुसार उस के घर में अन्न तो था ही नहीं कि कुछ खा पी लें। इसलिये खाये पिये बिना ही अपनी झोपड़ी को सूनी कर पटना को दोनो रवाना हुईं ॥

वहां से पटना अनुमान पांच मील के दूरी पर था और मार्ग बहुत लम्बा न होने से लग भग तीन घंटे में हीं दोनों मां बेटी पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंच गईं। इतनी रास्ता चलने का कभी प्रसंग न पड़ने से तथा धूप में पैदल चल कर अभीष्ट स्थान तक पहुंचने में बहुत बिटम्बना सहनी पड़ी। निदान अन्त में उन का सुफल मनोरथ हुआ! तृषा से सुष्क कण्ठ घबराई हुईं और शंका से भरी हुईं वो मां बेटी ज्यों त्यों निर्दिष्ट स्थान के लग भग जा पहुंचीं। उन्हों ने पटना के दर्शन किये। वहां पहुंचने में उन्हें जितनी बिटम्बना सहन करनी पड़ी, उस से भी अधिक बिटम्बना साधारण भिक्षुक के भेष में वैभव युक्त विलास भवन में प्रवेश करने के समय भासने लगी। एक दिन जिस ने अद्वितीय सुख, आनन्द तथा वैभव का उपभोग लिया था। आज समय के फेर से वही सौदामिनी की माता अपने सम्बन्धी के द्वार में भिक्षुकी के समान खड़ी थी। हा! दैव की गति भी विचित्र है। सच है "दिनन के फेर से सुमेरु होता माटी को"॥

सौदामिनी के हृदय में इस समय क्या २ भाव उत्पन्न होते होंगे। अब इस का हमे अनुभव करना चाहिये। उस का हृदय किसी दूसरे ही मनो विकार के कारण धड़कने लगा। उस की यही मनो भावना थी, कि "जिस पति की प्रेम प्रतिमा अपने पवित्र अन्तःकरण में धारण कर वह प्रेम पूर्वक पूजा करती थी, जिस देवता के पांच बर्ष से दर्शन दुर्लभ हो रहे थे। उसी मन मोहन मूर्ति का आज दीर्घ काल पश्चात् साक्षात् दर्शन लाभ प्राप्त कर आराधना पूर्वक यह भिक्षा मांगूगी कि, हे देवाधिदेव इस दासी को पत्नी के समान नहीं तो दासी के समान भी तो चारु चरण कमलों की सेवकाई का स्थान प्रदान करिये। परन्तु यह प्रार्थना सुफल होगी या नहीं? एक दासी के समान भी पति मुझे अंगीकार करेंगे या नहीं"? ऐसी नाना प्रकार की शंकायें तथा बिबिधि तरंगे उस के मन में बारम्बार उद्भवित हो कर लय होने लगीं। ये मनस्तरंगें, जिस प्रकार तूफान शान्त समुद्र में क्षोभ उत्पन्न कर देता है। ठीक उसी प्रकार सौदामिनी के शान्त हृदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अशान्ति आभास करने लगी। स्त्रियों की स्वाभाविक लज्जा ने भी आकर इस समय उसे क्षुभित किया। "पति के समक्ष कैसे जाऊं?" यह बर्षों से जिस कार्य के लिये वो हृदय से उत्सुक तथा आतुर हो रही थी उस कार्य्य में प्रवृत्त होना अब उसे अत्यन्त दुर्गम्य भासने लगा। सुशीला स्त्रियों का स्वभाव ऐसा ही होता है॥

अन्त में सुख की आशा का विजय हुआ और मां बेटी जामातृ के हर्म्य (हवेली) के निकट आ पहुंची। द्वार के द्वारपालों ने प्रथम तो उन्हें भीतर जाने को मना किया। परन्तु ज्यों ही उन्होंने सौदामिनी को पहिचाना त्यों ही भीतर जाने के लिये सादर प्रार्थना की। भीतर भी छत पर चढ़ते समय एक परदेशी भैया ने उन्हें टोका, उसे भी सौदामिनी अपना परिचय दे ऊपर चढ़ी।

छत के पहिले खण्ड में घर का कारोबार चलानेहारी मुख्य वृद्धा स्वामिनी का निवास स्थान था। मां बेटी के आते ही तथा नज़र पड़तेही वहां पर छम २ बिना कारण इतस्ततः फिरती हुई कितनी नव यौवना युवतियां आश्चर्य से दिग्मूढ़ हो गईं। स्थूल, कुरूपा तथा मोटे २ हाथ पग और गरुड़ के समान नासिका वाली ज़र जवाहिरात से लदी हुई महल की वृद्ध पुरन्धियां वहां दासियों तथा इतर स्त्रियों के साथ बैठी हुई बिनोद कर रही थीं। उस ने इन नवागन्तुक युगल अबलाओं के आतेही इन की ओर धिक्कारयुत बक्र दृष्टि से देखा॥ पाठक! यही सौदामिनी की सास है॥

(क्रमशः)

रूस जापान युद्ध।

रूस और जापान में क्यों युद्ध हुआ; युद्ध छिड़ जाने का क्या कारण था; कैसे दृढ़ संकल्प युद्ध के लिये जपान वाले अन्त तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बने रहे; जिस का परिणाम केवल विजय लाभ करना ही न हुआ वरन समस्त संसार को जपानी इस समय देशानुराग की शिक्षा देने और उदाहरण होने को अग्रगण्य हो रहे हैं यह सब इस में दिखाया गया है। पाठक इसे निरी तवारीख मत समझो कि किसी पुस्तक का मक्षिका स्थाने मक्षिका के ढंग का अनुवाद कर दिया गया हो किन्तु ठाकुर गदाधर सिह ने अपनी प्रौढ़ लेखनी का प्रौढ़त्व इस में भरपूर प्रगट कर दिखाया है। यह पुस्तक उस ढंग की है कि आद्योपान्त इस को पढ़ने वाले के मन में कभी हो नहीं सक्त कि देशानुराग का बीज न बो जाय। उपन्यास कविता तथा अन्यान्य शृङ्गार रस प्रधान लेख बहुत हो चुके अपनी भाषा में अब ऐसे ही लेखों की आवश्यकता है जिस में पढ़ने वाले के मन में उत्तजना पैदा हो। मूल्य १) इण्डियन प्रेस प्रयाग में मुद्रित॥

कलवार महा सभा की रिपोर्ट।

रिपोर्ट देख मालूम हुआ कि कलवार जाति बहुत तरक्की पर है। इस जाति में बहुत लोग ऐसे हैं जो लक्ष्मी और सरस्वती दोनो के कृपा पात्र बन रहे हैं। कई एक तअल्लुकेदार महाजन तथा ऊंचे २ रोज़गारी भी इस में हैं। इस रिपोर्ट की एक बात हमे सब से अधिक सोहावनी लगी जो कलवार यह नाम नहीं बदला गया जब बहुधा वर्मा और भार्गव आदि उपाधियों से अपना वास्तविक रूप छिपाय लोग उन्नति के सोपान पर पांव रखने की चेष्टा में प्रवृत्त हैं तब निज वास्तविक गुण कर्म न ढांपना कितनी दूर दर्शिता है। इसमें सन्देह नहीं इस अंगरेज़ी राज्य के अमन चैन में सबी आगे बढ़ने और अपनी उन्नति का यत्न कर रहे हैं एक ब्राह्मण ही दक्षिणा की तकिया के सहारे गहिरी नींद में खुर्राटे भरते हुये सुस्त पड़े हैं। कदाचित् इन्हीं ने समझ रक्खा है कि जो कनछिदे हैं और अपने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू मानते हैं हमारे चंगुल के बाहर हो ही नहीं सके तब क्यों हम अपनी सुख की नींद में बाधा छोड़ैं। किन्तु यह इन की बड़ी भूल है यह चितावनी इन्हें काहे को कभी होना है कि वह समय बहुत दूर गया; तालीम की झलक ने प्रजा के नेत्र खोल दिये अब तुम्हारी एक न चलैगी। बौद्धों के निराकरण के उपरान्त अभी तक देश में ब्राह्मणों की ऐसी ढांक बन्धी थी कि बिना इन्हें अगुआ किये कोई काम नहीं होता था। वाम मार्ग तक में यही अगुआ थे हज़ारों तांत्रिक इस समय विद्यमान हैं जो वेद का पढ़ना पढ़ाना छोड़ तांत्रिक बन पुजवा रहे हैं पंच मकार साधन में ब्राह्मण ही अगुआ आचार्य और गुरु किये जाते हैं। किन्तु इस समय जो नये २ मत ब्रह्म समाज आर्य समाज सन्त समाज आदि चल पड़े हैं उस में ये ब्राह्मण दूध की मक्खी सा अलग निकाल फेक दिये गये हैं इन समाजियों की यही कोशिश रहती है कि ब्राह्मणों का दखल हम लोगों के बीच न होने पावे वरन इन की जहां तक दुर्गति हो उतना ही अच्छा। इस दशा में इन का न चेतना कितना हानि कारक हमारे सनातन क्रम के लिये है पर क्या किया जाय लाचारी है अब इन्हे चेत होती ही नहीं॥

साधु ब्राह्मण महात्माओं के कर्त्तव्य।

भारत वर्ष जो एक समय विद्या, सभ्यता धन धान्य, व्यापारादि में सर्व श्रेष्ठ और महोदय था, अत्यन्त शोक की बात है कि आज कल अविद्या, निर्धनता और बहुत कुरीतियें के कारण पापों और मूर्खता में डूबा हुआ है, यहां की विद्या का यश सुन यूरुप का प्रसिद्ध दार्शनिक Philosopher पियागोरस Pythagorus यहां विद्याग्रहण करने के लिये पांच हज़ार कोस से आया। हमारे महर्षियें और शास्त्रकारों ने विद्या विषय के अनुकूल आज्ञा दी है "विद्या ददाति विनयं विनया-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्याति पात्रताम् । पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्म्मं ततः सुखम्" विद्याहीन मनुष्य को शास्त्रों में पशु की उपमा दी है और इसी कारण विद्वान् साधु तथा ब्राह्मण को ही सेवा करना या दान देना लिखा है। यहां के शूरबीर अर्जुन भीमसेनादि महात्माओं ने पाताल (अमेरिका) तक को विजय किया। यहां के वैश्य इस देश के उत्तम २ पदार्थों को अन्य २ देशों में बेचकर धनी बने थे। हमारे महर्षि महात्माओं ने चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बाणप्रस्थ और संन्यासी नियत किये हैं ॥

ब्रह्माचारी २५ वर्ष पर्यन्त विद्या का उपार्जन करने के पश्चात् बिबाह करते थे और गृहस्थ लोगों को आज्ञा थी कि विद्वान्, साधु, ब्राह्मण व अतिथि का हर तरह से मान सत्कार करें। बाणप्रस्थ लोग जितेन्द्रिय और विद्वान् बन देश की सेवा और देशोन्नति का उपदेश करते थे। संन्यासियों साधुओं और ब्राह्मणों का कर्त्तव्य था कि स्वयं विद्वान् हो देश २ ग्राम २ फिर विद्या का प्रचार और देशोन्नति का सत्य और शुभ उपदेश करें। इसी प्रकार क्षत्री लोग विद्वान् होकर राजनीति और देश की रक्षा में कटिबद्ध थे।

गृहस्थ लोग कहते हैं कि जब से इन सबों ने विद्या चरित्र की शुद्धता और देशोन्नति का उपदेश देना त्यागा तभी से देश अधोगति को प्राप्त होने लगा। अब साधु संन्यासियों महात्माओं और ब्राह्मणों की सेवा में प्रार्थना है कि वे अपने शुभ कर्त्तव्य के पालन पर पुनः कटिबद्ध हो जावें और पहिले की भांत सब कार्य करें ॥

इस उद्देश्य के लिये डेरा इस्माइल खां में एक साधुविद्यालय खुलने वाला है जहां साधुओं को धार्मिक शिक्षा दी जावेगी ॥

भवदीय-टहल राम गंगा राम ज़मीन्दार डेरा इस्माइल खां (पञ्जाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य संपादन ।

यह लोक परलोक सम्बन्धी जितने काम हैं सबों में तन्दुरुस्त रहने की बड़ी ज़रूरत है किन्तु हमारे प्रति दिन का आहार बिहार की गड़बड़ी या जल वायु के ज़हरीले हो जाने से हैज़ा और प्लेग आदि रोग पैदा हो जाते हैं। उन से बचने को अमृत तुल्य गुण पैदा करने वाली सद्वैद्य की औषधियां सेवन करना चाहिये। हम सद्वैद्य की बनाई दवाइयों पर अधिक ज़ोर इसलिसे देते हैं कि लिखा है:—

औषधं मूढ़वैद्यानां त्यजन्तु ज्वर पीड़िताः ।
पर संसर्गसंसक्त कलत्रमिव बान्धवाः ॥

मूर्ख वैद्य की बनाई दवाई वैसाही छोड़ देना चाहिये जैसा किसी परपुरुष के संपर्क से दूषित निज बनिता को लोग छोड़ देते हैं। बहुधा देखा गया है कि मूर्ख वैद्य या हकीम की इलाज से लोग जीवन से हाथ धो बैठे हैं। इस से मेरी प्रार्थना सर्व साधारण से यही है कि सद्वैद्य की बनाई जंची दवाइयों का सेवन करैं। तदनुसार मैं ने भी कुछ औषधियां हर तरह के रोगों की तैयार की हैं आप लोग उसे काम में लावें यही मेरी प्रार्थना है॥

पं० सीता राम वैद्य भूषण प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २८ } **प्रयाग** { अप्रैल
सं० ४ } { सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ सं० ४ — प्रयाग — अप्रैल सन् १९०६ ई०

टटकी टटकी खबरें।

सुनने में आया है अमेरिका से एक जहाज़ भटक कर उत्तरीय महासागर की ओर जा निकला कुछ दूर चल समुद्र का पानी दूध के रंग सा मिला ज्यों २ जहाज़ बढ़ता गया दूध सा वह पानी गाढ़ा होता गया। हमारे पुराने हिन्दुओं का क्षीरसागर कदाचित् यही हो॥

———

बिलाइत से एक मासिक पत्र निकलने वाला है जो सात भाषाओं में छपेगा संस्कृत, अरबी, लाटिन, ग्रीक, जरमन, फ्रेंच और इङ्गलिश शर्त उस में यह रहेगी कि इस के खरीदारों की फिहिरिश्त में उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नाम दर्ज किया जायगा जो सातो भाषाओं को जानता हो और २० पौंड सालाना उस का मूल्य होगा ॥

जमइका टापू में चाय के पेड़ की तरह एक पेड़ होता है जिसकी पत्ती आध सेर पानी में उबाल कर पीने से काहिली जेहालत नाइत्तिफाकी खुदगरज़ी की खूब तरक्की होती है। हिन्दुस्तान के लिये इस पेड़ की पत्ती का सेवन बहुत अच्छा लटका है ॥

ब्रिटिश अफ्रिका के पहाड़ों में कई एक झरने ऐसे प्रगट हुये हैं जिन का पानी पीने से शाम्पेन और ह्निस्की का नशा आता है शराबियों की बन पड़ी ॥

सबै अलोना लोन बिन।

महात्मा ईसा ने उपदेश देते हुये एक बार अपने शिष्यों से कहा था "तुम ज़मीन के नमक हो यावत् भोजन के पदार्थ सब नमक से ज़ायकेदार किये जाते हैं पर नमक जो आप बिगड़ जाय तो उसे कैसे और किस से मज़ेदार करें" ईसा का यह कथन उस समय यहूदियों की बिगड़ी समाज को लक्ष्य कर कहा गया था। किन्तु अब इस समय हम लोग इस कथन के आदर्श या उद्देश्य हो रहे हैं। इस में सन्देह नहीं सुसभ्य जाति में जितने गुण होने चाहिये हम किसी बात में किसी से कम न निकलैंगे। बुद्धि तत्व का खज़ाना यहां भरा है; इस टूटी दशा में भी धन की कमी नहीं है; आचार की पवित्रता; विचार की बारीकी और गम्भीरता; ईश्वर बुद्धि; धर्म निष्ठा; आचरण की उदारता में तो धरातल में हमारी समता कहीं न पावोगे और आध्यात्मिक शिक्षा तो मानो यहां गिरों सी है जिस का मन हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां आ बटोर ले जाय। दानी हम ऐसे हैं कि सर्वस्व अर्पण कर देने पर भी अभी तक दिये ही जाते हैं, लेना किसे कहते हैं और कैसे लेना होता है सो हम सर्वथा भूल गये। अभी हाल में राजकुमार प्रिन्स आफ़ वेल्स आये थे, काशी में १५००) रुपया खैरात कर गये पायोनियर ने उनके खैरात की तारीफ़ में झड़ी बांध दी, हमारे यहां एक छोटा सा ज़मीदार थोड़ी२ बातों में १५ सौ क्या १५ हज़ार के दान को कुछ माल नहीं गिनता। अभी हाल में महाराजा बलरामपूर ने लखनऊ मेडिकल कालिज को बात की बात में ३ लाख दे डाला। बीरता में भी यहां वाले अद्वितीय हैं। किससे छिपा है कि केवल सिक्ख, गोरखे, बैसवार, और भोजपुरिये सिपाहियों के ज़ोर पर सरकार ने कुल हिन्दुस्तान को अपने हस्तगत कर लिया। नज़ाकत तथा तराश खराश की बारीकी में इँगलैंड और फ्रान्स की सुकुमार सुन्दरियां भला यहां की क्या बराबरी कर सकैंगी। तात्पर्य यह कि हम सभ्यता की सामग्रियों में किसी से किसी बात में हेठे नहीं है, और इस लायक हैं कि ज़मीन के नमक कहे जांय तो उचित है। किन्तु गरमी न रह जाने से हमारे में बिल्कुल फीकापन आ गया है मृतक तुल्य लुहार की धौंकनी सा सांस लेते जी रहे हैं। कौमीयत का जोश बुझ जाने से इतने ठंढे पड़ गये हैं कि हमारा धर्म कर्म विद्या तपस्या शास्त्रों का अनुशीलन सबों में फीकापन आ रहा है। वड़े२ तेहवार और उत्सवों में बहुत खुशी मनाते हैं, ब्राह्मणता क्षत्रियत्व तथा खानदानी होने का बड़ा अभिमान करते हैं पर बिचार कर देखो तो काठ की पुतली सा निर्जीव और निस्तेज हैं। गुण, कर्म विहीन, ब्राह्मणत्व, और क्षत्रियत्व का आभास भी न बच रहा शूद्र से अधिक गये बीते हैं। इस दशा में वह खोई दौलत जिसे कौमीयत की गरमी कहेंगे फिर अपने में लाना हमारा प्रधान कर्तव्य है। हम बहुधा स्वामी दयानन्द की प्रशंसा कर उठते हैं, और आर्यसमाज को अच्छा मानते हैं सो इसी लिये कि उसमे हम कौमीयत की गरमी का अंकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाते हैं केवल थोड़ी सी ऊपरी टांय२ इन्मे से निकल जाय तो ये लोग बहुत काम कर गुजरें। हमे अपनी हिन्दू समाज पर पछतावा होता है कि जो क्रम गुलामी का इन्मे आ टिका है उस्से तो कभी आशा नहीं होती कि इनका कभी पुनरुज्जीवन होगा। हमी क्या बरन जिस किसी के चित्त में चोट है वे इस बात को अवश्य सोचते होंगे कि क्यों हम नीचे को गिर गये और गिरे जाते हैं उन्हे अपने उद्धार की चिन्ता प्रतिक्षण शल्य के समान बेधती होगी ऐसा पुरुष अपने पराधीन जीवन तक को उभारू और ऊब पैदा करने वाला मानता होगा तब उस्को अपनी और सब बातें क्यों न फीकी लगैं गी। इसी से यह कहावत सार्थक होती है "सबै अलोना लोन बिन" पर पुण्य क्षीण भारत भूमि के ऐसे भाग्य कहां जो और२ बीर प्रसबिनी भूमि के सदृश ऐसे ऐसे उदार चेता बीर पुत्रों को पैदा करती। यहां कायर क्रूर आलसी स्वार्थ के क्रिमि भलेही भरे पड़े हैं और आगे को ऐसी सृष्टि बढ़ती ही जा रही है। हमारे वैदिक ऋषियों को इस्की चोट थी और वे जिस क्रम पर अपने वैदिक धर्म और समाज की रीति नीति चला गये उस्मे Patriatism की महक सब ठौर पाई जाती है जिसे हम कई बार लिख चुके हैं। चार वर्ण की प्रथा का भी यही कारण था कि प्रजा को चार भागों मे बांट अलग २ उनका काम उन्हे सौंप दिया गया। महाभारत के युद्ध तक चारो दल वाले अपने२ काम में सुचेत रहे तब तक देश सर्वाङ्ग सुन्दर बना रहा और कहीं से कोई बात नहीं बिगड़ी थी; अब पूर्ण रीति पर उस्का पुनः संस्थापन अति दुष्कर सा हो रहा है। हमारे उन्नति शील नवयुबक आगे बढ़ने की चेष्टा में लगे हैं पर उस क्रम को छोड़ कोशिश कर रहे हैं इस्से कृत कार्य होने की आशा कम पाई जत्ती है॥ अस्तु–

—:0:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपस्या के जुदे २ क्रम ।

बड़ी २ जटा बढ़ाय कहीं एकान्त स्थान में जन समूह से अलग रहना अब इस समय तपस्या समझी गई है किन्तु सो नहीं है वरन जुदे२ क्रम के लोगों का जुदा २ तरीका तपस्या का है । गृहस्थों के लिये "तपःस्वधर्मानुष्ठानम्" जो जिस जाति का है उसको अपनी कुल परम्परा के अनुसार आंख मूंद चलते रहना तपस्या है। "छात्राणामध्ययनंतपः" पढ़ने पढ़ाने में निन्तर लगे रहना विद्यार्थियों के लिये तप करना है। बाल बच्चों को पालना और घर गृहस्थी का काम काज कुलवती गृहिस्थनियों का तप है। माता पिता की सेवा और उनकी आज्ञा पालन सपूत लड़के का तप है। पति की मन बच कर्म से सेवा पति परायणा पतिव्रता का तप है। टटके २ लेख लिख पढ़ने वालों की दन्तावली का विकास करा देना हमारे लिये तप है। हमारे शहर के अमीर आज़म का तप दिनो रात शराब के नशे में गर्क रहना और रूपा जीवाओं को दोनो हाथों से धन उलचना है। कर्कशा स्त्रियों का तप लड़ना है। बनियों का तप काल मनाना है। कलकत्ते के माड़वारियों का तप हौस की दलाली में विलाइती बाना का भाव तै करना है। कड़ी मेहनत कर आप मोटा झोटा खा दूसरों के लिये स्वादिष्ट अन्न उपजाना खेतिहरों का तप है। कौड़ी २ की किफाइत कर धन को सांप सा बैठे ताकते रहना कदर्य कहर सूम का तप है। "जो नहि मानो बात हमार जाव अदालत होहु खुआर" वाले कौल को सच्च करते बढ़े हुये लिटिगेशन के बल कानूनों में हिन्दी की चिन्दी निकाल अपनी तकरीर से सच को झूठ, झूट को सच्च कर देना वकीलों का तप है। उठती जवानी वाले रईस के लड़कों को उभाड़ उन्हें मालती या मुन्ना के घर का कुत्ता बनाना मीरशिकारों का तप है। भारत की प्रजा में प्राचीन समय की जातीयता और देशानुराग के पुनरुज्जीवन की चिन्ता शिक्षित समाज का तप है। नये २ परिस्कारों के द्वार शास्त्रार्थों में तीतर बटेर सी लड़ाई के लिये दीक्षित और नागेश की पंक्तियों को रट डालना काशी के पण्डितों का तप है। अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोध से कुछ सरोकार नहीं पद और क्रम सहित समस्त संहिता को कण्ठ किये रहना वैदिक ब्राह्मणों का तप है। परलोक सुधरने की चिन्ता में व्यग्र भोले जी की स्त्रियों को स्वर्ग की रास्ता दिखलाने के बहाने उन्हें जाल में फसाने की फिकिर पुजेरी पंडे तथा कथा कहने वाले व्यास का तप है। पराये को पीड़ा पहुंचाना खलों के लिये तप है। पर उपकार साधुओं के लिये; इत्यादि अनेक नाम रूप से तपस्या के नजानिये कितने भेद और प्रकार हैं कहां तक गिनाते रहैं॥

माता का ऋण।

मनुष्य के जीवन में ऋण भी आवश्यक बातों में है, और आवश्यकीय इस लिये नहीं कि चार्वाक मत अनुसार "यावत् जीवेत्सुखंजीवे दृणं कृत्वा घृतं पिवेत्" जब तक जियै सुख से जिये, ऋण चाहो हो जाय घी ज़रूर खाय और दूसरे की कमाई पर तोंद में हाथ फेरते गुलछर्रे उड़ाया करै जिसका जो कुछ चाहता हो अदा न करै। किन्तु घर गृहस्थी का भार सिर पर लादे हुये को बहुधा ऐसा समय आ जाता है कि बिना ऋण लिये नहीं चलाये चलता और वह ऋण जितनाही भारी आवश्यकता दूर करने को लिया जाता है उतनाही भयंकर है। भयंकर उन्ही लोगों के लिये है जिन्हे लोक परलोक बिगड़ने का कुछ ख्याल नहीं है। महापुरुषों का कथन है कि बिष विष नहीं है, बरन दूसरे का कुछ धराना यथार्थ मे विष है, इस लिये कि विष उसी को मार डालता है जो उसे खाता है ऋण वह विष है कि पुत्र पौत्र समेत तक को उच्छेद कर डालता है। एक ठौर प्रदीप की पुरानी फाइलों में इसके सम्बन्ध में बहुत अच्छा कहा है॥

जानत रहे सबहि नर नारी, ऋण हत्या है पाप पहार।
बिना दिये नहिं छूटत कबहुं, तेहि अब समझ लिहिन रोजगार॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋण जब छूट लेहि पुरखन को, तब सुत गया करन को जाय।
अब सोइ पूत बलिस्टर ढूंढहिं, कवनिहू भांति हज़म होइ जाय॥

इस द्वन्द्व पूरित जगत् में दो तरह के काम होते हैं। प्रगट, और गुप्त, जिस्को देखो और जहां देखो हर एक काम को इन्ही दो के अन्तर्गत पाओगे जो काम हमारी अजानकारी में होता है वह गुप्त है, और जिसे हम अपनी इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष कर सक्ते हैं वह प्रगट कहलावेगा। इस नियम के अनुसार ऋण भी दो प्रकार का है, गुप्त, और प्रगट। प्रगट को यदि विष मानो तो गुप्त ऋण उस्से भी अधिक भयंकर समझना चाहिये। इस लिये कि शत्रु जो छिप के दांव खेलता है वह मैदान में खड़े हो ललकार कर लड़ने वाले से बहुतही टेढ़ा और दुर्जेय है। ऐसे शत्रु से विजय पाने की इच्छा वही कर सक्ता है जो उस्की गुप्त चालों को जानता हो और स्वयम् बलवान् चतुर और सहस्रलोचन बन समर भूमि में स्थिर रह सके। प्रगट ऋण को हम उस समय से जानने लगते हैं जिस समय ऋण लेते हैं न केवल हमी वरन घर और बाहर के सबी जानते हैं और उस्के अदा न करने पर जो २ फ़ज़ीहत सहना पड़ता है वह भी किसी से छिपा नहीं रहता। किन्तु गुप्त ऋण को हम तभी जानते हैं या उस्के जानने की चेष्टा करते हैं जब तत्सम्बन्धी किसी काम का असर हम पर आ पड़ता है। माता का ऋण हमारी अज्ञान अवस्था में पैदा होता है इस लिये गुप्त ऋण है और जितने प्रकार के गुप्त ऋण हैं देव पितृ तथा ऋषियों का ऋण सबों में यह प्रधान है। लख चौरासी भरमतेर दीनबन्धु दीनानाथ की कृपा से सर्व श्रेष्ठ और सब सुखों की खान जब हम नर तन पाते हैं उस समय गर्भ में हमारा भार सिवा माता के और कोई नहीं उठा सकता। जब हम महामुग्ध निरे दूध मुहें रहते हैं उस समय हमारी आवश्यकताओं को वही जानती है और उसे पूरी करने का बीड़ा उठाती है। इसी से मनु का वाक्य है "पितुः शतगुणा माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरवेणातिरिच्यते" हमारी स्तनन्धय मुग्ध दशा में यदि जन्म दात्री जननी थोड़ी देर के लिये भी ध्यान न दे केवल अपनेही सुख और आराम का खयाल रक्खे तो हमारी न जानिये क्या दशा हो जाय। जिन भाग्य शालियों को गया श्राद्ध करना पड़ा है और मातृ षोड़शी की है वे माता के उपकार को भरपूर जान सक्ते हैं। मातृ षोड़शी के १६ श्लोक जो पिण्डदान समय पढ़े जाते हैं ऐसा वात्सल्य रस पूर्ण हैं कि उन्हे सुन जी भर आता है और वात्सल्य रस का उद्गार हो आता है। अतः समर्थ होने पर जो माता के ऋण को हम भूल जांय तो हमसा कृतघ्न कौन होगा ऐसे को तो कदाचित् नरक में भी ठिकाना न मिलैगा। बचपन की अज्ञान दशा में बिना मांगेही वह हमारी आवश्यकताओं को पुरे देती है। माता के उपकारों पर दृष्टि रख हमारे यहां के बुद्धिमान् जन धरती गऊ तथा गंगा सबों को माता कह पुकारने लगे। बड़े होने पर हम जो ज्ञानी मानी धनी बनते हैं वह इन्ही माताओं की कृपा है। शरीर की उत्पत्ति का कारण एक माता है; दूसरी माताओं से हमारा पालन पोषण और रक्षा होती है। बिचारिये कितनी बड़ी आवश्यकता इन तीनो से हमारी पूरी होती है और जिस से हमारी शारीरिक सामाजिक तथा पारवारिक आवश्यकता दूर हो उस के हम ऋणी हैं। जो आदमी अपनी भलाई को आगे रख उपकार करता है वह कृपण कहा जाता है। इन माताओं के उपकार में इस तरह की कृपणता नहीं है। गऊ गंगा तथा धरती इतना करने पर भी चुप रहती हैं। इस समय देशोन्नति का पाठ सबी कर रहे हैं और सबों की उत्कट इच्छा है कि हमारी उन्नति हो पर इन गुप्त ऋणों के शोधन में कोई दत्तचित्त नहीं है इसी से अनेक आधि व्याधि हमें घेरे रहती है। मनु भगवान् का भी वाक्य है—

ऋणानि तृण्यपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनपाकृत्य मोक्षन्तु सेव्यमानो व्रजत्यधः ॥

उन्नति चाहने वाले पुरुष प्रवरों को ऊपर का बचन सदा स्मरण रखना चाहिये और इन ऋणों से मनुष्य कैसे छूट सक्ता है सो हम फिर कभी दिखावेंगे ॥

अनन्त राम पांडे-रायगढ़

---:o:---

पंच का न्याय ।

प्रभात काल होने को है; मुह से मुंह नहीं सूझता; कुल कामिनी सी उषा देवी अपने कमनीय कोमल मुख कमल को अन्धकार पटल से छिपाये हुये घूंघट की ओट से मानो ताक रही है-रेल की लालटेन सा सूर्य का बिम्ब अभी धरती के नीचे धंसा हुआ ऊपर उभड़ आने की चेष्ठा में लगा है। निशानाथ चन्द्रमा अपनी प्यारी प्रियतमा निशा के वियोग मे क्षीण और दुर्बल स्त्रैण स्त्रीजितों की लीला दरसाता हुआ पीला पड़ गया है। कांव २ रटता कौवों का दल पक्षियों पर विजय पाने की इच्छा से इधर उधर धावा मार रहा है। बीच २ रेल की सीटी मानो तानसेन के तम्बूरे की ध्वनि का अनुहार कर रही है, बायु को अपने ख़ज़ाने से प्रधूपित करते सड़कों पर मैले की गाड़ी लइन की लइन जा रही है। बगल में लोटा डोरी दबाये झुण्ड के झुण्ड लोग बाहरी ओर जा रहे हैं। धर्मशील माला गले में छोड़े आसन दबाये गङ्गा स्नान को जाते हैं। नगर में ठौर २ मन्दिरों में मङ्गला आरती के लिये घंटा और घड़ियाली का शब्द घहरा रहा है। सड़कों में मौलसरी कदम्ब आदि पेड़ों पर पुष्प रसलोभी भौंरे पराग के लिये गूंज रहे हैं। माधुमक्षिकाएं भीड़ की भीड़ उस पर टूट रही हैं और शहद बटोरती जाती हैं। ऐसे समय कोट पैंट के थैले में बन्द मुह मे धुआं कस रक्खे पंच जी उखड़े कनकौवे की भांत जा रहे हैं। ऐसा तेज़ कदमी से चल रहे थे कि मुझे यही भासा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी बड़े ज़रूरी काम के लिये जा रहे हैं। मैं भी उनके साथ हो लिया और देखा तो एक ऐसे मकान में पहुंचे जिस की सजावट से बोध होता था कि यहां किसी सभ्य समाज की कोई कमेटी होने वाली है। मिस्टर पंच को देखते ही सब लोग खड़े हो गये उनमें से एक नव युवक चश्मा दिये इन को बड़ी नम्रता पूर्वक एक ऊंचे आसन पर लेजाय सुशोभित किया हुटहुट हुर्रे की आवाज़ उस लम्बे चौड़े हाल में गूंज उठी और बात की बात में लोगों की भीड़ से वह स्थान इतना भर गया कि कहीं तिल रखने को भी जगह न बच रही। इस भीड़ में कुछ लोग मोटी तोंद वाले विरक्त सन्यासी थे, कुछ मैली धोती पहने लाला और सेठ थे; सेठ जी कमर में करधनी पहने थे पर उनके मैले कपड़े से ऐसी दुर्गन्धि आ रही थी कि मारे बू के मेरी नाक फटी जाती थी और ओकाई आने लगी। कुछ बछिया पुजौनी विद्या रट पुरानी लकीर के फकीर पण्डित और विरहमन थे। जो बच रहे वे अर्द्ध शिक्षित रिफार्म्ड हिन्दू थे। सब लोगों के आजाने पर वही युवक जिसकी चाल ढाल से मालूम होता था कि यही इस मीटिङ्ग का अगुआ है उठा और यों कहने लगा। मैं आप लोगों का धन्यबाद करता हूं जिन के पधारने से आज यह सभा कृत्यकृत्य हो गई ऐसी सभ्य गवर्नमेंट के शासन में जब सबी अपनी २ तरक्की कर रहे हैं तब हम लोग कोरी की जाति वाले क्यों पीछे रह गये। ब्राह्मणों ने अपनी प्रभुता जमाने को हम लोगों को च्युत कर दिया और सब भांत हमे हीन समझा पढ़ने लिखने से हमें बंचित रक्खा। यहां तक कि हमारे छू जाने से नहाने का ढकोसला रचा किन्तु अब वह समय गया उन कमबख़्त ब्राह्मणों का ज़ोर सब तरह पर घट गया है अब खुल के हम अपनी उन्नति कर सक्ते हैं खास कर मिस्टर पंच के रौनक अफरोज़ होने पर तो अब हमें अपनी तरक्की की फिक्र करना ही चाहिये। चारो ओर से आवाज़ आई अवश्य अवश्य और फ़ौरन मिस्टर पंच सभापति नियत किये गये जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्दरा सा मुख खोल यों कहने लगे। मैं आप लोगों का धन्यबाद करता हूं और आशा है कि जो कुछ मैं कहूं उसे चित्त दे सुनियेगा और अमल में लाइयेगा। औवलन तो मुझे कोरी इस शब्द को सिद्ध करना है कोरी कौर्मी का अपभ्रन्श है जब भगवान् ने कूर्मावतार लिया तब उनकी नासिका से एक पुरुष पैदा हुआ जो कछुई का दूध पी कर पला उसी कौर्मी का अपभ्रन्श अब कोरी हो गया। अफसोस कि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न होने से ऐसे प्रतिष्ठित हो गये और ये लोग भगवान् की नाक के बाल हो कर भी तुच्छ समझे जांय; इन्ही के सम कक्ष मोची हैं जो मोक्षी का अपभ्रंश है और यथार्थ में यह अर्थ चरितार्थ भी हो सकता है कि ये लोग ऐसे उपकारी हैं कि पशुओं की आत्मा देह से अलग कर उन्हें मोक्ष पदवी में पहुचा देते हैं। ये लोग अवश्यमेव उच्च कोटि के हैं हम अपनी नीति निपुण गवर्नमेंट को धन्यबाद देते हैं कि जिस के सुशासन में प्रजा पर ब्राह्मणों के अत्याचार का ओर आ गया है सब लोग खुल के अपनी उन्नति कर सक्ते हैं। मैं आप का बहुत सा समय नहीं लिया चाहता पर इतना अवश्य कहूंगा कि अब यह समय चूकने और सुस्त बैठने रहने का नहीं है। भारत अपनी उन्नति के लिये आप ही लोगों की बाट जोह रहा है जाति पांति पूछै नहि कोय के आधार पर चार बरण की प्रथा अब तोड़ो जहां तक बने अपने शासन कर्ताओं का हर एक बात में अनुकरण करो। अपने को रिफार्म्ड कहो बिधवा बिबाह जारी करो पर देखो बाल्य बिबाह को भूल से भी न रोकना क्योंकि इस में दो बात का भय है एक यह कि बिधवाओं का नम्बर घट जायगा दूसरे यह कि इस के खिलाफ गवर्नमेंट कोई ऐक्ट कहीं न पास कर दे। गवर्नमेंट के कृपा पात्र बना चाहो तो कर्मचारियों की हां में हां मिलाते रहो। कितने बेअकिल समझते हैं कि सर्कार टैक्सों से हमें जकड़े हुये है सोचो तो कितना टैक्सों से वह हमें बरी किये है जैसा यहां की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आबो हवा पर प्लेग आदि प्राणान्तकारी रोगों पर कितनी तरह की फ़जूल खर्चों और कुरीतियों पर इत्यादि इतना कह मि० पंच बैठ गये सभा का बिसर्जन हुआ वोट आफ थैंक्स की गठरी पंच के सिर पर लाद लोग चंपत हुये ॥

X. Y. Z.

प्राचीन कवि और ग्रन्थकार ।

भामह

ये महाशय प्रसिद्ध अलङ्कारिक हैं । इनका निवास स्थान कश्मीर था । काव्य प्रकाश के टीकाकारों ने निज रचित टीकाओं में कई स्थानों में इन का नाम दिया है । भामह के रचे ग्रन्थ पर भट्टोद्भट ने विवरण किया है यह बात वामनाचार्य झलकीकर ने भी लिखी है और इस के प्रमाण में वे प्रतीहारेन्दु राज का वाक्य उठाते हैं । वह वाक्य यह है । "स्पष्टमिदं भामह विवरणे भट्टोद्भटेन" । विद्यानाथ, रुच्यक, अभिनव गुप्त आदि अलङ्कार शास्त्र के ग्रन्थकारों ने स्थान २ पर भामह का उल्लेख किया है । काव्य प्रकाश में भी मम्मट ने जहां तहां भामह के ग्रन्थों से श्लोक उठा के रख दिये हैं । इन सब बातों से विदित होता है कि भामह एक प्राचीन ग्रन्थकार हैं । ये महाशय दण्डि कवि के पीछे हुये होंगे पर भट्टोद्भट से अवश्य पूर्व हैं वा उनके समकालीन हैं क्योंकि उनके रचित ग्रन्थ पर भट्टोद्भट ने विवरण लिखा है । भट्टोद्भट का समय निरूपण करते समय हम पहिले लिख आये हैं कि वे कश्मीर के राजा जयापीड़ के सभासद थे और जयापीड़ का समय राज तरङ्गिणी के आधार पर सन् ७७९ ई० से ले के सन् ८१२ ई० तक निर्दिष्ट हुआ है । अत एव बहुत सम्भव है कि खीष्टीय ८वीं सदी के लग भग वा उस के पूर्व भामह बर्त्तमान रहे हों ।

श्रीयुत, एडवर्ड कावेल साहिब ने जो प्राकृत प्रकाश नाम सटीक प्राकृत का बररुचि कृत व्याकरण छपवाया है उस में भामह विरचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टीका है परन्तु ये भामह प्रसिद्ध कश्मीरी आलङ्कारिक हैं वा और कोई सो निर्णय नहीं हो सक्ता। सम्भव है कि भामह वैयाकरण कोई दूसरे ही हों। कविराज कार्कण्डेय ने निज रचित प्राकृत सर्वस्व मे लिखा है—

शाकल्य भरत कोहल बररुचि भामह वसन्तराजाद्यैः।
प्रोक्तान्ग्रन्थान्नाना लक्ष्याणि च निपुणमालोक्य॥
मार्कण्डेयकवीन्द्रः प्राकृतसर्वस्वमारभते॥

जिस से स्पष्ट अनुमित होता है कि भामह बररुचि के पीछे और बसन्त राज से पहिले हुये हैं। बररुचि तो सम्भवतः वे ही महाशय हैं जो विक्रमादित्य के नवरत्नों में गिने गये हैं पर बसन्त राज कौन हैं इन का पता नहीं लगता। बसन्तराज ने प्राकृत सञ्जीवनी नाम ग्रन्थ तो लिखा है पर उस में अपने समय का उल्लेख नहीं किया। एक और भी ग्रन्थ बसन्त राज शाकुन के नाम से प्रसिद्ध है पर उस में उन्होंने अपने समय का उल्लेख नहीं किया। उस के द्वारा भी ग्रन्थकार के समय निर्णय में कुछ सहायता नहीं मिलती। बररुचि से पिछले होने के कारण वैयाकरण भामह ख्रीष्टीय छठवीं शताब्दी के पहिले के व्यक्ति नहीं है। पर बररुचि से वे कितने पीछे हुये इस का भी निरूपण दुर्घट है॥

——

भारवि।

किरातार्जुनीय महा काव्य के रचयिता महा कवि भारवि को संस्कृत भाषा में रुचि रखने वाला ऐसा कौन होगा जो न जानता हो। पर इन के समय और देश के विषय में ठीक २ पता लगाना एक कठिन कार्य है। अपना कुछ भी परिचय ग्रन्थ में कवि ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं दिया है। किरातार्जुनीय को छोड़ और कोई ग्रन्थ भारवि का बनाया सुनने वा देखने में नहीं आया। प्राचीन शिला लेखों में से एक जो सन् ६३४ ई० में लिखा गया है वह महा कवि कालिदास के साथ भारवि का उल्लेख करता है।

जिस से स्पष्ट ज्ञात होता है कि सन् ६३४ ई० तक भारवि अपनी कविता द्वारा कालिदासवत् प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। कई एक श्लोक संस्कृत जानने वाले पण्डित बहुधा कहा करते हैं जिन में भारवि का नाम माघ आदि कवियों के साथ मिला हुआ है। वे श्लोक यथा—

तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते च पुनर्माघे भारवेर्भा रवेरिव॥
उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवम्।
नैषधे पद लालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

इत्यादि और भी कई एक श्लोक भारवि के महा कवि होने की प्रसिद्ध के परिचायक हैं। परन्तु सन् ६३४ ई० के शिला लेख में भारवि का नाम मिलने से इतना तो प्रायः विश्चित हो जाता है कि भारवि ख्रीष्टीय छठवीं शताब्दी के पूर्व थे। इसी कारण भारवि का समय सन् ५५० ई० से ६०० ई० तक के लगभग रमेशचन्द्र दत्त आदि महाशयों ने माना है। यह किस देश के निवासी हैं इसका उत्तर देने में कुछ लोगों ने उनके ग्रन्थ में सह्य पर्वत का नाम देख उन्हें दाक्षिणात्य ठहराया है।

भारवि ने निज ग्रन्थ के आरंभ में श्री शब्द का प्रयोग किया है। उस ग्रन्थ के पंचम सर्ग ३९ श्लोक में 'आतपत्र' 'शब्द' आने से इन की उपाधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतपत्र भारवि' प्रसिद्ध है।

माघ काव्य और किरातार्जुनीय की रचना और वर्णन प्रायः मिलते से हैं जिस से पण्डित ईश्वर चन्द्र विद्या सागर ने यह अनुमान किया कि भर्तृहर के तीनो शतक को देखके माघकाव्य बनाया गया होगा। सो बहुत सम्भव जान पड़ता है क्योंकि दोनों काव्यों का प्रारम्भ श्री शब्द से है। दोनो में जल क्रीड़ा, मधुपान और विलास का विस्तार से नर्णन है। दोनोमेके एक २ सर्ग में चित्र काव्य में युद्ध का वर्णन किया है। ऋतुओं का भी भलीभांति दोनो काव्यों में वर्णन है। पर माघ भारवि के पीछे हुए हैं इस कारण माघ ने भारवि का अनुकरण किया ऐसा कहना ठीक जंचता है॥

कथानक प्रचलित है कि भारवि के पिता इनकी अद्भुत प्रतिभा शक्ति पर मन ही मन बहुत प्रसन्न थे पर ऊपर से सदा उन्हें कटु वचन सुनाते और डांटा करते थे। एक दिन पिता ने कुछ ऐसे कटु वचन सुनाये कि भारविसे न सहे गये रात्रि को एक तलवार लेकर पिता के शयनागार में छिप रहे और उन्हें मार डालने का सङ्कल्प किया। दैवात् उस रात्रि को चांदनी खिली थी भारवि की माता ने अपने स्वामी से कहा देखो कैसी निर्मल चांदनी है तब इन के पिता ने उत्तर दिया हां चांदनीवैसी निर्मल है जैसी मेरे पुत्र की बुद्धि। भारवि यह सुन पितृ घात के संकल्प से निवृत्त हुए और जाके उनके चरणों पर गिर अपने कुत्सित सङ्कल्प को सुनाय क्षमा प्रार्थना करने लगे (पर पिता ने फिर भी उनकी बहुत कुछ भर्त्सना की। इस कथानक से भारवि के स्वभाव का अच्छा परिचय मिलता है॥

किरातार्जुनीय में ठौर २ पर अच्छे नीति सार गर्भित वाक्य पाये जाते हैं जिन्हें बहुधा पण्डित लोग उदाहरण में उठाया करते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुशीला पहले के आगे से ।

यह भूतिन अपनी कठोर आवाज़ को और कठोर बनाकर बोली "अरे तू कहां से और किस लिये आई है ? कुछ समय तक का सब चुप रहे अन्त को सौदामिनी की मा बोल उठी,, क्या तू अपनी पुत्रवधू को नहीं पहचानती !

इसने उत्तर दिया "तू क्या बेतुकी बात कह रही मेरी पुत्रवधू और इस दशा मे-

सौदामिनी की मा क्रोध मे भर "तो क्या तुमने अपने पुत्र का बिवाह ८ वर्ष पहले दानापुर के ज़मीदार की पुत्री से नहीं किया ?

क्यों नहीं किया किन्तु वह तो व्यभिचार दूषित हो अपने मा बाप को भी छोड़ बैठी । वज्रपात सदृश यह वचन सुन सौदामिनी मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ी । इसकी मा का सारा शरीर क्रोध से कांपने लगा । किन्तु ज्यों त्यों अपना क्रोध शान्त कर प्राण से अधिक प्यारी पुत्री को सावधान और सचेत करने के यत्न में लगी और बीच २ कहती जाती थी हाय मुझ सी अभागिनी दूसरी कौन होगी । उसी समय देव पत्नी सी एक दूसरी स्त्री भी सौदामिनी को सावधान करने में प्रवृत्त थी और यह उसी की सौत थी ॥

दूसरा प्रस्ताव-पति पत्नी ।

पाठक कुछ समय के लिये सौदामिमी को यहीं छोड़ इसके एक मात्र प्राणाधार की भेट अब आप से कराते हैं । देखिये वह क्या कर रहा है तब तक सौदामिनी की भी मूर्छा भंग होने दीजिये ॥

इसी बड़ी महल की एक दूसरी सजी सजाई कोठरी में एक सुन्दर नवबयस्क युवक निद्रा देवी की गोद में पड़ा दूध के फेन समान कोमल सेया पर सोता है और यही सौदामिनी का प्राणाधार है नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका योगीन्द्रनाथ है। यह सुशिक्षित और स्वच्छन्द विचार का युवक था। परन्तु दुर्भाग्यवश पिता के वश में था और मूर्ख तथा अभिमानी पिता के हठीले स्वभाव के कारण इसे अपने बाप की इच्छा के अनुकूल चलना पड़ता था। इसी लिये उसको अपना जीवन संसार में भार रूप भासता था। घर के किसी काम काज में उसे हाथ डालने का कोई अधिकार न था अनुद्योग के कारण वह अपना बहु मूल्य समय नींद तथा आलस्य में बिताता था। दिल बहलाने को उसने केवल दो बात अपने लिये पसन्द कर लिया था पढ़ना और घोड़े की सवारी। पिता भी इस की इन दोनों बातों में कुछ बाधक न था॥

आज योगीन्द्र दो पहर को भोजनोत्तर नीन्द में पड़ा करवटें भर रहा था कि इतने में एक बूढ़ी दासी जो लड़काई में इसे दूध पिलाया और खिलाया था इस लिये बहुत ही मुहलगी थी इसे सोते से जगाया और बोली तुम्हे क्या खबर कि आज तुम्हारे यहां कौन आया है॥

कौन आया है यह मुझे क्या मालूम तूने मुझे सोते से क्यों जगाया। आह दाई तूने मुझे नींद से जगा दिया यह ठीक नहीं किया॥

दासी-बाबू तुम अपनी मा की कोठरी में जाव और देखो कौन आया है। आने वाला तुम्हारे बिना बुलाये ही आकर तुम्हारे चरणों का सहारा पाने की आशा कर रहा है। मुझ पर क्रोध न कर जाय देखो तो वह कौन है॥

योगीन्द्र अपनी कोठरी से वेग के साथ चल खड़ा हुआ किन्तु बीच में अपनी स्त्री को आंसू बहाते देख अचम्भित सा हो बोला। प्रिये यह क्या! ओस के बिन्दु गुलाब की पखुरियों को दबाते हुये भी शोभा दे रहे हैं। प्रिये कौन सी दुर्घटना आ उपस्थित हुई कि तुम्हारा मुखचन्द्र मलिन हो रहा है? आसुओं की धारा तुम्हारे स्निग्ध कोमल कपोल की ललाई को क्यों धोये देती है? मुरझाये हुये गुलाब की सी तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख की अनोखी छवि देख मुझे अनेक शंकायें होती हैं। संकोच छोड़ कहो न जो कुछ तुम्हे कहना हो॥

यह बोली कहूं क्या। इस आगन्तुक अबला को देख मुझे शंका हुई है कि आप मुझे भी एक दिन ऐसाही छोड़ बैठेंगे। इस लिये कि अपनी ब्याही को निरपराध छोड़ बैठना तो कुछ बात ही नहीं है वरन यह तो आपके घराने की चाल सी है॥

योगीन्द्र नहीं प्रिये सो नहीं वह तो व्यभिचार दूषित हो गई है॥

आप उसके प्राण पति परमेश्वर और सर्वस्व सो भी ऐसा ही समझते हो तो वह निरपराध साध्वी निः शरण अब किसका शरण लेने जाय वरन उस अगतिक की गति अब आप ही हो। हा धिक्कार अबला जन्म को। आप भोरले जी के हैं किसी के झूठ सच कहने को जल्द विश्वास कर लेते हो। मैने तो सौदामिनी को अभी ही देखा है पर उसके बेबनावटी वर्ताव और अकुटिल हृदय के भावों से जान गई कि वह चरित्र और पवित्रता के वर्ताव में अद्वितीय है। ऐसी ललना ललाम जिस घर में हों मै उस घर को स्वर्ग भूमि और उसके पति को पुरुषोत्तम मानती हूँ। इस तरह यह बराबर सौदामिनी की प्रशंसा में प्रवृत्त रही॥

योगीन्द्र इसकी ये बातें सुन शरमा सा गया अपनी कोठरी से जाता हुआ मन में सोचने लगा यह ठीक कह रही है सौदामिनी यदि व्यभिचारिणी हो गई होती तो मेरे यहां फिर आने का साहस उसे न होता न उसके सौन्दर्य्य में इतनी दमक बाकी रहती। सौदामिनी और उसकी माता योगीन्द्र को आते देख मा बेटी से अलग हो एक ओर जा खड़ी हो गई। योगीन्द्र पास पहुंच धीमेस्वर से पुकार उठा सौदामिनी-पति के पुकारने को सुन ढाढस आई आशा को मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान दे एक ओर खड़ी हो गई और अपना पति समझ घूंघट को थोड़ा हटा लिया जिस में योगीन्द्र पर उसके चन्द्रानन का भली भांति उजास पहुंच सके और उसके मन का भ्रम अन्धकार दूर हटै। योगीन्द्र उसका देवाङ्गना सा रूप देखतेही मोहित हो गया और चाहा कि उसका हाथ पकड़े किन्तु सौदामिनी यह कहते हट गई। मै अपराधिनी जारिणी हूं मेरा स्पर्श कर आप अपने को क्यों अपवित्र करते हो जान बूझ अपने को भ्रष्ट मत करो। सर्वेश्वर तुम्हें सुख और समृद्धि दे। मै आप की प्रथम पत्नी अपवित्र हो गई हूं तो अब हाथ जोड़ बारम्बार यही प्रार्थना है कि इस दूसरी के साथ भी ऐसाही बर्ताव न करना। नेत्रों से आंसू टपकने लगे जिस से उसके गुलाब के रङ्ग के कपोल भींज गये और मुग्ध सी हो गई। क्रमशः

अंगरेज़ी शिक्षा और अंगरेज़ी सभ्यता।

शिक्षा और सभ्यता इन दोनो के बारे में पहले इस के कि हम आगे बढ़ैं इतना सूचित कर देना उचित है कि ये दोनो जुदी २ बात हैं किन्तु दोनो का ऐसा घनिष्ट सम्बन्ध है कि एक को दूसरे से अलग करना टेढ़ी खीर है। तथापि इतना स्मरण रहै कि नई रोशनी का विष जैसा अंगरेज़ी सभ्यता में है वैसा अंगरेज़ी शिक्षा में नहीं। अंगरेज़ी शिक्षा Plus प्लस अंगरेज़ी सभ्यता जैसा हानि पहुंचा रही है वैसाही शिक्षा Mynus मइनस सभ्यता लाभदायक हैं। कौन न मानेगा कि शिक्षा हमारे लिये नेत्रोन्मीलन हुई इस से हमारे नेत्र खुल गये और हमे सब सूझने लगा। आंख खुलते देर न हुई थी कि नूतन सभ्यता ने आ दबाया और ऐसा भरपूर क़दम जमाया कि हम अपने को उसी के रंग में रंग गये। मुसलमानी शासन में मुसलमानों के रंग ढंग पर ढुलक अर्द्ध यवन तो कभी के बने थे अब इस सभ्यता ने हमें फिरंगी बनाना आरंभ किया केवल नाम मात्र को हिन्दू या आर्य जो कहो सब सही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस को अपने स्वत्व की पहचान न रही और अपने वास्तविक रूप को भूल गया कुत्ता की खसलत वाला उस का फिर क्या। जहां टुकड़ा मिला वहीं दुम फटकारने लगा। अच्छा कहा है—

अधोधः पश्यतः कस्य महिमा नोपचीयते ।
उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति ॥

अपने से नीचे को देखने वालों में किस की महिमा नहीं बढ़ती अपने से ऊपर देखते हुये सब दरिद्र हो जाते हैं। अपने से कम वाले को देख सन्तोष होता है कि हम इस से अधिक हैं। इसे एक जून झूरी रोटी भी नहीं मिलती हम दोनो जून स्वादिष्ट भोजन करते हैं ईश्वर का धन्यवाद है। ऊपर अपने से अधिक वाले को देख असन्तोष और डाह होती है उतनी अधिक समाई या लियाकत वाले का अनुकरण करने लगते हैं फल यह होता है लेई पूंजी सब खो बैठते हैं और हंसे जाते हैं। यही हाल इस नई सभ्यता के अनुकरण मे हमारा हुआ मसल है। "सोवैं भुसौले सपना देखैं लाख टके का"—"सूरत चुड़ैलों की मिज़ाज परियों का" घर के भीतर रहन सहन जैसी असभ्यता की और निकृष्ट है कि देख घिन होती है पर बाहर बाबू साहब अहल विलाइत से भी दो बालिश्त आगे बढ़े हुये हैं जिस्का निष्कर्ष यही ठहरा कि सुशिक्षा केवल ऊपर की टीम टाम मात्र है और यही उनके मत में तरक्की है। शराब पीना; न्याय अन्याय का ख्याल न कर जैसे बनै रुपया बटोरते रहना देह को खूब आराम पहुंचाना; विषयास्वाद में डूबे रहना; अपने मतलब में कहीं से ज़रा कसर न पहुचने पावे; यही सब उनके अनुसार उन्नति है। देश की उन्नति एक बहाना मात्र है वास्तव में अपनी उन्नति उनका मुख्य उद्देश्य है और यही सब हमारे कर्म्मचारियों के भी आंख का काटा है जिसे देख वे भीतरही भीतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसते हैं और अपनी बराबरी करना मानते हैं। पाठक अब आप ने समझा सभ्यता मिश्रित शिक्षा का क्या रूप है। अब चलिये ज़रा उस ओर को भी मुह मोड़िये जहां केवल शिक्षा है नूतन सभ्यता का लगाव नहीं हुआ। हम ऊपर कह आये हैं अंगरेज़ी शिक्षा से हमारा नेत्रोन्मीलन किया गया जो शिक्षा हमे पहले के ऋषि दे चुके थे और जिसे हम काल पाय भूल गये थे इस शिक्षा से उसी ओर हमारा ध्यान गया जैसा कोई गहरी नींद में पड़ा सो रहा हो सहसा जाग उठै--इस तरह का इस नई शिक्षा का प्रभाव उन्ही मे व्यापा जो उच्च कुल प्रसूत रहे जिनमे संयम और आत्मदमन Self controle का अभ्यास पहिले से पड़ा था। जैसा आग की चिनगारी कहीं पड़ी हो कंजा गई ज़रा दो फूक मारने से एक बारगी धदक उठे। उच्च कुल से हमारा प्रयोजन ब्राह्मणों का है हम यह कभी न कहैंगे कि और लोगों में वह आग नहीं दधक उठी किन्तु अधिक तर उन्में के विलायती सभ्यता के चंगुल में पड़ शिक्षा के सात्विक गुणों से अलग पड़े रह गये। संसार से सदा विरक्त रह कर भी संसारियों के उपकार में लगे रहना हमारे पूर्वज ऋषियों का क्रम था परंपरागत वह बात कहीं २ जो देखी जाती है तो कोई २ इन ब्राह्मणोही में। एशिया यूरोप अमरिका आदि देशों के लोग पराक्रम व्यापार शस्त्र विद्या विज्ञान, छल, कलाकौशल आदि में कितनाही निपुण हों पर ऋषियों के वंशधर ब्राह्मणों का स्वभाव सिद्ध सन्तोष निस्पृहता और ब्रह्मज्ञान उन्में न आवेगा। तालीम का सर्वोत्कृष्ट गुण चरित्र की पवित्रता तथा सद् व्यवहार और इतने पर भी निरभिमान यह अधिक तर उन्में न पाओगे जो नूतन सभ्यता में पगे हुये हैं। उसका कुछ लेश मात्र यदि कहीं बच रहा है तो किसी २ इन सुशिक्षित ब्राह्मणोही में जहां सभ्यता ने ज़ोर नहीं पकड़ा। कदाचित् इसी से हमारे यहां के ग्रन्थों में ब्राह्मणों को महीसुर "पृथ्वी पर देवता स्वरूप" लिख दिया है। इतना सब होने पर भी ऐसों को अभिमान नहीं होता जहां रहते हैं लोगों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना महत्व जतलाते नहीं फिरते पर अपने स्वाभाविक तेज से छिपते भी नहीं स्वामी रामतीर्थ सरीखे महानुभाव आप के सन्मुख हैं ऐसे कितने और भी गुप्त पड़े हैं। यदि कहैं भारत ऐसोंही के बल पर आगे को उठने की आशा कर रहा है तो अत्युक्ति न होगी। भारत की प्राचीन सभ्यता ब्राह्मणोंही के सहारे चटकी थी अब भी उन्ही का मुह जोह रही है। सच मानिये अधिकांश देश की दुर्दशा केवल ब्राह्मणोंही की जिल्लत और बेकदरी से है। इनके पहिले के पुरुषों में तो बड़ा त्याग था अब भी उस्का थोड़ा अंश किसी २ मे बना है। आप राज पाट ऐश्वर्य सब का भोग करते रहो इन्हे केवल वही दक्षिणा से काम--दक्षिणा मिलजाय आपके ऐश्वर्य की कभी स्पृहा न करेंगे प्रत्युत दक्षिणा के बदले मोटरियों आशीर्वाद का ढेर लगादेंगे। तो सिद्ध हुआ केवल शिक्षा बहु मूल्य रत्न है जो सभ्यता का संपर्क उस्से न होने पावे। ज्यों २ यह सभ्यता बढ़ती जायगी हम हीन होते जांयगे यह सभ्यता ही है जो देशी वस्तु का प्रचार खुल के नहीं करने देती। हे सर्वस्वापहारिणी नूतन सभ्यता तुम्हें साष्टांग प्रणाम है तुम ने हमारा सोने का घर कांच और मिट्टी का कर दिया तौभी तुम्हे सन्तोष नही आया अभी आगे और क्यार किया चाहती हो अस्तु।

विज्ञापनो का किवलेगाह महाविज्ञापन।

प्रमेहारि चूर्ण आदि पुरानी वीमारियों की अनेक दवाइयां बड़े २ प्रशंसा पत्रों के साथ आपने मंगाई होंगी तौभी बहुत सी नई बीमारियां ऐसी हैं जिन का पता कदाचित् शुश्रुत और बाण भट्ट के पिता को भी न रहा होगा-मैने सर्व साधारण के उपकारार्थ उन बीमारियों की दवायें बड़े परिश्रम से संग्रह की हैं-आज उनको उक्ति युक्ति सहित प्रकाश किये देता हूं जिसे मंगाना हो लिख भेजे मै वी-पी- द्वारा फौरन भेज सक्ता हूं--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभ्यता बटी। कोई कैसाही असभ्य हो नीचे लिखे अनुसार एक महीना लगातार इसके सेवन से सभ्य हो जायगा। अङ्गरेज़ी कपड़ा पहिनै; हैट और चश्मा लगाये। इङ्गलिश क्वार्टर में रहै। जहां तक बनै घर में अङ्गरेज़ी शब्दों का प्रयोग करै। घरवाली को साथ लै सांझ को बाहर हवा खाने जाय। खूब शराब पिये। अपने को हिन्दू कहते शरमाय। मूल्य १ डिब्बी का १ बइबिल।

कौमीयत संपादन चूर्ण। कैसा भी बुझी तबियत का नामर्द हो इसके सेवन से कौमीयत का जोश फौरन आ जाता है। उच्चकुल का अभिमान रक्खे पर आचरण में महा नहा नीच हो आठ कनौजिये नौ चूल्हे की भांत सह भोजन का बड़ा विरोधी रहै। बाल्यविवाह जारी रक्खे। दूसरे को तरक्की करते देख हंसे और हसद करै। दूसरे का बनता हुआ काम बिगाड़ अपने स्वार्थ साधन से न चूकै। मूल्य १ डिब्बी का १ फूट और ५ सेर बैर॥

धर्म वर्द्धक अवलेह। कोई कैसा भी अंगरेज़ी पढ़ा हो उसे कट्टर सनातन धर्मावलम्बी बनाना हो तो निम्न लिखित दवाइयों को छीले पेड़े या उबाले हुये मगद के साथ खाने से ठीक हो जायगा। नित्य गङ्गा स्नान करने जाय कार्तिक भर यमुना ज़रूर नहाय और वहां नगर की सुन्दरियों पर एक टक्क दृष्टि जमाने का अभ्यास करै तिलक। इतना लम्बा चौड़ा लगावै कि आध मील के फासिले से देख पड़े। स्वयं कितना भी दुश्चरित्र और पापाचारी हो पर दूसरों के साथ भोजन मे परहेज करै। पर उपदेश मे कुशल और प्रवीण हो किन्तु अपने जघन्य आचरण भूल जाय। दाम १ शीशी का धर्म सेवक की उपाधि॥

पण्डित प्रवाल--जिसे पण्डित बनने की इच्छा हो वह इसके सेवन से जल्द बड़ा विद्वान् होसक्ता है--लम्बी धोती बगल बन्डी भारी मगवा या पगड़ी-बोलने में दन्त्य 'स' को तालव्य 'श' कहे--बात करते चीचं २ जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है सो कहता जाय। नाम के आगे आचार्य आदि लिखे। किसी बात के निर्णय से अपनी हठ रक्खे। जैसी दच्छिणा पावै वैसी व्यवस्था दै दे। बात चीत में चर्पर और मुखर हो "पाण्डित्यं चापलंवचः" अपनी प्रतिष्ठा जमाने के लिये सच्च के। झूठ झूठ के। सच्च सिद्ध कर दिखावे। अमीरों के रिझाने के। भड़ैाआ बकना भी सीखे हो। सन्ध्या तक चाहो न करता हो पर दम्भ में स्नातक और श्रोत्रियों का भी गुरू हो। दाम १ शीशी का ५ सेर सुंघनी।

लेखक रसायन महामृगाङ्क॥ लिक्खाड़ बनना चाहता हो उस के लिये यह अमृत तुल्य गुणकारी है। उपन्यासों के। पढ़ लेखक बनने का दम भरै खड़ी बोली में टूटी फूटी कविता या तुक बन्दी करना जानता हो। हरिश्चन्द्र आदि पुराने लेखकों के लेख में भूल निकाले। शुद्ध शब्द लिखना चाहो न जानता हो पर संपादक बनने का हौसिला रखता हो। हरदम जोश खरोश में भरा हो और गवर्नमेंट के इन्तिज़ाम में भूल निकाला करे। दाम १ पुड़िया का हिन्दी प्रदीप के नादिहन्द ग्राहकों की बेशर्मी।

मेम्बरी प्राश। यह एक आशव 'शरबत' है इसके। १ टैमलेट रोज़ पी लेने से कौंसिल की मेम्बरी अथवा म्युनिसिपल मेम्बरी बहुत आसानी से मिल सक्ती है। इसके कई एक जुज़ डाक्टरी और हकीमी से भी संग्रह किये गये हैं इस से इस आशव में डाक्टरी यूनानी मिसरानी तीनों हिक्मतों के गुण हैं और वे जुज़ ये हैं। कलक्टरसाहब की हां में हां का सत्त ३ तोला--म्युनिसिपिलिटी की सफ़ाई का इत्र तीन पाव--लोगों में प्रतिष्ठा और आबरू का आब (पानी) अक्युआप्यूरा की जगह २ सेर--हौसटैक्स और चुंगी का स्वारस्य ३ छटांक--मेम्बरों में आपस की पारटी फीलिंग का गूदा सवासेर एलेकशन के समय वोट देनेवालों की खुशामद और पैगाम का बुरादा ६ माशे-१ कराबे का दाम--वोट न आने से मेम्बरी में नाकामयाब होने वालों के घर की उदासी।

X. Y. Z.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने के पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २८ सं० ५ } प्रयाग { मई सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ सं० ५ — प्रयाग — मई सन् १९०६ ई०

प्राप्त ग्रन्थादि ।

अनन्त ज्वाला ।

मिस्टर चार्ल्स कृत अंगरेज़ी पुस्तक के आधार पर चीन दर्पण आदि कई पुस्तकों के रचयिता महेन्दुलाल गर्ग ने इस को रचा है--इस में रूस और त्वैकसी के पास और कासपियन् आदि के तट वर्ती देशों का तथा वहां के निवासियों की रहन सहन व्यापार आदि का विस्तृत वर्णन है जिसे पढ़ जी रमता है-मूल्य ॥) मिलने का पता--सुख संचारक प्रेस मथुरा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायत्री भाष्य ।

पं० जगन्नाथ मिश्र विरचित इस में ३८ प्रकार का अर्थ गायत्री का किया गया है। गायत्री की स्तुति, उस के जप आदि का माहात्म्य तथा गायत्री के सम्बन्ध में हमारे यहां के ग्रन्थों में जो कुछ लिखा गया है उस सब का संग्रह जैसा इस में है वैसा कहीं न मिलेगा। ग्रन्थ संग्रह करने योग्य है पं० जगन्नाथ जी की योग्यता इस के अवलोकन से विधिवत् प्रगट हो जाती है। बिना मूल्य पुस्तक वितरण की जाती है इस का विशेष धन्यवाद ग्रन्थकर्त्ता को है॥

जपानी बोल चाल।

इस में जपान की बोल चाल के शब्द देव नागरी अक्षरों में दे उन के माने उन्ही शब्दों के नीचे दिये गये हैं और उसी भाषा के छोटे २ जुमले भी मै माने के दिये गये हैं। जपानी भाषा का कुछ परिज्ञान इस से हो सक्ता है। प्रथम भाग बाबू प्यारेलाल वृष्णी रचित मूल्य ॥) जगद्विनोद यंत्रालय अलीगढ़ में छपी है॥

Praetical Telegraph. तार चलाने की विद्या का गुरु इस मे दिया गया है तार चलाना सीखने के लिये बड़ी उपयोगी है। मूल्य ॥) जगत विनोद प्रेस अलीगढ़ में छपी है-मूल्य दोनों का अधिक है॥

मोहिनी मन्त्र।

सामुद्रिक विद्या की यह पुस्तक है स्त्री और पुरुष दोनों के एक २ अंग का लक्षण और उनका फल इस में दिया है--पुस्तक बड़े उपकार की है बा०मोहन लाल गुप्त रचित-जगत विनोद प्रेस अलीगढ़ की छपी॥

गौरी दिगम्बर प्रहसन।

यह प्रहसन संस्कृत में तिरहुत के रहने वाले पं० शंकर मिश्र का बनाया है। हमें यह प्रकाश करते हर्ष होता है कि संस्कृत में भी प्रहसन अब तक बनते जाते हैं। यद्यपि इस का लेख संस्कृत के पुराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवियों के साथ तो जोड़ नहीं खाता तौभी संस्कृत में एक नई रचना पुराने नाटकों के क्रम की है-इस से प्रशंसनीय है मूल्य ।=)

छुधा कर चूर्ण ।

जैसा नाम वैसा ही गुण भी इस का है खाने में स्वादिष्ट भूख बढ़ाता है और पाचक भी है-दाम १ शीशी का ।) मिलने का पता ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्द राज मन्दिर शीतलाघाट बनारस ॥

मूर्ति पूजा ।

स्वामिवर हरिप्रसाद कृत-यह ग्रन्थ बड़ी प्रौढ़ संस्कृत में लिखा गया है । ग्रन्थ के अवलोकन से ग्रन्थकार का दर्शन में प्रचण्ड पाण्डित्य प्रगट होता है । इस में मूर्तिपूजा श्रुतिस्मृति उपनिषद् और पुराण वाक्यों से उत्तम ढंग पर सिद्ध की गई है । आरम्भ तो ऐसे ढंग से किया है कि मालूम होता है मूर्तिपूजा की जड़ ग्रन्थकर्ता उखाड़ दिया चाहते हैं । किन्तु धीरे २ अन्त में खण्डन की वेही सब युक्तियां मूर्ति पूजा मण्डन की सहकारी हो गयीं हैं-बम्बई निर्णय सागर प्रेस में यह पुस्तक छापी गई है ॥

संपादकीय मन्तव्य ।

अन्योन्य जल कल्लोलवाली दोनदियों के संगम सदृश धर्म महा मण्डल और महाराज दरभंगा इस दो महा का संगम समझदारों को एक अद्भुत अन्योन्याश्रय की बहार दिखला रहा है । पाणिनिव्याकरण में अन्योन्याश्रय एक दोष मान सिद्ध कर दिया गया है कि अन्योन्याश्रय दोष वाले कार्य सफल नहीं होते । इस परस्पर संगम के अन्योन्याश्रय मे भी कुछ ऐसाही पाया जाता है कि आगे चल इस में सफलता हो वा न हो सन्दिग्ध है । क्योंकि दोनों को स्वार्थ बुद्धि दवाये है और दोनों अपनी २ घात में लगे हैं । महा मण्डल ने यह समझ लिया है कि बड़े भारी श्रीमन्त महाराज को अपनी मूठी में कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया अब मण्डल की ताकत का पार पाना दुश्वार है। उधर महाराजा दर्भंगा अलग ही अपनी घात में हैं कि हम ऐसी भारी जमात के प्रेसिडेंट हैं तो गवर्नमेंट की नज़र में हमारा भारी भरखं होना बहुत ही बहुत बढ़ गया। किन्तु यहां के कुम्भ मेले में मण्डल के कई एक अधिवेशन से इसका सब भीतरी हाल खुल गया। हम अपने पिछले एक नम्बर मे लिख चुके हैं कि धर्म पर ऊपरी देखावट का आवरण आवश्यक है। वह मण्डल के यहां पर उन अधिवेशनो से स्पष्ट हो गया। गतानुगतिक अन्धपरंपरा मे मण्डल की चाहो जो कदर और प्रतिष्ठा हो पढ़े लिखे लोगों को तो इस की ओर से खटक होगई। हम आरंभ ही से सोशल कानफरेन्स और महामण्डल दोनों का प्रतिवाद करते आये हैं। कानफेरेंस का इस लिये कि यह कपट कापटिकों का अखाड़ा है और मण्डल को इस लिये कि यह स्वार्थ में चतुर लोगों का वितान है॥

कलवार गज़ट ने जाति शीर्षक एक लेख से हम कौन हैं इस का भरपूर परिचय दे दिया। उच्च जाति खास कर ब्राह्मण पर न जानिये कब के जमे हुये बुखार का सहसा उद्गार इस ने कर डाला। इस में सन्देह नहीं अमेरिका आदि देशों में ऊंच नीच बड़े वा छोटे के भेद का उठ जाना ही तरक्की का बाइस हुआ किन्तु जाति का क्रम उठ जाने से भारत में क्या भयंकर परिणाम होगा सो न सोच अपनी राय जो मन में आया लेखक महाशय गा गये हैं। हम सब चेष्टा अपनी तरक्की की करते रहैं पर एक दूसरी जाति मुसलमान जिन से हमारा दामन चोली का अन्तर है हमे कभी न उठने देंगे-जब तक इन में का एक भी शेष रहेगा विघ्न डालने से न चूकेगा। विलाई कीसी खासीयत इन में देखी जाती है बिल्ली जब दूध नहीं पीने पाती तो ढरका देती है। बरोदा के गाइकवार की तो यह भी राय है कि हिन्दू मुसल्मान मे "इनूटर मेरियेज" बिवाह शादी प्रचलित हो जाय पर गइकवार का यह मन्तव्य उन्ही की गांठ मे बंधा रहे काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मे न लाया जाय तो इसी में हमारी भलाई है। हमे तो वही क्रम ठीक मालूम होता है जो जल वायु तथा प्राकृतिक घटनाओं को खूब परख पहले के ऋषियों ने चला दिया है-इस समय उस क्रम पर हमारे यहां जाति नहीं है इस से अनेक दोष उठ खड़े हुये हैं। Purity of blood रजवीर्य की शुद्धता को हम अधिक मानते हैं जाति कायम रहने से उस नसल में फरक नहीं आ सक्ता। ब्राह्मण जाति के साथ लेखक का इतना मत्सर प्रगट किये देता है कि इन्हे कहां तक अपनी योग्यता का घंमड है तथा चित्त में कितना संकीर्ण भाव है। इस गिरे ज़माने में जब ब्राह्मण इस कदर रद्दी हो गये तौ भी देश के उद्धार का काम सब से अधिक वेही कर गये और कर रहे हैं जो जाति के ब्राह्मण हैं। आशा करते हैं आग से कलवार गज़ट सावधान हो जायगा ऐसी ऊट पटांग तान न छेड़ बैठेगा और हमे माफ भी करेगा॥

गतांक में राघवेन्द्र ने मालवीय महोदय का चित्र दे अपना दुर्बल चित्त हमलोगों को चिन्हाय दिया। इस चीन्ह पहचान के उपरान्त यह मालूम हो गया कि सम्पादक को चलता पुरज़ा हो जाने की कहां तक ख्वाहिश है और उस ख्वाहिश की कितनी सीमा है। ऐसा मनुष्य जो निः स्वार्थ देश भलाई में तत्पर है और उस से लाभ उठाना कैसा वरन बड़ा नुकसान सह रहा है उसे ऐसी दक्षिणा देना राघवेन्द्र ही से बन पड़े-राघवेन्द्र सम्पादक बड़े लोग हैं बड़ों को सब सोहता है॥

सैना विभाग में प्रति वर्ष कई करोड़ का खर्च बढ़ जाने के प्रतिवाद में गोखले महाशय ने अपनी कौन्सिल की स्पीच में जो कुछ कहा उसका खण्डन पायोनियर अपने ढंग पर करता हुआ गोखले से चिढ़ उठा है। क्या पायोनियर यही चाहता है कि हमें जो आघात पहुंचे उसे मुह से कहैं भी नहीं? यह तो निश्चय है कि पायोनियर हमलोगों की भलाई क्यों चाहेगा? किन्तु बुराई हिन्दुस्ताम की कहां तक हो इस की भी तो कुछ हद्द हो जानी चाहिये॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती और भारतमित्र ये दो वीर केशरी इनदिनो बेतरह लड़ रहे हैं और दोनों अपनी २ लेख शक्ति का इम्तिहान देते हुये लेखक की कोई डिगरी हासिल करने के उद्योग मे लगे हैं देखें इस में कौन अन्त तक पास होता है और कौन फेल ॥

दृढ़ और पवित्र मन।

मन की तुलना मुकुर के साथ दी जाती है जो बहुत ही उपयुक्त है। मुकुर में तुह्मारा मुख साफ तभी देख पड़ेगा जब दर्पण निर्मल है। वैसा ही मन भी जब किसी तरह के विकार से रहित और निर्मल है तभी मनन जो उस का व्यापार है भली भांत बन पड़ता है। तनिक भी बाहर की चिन्ता या कपट तथा कुटिलाई की मैल मन पर संक्रामित रहे तो उस के दो चित्त हो जाने से सूक्ष्म विचारों की स्फूर्ति चली जाती है। इसी से पहिले के लोग मन पवित्र रखने को बन में जा बसते थे-प्रातःकाल और सांझ को कहीं एकान्त स्थल में स्वच्छ जलाशय के समीप बैठ मन को एकाग्र करने का अभ्यास डालते थे। मन की तारीफ में यजुर्वेद संहिता की ३४ अध्याय में ५ ऋचायें हैं जो ऐसे ही मन के सम्बन्ध में हैं जो अकलुषित स्वच्छ और पवित्र हैं। जल की स्वच्छता के वारे में एक जगह कहा भी है "स्वच्छं सज्जनचित्तवत्" यह पानी ऐसा स्वच्छ है जैसा सज्जन का मन-अस्तु उन ५ ऋचाओं में दो एक को हम यहां अनुवाद सहित उद्धृत कर अपने पढ़ने वालों को यह दिखाया चाहते हैं कि वैदिक समय के ऋषिमुनि मन की फिलासोफी को कहां तक परिस्कृत किये थे।

"यस्मिन्नृचः सामयजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता
रथनाभाविवाराः-यस्मिं श्चित्तं सर्वमोतं
प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥
सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीषु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिर्वाजिन इव-हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु"॥

रथ की पहिया में जैसा आरा सन्निविष्ट रहते हैं वैसाही ऋग् यजु साम के शब्द समूह मन में सन्निविष्ट हैं। पट में तन्तु समूह जैसा ओत प्रोत रहते हैं वैसा ही सब पदार्थों का ज्ञान मन में ओत प्रोत है। अर्थात् मन जब अकलुषित और स्वस्थ है तभी विविध ज्ञान उस मे उत्पन्न होते हैं व्यग्र हो जाने पर नहीं। जैसा चतुर सारथी घोड़ों को अपने आधीन रखता है और लगाम के द्वारा उन को अच्छे रास्ते पर ले चलता है वैसा ही मन हमें चलाता है। तात्पर्य्य यह कि मन देह रथ का सारथी है और इन्द्रियां घोड़े हैं-चतुर सारथी हुआ तो घोड़े जब कुपन्थ पर जाने लगते हैं तब लगाम कड़ी कर उन्हें रोक लेता है। जब देखता है रास्ता साफ है तो बाग डोर ढीली कर देता है वैसा ही मन करताहै। जिस मन की स्थिति अन्तःकरण में है जो कभी बुढ़ाता नहीं जो अत्यन्त वेग गामी है वह मेरा मन शान्त व्यापार वाला हो॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य
तथैवैति। दूरं गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

चक्षु आदि इन्द्रियां इतना दूर नहीं जातीं जितना जागते हुये का मन दूर से दूर जाता है और लौट भी आता है। जो दैव अर्थात् दिव्य ज्ञान वाला है। आध्यात्मिक सम्बन्धी सूक्ष्म से सूक्ष्म विचार जिस मन मे आसानी से आ सक्ते हैं। प्रगाढ़ निद्रा की सुषुप्ति अवस्था में जिस का सर्वथा नाश हो जाता है जागते ही जो तत्क्षण फिर जी उठता है। वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो अर्थात् सादा उस में धर्म ही स्थान पावे पाप मन से दूर रहे।

मन की बराबर चंचल संसार में कुछ नहीं है। पतञ्जलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामुनि ने उसी चंचलता को रोक मन के एकाग्र रखने को योग दर्शन निकाला। यूरोप वाले हमारी और २ विद्याओं को तो खींच ले गये पर इस योग दर्शन और फलित ज्योतिष पर उन की दृष्टि नहीं गई सो कदाचित् इसी लिये कि ये दोनो आधुनिक सभ्यता के साथ जोड़ नहीं खाते। इस तरह के निर्मल मन वाले सदा पूजनीय हैं। जिन के मन में किसी तरह का कल्मष नहीं है द्रोह ईर्ष्या मत्सर लालच तथा काम वासना से मुक्त जिन का मन है उन्ही को जीवन्मुक्त कहेंगे।

बुद्ध और ईसा आदि महात्मा दत्तात्रेय और याज्ञ वल्क्य आदि योगी जो यहां तक पूजनीय हुये कि अवतार मान लिये गये उन में जो कुछ महत्व था सो इसी का कि वे मन को अपने वश में किये थे। जो मन के पवित्र और दृढ़ हैं वे क्या नहीं कर सक्ते संकल्प सिद्धि इसी मन की दृढ़ता का फल है। शत्रु ने चारो ओर से आके घेर लिया; लड़ने वाले फौज के सिपाहियों के हाथ पांव फूल गये भाग के भी नहीं बच सक्ते, सबों की हिम्मत छूट गई, सब एक स्वर से चिल्ला रहे हैं हार मान अब yield शत्रु के सिपुर्द अपने को कर देने ही मे कल्याण है; कैदी हो जांयगे बला से जान तो बची रहेगी। पर सेनाध्यक्ष Commander अपने संकल्प का दृढ़ है सिपाहियों के रोने गाने और कहने सुनने से बिचलित नहीं होता; कायरों को सूरमा बनाता हुआ रण भूमि में आ उतरा; तोप के गोलों का आघात सहता हुआ शत्रु की सेना पर जा टूटा; द्वन्द्व युद्ध कर अन्त को विजयी होता है। ऐसा ही योगी को जब उस का योग सिद्ध होने पर आता है तो विघ्न रूप जिन्हे अभियोग कहते हैं होने लगते हैं इन्द्रियों को चलाय मान करने वाले यावत् प्रलोभन सब उसे आ घेरते हैं। उन प्रलोभनो में फस गया योग से भ्रष्ट हो गया। अनेक प्रलोभन पर भी चलायमान् न हुआ दृढ़ बना रहा तो अणिमा आदि आठो सिद्धियां उसकी गुलाम बन जाती हैं योगी सिद्ध हो जाता है। ऐसाही विद्यार्थी जो मन और चरित्र का पवित्र है दृढ़ता के साथ पढ़ने में लगा रहता है पर बुद्धि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीक्ष्ण नहीं है; बार २ फेल होता है तौभी ऊब कर अध्ययन से मुह नहीं मोड़ता; अन्त को कृतकार्य हो संसार में नाम पाता है। बड़ी सी बड़ी कठिनाई में पड़ा हुआ मन का पवित्र और दृढ़ है तो उस की मुशकिल आसान होते देर नहीं लगती। आदमी में मन की पवित्रता छिपाये नहीं छिपती न कुटिल और कलुषित मन वाला छिप सक्ता है। ऐसा मनुष्य जितनाही ऊपरी दांव पेच अपनी कुटिलाई छिपाने को करता है उतनाही बुद्धिमान् लोग जो ताड़बाज़ हैं ताड़ लेते हैं। कहावत है "मन से मन को राहत है" "मन मन को पहचान लेता है"। पहली कहावत के यह माने समझे जाते हैं कि जो तुम्हारे मन में मैल नहीं है वरन तुम बड़े सीधे और सरल चित्त हो तो दूसरा कैसा ही कुटिल और कपटी है तुम्हारा और उस का किसी एक खास बात में संयोग वश साथ हो गया तो तुम्हारे मन को राहत न पहुंचेगी। जब तक तुम्हारा ही सा एक दूसरा उस में पड़ तुम्हें निश्चय न करादे कि इसका विश्वास करो हम इस के बिचवई होते हैं। दूसरी कहावत के मतलब हुये कि हम से कुटिल और चाल बाज़ का हमारे ही समान कपटी चालाक का साथ होने से पूरा जोड़ बैठ जाता है।

मस्तिष्क, मन, चित्त, हृदय, अन्तःकरण, बुद्धि ये सब मन के पर्याय शब्द हैं दार्शनिकों ने बहुत ही थोड़ा अन्तर इन के जुदे २ Functions कामों में माना है-अस्तु हमारे जन्म की सफलता इसी में है कि हमारा मन सब बक्रता और कुटिलाई छोड़ सरल वृत्ति धारण कर; भगवद्चरणारविन्द के रसपान का लोलुप मधुप बन; अपने असार जीवन को इस संसार में सारवान् बनावे; और तत्सेवानुरक्त सहज्जनो की चरण रज को सदा अपने माथे पर चढ़ाता हुआ ऐहिक तथा आमुष्मिक अनन्त सुख का भोक्ता हो; जो निश्चितमेव नाल्पस्यतपसः फलम् है। अन्त को फिर भी हम एक बार अपने वाचकवृन्दों को चिताते हैं कि जो तभी होगा जब चित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतवाला हाथी सा संयम के खूटे मे जकड़ कर बांधा जाय। अच्छा कहा है ॥

अप्यस्ति कश्चिल्लोकेस्मिन्येनचित्त मदद्विप: ।
नीतः प्रशमशीलेन संयमालानलीनताम् ॥

सुलभ कार्य ।

एक दिन हमारे एक आत्मज्ञानी मित्र ने जो आज कल एक ब्रह्म की दृष्टि से संसार को देखने वालों में अग्रणी बनने का दावा कर रहे हैं, हम से पूछा कि वह सहज कर्म कौन सा है जो श्रीकृष्ण भगवान् ने अर्जुन से गीता के अठारहवें अध्याय में कहा है कि "सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्" उन्हों ने यह भी कहा कि अठारह अध्याय गीता का सार इतना ही है इसी में सब करामात है। जो इसको जानता है वही गीता के गूढ़ तत्व को समझता है। यह सुन थोड़ी देर तो हम योंही विचारते रहे पश्चात् निज क्षुद्र बुद्धि के अनुसा उत्तर दिया। उस उत्तर से मित्र महाशय का मन न भरा तब हमने दूसरी बात सोच कर कहा। उस से भी उन्हें सन्तोष न हुआ। फिर तीसरी चौथीबार। ऐसे ही कई बार कई तरह से अपनी समझ से उत्तर दिये। मानो हमने अपने ज्ञान की पूंजी सब खोल कर बता दी; तौभी उनको सन्तोष न आया। तब हमने विनती पूर्वक निवेदन किया कि महाराज, आपही बतलावें कि वह सहज कर्म कौन सा है। हम ने बहुत २ गिड़ गिड़ा कर पूछा पर कोई फल न हुआ। मित्र महाशय पूरे मित्र निकले आखिर में बहुत नाक रगड़ने पर एक कुटिल हास्य के साथ यह कह चुप हो गये कि भाई, इसका जानना बहुत कठिन है। ऐसी बातें सत्संगति से प्राप्त होती हैं। हम अब तक मित्र जी को सत्संगति का द्वार समझते थे पर उनकी माया देख मन ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन अति खिन्न हुए और अपना सा मुंह ले चले आये। चले तो आये किन्तु उस हास्य का प्रभाव न गया। दिन प्रति दिन यह जानने की लालसा बढ़ती गई कि वह सहज कर्म क्या है। टीकाकारों का आशय हम पहिले बतला चुके थे अतः उसे फिर देखने की इच्छा न हुई। अब हम इस की टोह में लगे। जो कोई जानकार मिलते, जहां २ सत संगति होती इस की चर्चा छेड़ देते परन्तु किसी से इस की मन भावनी मीमांसा न हो सकी। ईश्वर को कोटानुकोटि धन्यबाद है कि आज हमारी वह इच्छा, वह गाढ़ी लालसा पूरी हुई और दिन रात का परिश्रम सफल हुआ। दुःख ग्लानि सब मिटे। इस सहज कर्म की जिज्ञासा सब को रहती है यह सोच हमने इस के प्रकाश कर दिखाने का साहस किया है। मित्र जी ने तो बतलाया नहीं, परन्तु हमने निज अन्वेषणी बुद्धि से इसे प्राप्त किया है। स्वार्जित द्रव्य में वा नई आविष्कृत बात में कृपण जन को लोभ होता है लेकिन हम इस लोभ के फन्दे में नहीं आते। "प्रदीप" के पाठक ज़रा ध्यान देकर पढ़ें। सहज कर्म वह वस्तु है जिस के साथ ये आठगुण निरंतर निवास करते हैं। उस के आते ही आठो गुणों की माला आप से आप कण्ठ देश को सुशोभित कर देती है। उन में प्रथम गुण निश्चिन्तता है। चाहे घर उजरे चाहे बसे। देश चाहे आज ही नरक कुण्ड हो जाय चाहे स्वर्ग भूमि की शोभा धारण कर ले। खाने के मिले चाहो न मिले। जड़ पत्थर के समान चुप चाप बैठे रहना, बस। दूसरा गुण है बहु भोजन प्रियता। यद्यपि विना चिन्ता के कुछ मिलेगा नहीं और मिला भी तो मन माफिक न होने से गले के नीचे उतरेगा नहीं तथापि भाग्य पर भरोसा किये हाथ पांव न हिलाना और इतना खाना कि देखने वाला घबड़ा कर भाग जाय। तीसरा गुण है अति मुखरता अर्थात् खूब गालबजाना यह पण्डित बनने का पूरा साधन है "पाण्डित्ये चापलं वचः"। चौथा गुण रात्रि दिन २४ घंटे स्वप्न देखना। यह गुण सिवाय जितेन्द्रिय तपस्वी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और किसी को मिलने का सौभाग्य नहीं होता। इसी गुण के कारण श्रीकृष्ण जी गुड़ाकेश कहलाते थे। ५ वां गुण–कार्य और अकार्य में अन्धे और बहिरे के समान विचारवान् कहलाना। अर्थात् जो कार्य कर्त्तव्य वश किया जावे उसमें अन्धा बनकर प्रवृत्त होना और जो दुष्कार्य है उसे बहिरा बन किसी के सिखापन को न सुन करने लग जाना। यह एक उत्कृष्ट गुण है। इस से आत्म निर्भरता का परम पूजनीय गुण विना यत्न ही आता है। छठा गुण मान अपमान को एक सा जानना। यह गुण प्राप्त होने से वेदान्त का तत्व जानने की आवश्यकता कभी नहीं पड़ती। गोया इस से संसार मुट्ठी में आ जाता है। ७ वां गुण है रोगी बना रहना। जिसके पूर्वले के कर्म ज़बरदस्त होते हैं वही आदमी रोगी बन पलङ्ग पर पड़े घरवालों से अपनी सेवा कराता है। रोगी होना तात्विक दृष्टि से देखो तो भोगी बनने का एक मात्र लक्षण है। आठवां गुण दृढ़ बपु अर्थात् संड मुस्संड बने रह कर अजगरी वृत्ति धर लेना और दूसरे की कमाई पर चैन उड़ाना। अब कहिये ये गुण कैसे उच्च कोटि के हैं। ये जिस महा पुरुष में हों उस के सुख में कोई कसर नहीं रहती। पुरुषार्थ चतुष्टय उसी को प्राप्त होते हैं। लोक और परलोक दोनों उसके दिव्य हो जाते हैं। तिस पर परमलाभ यह है कि ये गुण बहुत सहज हैं। अनायास मिलते हैं। इन के लिये श्रम की आवश्यकता बिलकुल नहीं रहती। इन गुणों की जनक जननी दोनो एक है वही मूर्खता जो हमारे प्राणों से प्यारी है। बस, सुखी होने का सहज साधन यही है। जिस को यह लटका प्राप्त करना हो वह देर न करे। हमारी नहीं तो एक अनुभवी कवि की उक्ति पर विश्वास किये रहे अवश्य सुख प्राप्त होगा। वह उक्ति यहां हम ज्यों की त्यों लिखे देते हैं। हो सके तो हर एक आदमी इसे कंठ कर लें और पूर्वोक्त बातों से मिला कर अर्थ भी समझ लें। समझ जाने पर इस की सत्यता की प्रशंसा वह आप करेगा। वह उक्ति यह है :–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्खत्वं सुलभं भजस्व कुमते मूर्खस्य चाष्टौगुणा निश्चिन्तो बहु भोजनोऽतिमुखरो रात्रिं दिवा स्वप्नभाक् । कार्याकार्य विचारणान्धवधिरो मानापमाने समः प्रायेणामयवर्जितो दृढ़ वपु मूर्खः सुखं जीवति ॥

यथार्थ में इस से बढ़कर सुलभ और सुखदायक कार्य कोई नहीं है। इस को पाकर हम अपनी लालसा ही पूरी नहीं कर सके प्रत्युत ऐसे सुखी हुए जैसे पाणिनि महाराज अरुण शिखा की धुनि के द्वारा ह्रस्व दीर्घ और प्लुत का भेद प्रगट करके और न्यूटन साहिब आम्रफल पतन विधि से गुरुत्वाकर्षण का नियम खोज कर प्रसन्न हुए थे॥

अनन्त राम पांड़े-रायगढ़

राम-विनय।

अहो राम सुधि अब लागी तव-लग्यो जबै दुख; आन।
सुख सम्पदा सूर्य जब हीं दुख; अन्धकार महं छान॥
जब लगि रह्यो बाहुबल अपनो, रह्यो पास महं दाम।
रही देश महं स्वतन्त्रता जब; रह्यो अनेक अराम॥
विद्या रही और चतुराई; रह्यो जगत सन्मान।
रहे अनेकन मित्रादिक जब; रह्यो पास धन धान॥
रही स्वदेश-वस्तु घर २ में; रही न फूट कराल।
रही न कुमति कहूं जग स्वामी; रही सुमति सुविशाल॥
रह्यो वर्न जब चार और जब, रह्यो लोक आचार।
रह्यो 'सत्य' कलु मन्त्र जबै अरु, तन्त्र रह्यो सुविचार॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह्यो धरम अरु करम रह्यो जब, रह्यो नियम जपजोग ।
रह्यो विराग तपादिक जबहीं, रहे सुपथ सब लोग ॥
रह्यो सनातन धरम देश, अरु भेष रह्यो परमान ।
रही देश भाषा उन्नति जब, नृपगन रहे सुजान ॥
रह्यो न सिग्रेट वाइन ह्विस्की, ब्राण्डी बोतल लाल ।
रह्यो न एकाकार जनों में, अत्याचार कराल ॥
रही न रोटी डब्बल बिसकुट, मटन बीफ़ को राज ।
रही न जग में नई सभ्यता, रह्यो न 'ब्रह्म समाज' ॥
रह्यो न आई. सी. एस एको-बूट हैट औ कोट ।
रही न कालर नेकटाई कहुं-रह्यो न ओवर कोट ॥
रही न नारिन की स्वतन्त्रता-सभ्य देश की चाल ।
रह्यो न ब्राह्मण रेभरेण्ड जब-रह्यो न होटल हाल ॥
रही न इतनी चिन्ता भारी-पेट भरन के काज ।
रही न जग में निर्लज्जा की-इतनी बड़ी समाज ॥
रह्यो न खंड खंड पाखण्डहुं-अरु अखण्ड नहिं पाप ।
रह्यो नाहि विधवा बिबाह अरु बाल बिवाहिक ताप ॥
रह्यो बेद जब घर २ नाहीं-ब्राह्मण नहि सब जात ।
रह्यो नाहिं विज्ञान ज्ञान-औ वर्तमान की बात ॥
रहे न जात थियेटर देखन-गुरु शिष्य इक साथ ।
रह्यो मात पित सेवक जबही-पुत्र गुणी, हे नाथ ॥
रह्यो पतिव्रत में नारिन जब-नर पत्निव्रत माहिं ।
रह्यो प्रेम भाई भाइन महं-घरन लड़ाई नाहिं ॥
रह्यो नाहिं यह प्लेग तबै जग-राकस सम विकराल ।
रह्यो नाहिं रोगादिक एकौ, अवर्षणादि अकाल ॥
जब लगि रह्यो अनन्द चहूं दिसि, धरो न तुम्हरो ध्यान ।
अब जब घेरन लगे घोर दुःख-तब तव करते गान ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वार्थी, यहि बिधि अहैं प्रभो हम; लिप्त स्वार्थ के साथ।
सुख महं एको बार न सुमिरो; नाम तुम्हारो नाथ॥
अब दुख परे गोहारत तुमही-कृपा सिन्धु रघुनाथ!
डूबत हा अगाध जल माहीं, नाथ, गहो अब हाथ॥
बेगि उबारहु दुख सागर तें-दीन बन्धु हे राम!
तुम्हरे रहत दशा इमि हमरी—तो प्रभु कह बदनाम॥
सूरज रहत जगत में चहुं दिसि-छयो जबै अन्धियार।
तो देवैं केहि दोष कहो प्रभु! हा! ह! दुःख अपार॥
तदपि धैर्य रखि करत विनय इमि, है कछु नहि मम पास।
केवल रटत निरन्तर तेरो, नाम- राम! सुख आस॥
यद्यपि नसो हमारो सिगरो, जन मन धन बल धाम।
किन्तु भरोसो तदपि प्रभो यहि "निर्धन के धन राम"॥

लोचन प्रसाद पांड़े रायगढ़

आत्म श्लाघा।

संसार में ऐसे पुरुष बहुत हैं जो अपनी तारीफ़ सुन बड़े प्रसन्न हो कुप्पा सा फूल उठते हैं। वह उन की प्रशंसा योग्य है या अयोग्य; किन्तु वे इसे कभी ध्यान में नहीं लाते कि हम इस तारीफ़ के लायक हैं या नहीं। प्रशंसा लोभी यह भी नहीं सोचते कि हमने ऐसा कोई काम किया है; या तारीफ़ करने वाले हमे खुश कर अपना काम किसी तरह हम से निकाला चाहते हैं। सच तो यों है कि ऐसा कोई विरला पुरुष सिंह मिलैगा जो आत्मश्लाघा की वासना सर्वथा चित्त में न रख सर्वोपकारी किसी काम को कर गुज़रा हो। जगत में हमारी कीर्त्ति फैलैगी यह सोच लोग रणभूमि में सिर कटाय जूझ जाते हैं और पीछे पांव नहीं देते॥ ऐसे ही पुरुष रत्नों से यह क्षितितल मण्डित हो कभी २ जगमगा उठता है और ऐसेही लोग वास्तव में प्रशंसा भाजन हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसों की जितनी स्तुति गाई जाय थोड़ी है। इस तरह के दिगन्त व्यापी यश वाले इस समय गोखले सुरेन्द्र नाथ बनर्जी इन प्रान्तों में मालवीय महोदय हैं। जो सर्वतोभावेन देशोपकार और देश के उद्धार में सन्नद्ध हैं। इन श्रेष्ठ पुरुषों को निरी आत्मश्लाघा की बासना नहीं है बरन गोधूम वास्तुक सिंचन न्याय का अनुसरण है। जैसा उद्देश्य गेहूं के सींचने का रहता है साथ ही बथुआ भी सिच जाता है। लक्ष्य देश के उपकार का है प्रशंसा एक आनुषंगिक फल मिलता रहे तो इसका कोई हर्ष भी नहीं। हमे तो ऐसा ही मालूम होता है कि केवल आत्मश्लाघा के खयाल से ये लोग यह काम कर रहे हों सो नहीं बरन अपना कर्त्तव्य समझ प्रवृत्त हैं। ऐसों की संख्या हमारे यहां अभी बहुत कम है। ऐसे२ पुण्य पुंज यहां अधिक होते तो यह भिखारी देश क्यों रसातल को धंसा जाता और आर्त दशा में पड़ दासत्व की शृङ्खला से जकड़ा रहता। पुरुष रत्न तो यहां दुर्लभ हैं पर ऐसे पुरुषाधमो के बोझ से हिन्दुस्तान की धरती अलबत्ता दबी जा रही है जो झूठी तारीफ़ के रसिक हैं। आत्मश्लाघा वाले कभी २ अपने मुंह से अपनी प्रशंसा करने लगते हैं। और उस अपनी तारीफ़ के जोश के सामने यदि किसी दूसरे की स्तुति की गई तो उसे काटने लगते हैं। इतनाहीं नहीं वलिक उस तारीफ़ करने वाले को और जिस की तारीफ़ की जाती है दोनो को डाह और हसद की नज़र से देखते हैं। ऐसे कलुषित चित्त वालों की गणना खलों में की जाती है। सच पूछो तो खलता की यह सब से बड़ी पहचान है; नैषध में नल की प्रशंसा के प्रसंग में श्रीहर्ष ने खल की पहचान इस तरह पर कहा है॥

"वगूजाल वैफल्यमसह्यशल्यं गुणाधिके वस्तुनि मौनिता चेत्। खलत्वमल्पीयसि जल्पितेपि तदस्तुवन्दिभ्रम भूमितैव"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण में अधिक की यथोचित स्तुति न करना मानो बोलने की शक्ति रखने वाली जिह्वा की कल्पना ही मुख में व्यर्थ की गई है और चित्त को एक ऐसी चोट है जो सही नहीं जा सक्ती। जितना गुण उस व्यक्ति गत है उस्से घटा के कहना खलता है जिस से यह सर्वथा प्रगट है कि हमको उसके गुण पर डाह और ईर्ष्या है तब तो पूरी गुण स्तुति उसकी नहीं करते। अतएव हम उस गुणाधिक की प्रशंसा बार २ निरन्तर करते ही रहेंगे आप हमें भाट और वन्दियों में गिन लें हमें इस की कुछ परवाह नहीं। तुलसी दास ने भी ऐसाही कहा है–

तुलसी निज कीरति चहैं पर की कीरति खोय।
तिनके मुख मसि लागि है मिटै न मरि हैं धोय॥

इस तरह के आत्मश्लाघा लोलुपों से सभा या सोसाइटी को बहुधा बहुत हानि पहुंचती है। जिस समूह में एक भी ऐसा आदमी है और कुछ इख़तियार या प्रभुत्व वाला हुआ तो अपनी ड्फली अपना राग वाली कहावत सुघटित होती है। बात २ में वह अपनी ही तारीफ़ की तान छेड़ने लगता है। खुदग़र्ज़ी और निज स्वार्थ उस के नस २ में व्यापा है प्रभुता उसे प्राप्त हुई है तब क्या कहना एक तो लौकी तीती दूजे चढ़ी नीम। शामत का मारा खुशामद का दुश्मन हमसा स्पष्ट वक्ता कोई वहां बैठा था झूठी हिमाक़त बरदाश्त न कर सका टोक बैठा। बाबू साहब आग बबूला हो गये जामे के बाहर हो बिजली सा कड़क उठे। खुशामदी सदा उनकी नाज़ बरदारी करते आये ऐसा मौका आया ही नहीं कि कोई हुज़ूर की बात को दुलख देता। उसी दिन से नइत्तिफाकी का बीज बो गया दो पार्टी हो गईं जो बाबू साहब के खुशामदी और उन से दबे थे जुदा हो अपनी मीटिङ्ग अलग करने लगे। यही कारण है कि क्लब या कमेटी यहां बहुत दिन तक नहीं कायम रहती। साल में न जानिये कितनी सभायें 'स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ करती हैं थोड़े दिन रह टूट जाया करती हैं। इस आत्मश्लाघा के साथ स्वार्थ अवश्य मिला रहता है स्वार्थ तत्परों का समूह कब बंधा रह सक्ता है।

"सर्वे यत्र विनेतारः सर्वे पण्डितमानिनः।
सर्वे महत्वमिच्छन्ति तत् वृन्दमवसीदति" ॥

शंकर प्रसाद मिश्र—रायपूर

बाबू सुरेन्द्र नाथ पर जुर्माना।

पूर्वी बंगाल के नये लाट फुलर साहब कहां तक अपने मन की करते जांयगे? क्या सच २ ऊंचे कर्मचारियों को अपने मन की कर डालने की रोक के लिये कोई कानून नहीं है? क्या लार्ड मिंटो निरे गुड़वा बना के गवर्नर जेनरली के पद पर भेजे गये हैं? तब क्यों ऐसे २ अत्याचारों की कोई नोटिस नहीं लेते? या भीतर २ उनकी संमति ऐसे २ कामों के लिये है? हम लोग तो यही समझे थे कि शान्ति प्रिय लार्ड मिंटो ऐसा शासन करैंगे कि लार्ड कर्ज़न जो प्रजा में उद्वेग और हलचल फैलाय गये हैं इस की जड़ कट जायगी; सुख और चैन प्रति दिन बढ़ता जायगा; काले और गोरे में विषम भाव का कहीं अंकुर भी न रह जायगा। वन्दे मातरम् का बन्द कर देना फिर यह जुर्माना क्या अत्याचार नहीं समझा गया? हमे सोच है अभी तो फुलर साहब को वहां ५ वर्ष काटना है इस ५ वर्ष में वहां वालों को क्या २ दुर्गति सहना पड़ेगा। अस्तु फुलर साहब बंगालियों से चिढ़े हैं उन्हें दबाने को सब कुछ कर सक्ते हैं। पर हम देखते हैं तो यही नीति सब जगह प्रचलित है कि अहल बिलाइती के मुकाबिले हिन्दुस्तानी ही दबाये जाते हैं और नुकसान सहते हैं। जहां कहीं कोई हिन्दुस्तानी दरजे बदरजे तरक्की पाते ऊंचे दरजे पर पहुंच गया है तो उसके पेन्शन ले लेने पर उस जगह पर अंगरेज़ नया आदमी जिस का कोई हक्क उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद पर आने का नहीं है किया जाता है। दो सौ के ऊपर की नौकरी पर बहुधा हिन्दुस्तानी नहीं किये जाते। कहीं पर कोई होते भी हैं तो वेही जो कर्मचारियों की हां में हां करना खूब जानते हों; नौकरी करते २ जिनमें कौमी जोश कहीं नाम को भी न बच रहा हो; और अपने लोगों की हानि कर सर्कार का अनेक फाइदा कर दिखाया हो। ऐसों के उच्च पद पर पहुंचने से हमें क्या लाभ? किन्तु हिन्दुस्तानी हैं इसलिये खुशी होती ही है। शिक्षा के प्रचार से ज्यों २ हमारे में अपने स्वत्व की पहचान और स्वदेश पर अनुराग बढ़ता जाता है त्यों २ शासन कर्ताओं में कड़ाई बढ़ती जाती है अन्त इसका देखैं क्या होनहार है। जो प्रजा को भला है वह राजा को प्यारा नहीं जो केवल राजा का भला चाहने वाला है उसे प्रजा क्यों चाहेगी। राजा प्रजा की इस खींचा खींची में सुरेन्द्र सरीखे देश हितैषी अपने ही देश का लाभ चाहते हैं और वह शासन की बागडोर हाथ में लिये हुओं को अप्रिय हैं; यही बड़ा दोष सुरेन्द्र बाबू में है उसी का दण्ड यह जुर्माना उन्हें देना पड़ा॥

एप्रिल फूल की बची खुची भूल।

एप्रिल फूल की खबर छप जाने बाद एक खबर जो हिं० प्र० आफिस के एक कोने में ६ महीने से छिपी पड़ी थी एक दिन अचानक दस्तयाब हो गई तो मुनासिब समझा गया कि उसे भी प्रकाश कर हम अपने पाठकों को कृत कृत्य करें॥

यह कौन नहीं जानता कि पहली एप्रिल बिलाइत में हमारे यहां की चैत बदी एकम् है और उस दिन जूते का बड़ा माहात्म्य बढ़ जाता है सो भी किसी से छिपा नहीं है। बस इसी खयाल से उसी के संम्बन्ध की एक टटकी खबर सुनाता हूं। हाल में बंगबासी के किसी अंक में प्रचलित जूतों के किस्मों की एक लिस्ट दी गई थी और इसी के बारे में एक लंबी चौड़ी गाथा गाई गई थी। फिर भी एक किस्म उसकी उस लिस्ट में न पाय हमें सन्देह हुआ कि क्यों सहयोगी उसे हज़म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर गये । मुमकिन है वह किस्म उन को मिली न हो तो उचित जान पड़ा कि वह उन्हें बता दें । बन्दह परबर वह किस्म विलाइत का चालान किया हुआ इटली और स्पेन का बना रोपसोल सुतली के तल्ले का जूता है । यूरोप के लोगों की अकिल सराहने लायक है कि इस तरह का फलाहारी जूता बनाय हिन्दुस्तान में सब मेल के आदमी पुराने क्रम के "आर्थोडाक्स" या नई रोशनी वाले दोनो का मतलब गांठा । पुराने क्रम वाले गङ्गा स्नान कर इसे पहने बराबर माला सटकाते हुये चल सक्ते हैं । हमारे नव युवक इसे पहिन टेनिस के खेल का मज़ा उठा सक्ते हैं । मालूम होता है स्वदेशी आन्दोलन के अगुआ बाबुओं का दांत इस पर नहीं लगा, खैर दांत लगावैं या न लगावैं; हिं० प्र० आफिस में एक ब्राह्मण ने देश हित साधन के खयाल से वर्ण व्यवस्था में अपनी अवनति कर ब्राह्मण से मोची बनना स्वीकार कर इसे बना बैनहूं स्पेन और इटली के बने रोपसोल में मिला दिया और उसकी मज़बूती तथा टिकाऊपन में तो भारत मित्र का यह कौल याद रखने लायक है "हिन्दुस्तानी जूत बड़ा मज़बूत लोग सबी बतलाते हैं । अंगरेज़ी बूटों से बढ़ कर खूबी उसमें पाते हैं" दाम थोड़ा काम चोखा ॥=) की बिसात ही क्या । हमारे स्वदेश भक्तों की इस पर कृपा दृष्टि होती तो इसकी ईजाद करने वाले का उत्साह चौगुना बढ़ता । मेशीन की तालाश हो रही है यदि कोई इसकी मेशीन हाथ लग गई तो सुबुक पन में भी यह स्पेन के रोपसोल से सबकत ले जायगा । अन्त में बिनय है कि आप इस मेरे तूल किस्से को भूल से भी निरी एप्रिल फूल की कहानी न समझ लें नहीं तो यह मेरा ब्राह्मणी चूल का धूल में मिलाय अन्त्यज शूद्र बन जाना व्यर्थ हो जायगा । इसके लिये एक मेशीन दरकार है किसी को कहीं पता लगे तो मुझे इस पते से सूचित करें ॥

महादेव प्रसाद

हिन्दी प्रदीप इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा-

Always get the Emulsion with this mark —the Fishman—the mark of the "Scott" process.

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इस्से नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड.
मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट-लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्से अधिक कष्ट का समय और क्या होगा ?

दस वर्ष के ऊपर होते आते हैं प्लेग ने जो कदम जमा रक्खा है उस से लाखों का संहार हो गया; बीच २ चेचक और हैज़ा अपना प्रकाश कर न जानिये कितनों को समेट लेता है, दो बर्ष से अकाल गला घोंट रहा है। पार साल माघ में जब अत्यन्त बर्फ पड़ा था जिस्से पकी पकाई खेती सब नष्ट हो गई उपरान्त बरसात ने भी धोखा दिया तब से आज तक गल्ला ही नहीं वरन यावत् पदार्थ सब हद्द से ज़ियादह महंगे हैं। साधारण आमदनी के गृहस्थों पर जैसी इस समय बीत रही है वह उनका जी जानता है। हम लोग सोच रहे थे सब बिपत्ति एक साथ ही नहीं आ गिरतीं अन्न का कष्ट झेल लेंगे प्लेग से तो छुटकारा मिला। वर्फ पड़ा है प्लेग के "जर्म" बीज नष्ट हो गये होंगे सो सब खयाली पुलाव हो गया प्लेग में वही तेज़ी बनी रही जैसी पहले थी। इतने पर अनेक तरह के टैक्स और चुङ्गी से नस २ का रस खिंचा जाता है विविध स्रोत के द्वारा अविच्छिन्न प्रवाह से धन यहां का बिलाइत ढोया चला जा रहा है। कुल आवादी का तीन हिस्सा कदाचित् एक जून आधा पेट खा कर रह जाता होगा। सब कष्ट सहा जाता है पर भूख का कष्ट नहीं सहा जाता। प्लेग आदि अनेक रोग दोख सब उसी भूखों मरने का प्रति फल है। कहावत है "मरता क्या न करता" भले २ लोग पेट की अगिन बुझाने को रूखा सूखा कदन्न जो मिला खाय किसी तरह प्राण रक्षा करते हैं और उस कदन्न भोजन का परिणाम महामारी आदि अनेक व्याधि में परिणत हो प्रजा का संक्षय किये डालता है। धिक् वह भी कोई जीवन है जब पेट भर अन्न खाने को न मिला। हिन्दू राजाओं के राजत्व में राजा यह अपना कर्तव्य समझता था, कि अपनी सब तरह की हानि सह प्रजा का क्लेश दूर करे। कर्तव्य इसलिये था कि हिन्दू के शास्त्रों में इस बात पर बड़ा ज़ोर दिया गया है और सिद्ध किया है कि प्रजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर पीड़ा और क्लेश राजा का दोष है तो अपने दोष से मुक्त होने को राजा का फ़र्ज़ था कि अपनी यावत् हानि सह प्रजा को क्लेश से उद्धार करे। हमारे सामयिक राजा की शासन प्रणाली की पालिसी ऐसी बेढव है कि कुछ कहा नहीं जाता। हमारी वर्तमान् दीन दशा राज कर्मचारी न जानते हों सो नहीं है लाचारी कि देखते हुये भी नहीं देखते सुन कर भी अनसुनी कर देते हैं। वे भी क्या करें कुछ किया चाहें तो उस पालिसी के प्रतिकूल कर नहीं सक्के कुछ कर गुज़रें तो इन कर्मचारियों की हानि होती है और वह हानि गवर्नमेंट की हानि समझी जायगी। इसलिये कि गवर्नमेंट भी तो इन्ही कर्मचारियों का मजमूआ है। पुलिस का एक कानस्टेबिल से लेकर बड़े लाट तक सब गवर्नमेंट ही तो है। गवर्नमेंट क्या है इस उलझी गांठ का सुलझना कठिन काम है। यह वह पहेली नहीं है कि इस के माने कोई हल कर सके। छोटे जंट से या पुलिस के एक क्षुद्र कर्मचारी से लाट तक ऐसा आपस में गुथे हुये हैं कि एक दूसरे के विरुद्ध कभी कुछ करी नहीं सक्के। हिन्दुस्तान की चाहो जितनी हानि हो अपनी जाति और अपने देश की भलाई से न चूकें गे। कोई सीधा सादा हाथी के दिखलाने वाले दांत पर दृढ़ न रह छटक कर निकल गया और कानूनो के असली मतलब पर झुक पड़ा तो उस बेचारे की कंबख़्ती आई। हमेशा के लिये आगे को उसकी तरक्की बन्द की गई और कर्मचारियों में अंगुश्तनुमा हुआ। सामयिक शासन के ढंग से यही मालूम होता है कि हम लोग येन केन प्राण धारण किये रहें और गाढ़ी मेहनत कर अपनी मेहनत का स्वल्प वेतन मात्र ले लिया करैं किन्तु उस परिश्रम का फल रूप जो कुछ सार पदार्थ हो उस से बंचित रहें। वह सब का सब सात समुद्र पार पहुंचता रहे "सर्वदेवनमस्कारं केशवं प्रतिगच्छतु" याद रहे कोई कौम सदा एक ही दशा में नहीं रही सूर्य के उदय अस्त के समान देश और जाति का भी उदय अस्त हुआ करता है। जब तक लोग अचेत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे किसी को कुछ नहीं मालूम होता था और न तब इतना सर्वग्रास था । राजा अपने शासन का हक्क मात्र ले लेता शेष धन यहां का यहीं रहता था देश सब ओर रंजा पुजा था लोग सब खुश हाल थे। अपने पुराने हिन्दू राजा तथा मुसलमान बादशाहों को भूल चले थे। सब यथोचित और शृङ्खला इद्ध देख प्रकृत भी विकृत भाव न धारण कर आधि व्याधि से लोगों को मुक्त किये थी । अब राजकीय शासन में उचित के प्रतिकूल और विशृङ्खलता पाय प्रकृति भी प्रकुपित हो जल वायु तथा ऋतुओं का परिवर्तन आदि प्राकृतिक बातों को विशृङ्खल कर दिया जिसका परिणाम प्लेग और अकाल आदि भयंकर विपत्तियों में परिणत हो गया। माना कि हम इस समय विदेशी शासन के अधिकार में हैं स्वदेश शासन के सुख की आशा ही करना भूल है तो मुसल्मान भी तो विदेशी थे यहां बस जाने से स्वदेशी हो गये थे यहां का धन यहीं रहा दरिद्रता का दुःख न उठाना पड़ा और दोनो जातियों में सम भाव रहा । एक तो विदेशी शासन फिर धन बिलायत ढोया चला जाता है। इस सब के होते भी एक बड़ी त्रुटि यह है कि एक जाति दूसरी जाति का शासन कर रही है जो सब से अधिक अखर रहा है यावत् विषम भाव का मूल कारण है। अपढ़ों का तो नहीं कहते पढ़े लिखे सुशिक्षितों को यह अखर रहा है खास कर ऐसे मौकों पर जब गोरे और काले का एक बात में या एक स्थान में संघट्टन हो जाता है। ऐसे अवसर पर जित और जेता का अन्तर प्रगट करते गोरे महा पुरुषों की ऐंठ नहीं सही जाती न यह अपनी मान हानि सही जाती है धिक् हमारे जन्म को न जानिये हम लोगों ने कौन सा पाप कर रक्खा है जिस का यह फल हमें मिल रहा है। यदि पुनर्जन्म सच है तो आगे को हम सहारा के रेगिस्तान में जन्मे और वहां स्वच्छन्द रहें पर गुलामी निगड़ित हिन्दुस्तान की पाप पृथ्वी में न पैदा हों। शिक्षित और अशिक्षितों में यही अन्तर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशिक्षित जिन के नेत्र नही खुले और जिन की नस २ में गुलामी व्याप रही है "कोउ नृप होहि हमे का हानी। चेरी छोड़ न होउब रानी" वाली कहावत आगे किये भूत और भविष्य का कुछ खयाल न कर बर्तमान् पर सन्तुष्ट अपने हिन्दू धर्म की श्रेष्टता और बिगड़ी हुई रीति नीति को सर्बोत्कृष्ट मानते हुये इस गुलामी में भी फूले नहीं समाते। हमारे प्रभुओं की श्री वृद्धि और यावत् ऋद्धि सिद्धि सब हमारी बदौलत है। प्रभुवरों की अन्तरात्मा मे भी यह बात खचित न हो सो नहीं है किन्तु लक्ष्मी मद और प्रभुता का मद ऐसा प्रबल है जिस से इस की उपेक्षा उन्हें है। पार्लियामेंट महा सभा में अपने यहां की तुच्छ सी तुच्छ बातों पर बड़ा बाद बिवाद होता है यहां की भारी सी भारी बात जिस पर करोढ़ों मनुष्यों की हानि लाभ और जीवन मरन आदिका है कर्मचारियों के हाथ में रख दिया गया है पार्लियामेंट को उसकी खबर तक नहीं होती। स्वार्थ ऐसा ही है जो जानते हुये को भी अजान कर देता है। अथवा यह पश्चिमी सभ्यता का परिस्कार हो। तब तो जितना ही उधर सभ्यता का प्रकाश प्रद्योतित होता जायगा उतना ही यहां दरिद्रता का शूची भेद्य अन्धकार विस्तार पाता रहेगा। हे अशरण शरण! अनाथ नाथ लोक नाथ पद पल्लव शरणागत प्रति पालक! यदि तुम हम सबों को वर्तमान् दीन दशा से उबारा चाहो तो हमारे प्रभुओं को बुद्धि प्रदान करो कि वे अपनी भूल सुधारें॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० २८ } प्रयाग { जून
सं० ६ } { सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ संं० ६ | प्रयाग | जून सन् १९०६ ई०

नायमात्मा वलहीनेन लभ्यः ।

"बल हीन अपने आपे को नहीं पा सक्ता" पहले के ऋषियों का यह अनुभूत सिद्धान्त कि दुर्बलेन्द्रिय तथा क्षीण बल आध्यात्मिक उन्नति में सब भांत असमर्थ है बहुत ही उपयुक्त है । यह अध्यात्मिक उन्नति एक उपलक्षण मात्र है अपिच संसार के जितने काम है निर्बल किसी मे कृत कार्य नहीं होता । पूर्वज ऋषि निश्चितमेव हमारे समान न थे नहीं तो इस सिद्धान्त पर इतना ज़ोर न देते । गवर्नमेंट से ज़रा २ सी बात के लिये गिड़गिड़ाने और पुकार मचाने में, कि हमारे साथ न्याय नहीं किया जाता और अत्यन्त लौलीन हैं कि नीति का बर्ताव किया जायं, यह सब हमारी असामर्थ्य और दुर्बलता का मानो इश्तिहार है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन कर्ताओं का जो ढंग शासन करने का है, उस से यह कभी संभव नहीं कि राजा प्रजा दोनो में मेल रहे और दोनो एक दिल लो कभी होंहीगे नहीं। अपने में बल संपादन की चेष्टा भी जहां शासन कर्ताओं के आंख का काटा है, तहां यह आशा करना कि शासक अपनी नीति से मुहमोड़ हमें कभी को इतना बलवान् कर देंगे कि हम अपना शासन अपने आप करने लगैं नितान्त भूल है। सच तो यों है कि इस नीति का टटोलना भी सहज नहीं है इस का मर्म वेही समझ सक्ते हैं जो दूसरे की पालिसी के उद्‌घाटन में प्रवीण और पटु बुद्धि हैं। जब देखा गया कि दीन भारत वासियों की गोहार अन्तिम सीमा तक पहुंची और समझा कि निठुराई की परा काष्ठा है, अब बिना कुछ किये कायल हो जाना पड़ेगा तब दो एक कोई ऐसी छोटी सी बात फुसलाने के ढंग की कर दी गई जिस में इन का आंसू पुछ जाय। परिणाम या फल उसका बहुत ही थोड़ा रहेगा पर आडम्बर और फैलाव इतना अधिक कि देखने वाले को यही मालूम होगा कि अब हमें किसी बात की कमी न रहेगी, राजा इन्द्र के सगे भाई बन बैठैंगे। जैसा दो एक छात्र वृत्ति कायम कर दी गई। एक आध छोटे मोटे ओहदे दै दिये गये। अथवा कोई कारखाना खोल दिया गया। सो भी वही तिल से तेल निकालने की भांत, विलाइत का रुपया यहां आवै सो नहीं बल्कि उस से भी यहां की पूजी विलाइत ढो जाय। समाचार पत्र बर्षों तक हौरा मचाये थे कि योग्यतम हिन्दुस्तानी कौंसिल में क्यों नहीं लिये जाते ? उन के चिल्लाने पर ध्यान दिया गया गोखले सरीखे देश हितैषी कौंसिल के मेम्बर होने लगे। किन्तु उनकी मेम्बरी से लाभ क्या ? इस साल बजट में सैनिक विभाग के व्यय के संम्बन्ध में बड़ी लम्बी स्पीच गोखले ने दी और अच्छी तरह उस का प्रतिवाद किया पर क्या फल हुआ ? "ह्वै है वही जो राम रचि राखा" हुआ वही जो पहले से तै था। पहले की अपेक्षा अब देश कितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षति ग्रस्त हो गया और प्रति दिन अधिक २ धन हीन होता जाता है, इसका कभी शासकों को खयाल नहीं होता। वास्तविक भलाई तो तब समझी जाती कि खेती में लगान कम कर दिया जाता। उचित शिक्षा में जो बहुत तरह के अड़चन छोड़ दिये गये हैं उठा दिये जाते। शासन के बड़े २ कामों में हमारी राय ली जाती। बड़े २ ओहदे भी वैसाही जी खोल के दिये जाते जैसा अपने मुल्की आदमियों को देते हैं। अकाल जो दूसरे तीसरे बर्ष आ घेरता है और लाखों मनुष्य भूखों मर जाते हैं सो इस से नहीं कि यहां उपज की कमी है। किसी एक प्रान्त में भी भरपूर पैदावार हुई तो वह समस्त देश भर को अन्न पहुंचा सक्ती है। किन्तु दरिद्रता के कारण पास पैसा न रहने से अन्न खरीद नहीं सक्के लाखों आदमी भूखों मर जाते हैं। राज कर्मचारी अच्छी तरह जानते हैं कि हमारी शासन प्रणाली भारत के लिये अति भयंकर है परन्तु कोई इस बारे में कुछ किया नहीं चाहता सो इसी-लिये कि ये दुर्बल हैं करी क्या सक्के हैं। बराबर देख रहे हैं इन्हें जहां तक दबाते हैं दबते चले जाते हैं तब क्यों हम अपने स्वार्थ से चूकैं॥

किसी के साथ किसी की प्रीति या हमदरदी के कई कारण होते हैं। ममता जैसा पिता को पुत्र के साथ है; घनिष्ट सम्बन्ध लगाव या अधिक घिष्टपिष्ट जैसा दो मित्रों में रहती है; या हम से तुम्हें कुछ भय हो तब तुम हम से लाचार हो प्रेम करोगे "बिन भय होहि न प्रीति" यहां तीनों में कोई बात न ठहरी तब हमारे शासकों को क्या पड़ी है जो हमारे साथ उन्हें हमदरदी हो। केवल इतना ही कि ये येन केन किसी तरह जीते रहैं जिस में इन से हमारी सेवा टहल का काम निकलता रहे किन्तु वित्त तथा बल में न बढ़ने पावें नहीं तो ये फिर हमारे चंगुल के बाहर हो जांयगे। पर यह उनकी ना समझी है भारतीय प्रजा सदा से राज भक्त रही और एहसान फरामोश नहीं है; कृतज्ञता तथा किये उपकार को कैसे मानना होता है सो भरपूर यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लोग समझते हैं; कई बार कई तरह पर इसका उदाहरण भी उन्हें मिल चुका है तब भी ये अपनी कुटिल नीति को जो नहीं भूलते सो इसमें या तो इनका अभाग्य है या कोई अनिष्ठ होनहार है या स्वार्थ की बासना इतनी प्रबल है जो इन से यह सब करा रही है। अस्तु अब रहा बल का संपादन सो उसका यहां सर्वथा अभाव तो नहीं है पर अनेक कारणों से जैसा धीमी चाल से हम आगे बढ़ने का मन कर रहे हैं वह इतना अल्प है कि उसे हम न होने के बराबर कहेंगे। पहले तो सामाजिक अनेक बन्धन, रिवाज की गुलामी, Ovarious social ties; Slavery of custom जाति पाति के अनेक झगड़े हमारी दीर्घ निद्रा को भंग नहीं होने देते। कोई २ जो इस तरह की भांत २ की रुकावटों को कुछ न मान अपने मुल्क वालों में बल संपादन की चेष्टा में प्रवृत्त हुये तो वहां राजकीय कोई ऐसा अड़चन लग जाता है कि यावत् चेष्ठा और यत्न सब विफल होता है। सिविल सरविस इत्यादि की परीक्षा इसके उदाहरण हैं; अन्त जिसका यही कहेंगें कि यही सब हमे दुर्वल किये है॥

संसार में भलाई अधिक है कि बुराई।

एक हमारे मित्र का यह सिद्धान्त कि सर्वथा न कुछ भला है न सर्वथा बुरा है; किन्तु ९ और ७ भलाई और बुराई की कसौटी है। अर्थात् जिसमें और जहां ९ आना भलाई का अंश है ७ आना बुराई का वह भला है और जिसमें भलाई केवल ७ आने है बुराई ९ आने वह बुरा है। तो अब देखना चाहिये संसार में भलाई का अंश विशेष है कि बुराई का? पाप अधिक है वा पुण्य? स्वास्थ्य अधिक है या व्याधि? आनन्द और आमोद प्रमोद अधिक है अथवा शोक और विषाद? धर्म रुचि अधिक हैं या पाप रुचि? चोर और बेइमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक हैं या ईमानदार और पर धन को मिट्टी का ढेला समझने वाले? हिंसक और निठुर अधिक हैं या दयावान् और पर दुख दुखी? यद्यपि प्रत्येक मत और संप्रदाय के नेता जैसा हिन्दुओं में ब्राह्मण मुसलमानों में मोलवी इसाइयों में पादरी साहब यही पुकार २ कह रहे हैं और सिद्ध करते हैं कि पाप संसार में अधिक है। इस पाप के लिये यह दान करो तो पाप से छुट जाओगे नहीं तो नरक में जा गिरो गे। मोलवी लोग कहते हैं महम्मद साहब को अपना पेशवा मानोगे तो गुनह से छुटकारा पाओगे नहीं तो दोज़ख की आग में तुम्हारी रूह सदा के लिये पड़ी २ झुलसा करेगी। ऐसाही पादरी साहब कहते हैं कि खुदावन्द प्रभु ईसा पर विश्वास लाओगे तो कयामत के दिन रिहाई पाओगे इत्यादि इत्यादि। विविध संप्रदाय प्रवर्तक अलग २ अपनी २ तान अलाप डेढ़ चावल की खिचड़ी जुदा २ पका रहे हैं कि संसार में निरा पापही पाप है। इस कलियुग में पुण्य और धर्म कहीं२ केवल नाम को बच रहा है। ये सब ऐसा कहा चाहें न कहें तो उनका भोजन कैसे चले और उन्हें पूछै कौन? जो अपने भाई तथा परोसी को ठगते हैं, अनेक जाल और फरेब रचने में प्रवीण हैं, कानूनों के पेच समझने में चतुर अदालत में एक न एक नये तरह का मुकद्दमा दायर किया करते हैं उनकी संख्या संसार में अधिक है या उनकी जो निज परिश्रम से उपार्जन कर अपने घर गृहस्थी का काम चला रहे हैं? ईसा ने अपने शिष्यों को शिक्षा देने में एक ठौर कहा है वह रास्ता जो नरक को गई है बड़ी चौड़ी है और करोड़ों मनुष्य उस पर चलते हैं। हम कहेंगे सो नहीं जो मार्ग स्वर्ग जाने का है बड़ा चौड़ा सीधा और सरल है असंख्य मनुष्य उस पर चल स्वर्ग के साम्राज्य के अधिकारी हैं। जो पन्था नरक की है अत्यन्त सकेती संकुचित टेढ़ी और अन्धकार पूर्ण है। ऐसाही कोई साहसी उस पर चल अपने को नरक का पाहुना बनाता है। युग धर्म इतना प्रभावशाली नहीं है जैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीरु हृदय हमारे पुराने लोग कलियुग है ऐसा बार २ कह निश्चय किये बैठे हैं कि हम लोग नित्य २ बिगड़ते ही जांयगे, येन केन हम अपनी ज़िन्दगी का दिन काट पूरा करैं बस हो गया । हम उन से केवल इतना ही पूछते हैं कि क्या अमेरिका और यूरोप के देशों में तथा हमारे परोसही में जापानीज़ हैं क्या वहां यह युग धर्म नही व्यापता ? युग धर्म निगोड़ा भी क्या वही हते को हतता है ? अकिल घुन गई तो क्या हुआ पलित केश बयो वृद्ध होने से माननीय हैं; जो कहैं चुप चाप सुन लेना ही पड़ता है । संसार में साधुभाव और भलाई स्वभावतः यदि अधिक न होती तो समाज एक दिन न चलती और यह जगत् जीर्णारण्य हो गया होता । सौ मनुष्यों में ९९ दुराचारी और पापी हैं केवल एक आदमी धर्म शील और सुकृती है तो उस एक के कारण सौ मनुष्यों की रक्षा रहती है । तात्पर्य यह कि जब तक अणु मात्र भी भलाई का अंश किसी वस्तु या किसी व्यक्ति में रहता है तब तक सर्वांश उसका सत्यानाश ईश्वर नहीं करता । जब सोलहो आने बुराई देख लेता है तब उसे जड़ पेड़ से उच्छेद कर देता है । ब्रह्मास्मि कहनेवाले अद्वैतवादियों का सिद्धान्त है कि बुरा और भला दोनो एक सा है; न कुछ बुरा है न भला ; अपने को जो अनुकूल वह भला अपने को प्रतिकूल वह बुरा; पर यह उनका कथन बेबुनियाद सा मालूम होता है, जिस समय कोई रोग प्रजा में फैलता है तो वह मोसिम किसी को अनुकूल नहीं होता किन्तु वैद्य और डाक्टरों को वही अनुकूल और लाभदायक है । डाक्टर यही चाहते होंगे कि रोग की वृद्धि सदा ऐसा ही होती रहे तो हमारी जेब भरी रहा करे । एक किसी खास आदमी या किसी खास फिरके वाले को अनुकूल वेदनीय तथा प्रतिकूल वेदनीय भला या बुरा होने का हेतु नहीं है बरन इस में भी वही ९ और १ का क्रम उचित मालूम होता है । तस्मात् यह सिद्ध हुआ कि भलाई का पलरा बुराई की अपेक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदैव अधिक भारी रहता है। जब तक भलाई का पलरा भारी है तभी तक इस विश्व की अद्भुत रचना कायम है॥

दिल बहलाव।

एक पण्डित जी अपने लड़के को पढ़ा रहे थे "मातृवत् परदारेषु" पर स्त्री को अपनी मा की बराबर समझे। लड़का मूर्ख था कहने लगा। तो क्या पिता जी आप मेरी स्त्री को माता के तुल्य समझते हैं? पिता रुष्ट हो बोला मूर्ख आगे सुन "परद्रव्येषु लोष्टवत्" पराये धन को मिट्टी के ढेले के सदृश समझे। लड़का झट बोल उठा। चलो कचालूवाले का पैसा ही बचा। पण्डित जी ने कहा। श्लोक का अर्थ यह नहीं है पहले सुन तो ले। लड़के ने कहा यहां तक तो मतलब की बात थी अच्छा आगे चलिये। पण्डित जी ने फिर कहा। "आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सपण्डितः" अपने सदृश जो औरों को देखता है वही पण्डित है। लड़का कुछ देर सोच के बोला। पिता जी तब आप कलुआ मेहतर के लड़के के साथ खेलने को हमें क्यों रोकते हैं। इस पर पण्डित जी ने उसे हज़ार समझाया पर वह अपनी ही बात बकता गया॥

एक शख्श ने एक बड़े आदमी को उर्दू में दरखास्त लिखी "खुदा हुजूर की उम्र दराज़ करे हुजूर की नज़र गुरबा परवरी पर ज्यादा है इससे उम्मेद है कि हुजूर मुझ पर भी नज़रे इनायत रक्खें" उसने अपने मुन्शी को हुकुम दिया इस दरखास्त को पढ़ो मुन्शी ने दरखास्त इस तौर से पढ़ी "खुदा हुजूर की उमर दराज़ करे हुजूर की नज़र गुर पापर बरी पर ज्यादा है इस्से उम्मेद है हुजूर मुझ पर भी नज़र इनायत रक्खें"॥

एक स्कूल मास्टर हाथ में बेंत लिये हुये लड़के पढ़ा रहे थे बेंत सीधा कर बोले। हमारे बेंत के कोने के रूबरू एक गधा बैठा है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का जो बेंत के रूबरू बैठा हुआ था बड़ा ढीठ था फ़ौरन कह उठा मास्टर साहब बेंत के दो कोने होते हैं आप किस कोने का ज़िक्र करते हैं। मास्टर बेचारे शरमिन्दा हो चुप हो गये ॥

हमारी मृग तृष्णा।

अनन्त असीम मरूस्थली में भटक कर गया हुआ बटोही जैसा दूर से चमकती मरु मरिचिका देख जलाशय के भ्रम से दौड़ता हुआ व्याकुल हो गिर पड़ता है। वैसा ही हम दुःख दारिद्र्य प्रपीड़ित हो आशा मरीचिका के पीछे दौड़ रहे हैं। एक दिन दो दिन नहीं एक मास दो मास नहीं अपिच डेढ़ सौ बर्ष के ऊपर हो गये पर उस अनन्त असीम आशा मृग तृष्णा का अन्त न मिला। मन में यही भावना रही कि कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ जगत्तारक ने हम लोग समस्त भारतीय प्रजा के उद्धारार्थ श्वेतद्वीप निवासियों को देव दूत बना कर भेजा है और ३० करोड़ प्रजा का धन प्रान जीवन उनके हस्तगत कर दिया है। स्वाधीनता प्रिय ये श्वेत द्वीप निवासी यहां की अशिक्षित जनता को दासत्व की श्रृङ्खला से मुक्त कर देंगे और भारत को उन्नति के उच्च शिखर पर स्थापित कर देंगे। महामति मेकाले अपने एक लेख में इस तरह का विकत्थन कर भी गये हैं कि ब्रिटेन निवासियों का यहां पदार्पण करना यहां वालों का सौभाग्य है। हम मेकाले के विकत्थन की प्रतीक्षा करते बराबर दिन गिन रहे हैं। किन्तु भारत के दिष्टाकाश में उस सौभाग्य सहस्रांशु का अब तक उदय न हुआ वरन वह सौभाग्य सूर्य निविड अन्धकार पूर्ण तिमिर राशि में ऐसा तिरोहित हो रहा है कि कहीं टटोलने से भी उस का पता नहीं मिलता। भारत के प्राचीन नृपति गण प्रजा को पुत्र निर्विशेष पालन करते थे और प्रजा रंजन अपना श्रेष्ठ धर्म मानते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब के समान राजा का स्वार्थ प्रजा के स्वार्थ का प्रतिद्वन्दी न था ; प्रजा में अमंगल और अशान्ति फैलने से राजा नरकपात की डर से अधीर हो जाता था । प्रजा भी इसी लिये परम राज भक्त होती थी । यह वही भूमि है जहां राजा प्रजा के सन्तुष्ट करने को अपना सर्वस्व सुख त्याग देते थे—

स्नेहं दयां च मैत्रींच यदिवा जानकीमपि ।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्तिमे व्यथा ॥

चिर काल से परं परागत अभ्यास वश वर्तमान् शासकों की इतनी स्वार्थ निष्ठा और इतने विषम भाव पर भी प्रजा की भक्ति राजा की ओर नहीं कम होती । राज कुमार प्रिन्स आफ वेल्स ने विलाइत पहुंच अपनी स्पीच में यहां के लोगों में राज भक्ति की बड़ी प्रशंसा की है । जिस पर पायोनियर को हृदय के शूल सदृश पीड़ा पैदा हुई और जो मन में आया हम लोगों को कह सुनाया । हमारी थोथी तारीफ भी जिसे न सुहाई तो उस से बढ़ कर बुरा चाहने वाला शत्रु हमारा दूसरा कौन होगा । राज कुमार के उस कथन पर पायोनियर ज़रा भी न सनका जहां पर उन्हो ने अंगरेज़ों की बड़ी तारीफ के साथ यह कहा कि "ये हिन्दुस्तान के शासन में बड़ा परिश्रम करते हैं" राज कुमार चार दिन के लिये यहां आये थे भीतरी बातें उन्हें क्या मालूम, यह उक्त श्रीमान् क्या जानै कि उनके देश वासी यहां मन माना गुलछर्रे उड़ाते रहते हैं । एक २ कर्मचारी जब यहां से लौट विलाइत जाते हैं तो नौवाब बन यहां से विदा होते हैं । विलाइत में चाहो कुली कबारी भी रहे हों पर यहां आय हुजूर बन जाते हैं । अस्तु प्रथम जब ब्रिटिश राज कर्मचारी यहां आये तब यहां के लोग बिना किसी छल छिद्र शासन की डोर इनके हाथ पकड़ाय सुख से अपने कालयापन की आशा करने लगे । निर्विघ्न जीवन यात्रा तथा सार्वजनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न सामाजिक उन्नति के लिये राज पुरुषों का मुह जोहते रहे। उस समय यह कभी नहीं सोचा गया था कि राज कर्मचारी निज स्वार्थ के लिये हमारे स्वार्थ के प्रतिद्वन्दी होंगे। किन्तु यह आशा मरु मरीचिका सी दुराशाही हुई। फिर भी ईश्वर का धन्यबाद है कि भ्रान्त और मायामुग्ध यहां के लोगों को उसने सुसमय से चैतन्यता का संचार करा दिया। चतुर लोगों की चातुरी का भेद खुलने लगा, नहीं तो हम उस मरु मरीचिका के पीछे कब तक धावमान रहते सो कौन जान सक्ता है। आघात पर आघात सहती हुई सुषुप्ति अवस्था में निद्रित इस जाति की अब भी जो कुछ २ निद्रा भंग होने लगी इसे कल्याण ही समझना चाहिये। हम पहले कह आये हैं निर्बल का किया कुछ नहीं होता, अब भी हम लोग अपने स्वरूप को पहचान लें और पूर्ब पुरुषों के दिखाये पथ से मुह न मोड़ आत्म गौरव और आत्मोत्कर्ष बिधान में तन मन से तत्पर हो जांय तो इस मृगतृष्णा के पार हो जा सक्ते हैं। नहीं तो मरुस्थली में भ्रमण सदृश केवल कर्मचारियों पर अपनी भावी उन्नति के लिये निर्भर रहना नितान्त भूल है। लार्ड कर्ज़न का धन्यबाद है जो हमारे नेत्रों में न जानिये कौन सा तीव्र अंजन लगाय यहां से विदा हुये और हमे अच्छी तरह देख पड़ने लगा कि हम सर्वथा मरु मरीचिका में भ्रमण कर रहे हैं। लगातार ऐसा ही दो तीन वाइसराय इन्ही के सदृश आते रहें तो हम पूरी तरह सचेत हो जांय और यह मरु मरीचिका भी अपने ओर छोर को पहुंचे।

आदि मध्य अवसान।

सकल सर्जित पदार्थ जो वेदान्त दर्शन के सिद्धान्त अनुसार जीव कोटि में गिने गये हैं और जिनका जीव कोटि से किसी तरह का सम्बन्ध हैं उनकी आदि मध्य अवसान यह तीन अवस्था है। इन तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्थाओं में आदिम और मध्यम अवस्था सदा स्पृहणीय और मन को हरने वाली है। अवसान अर्थात् अन्तिम अवस्था ऐसी ही किसी की सोहावनी होती है वरन अन्त की अवस्था बड़ी घिनौनी रूखी और किसी के उपकार की नहीं होती। आरंभ या आदि हर एक का बहुत कुछ आशा जनक और मन भावना होता है, मध्यम या प्रौढ़ अवस्था उसी आशा को फलवती करने वाली होती है। पौधा जब लगाया जाता है या बीज जब प्रस्फुटित हो प्ररोह के रूप में रहता है उस समय कटैले वृक्ष भी सुहावने लगते हैं। प्रौढ़ अवस्था कुसुमोद्गम के उपरान्त फलों से लद जाने की है। पुराना पड़ने पर वही पेड़ जब कम फलने लगता है बाग के माली को उसके बढ़ाने या सीचने की वैसी मुस्तैदी नहीं रहती जैसी नये पौधों के लिये। जीव धारियों में देखो तो दूध मुहा शिशु मनुष्य का हो या किसी जानवर तथा चौपायों का हो ऐसा प्यारा लगता है कि यही जी चाहता है कि नेत्र उसकी मुग्ध मुखच्छबि को अनिमेष दृष्टि से देखता ही रहे। वही तरुणाई की प्रौढ़ अवस्था आते ही जवानी की नई उमंग में भरा हुआ दर्पान्ध कोई कैसा ही कठिन काम हो उसमें भिड़ जाता है और जब तक कृत कार्य न हो उससे मुह नहीं मोड़ता। नस २ में जब कन्दर्प अपना चक्रवर्तित्व स्थापित कर देता है तब कुरूप भी सुरूप, निर्जीव भी सजीव बोध होता है। सुषमा की यावत् सामग्री सब सोलहो कला पूर्ण हो जाती है। लवनाई और सलोनापन अपनी सीमा को पहुंच जाता है। कहा भी है। "प्राप्ते च षोडसे वर्षे शूकरीप्यप्सरायते" यही समय ऐसे अल्हड़पने का होता है कि इस में यावत् प्रलोभन सब उमड़ २ उधरही आ टूटते हैं। इस तरुणाई की कसौटी में कस जाने पर जो कहीं से किसी अंग में न डिगा चरित्र की बिजय बैजयन्ती उसी के गले का हार होती है। अबसान में जब यह प्रौढ़त्व बिदा हुआ तब वह सलोनापन न जानिये कहां जा छिपता है। गाल चुचक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं बगुला की चोंच सी लम्बी नासिका; खोड़हा मुह; सूप से लम्बे २ कान; गंजा सिर कैसा बिलखावना मालूम होता है कि प्रेत के आकार सदृश देखते भय गपजता है। शुष्क चर्म पिनद्ध अस्थि शेष कंकाल वीभत्स का साक्षात्कार सा किसे न विभीषिका और घृणा पैदा करता होगा। ऐसा ही हमारे प्राचीन आर्यों की सभ्यता का जब उदय था उस समय उसकी बाल्य अवस्था थी, उस समय जो २ प्राकृतिक घटनायें Natural phenamena उनके दृष्टि पथ की पहुनाई में आईं उन्हें दैवी गुण विशिष्ठ, मनुष्य शक्ति वाहय और इन्द्रियातीत समझ ईश्वर मान उनकी स्तुति करने लगें। जैसा ऋग्वेद में Dawn उषा को देवी कह उसकी कमनीय कोमल मूर्ति के बर्णन में कवित्व प्रतिभा को छोर तक पहुंचा दिया। इसी तरह सूर्य में गरमी और उसका विशाल बिम्ब Horizen क्षितिज से ऊपर। को उठते देख, सूर्य की गरमी और प्रकाश से पौधों को उगते और बढ़ते हुये पाय चिरकाल तक तमारि सूर्य ही का सविता अर्यमा आदि विशेषण पदों से गुण गान करते रहे। "उद्वयं तमसस्परिस्वः" इत्यादि कितनी ऋचायें हैं जिन्हें सन्ध्योपासन के समय हम नित्य पढ़ा करते हैं। इसी तरह मेघमाला में क्षण सौहृदा विद्युत की चमक दमक देख ऐरावत और इन्द्र इत्यादि की कल्पनाओं से उनमें दैवी शक्ति का आरोप कर उन २ घटनाओं का अनेक गुण गान करते रहे। पीछे जब उनकी सभ्यता अपनी प्रौढ़ दशा में आई तो आत्मा तथा सृष्टि के आदि कारण का जैसा उन्हों ने पता लगाया वैसा अब तक न किसी प्राचीन जाति को सूझा, न ऐसी आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर कोई आधुनिक सभ्य जाति पहुंची। दर्शन शास्त्रों की जुदी २ प्रक्रिया; संस्कृत सी लोकोत्तर परिस्कृत भाषा; संगीत; कविता; आदि अनेक कौशल का आविष्कर और उनकी परमोन्नति की गई। Simple living and high thoughts साधारण जीवन और उत्कृष्ट विचार इन्हीं आर्यों में पायां गया। अब उस सभ्यता का अवसान है। पहले यावनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभ्यता ने इसका दलन किया सब तरह पर इसे चूर २ कर डाला अब बिदेशी सभ्यता इसे पराभव देते हुये देश में सब ओर अपना प्रकाश कर रही है। बैदिक सभ्यता का अवसान होने से उनके मूल आधार ब्राह्मण ब्राह्मत्व से च्युत हो गये, चातुर बर्ण तथा चार आश्रम की प्रथा छिन्न भिन्न हो गई, संस्कृत का पठन पाठन लुप्त प्राय हो कहीं २ थोड़े से ब्राह्मणों ही में रह गया। आधुनिक नूतन सभ्यता और शिक्षा जो इस समय अपनी प्रौढ़ अवस्था में है उसका पहिला उद्देश्य यही है कि जहां तक जल्द हो सके ऊपर कहे मूल आधारों का कहीं नाम निशान भी न रहने पावे। जिस घराने में दस पुश्त से अविच्छिन्न पठन पाठन संस्कृत का रहा आया और एक से एक दिग्गज पण्डित और ग्रन्धकार होते आये वहां अब अंगरेज़ी जा घुसी। उस कुल के विद्यमान बंशधर अब ब्राह्मण बनने में शरमाते हैं। अपने को पण्डित कहते वा लिखते रुकते हैं। मिस्टर वा बाबू कहने में अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं। कहीं २ तो यहां तक संस्कृत का लोप देखा जाता है कि उनके घर की पुरानी पुस्तकें दीमक चाट गये। लड़कों में एक भी इस लायक न हुआ कि साल में एक बार पुस्तकों के बस्तों को खोलता और उन्हें उलट पुलट सौंत के रखता। नूतन सभ्यता यहां तज पांव फैलाये हुये है कि वे जो पुराने क्रम पर हैं बेअकिल समझे जाते हैं, सभ्य समाज में उनकी हंसी होती है॥

हम ऊपर कह आये हैं अवसान भी किसी २ का सोहावना होता है। जैसा शीत काल का अवसान पूस माघ के जाड़ों में ठिठरे हुओं को फागुन के सुहावने दिन कैसे भले मालूम होते हैं। ऐसा ही जेठ मास की तपन के उपरान्त जब बरसात आती है और बर्षा के उपरान्त शरद। जाड़ा गरमी बरसात इन तीनों की मध्य अवस्था या प्रौढ़त्व किसी को नहीं रुचता आदि और अवसान सबी चाहते हैं। किसी उत्सव या तिहवार का आगमन या मध्य भाग बड़े खुशी का होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त नहीं। अंगरेज़ी राज्य का आदि बड़े सुख का रहा प्रौढ़ता सब तरह दुखदायी हो रही है। सुहृद सरल चित्त मित्र के समागम का आदि और मध्य बड़ा सुखदायी है अन्त या बिछोहा शोक बढ़ाता है। गीता में भगवान् ने उत्तम उसी को ठहराया है जो आदि मध्य अवसान तीनो में सुखद हो जिसका आदि और मध्य तो अच्छा हो पर परिणाम में दुख मिले वह राजसी और तामसी है। आदि मध्य अवसान तीनों में जो एक से रहते हैं बिमल ज्ञानियों में वही हैं। आदि और मध्य चाहो जैसा रहा अन्त बना तो सब बना कहा जाता है॥

आय व्यय।

आय और व्यय को अलग २ बिभाग करने में आय हम उसे कहेंगे जो पास न हो बरन दूसरे से अपने को मिले। व्यय वह है जो अपने पास से दूसरे के पास चला जाय। खेती तिजारत और नौकरी साधारण रीति पर आय के ये ३ बड़े द्वार हैं। सिवाय इसके मुल्क की दौलत के बढ़ाने के द्वार और भी कई एक हैं। जैसा हर एक तरह की खानों का अधिक होना, धरती की पैदावार; बाणिज्य, दस्तकारी; ऊंचे २ पदों पर देश के लोगों का नियत होना; "एक्सपोर्ट" अर्थात् अपने देश की पैदावार या दस्तकारी का दूसरे देशों में जाना और उसके बदले नगदी रुपया का अपने यहां आना इत्यादि। इङ्गलैण्ड जरमनी जापान फ्रान्स आदि देशों में आय के ये जितने द्वार हैं सब बे रोक टोक खुले हैं। जिस देश में आय के द्वार इतने एक हैं वहां दौलत और भागवानी के प्रति दिन बढ़ते जाने में कौनसा सन्देह है। जहां आय के द्वार कम हैं जो हैं भी उन्मे हद्द बांध दी गई है और व्यय के द्वार सौ छेद वाले घड़े के समान अनेक और अनगिनत हैं वहां सौभाग्य और संपत्ति की छाया का भी पड़ना कैसा बरन लक्ष्मी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जेठी बहिन दरिद्रा का चिर निवास अवश्यमेव निश्चित है। अब हम अपने देश के आय तथा व्यय का हिसाब लगाते हैं। देश का सब से बड़ा आय धरती की उपज है। इस में सन्देह नहीं उपज में वह सब देशों की आय से आगे बढ़ा है; जुदे २ मुल्क या जुदी २ आबो हवा की ऐसी ही कोई पैदावार बची है जो यहां नहीं उपज सक्ती केवल उपज ही नहीं बरन बहुतात भी उस की यहां हो जा सकती है। किन्तु सरकारी लगान इतना अधिक है कि देश के लिये उसका आय का द्वार कहते मन संकुचाता है। इसलिये कि इस आय का जो कुछ सारांश या हीर है वह बिलाइत ढो जाता है केवल मेहनत का हक्क मात्र हमे बच रहता है। फिर भी इस समय जब आय के और २ द्वार बन्द हैं केवल उपज अकेली बच रही जिस से इतना भी धन देश में देख पड़ता है। दूसरा आय बाणिज्य है सो उसमे पहले तो पूंजी इतनी न रह गई कि यूरोप और जापान की तिजारत के साथ हम Compete उतरा चढ़ी कर सकें किया भी चाहें तो धर्म आड़े आता है। यहां महाजन काल मनाने रहते हैं कि पंजाब का गल्ला दक्खिन पहुंचावें दक्खिन का बंगाल। ब्याज का परता फैलाते इतनी हिम्मत कहां कि बाहर कदम निकाल यहां की उपज दूसरे २ देशों में पहुंचावें और वहां का माल अपने यहां लाय जो फाइदा बिलाइत के एजेंट उठा रहे हैं उसे हम खुद हासिल करें। रूई सन पेटुआ आदि कच्चा बाना हम से खरीद बिलाइत के लोग उसका अठगुना हम से भर लेते हैं। उस कच्चे बाने में भी डूटी और जहाज आदि का महसूल दै दिवाय रुपये में एक आना अधिक से अधिक दोअन्नी रुपये से ज्यादा हमें नहीं मिलता। दस्तकारी में कल की बनी चीज़ों के मुकाबिले परता नहीं बैठता दूसरे अंगरेज़ी माल की चमक दमक और सुथराप्न के मुकाबिले हाथ की बनी चीज़ें खुरखुरी और भद्दी जचती हैं। देश की पुरानी कारीगरी बिल्कुल रद्दी हो गईं, जितने पेशेवाले कारीगर थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब अपना काम छोड़ बैठे उन्हें कोई पूछता नहीं, भूखों मरने लगे। दस्तकारी का भी जो कुछ आय था वह सब विलाइत ने छीन लिया। बंगाल के टुकड़ा होने पर जो कुछ जोश फैला था वह चन्दरोज़ा हो कर्मचारियों के दबाने से टांय २ फिस हो गया। खानिक द्रव्यों की आमदनी का भी यही हाल है ऐसी कोई बस्तु नहीं जिसकी खान यहां न हो, सोने और हीरे तक की खान यहां है पर उसका फाइदा भी बिदेशी उठा रहे हैं। मैसूर में सोने की खान है पर हमें क्या उसका भी सार विदेशी खींचे लेते हैं। लोहे की खान इतनी अधिक हमारे यहां है कि कदाचित् और देशों में न हों पर रेल इत्यादि में जितना लोहा लगता है सब बिलाइत से आता है। महाराणी का स्मारक चिन्ह जो हाल में यहां बना उसके लिये पत्थर भी इटली से मंगाया गया। अब रहा एक आय सरकारी नौकरी का उस में दो सौ के ऊपर वाली नौकरी प्रायः बिलाइत के लोगों को मिलती है १५ या २० की नौकरी जो पिसौनी है हमे दी जाती हैं। यह तो हमारे आय का हिसाब भया अब व्यय की ओर चलिये। आय के द्वार तो सब ओर से बन्द हैं व्यय के द्वार चारों ओर से खुले हैं॥

हमारे व्यय का क्या पूछना तैमूर महमूद गजनवी और नादिर के ज़माने से अब तक यहां सिवाय व्यय के और होता क्या आया। संग्रह तथा आय तो हमने कभी जाना नहीं संचित पूजी का गवाना अलबत्ता जानते हैं। सब के पहिले धरती की मालगुज़ारी जो ५५ या ६० सर्कारी खज़ाने में जाता है १०० में ४० या ४५ किसान तथा ज़मींदार के हाथ लगता है। मसल है "बह बह मरैं बलवा बैठे खांय तुरंग" उसी ४० खाने पहिनने में खर्च; नाक लाज में खर्च न करें तो समाज में मुंह दिखाने लायक न रहें; लड़की लड़कों के ब्याह का खर्च; एक साल भी खेती न लगे तो मुह बाय बैठ रहें। भांत२ के टैक्स का खर्च; सर्कारी चन्दे का खर्च जो किसी न किसी बात के लिये साल में बहुधा कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार उगाहा जाता है, कलट्टर साहब ने कहा कैसे इनकार किया जाय। सिवा इसके तोहफे नज़र, हर साल एक न एक कोई दरबार। अदालत में स्टाम्प और सरकारी रसूमों का खर्च; अदला बदला; अभी हाल में कर्ज़न साहब चलती बार महाराजा बनारस को गन दै हाथी दांत का "फरनिचर" मेज़ कुरसी आदि बदले में ले गये। लड़कों के पढ़ाने में फीस का खर्च। चार आना लागत की किताब का एक रुपया दाम। सिवा इसके तिहवारों का खर्च। कोई महीना खाली नहीं जाता जिस में कोई न कोई तिहवार न आ पड़ते हों जिसमें गृहस्थ का चूर ढीला हो जाता है। सोचने की बात है कि जहां आय का द्वार इतना संकुचित और व्यय का कोई हिसाब नहीं है उस देश का कल्याण और वहां के रहने वालों की बेहया ज़िन्दगी का इतने पर भी ओर न हो यही अचरज है॥

परचित्तानुरंजन।

ऐसे पुरुष जो परचित्तानुरंजन में कुशल हैं अर्थात् जिनकी सदा चेष्टा रहती है कि हम से किसी को दुःख न मिले और कैसे हम दूसरे के मन को अपनी मूठी में कर लें। ऐसे पुरुष मनुष्य के चोला में भी साक्षात् देवता हैं, यह लोक और पर लोक दोनो को उन्हों ने जीत लिया। परचित्तानुरञ्जन या परच्छन्दानुवर्तन से हमारा प्रयोजन चापलूसी करने का नहीं है कि तुम अपनी चालाकी से "मूर्ख छन्दानुवर्तन" के क्रम पर भीतर तो न जानिये कितनी मैल और कूड़ा जमा है अपना मतलब गांठने को उस के मन की कह रहे हो, बरन अपना मतलब चाहो बिगड़ता हो पर उसका चित्त आजुर्दा न हो इसलिये जो वह कहे उसे कबूल कर लेना ही परचित्तानुरंजन है। दिल्ली का बादशाह नसीरुद्दीन महमूद ने एक किताब अपने हाथ से नकल की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन अपने किसी अमीर को दिखला रहा था उस अमीर ने कई जगह गलती बतलाई बादशाह ने उन गलतियों को दुरुस्त कर दिया। जब वह अमीर चला गया तो फिर वैसा ही बना दिया जैसा पहिले था। लोगों ने पूछा ऐसा आप ने क्यों किया? बादशाह ने कहा मुझ को मालूम था कि मैं ने गलती नहीं किया लेकिन खैरखाह और नेक सलाह देने वाले का दिल दुखाने से क्या फाइदा इस से उसके सामने वैसा ही बनाय यह मेहनत अपने ऊपर लेनी मैंने उचित समझा। व्यर्थ का शुष्कवाद और दांत किट्टन करने की बहुधा लोगों की आदत होती है अन्त को इस दांत किट्टन से लाभ कुछ नहीं होता। चित्त में दोनों के कशाकशी और मैल अलबत्ता पैदा हो जाती है। बहुधा ऐसा भी होत है कि हमारी हार होगी इस भय से प्रतिबादी का जो तत्व और मर्म है उसे न स्वीकार कर अपने ही कहने को पुष्ट करता जाता है और प्रति पक्षी की बात काटता जाता है। हम कहते हैं इस से लाभ क्या? प्रतिबादी जो कहता है उसे हम क्यों न मान लें उसका जी दुखाने से उपकार क्या। "फलं न किंचित् अशुभा समाप्तिः"। सिद्धान्त है "मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना तुण्डे तुण्डे सरस्वती" वहुत लोग इस सिद्धान्त को न मान जो हम समझे बैठे हैं उसे क्यों न दूसरे को समझावें इसलिये न जानिये कितना तर्क कुतर्क शुष्कवाद करते हुये बांय २ बका करते हैं फल अन्त में इसका यही होता है कि जी कितनो का दुखी होता है, मानता उसके कहने को वही है जिसे उसके कथन में श्रद्धा है। हमारे चित्त में ऐसा आता है कि जो हम ने तत्व समझ रक्खा है उसे उसी से कहैं जिसे हमारी बात पर श्रद्धा हो। मोती की लरियों को कुत्ते के गले में पहिना देने से फाइदा क्या? अस्तु हमारे प्राचीन आर्यों ने जो बहुत सी विद्या और ज्ञान छिपाया है उसका यही प्रयोजन है। जिसे इन दिनो के लोग ब्राह्मणों पर दोषारोपण करते हैं कि ब्राह्मणों ने विद्या छिपाया सबों को न पढ़ने दिया॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम् ।
असूयकाय मां मादास्तथा स्यां वीर्यवत्तमा ॥

विद्या ब्राह्मण से यों कहती है मैं तुम्हारा ख़ज़ाना हूं, मुझे गुप्त रक्खो निन्दक तथा गुण में दोष निकालने वाले मत्सरी को मत बतलाओ ऐसा करोगे तो मैं तुम को अत्यन्त बीर्यवती हूंगी । छान्दोग्य ब्राह्मण में भी ऐसा ही कहा है ॥

विद्याह वै ब्राह्मणमाजगाम तवाहमस्मि त्वं मां पालय ।
अनर्हते मानिने नैवमादा गोपाय मां श्रेयसी तथाहमस्मि ।
विद्या सार्द्धं म्रियेत नविद्यामूषरे वपेत् ॥

कितने लोग ऐसे हैं जिन के मधुर कोमल शब्दों में मानों फूल करते हों; अति मनोहर उनके बदनाब्जनिःसृतपदावलियों के एक २ शब्द पर जी लुभाता है किन्तु कितने कटुबादी खल ऐसा अरुन्तुद बोलने बाले हैं कि वे जब तक दिन में दो चार बार मर्म ताड़न कर किसी का चित्त न दुखा लें तब तक उन्हें खाना नहीं हज़म होता । ऐसे दुष्टों का जन्मही इस लिये संसार में है कि वे अपने वाग् बज्र से दूसरों का हृदय बिदीर्ण किया करें । "अतीव रोषा कटुका च बाणी नरस्य चिन्हानि नरकागतानाम्" वाक् संयम इसीलिये कहा गया है कि कहीं ऐसा न हो कि कोई शब्द हमारे मुख से ऐसा निकल जाय कि उस से दूसरे के चित्त को खेद पहुंचे । शील के सागर कितने पुरुष रत्न चारु दत्त से चारु चरित्र ऐसे हैं जो अपना बहुत सा नुकसान सह लेते हैं पर लेन देन में कड़ाई के साथ नहीं पेश आया चाहते और न वे दूसरे का जी दुखाते हैं । निश्चय ऐसे लोग महा पुरुष हैं, स्वर्ग भूमि से आये हैं और स्वर्ग में जांयगे । जो परचित्तानुरंजन में लौलीन हैं उनके समकक्ष मनुष्यकोटि में ऐसे ही कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई होंगे। यह परच्छन्दानुवर्तन दैवी गुण वहीं अवकाश पाता है जहां दर्प दाह ज्वर की ऊष्मा का अभाव है। अहंकारी को कभी यह बुद्धि होती ही नहीं कि हम किसी के चित्त को न दुखावें वरन परछिद्रान्वेषण ही में उसे सुख मिलता है। दूसरे की ऐब जोई को वह अपने लिये दिल बहलाव मानता है। अभिमान से देवदूत और फरिश्ते भी स्वर्ग से च्युत किये गये तब जिस में यह शैतानी खसलत है उसकी तुलना परचित्तानुरंजक के साथ क्योंकर हो सकती है। यह दर्पदाहज्वर धनवानों को बहुतायत के साथ सवार रहता है हमारा यह लेख उन्हीं के लिये विशेष रसाञ्जन है। निष्किंचन जो सामान्य मनुष्य के सामने भी गिड़गिड़ाया करता है उसको इस रसांजन की क्या अपेक्षा है॥

बहुत से ऐसे भी लोग हैं जिनकी चाल और ढंग कुछ ऐसा होता है कि उसे देख चित्त में बिषाद और कुढ़न पैदा होती है॥

यद्यपि कानो हानिः परकीयां रासभो चरति द्राक्षाम्।
असमंजसमिति मत्वा तथापि नो खिद्यते चेतः॥

किसी दूसरे के दाख के खेत को गदहा चरे लेता है हमारी यद्यपि इस में कोई हानि नहीं है किन्तु यह असमंजस सा मालूम होता है कि दाख के खेत को गदहा चरे डालता है यह समझ चित्त को खेद होता ही है। गर्वापहारी परमेश्वर की कुछ ऐसी महिमा है कि इस तरह के तुच्छ मनुष्यों को कोई ऐसा धक्का लग जाता है कि उनकी सब ऐंठन बिदा हो जाती है और तब वे राह पर आ जाते हैं। और तब भी जो सीधे रास्ते पर न आये उन्हें या तो बेहया कहना चाहिये या समझना चाहिये कि उनका कुछ और असंगल होनहार है। सोने की नाईं चरित्र की परख भी कसे जाने पर होती है। कसने से जो खरा और शुद्ध चरित्र का निकला वह लोक में प्रतिष्ठा और कदर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लायक होता है और जो दगीला और खोटा निकल गया वह फिर किसी काम का नहीं रहता। समाज में सब लोग उस से घिन करने लगते हैं जो घिन के लायक हैं उनके जीवन से फल क्या ॥

कुसुमस्तवकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।
मूर्ध्निहि सर्व लोकानां विशीर्येत वनेथवा ॥

चरित्रवान् मनस्वी फूलों के गुच्छा समान हैं फूल या तो सबों के सिर पर चढ़ेगा नहीं तो जहां फूला है वहीं कुम्हला के पेड़ के नीचे गिर पड़ेगा। कवि वर भवभूति ने भी ऐसा ही कहा है ॥

नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि
स्थितिर्नचरणैरवताडनानि ॥

परचित्तानुरंजन के प्रकरण में इतना सब हम अप्रासङ्गिक गा गये पढ़ने वाले कहैं गे व्यर्थ की अलापचारी से यह पत्र की जगह छेक रहा है। सो नहीं परचित्तानुरजन चरित्र पालन का प्रधान अंग है जो दूसरे के चित्त को अपनी मूठी में कर लेना सीखे हैं और इस हुनर में प्रवीण हैं वे चरित्रवानो के सिरमौर होते हैं। "स्माइलस आन क्यारेक्टर" में यही बात कई जगह कई तरह पर दर्साई गई है। पाठक आप भी यदि चरित्र वान् हुआ चाहो तो परचित्तानुरंजन में ध्यान लगाओ सो भी कदाचित् नापसन्द हो तो एक बार हमारे इस लेख को तो पढ़ लो। देव वाणी अंगरेज़ी के लेख पढ़ने की आदत पड़ रही है पिशाच भाषा हिन्दी का लेख पढ़ने में अपनी हतक समझते हो तो लाचारी है। हमारे भाग में करतार ने इसी पिशाचिनी की सेवा करना लिख दिया है तब क्या किया जाय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा—

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाकृरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

सकाट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट—लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम अपना खोया हुआ महत्व पा सक्ते हैं ?

यत्न शील दृढ़ निश्चय के साथ उद्योगी को कौन सी बात दुष्कर है नूतन सभ्यता के अनुयायी तो यही पुकार रहे हैं कि उस महत्व को पुनः प्राप्त करने की एक मात्र उपाय "इङ्गलिसाइज़्ड" हो जाना है। जब तक हमारी किसी एक बात में लेश मात्र भी हिन्दुस्तानी पन बचा रह जायगा तब तक हम तरक्की न कर सकेंगे। इसका कारण भी वे लोग यह कहते हैं कि हिन्दुस्तान का गुलामी के साथ ऐसा चिरकाल का सम्बन्ध हो गया है कि जब तक हम अपने को हिन्दुस्तानी मानते रहेंगे तब तक गुलामी का खयाल हम से दूर न होगा। आर्य समाजी कहते हैं जब तक देश में पोपलीला कायम रहेगी तब तक हमारा उद्धार न होगा, कुल देश का देश आर्य समाज में आ जाय अभी तरक्की होती है। ब्रह्म समाज वाले पुकार मचाये हैं कि देश में सब लोग पौत्तलिकता छोड़ एक ईश्वर के मानने वाले हो जांय तो देश उन्नति के सोपान पर चढ़ जाय। सनातन धर्मावलम्बी पुकार मचाये हैं, यह कलियुग है लोगों ने अपना धर्म कर्म छोड़ दिया अब हम दिन २ नीचे ही को गिरते जांयगे। घोर कलियुग आ जाने पर कलंकी अवतार होगा तब फिर से सतयुग जब आवेगा तब हमारी उन्नति होगी इत्यादि अपने २ मतलब की लोग गीत गा रहे हैं। किन्तु यह किसी को नहीं सूझती कि न जानिये कितने तरह के कोढ़ हमारी आर्य जाति को घेरे है उसे हम जब तक न अपने में से हटावेंगे तब तक आगे बढ़ने की चेष्टा सब व्यर्थ होगी। सौबार की गाई गीत को बार २ उद्धरनी से लाभ क्या। पहिले के महत्व को फिर पाने के लिये जातीयता का आना बड़ा आवश्यक है, हमारी प्रचलित रीति नीति बाल्य विबाह इत्यादि उस जातीयता कौमीयत की बड़ी बाधक है बिना उस के छोड़े हम सैकड़ों बार कानग्रेस करते रहें, तालीम के अन्तिम छोर तक पहुंच जाय कुछ न होगा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की परीक्षा।

मल्लिका देवी वा बङ्ग बासिनी

श्री किशोरी लाल गो स्वामी अपने उपन्यास प्रेमियों को ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाश कर क्रम २ से हिन्दुस्तान के ऐतिहासिक वृत्तान्तों से बहुत कुछ आगाह कर रहे हैं। यह उपन्यास भी बंग देश के एक समय की घटना के आधार पर लिखा गया है। जब दिल्ली के तख्त पर नेक नाम गयासुद्दीन बलबन विराजमान था उसका भेजा हुआ सूबेदार महा ज़ालिम तुगरल खां ने बंगाले के शासन की बाग डोर अपने हाथ में ले लिया था बस उसी के ज़ालिमाना बर्ताव का बंग देश की प्रजा पर जो असर हुआ है उसी का बर्णन इस में है जिसे पढ़ तरह २ का भाव चित्त में उपजता है, उपन्यास अति रोचक है मूल्य १॥)

तरुण तपस्विनी वा कुटीरवासिनी।

इस उपन्यास को किसी कदर गद्य काव्य कहैं तो अनुचित न होगा। गोस्वामी जी ने इस उपन्यास के लिखने में कहीं २ पर बाणकवि की कादम्बरी का तर्ज़ लाने में कुछ कोर कसर नहीं रक्खा। उपन्यास रसीली तबीयतवालों के पढ़ने योग्य हैं। ये दोनो उपन्यास श्री किशोरी लाल गोस्वामी ज्ञान बापी के पते से मिलेगा॥

बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन।

इस साबुन के मलते ही सुफ़ेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं। एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफी है। मूल्य प्रति टिकिया १) रुपैया।

इस ने दुनियां के ख़िज़ाबों (कलफों) की कदर घटा दी।

केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गैरंटी ३ साल मुफ़्त मिलेगा॥

मिलने का पता :—

मेनेजर हेअर डाई सोप कम्पनी—लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २८ सं० ७ } प्रयाग { जुलाई सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ सं० ७ | प्रयाग | जुलाई सन् १९०६ ई०

दौड़ धूप STRUGGLE

दौड़ धूप का दरजा कहां तक बढ़ा हुआ है इसका अन्त पाना सहज नहीं है। सच पूछो तो संसार में हमारा जीवन सब का सब या कुछ हिस्सा इस का केवल दौड़धूप है और अब इस अंगरेज़ी राज में तो इस दौड़धूप का अन्त है। दौड़ धूप अपनी हद्द को पहुंची हुई है। घर में जै प्राणी होंगे सब मिल कर यथोचित दौड़ धूप S·ruggle करते रहैंगे तभी चलेगा नही तो पहिया रुक जायगी। वर्तमान् शासन की प्रणाली ने हमारे नेत्र खोल दिये-भारत का अब वह समय दूर गया जब एक आदमी कमाता और दश प्राणियों का पूरा २ भरण पोषण करता रहा। अब उन दस प्राणियों में नौ कमाते हों एक किसी कारण अपाहिज या निकम्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल गया तो उसका कहीं ठिकाना नहीं। दूसरा कारण एक यह भी मालूम होता है कि देश में धन रह न गया और Allurements मन को लुभाने या फुसलाने वाले चित्ताकर्षक पदार्थ इतने अधिक हो गये हैं कि उन्हें देख जी लुभा उठता है-विना उन्हें खरीदे जी नहीं मानता न खरीदो तो अपने आराम और आसाइश में फर्क पड़ता है। जिस गृहस्थी का पालन पोषण साथ आराम के १० रुपया महीने की आमदनी में होता था वहां अब हर एक जिन्स के मंहगे हो जाने से २५) महीने की आमदनी पर भी नहीं चलता। इस दौड़ धूप में एक दूसरे के मुकाबिले आगे बढ़ जाने की चेष्टा जिसे अंगरेज़ी में "कंपिटीशन" और हमारी बोल चाल में हिसका या उतरा चढ़ी कहेंगे कोढ़ में खाज के समान है। इस उतरा चढ़ी में बहुत से गुण हैं पर कई एक दोष भी इस में ऐसे प्रवल हैं जिस से हमारी बड़ी हानि हो रही है। एक ही बात के लिये दो प्रतिद्वन्दियों के होते आपस में दोनों की उतरा चढ़ी C mpetition होने पर दोनों जी खोल कोशिश करते हैं जो कृतकार्य होता है उस के हर्ष की सीमा नहीं रहती। हमारे अपढ़ रुपये वाले जिन्हें न इतनी अकिल न हिम्मत न शऊर की बाहर निकल क़दम बढ़ावें घर के भीतर ही रहा चाहें इस उतरा चढ़ी में आय आपस में कट मरते हैं। अफीम भांग इत्यादि के ठीकों में ऐसा बहुधा देखा जाता है। इन अहमकों की उतरा चढ़ी में प्रजा का धन खूब लुटता है। विदेशी राजा ठहरा कर्मचारी ऐसी हिकमत काम में लाते हैं कि उतरा चढ़ी में इन महाजनों का टेंडर हर साल बढ़ता ही जाय। ऐसाही दो धनियों में आपस की स्पर्द्धा हो गई तो दोनों छार में मिल जाते हैं। दो विद्यार्थियों में स्पर्द्धा का होना दोनों के लिये बहुत उपकारी है। एक दूसरे में स्पर्द्धाही से यह संसार चल रहा है संसार या संसृति के माने ही दौड़ धूप है और दौड़धूप की अन्तिम सीमा प्रतिस्पर्द्धा या उतराचढ़ी है। कुलीनता का घमण्ड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे प्रतिस्पर्द्धा इन दोनों से हमारी समाज जर्जरित होती जाती है। ब्याह शादियों में करतूत का बढ़ जाना जिस से बहुधा लोग क़र्ज़दार हो बिगड़ जाते हैं यह सब इसी उतरा चढ़ी का प्रतिफल है। उतरा चढ़ी "कंपिटीशन" न हो तो केवल दौड़धूप Struggle को बुरी न कहेंगे। इधर हिन्दुस्तान का अधःपात आलस्य और सुस्ती ही से हुआ जब तक देश रंजा पुजा था लोग हाथ पर हाथ रक्खे पागुर करते बैटे रहे। विलायती पंप के द्वारा जब सब रस खिच गया तो अब चेत आई भांत २ की दौड़-धूप में लोग अब इस समय लग रहे हैं पर वह पंप ऐसा तले तक गड़ गया है कि हमारी दौड़धूप का भी सरांश उसी पंप में खिच जाता है। हां इस कदर दौड़धूप करने से पेट अलबत्ता पाल लेते हैं। इतना परिश्रम न करें तो कदाचित् भूखों मर जांय। धन्य भारत के वे दिन जब शान्ति देवी के उपासक हमारे ऋषि मुनि अपने पुण्याश्रम में आध्यात्मिक चिन्तन में अपना काल बिताते हुये दौड़धूप और फिकिर चिन्ता का नाम भी नहीं जानते थे। भारत की परम उन्नति का समय वही था ॥

शिष्य की परख।

यह कथानक महा भारत के आदि पर्व का है जिससे प्रगट होता है कि हमारे यहां शिष्यों में कैसी गुरुभक्ति होती थी। इन दिनों स्कूलों में पढ़ने वाले जो धृष्टता और गुस्ताखी के पूर्ण अवतार होते हैं इसे पढ़ कुछ तो शरमांय और आगे को अपने सुधार के लिये इसे उदाहरण मानें॥

एक वार उपाध्याय आयोद धौम्य ने अपने शिष्य उपमन्यु से कहा बेटा उपमन्यु-तुम हमारी गौओं को चराय लाया करो-उपमन्यु गुरू की आज्ञा मान दिन भर गौवैं चराय सांझ को बन से लौट गुरू को आके प्रणाम किया। गुरू ने उपमन्यु को हृष्ट पुष्ट और दृढ़ांग देख कहा वत्स उपमन्यु तुम दिन भर गौवैं चराते रहे क्या खाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो हृष्ट पुष्ट और दृढ़ांग बने हो तनिक भी नहीं कुह्मलाने इसका क्या कारण है ? ॥

उपमन्यु--गुरू जी आप की गौवें चराया बीच में भिक्षा भी मांग लाये उसी को खाया ॥

गुरू--तुम ने बड़ा अन्याय किया जो भिक्षा बिना हमे निवेदन किये खा लिया । ऐसा न किया करो । दूसरे दिन उपमन्यु भिक्षा लाय सब की सब गुरू के अर्पण कर दिया । सांझ को गौवें चराय बन से लौट गुरू को आके प्रणाम किया । इसे वैसाही हृष्ट पुष्ट और दृढ़ांग देख गुरू ने पूछा । उपमन्यु हमने सब की सब भिक्षा लै लिया तौ भी तुम मोटे ताज़े और मज़बूत हो सो क्यों ? ।

उपमन्यु-पहली भिक्षा लाय आप को दै दिया फिर मांग लाये उसी को खाय आप की गौवैं चराते रहे ॥

गुरू-यह भी तुम ने अन्याय किया इस से तो दूसरे २ भीख मांगने वालों की बड़ी हानि हुई । प्रतिदिन ऐसा ही दोदो बार भिक्षा मांगा करोगे तो भीख देने वालों को अश्रद्धा हो जायगी । तो तुम मानो भिक्षा देने के क्रम ही को बन्द किया चाहते हो । ऐसा करने से तुम्हे सब लोग लोभी कहेंगे । दूसरे दिन फिर उपमन्यु सांझ को बन से लौट गुरू को आयके प्रणाम किया ॥

गुरू-तुम तो वैसा ही मोटे ताज़े बने हो । हमने तुम्हारी सब की सब भीख लै लिया और फिर मांगने का निषेध कर दिया तब क्या खा कर रहे ? ॥

उपमन्यु-उन्ही गौओं का दूध पी उन्हे चराते रहे ? ।

गुरू-यह तो बड़ाही अन्याय है । हमारी आज्ञा के बिना तुमने क्यों दूध पिया । ऐसा मत किया करो ॥

उपमन्यु-बहुत अच्छा । अब ऐसा न करूंगा । दूसरे दिन बन से लौट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर गुरू को आके प्रणाम किया ॥

गुरू-दूध पीने को हम ने मना कर दिया, भीख मांगने की हमारी आज्ञा न थी तब क्या खाया जो मोटे ताजे बने हो ॥

उपमन्यु-ये बछड़े दूध पीते समय जो फेन मुह से गिराते रहे उसी को पी कर रहा ॥

गुरू-ये बछड़े बड़े गुनवान हैं, तुम्हें फेन पीते देख दूध आप न पियेंगे दया का भाव मन में लाय दूध को फेन बनाय तुम्हारे लिये गिरावेंगे तब तुम उन बछड़ों का हक़्क पी पापी बनोगे। ऐसा मत किया करो। दूसरे दिन फिर उपमन्यु गौवें चराने को गया। अब यह भूख से पीड़ित हो न भीख मांग सका न दूध पीने की आज्ञा थी न फेन ही पी सका तब मदार के पत्तों को खा कर दिन बिताया। मदार अत्यन्त गरम कड़ुआ और रूखा होता है उसके खाने से यह अन्धा हो गया। गौवों को चराय घर लौटते समय रासते में कुँआ में गिर पड़ा। सांझ को सूर्य अस्त होने पर भी जब न आया तब गुरू ने उस के साथ के पढ़ने वालों से पूछा उपमन्यु अब तक क्यों न आया। उन्हों ने कहा गौवें चराने गया है। (थोड़ी देर प्रतीक्षा कर) जान पड़ता है रूठ गया चलो उसे ढूढ़ें उपाध्याय आपोद धौम्य शिष्य समेत इसे ढूढ़ने चले। बन में सब ओर पुकारते फिरे। उपमन्यु अपने गुरू की आवाज़ पहिचान बोला भूखा हो मैं मदार का पत्ता खा कर रहा सो अन्धा हो गया आवते समय कुआं में गिर गया हूं। गुरू ने कहा तुम अश्विनी कुमार की स्तुति करो वे देवताओं में वैद्य हैं तुम्हारी आंख अच्छी कर देंगे अन्धत्व जाता रहेगा। गुरू के कहने से उपमन्यु ने अश्विनी कुमार की स्तुति किया और इसका अन्धत्व मिट गया पीछे गुरू ने भी इसे आशीर्वाद दिया समस्त वेद और धर्मशास्त्र तुम्हें आजाय और मनुष्य के लिये जो २ अभ्युदय और कल्याण की बातें सब तुम्हें प्राप्त हों।

गुरू में शिष्य की अचल और दृढ़ भक्ति तथा गुरू का शिष्य पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अटल प्रेम और छोह दोनो इस कथानक का सारांश है। अब तो अंगरेज़ी स्कूलों के जारी होने से तालीम का कुछ ढंग ही पलट गया। विद्या दान में सर्कार की ओर से जैसी कड़ाई है और कर्मचारियों की जैसी कुदृष्टि हमलोगों की शिक्षा की ओर है उस से स्पष्ट है कि कुछ दिनों में वेही पढ़ सकेंगे और उत्तम शिक्षा पा सकेंगे जो सुसंपन्न और खाने पीने से दुरुस्त हैं। अच्छे उस्ताद तो अब भी शालीनता गुण विशिष्ट शिष्य को पहचान लेते हैं और जी खोल उसे बताते हैं। इस विद्या विक्रय के समय में भी अच्छे सुयोग्य अध्यापक शिष्य के सद्गुण की भरपूर परख कर लेते हैं। हमारे प्राचीन समय में जब विद्या का क्रय विक्रय नहीं होता था तब वही क्रम विद्योपार्जन का था और उन की पढ़ाई विद्या तब इसी से अयातयाम होती थी॥

भारत में जनसंख्या और दरिद्रता की बढ़ती।

हिन्दुस्तान समस्त संसार की एक छोटीसी प्रतिकृति है। यूरोप के ५ प्रवल साम्राज्य Five great powers में इङ्गलैण्ड इस समय जो सबों में प्रधान समझा जाता है सो इसी लिये कि हिन्दुस्तान उसके अधिकार में है। इसकी लम्बाई चौड़ाई तथा यहां की नित्य बढ़ती हुई जन संख्या से यही बोध होता है कि यह एक Continent महाद्वीप है। बङ्गाल पंजाब गुजरात आदि इस के एक २ बड़े देश हैं। भिन्न २ देशों के खानिक द्रव्य आदि अत्युष्ण तथा अति शीतल कटिवन्ध के निवासियों के शरीर का ग्रथन तथा उन कटिवन्धों के जल वायु की पैदावार और वहां २ के बनस्पति या जीव जन्तु आदि यावत् प्राकृतिक रचना सब का चित्र यहां विद्यमान् है जिस से साबित है कि समस्त संसार का भारत एक छोटा सा नकशा है। पर आबादी और निर्धनता में यह सब देशों में आगे बढ़ा है। यहां की इतनी चढ़ी बढ़ी जन संख्या दरिद्रता का दुख झेलती जितनी भावी उन्नति और आशा सबों को निर्मूल कर रही है। एक वह समय था जब हमारे आर्य पूर्व पुरुष "गोत्रन्नोवर्द्धताम्" की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना करते थे-सन्तान और परिवार की वृद्धि तथा बहुप्रज होना भागवानी की सीमा समझी जाती थी अब इस बढ़ती हुई जन संख्या में बड़ा अभागा वही है जो बहुप्रज है, जीते जी नरक की यातना वही भोग रहा है जिस के बहुत से लड़के हैं। देश के कल्याण की अनेक बातों में औलाद का कम होना भी है-एक हमारे मित्र का यह कथन हमे बहुत ही रुचा और समयानुकूल जंचा कि "मनुष्य आधा तब मरता है जब अपनी स्वच्छन्दता गवांय जान बूझ बेंड़ी पावों में छोड़ व्याह करता है और पूरा तब मरता है जब औलाद उस के पैदा होने लगती है" भारत के सुदिन तभी आ सक्ते हैं जब इस खयाल के एक भी न रहैं-जिन के मत में, मनुष्य के जीवन की सफलता इसी में है कि एक २ आदमी के बेशुमार औलाद पैदा हो और औलाद निरी दूध मुही रहे तभी व्याह दी जाय। कबूतर या मुर्गियों की भांत उन के भी जल्द २ बच्चे पैदा हों दासत्व की शृङ्खला से जकड़े हुये वे क्या खांयगे कैसे अपना दिन बितावेंगे इसका कुछ खयाल नहीं। हमारे सभ्य समाज वाले प्रति वर्ष कानग्रेस करते हैं अनेक कानफेरेन्स के द्वारा समाज का संशोधन किया चाहते हैं। प्रजा में नव जीवन के दान से उन्हे उच्च श्रेणी में उठाया चाहते हैं। किन्तु इस पर किसी का ध्यान नहीं जाता कि औलाद कम पैदा हुआ करे और देश में जन संख्या घटै। ब्रह्मचर्य की प्रथा स्थापित कर दस की जगह एक ही दो सन्तान हों पर वे सिंह के छौने निकलैं "सहैव दशभिः पुत्रैर्भारं वहति गर्दभी" को चरितार्थ होने का मौका न मिलै। ऐसे लोग बहुत हैं जिन्हें बड़े से बड़े राज के इन्तिज़ाम का हौसिला है और जो उन्हें सौंपाजाय तो अच्छी तरह कर गुज़रै पर घर के इन्तिज़ाम का विल्कुल शऊर उन्हे नहीं है। घर के बड़े २ काम जिन से हमारे में कौमीयत आने की आशा है घरवाली के हाथ में रख दिया गया है। इतना "मारल करेज" कहां से लावें कि अपनी घरवाली की गुलामी से बर तरफ हों। गृहस्थी में लड़की लड़कों का व्याह बहुधा उन्ही के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार होता है । कालिदास ज़ीट उड़ाने के ढङ्ग पर कुमार संभव में लिखते हैं "प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः" बहुधा कुटुम्बी कन्या के विवाह इत्यादि में गृहिणीनेत्र होते हैं अर्थात् अपनी घरवाली के कहने के अनुसार चलते हैं-इस से सिद्ध है कालिदास के समय से यह बुराई प्रचलित है । अपने घर का इन्तिज़ाम मुल्क के इन्तिज़ाम के बराबर है। मसल है अपने घर में दिया वाल तब मसजिद में बालना होता है जो अपने घर का इन्तिज़ाम न कर सके वे हुकूमत का इन्तिजाम क्या करेंगे । पति सेवा और पतिव्रत की बहुत कुछ महिमा हमारे शास्त्रों में गाई गई है पर पत्नी सेवाव्रत हमारी इन दिनों की सभ्य समाज ही में पाया जाता है । यह उसी का परिणाम है कि बाहर बड़ी लम्बी चौड़ी वक्तृता और लेक्चर हम झाड़ते हैं पर घर में पहुंचते ही जहां देहली के भीतर पांव रक्खा कि सब जोश उतर जाता है । पत्नी सेवाव्रत की दीक्षा लिये हैं हिम्मत नहीं कि मुह खोल सकैं । बाहर बिधवा विवाह के लिये और बाल्य बिवाह उठाने को बड़ी सर गरमी और जोश दिखाते हैं घर में जो कहीं यह बात ज़बान पर आजाय तो मुये के चांद का बाल भी नोच लिया जाय और सिर पर इतनी चटकाई जाय कि चांद खुजलाते २ खोपड़ी गन्जी हो जाय। इत्यादि अनेक कितनी बातें हैं जिस से हमारी जर्जरित समाज जन संख्या की बाढ़ के साथ हमारी दरिद्रता और मुफलिसी को बढ़ा रही हैं । बाहर दिखाने को हम सब तरह की तरक्की कर रहे हैं पर घर के भीतर उसका कुछ भी असर नहीं पहुंचा न कभी पहुंचेगा । ५० वर्ष पहले जो कुरीतियां और कुसंस्कार हमलोगों में थे वे आज भी वैसेही टटके बने हैं और वे सब हमारी दरिद्रता के बढ़ाने के सहकारी हो रहे हैं; उस में सब से प्रधान बहुत सी औलाद का होना है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिजूल खरची।

हमारे नये सुशिक्षितों में यह फिजूल खर्ची संक्रामक रोग या कोई बड़े पातक सदृश फैली हुई है। बड़े रुपये वालों ही में यह बीमारी महदूद रहती तहां तक कोई हर्ज न था बरन मध्यम श्रेणी वाले या छोटे दरजे के लोगों में भी यह फैली हुई है। "यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। सयत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते" श्रेष्ठ और उत्तम श्रेणी के लोग जैसा आचरण करते हैं वैसाही नीचे दरजे के लोग करने लगते हैं ऊपर के दरजे वाले जिसे प्रमाण में रखते हैं छोटे लोग उसको अपने लिये प्रमाण में मानाही चाहें। एक ओर यहां के आय का बन्द होना और देश में धन का घाटा होते जाना दूसरे ओर अंगरेज़ी राज की अनेक प्रकार की फिजूल खर्चियों का बढ़ जाना कितना हमारे लिये हानि कारक हो रहा है। यही कारण है कि लोग इस समय पुराने क्रम के अनुसार दियानतदारी के साथ थोड़ी आमदनी से रुपया कमाते और खर्च में किफाइत करते हुये कालान्तर में धनी हो जाने की अपेक्षा यही चाहते हैं कि कैसे एकबारगी बड़े रुपये वाले हो जांय। इस ढङ्ग से एकबारगी धन मिल जाने का तरीका जुआ या जुआ चोरी अथवा किसी को ठगना या धोखा देना है। बड़े २ नगरों में तो इसकी बहुत ही ज़ियादती है जैसा लण्डन पेरिस हिन्दुस्तान मे कलकत्ता और बम्बई किन्तु साधारण रीति पर शहर मात्र में इसका बहुत प्रचार है; नगर की अपेक्षा ग्राम में इस की कमी अलबत्ता कही जा सक्ती है। व्यय हमारे पहनावे में सब से अधिक बढ़ रहा है, साधारण रीति पर नज़र फैला कर देखो तो अंगरेज़ी फेशन ने ऐसा पांव फैला रक्खा है कि जिस में देखो और जहां देखो सब में उसे टांग अड़ाए हुये पाओगे इन दिनों बहुधा लोग ऐसे तर्ज़ पर अपना जीवन चला रहे हैं जो तर्ज़ उन की औकात के बाहर है। अंगरेज़ी शासन का इसे सुबुकपन कहैं या बरकत अथवा शाप Blessing or curse "अघोघः , पश्यतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्य महिमा नोपचीयते । उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति" हमेशा अपने से हर एक बात मे कमवाले के साथ अपनी होड़ करे । ऐसा करने से हम ईश्वर का धन्यबाद देंगे कि भगवान् की हम पर कृपा है । वह हमे अमुक मनुष्य से अच्छी दशा में रक्खे है । इसे एक जून भूरी रोटी खाने को मिलती है हम सुबह शाम दोनों वक्त दूध मलाई चाबते हैं । पर अपने से ऊपर दरजे वाले के साथ अपना मिलान करने वाले सब लोग दरिद्र रहते हैं । इस लिये कि जब वह अपने से अधिक वाले के साथ अपनी होड़ करेगा तो उस के मन में हसद और ईर्षा पैदा होगी। ईर्षा की ज़िन्दगी कभी सुख से नहीं कटती । दूसरे यह कि हमे ४ रुपये की समाई है दूसरा जिसे १०) रु० की समाई है उस के साथ हम अपनी बराबरी करैंगे तो कुछ दिन में सब गवांय छुक्क हो भूखों मरने लगैंगे । हिन्दुस्तान की इस समय ठीक यही दशा है । जिन्हे हम बड़े धनी समाई और पूंजी वाले समझे हुये हैं वे भी भीतर २ पोले हैं । ऊपर दिखाने को ऐसे ठाठ से रहते हैं कि देखने वाले का बड़ा ऊंचा खयाल हमारी ओर जमा है । हुंडी पर हुंडी पीटते बरावर मिती चढ़ती जा रही है जब देखा अब नहीं चलाये चलता टाट उलट दीवाला पीट बैठ रहे । अदालतों में आधे मुकद्दमे दिवालियों पर डिगरी जारी के और जाल फरेव के रहते हैं तो आधे में और सब क़ानूनों की अनेक तरह की पेचीदगी के होते हैं । पहिले नौवाबी में नोच खसोट की डर से लाखों रख कर भी सब लोग बनियों की तरह फटे हालत से रहना पसन्द करते थे अब इस समय अंगरेज़ी स्वास्थ्य में बनिये भी शाह बनते हैं; भीतर पोले हों पर ऊपर से अपने को रंजे पुजे न दिखलावें तो प्रतिष्ठा की हानि रहे । मक्कारी अब तक धर्म सम्बन्ध में रही अब धन और रुपयों में भी मक्कारी ने आय पांव फैलाया । समाई हो चाहो न हो पर रहन सहन का एक तर्ज़ Style होनाही चाहिये । रहने को साफ सुथरा वग़ैरह मकान चाहिये; मकान हुआ तब दस्तर खान में हम पियाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले दो चार दोस्त क्यों न हों; फिर गाड़ी घोड़ा रहना ही चाहिये; हैसीयत के माफिक काम काज किया चाहें; सर्कारी चन्दा किसी किस्म का आ गया तो उसमें भी शरीक न हों तो कर्मचारी नाराज़ हों। तात्पर्य यह कि एक की आमद दो का खर्च साफ़ ज़ाहिर किये देता है कि जब तक हेर फेर न करैं और निरी इमानदारी पर निर्भर रहैं किसी तरह नहीं चल सक्ता। ऐसाही एक दूसरी श्रेणी फिज़ूल खर्चियों की और भी है। जैसा हैं तो बिल्कुल मुफलिस कल्लांच और दरिद्र पर चाहते हैं कि समाज में हमें सब लोग धनी मानै। अपने सब काम और करतूत उन्ही के बराबर की करैं जैसा सामर्थि वाले करते हैं। उन के खयाल में यही धसा हुआ है कि हम भीतर चाहो जैसे हों पर रहन सहन पहिनावे और फेशन परस्ती में किसी से पीछे न रहैं और इसी को वे बड़ी लियाकत और प्रतिष्ठा मानते हैं। चाहो वह बिल्कुल बनावट नुमाइश और दम्भ हो पर वाहर वाले उन्हें सम्पन्न और खाने पीने से दुरुस्त समझे रहैं। चलन सी हो गई है कि लोग हमेशा अपनी ग़रीबी के छिपाने की कोशिश में रहते हैं इस लिये सदा कर्ज़दार रहते हैं। ऐसे लोग दावतों में और व्याह शादी में सैकड़ों खर्च कर डालते हैं पर दावत का जितना सामान सब उधार रहता है। यार दोस्त भाई बिरादरी जमा हो उस बेवकूफ को झूठी तारीफों से खुश कर दावत खापी रवाना होते हैं। पीछे मुसीबत उसी अहमक के सिर आ पड़ती है Fools make feast and wise men eat them " बेवकूफ दावत करते हैं अकिलमन्द दावत खाते हैं यह कहावत ऐसोंही के लिये कही गई है। नाक की लाज का निबाहना ऐसी भारी बुराई हमारी समाज को दबाये हुये है कि गृहस्थ हज़ारों कमाता हुआ भी नहीं पनपने पाता। गरदन चाहो कटजाय पर नाक न कटै इस समझ को कैसे उन से कोई दूर करै। ऐसों ही को कर्ज़ अज़दहा बन निगल लेता है और फिर जन्म भर उस से उनका छुटकारा नहीं होता॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिजूल खर्ची की आदत पड़ जाने से फिर छुटाये नहीं छूटती। ईश्वर न करे अपव्ययी खरच करने की आदत में पड़ा हुआ सुबीते वाला हो पीछे दरिद्र हो जाय। ऐसा मनुष्य एक तरह पर जीते ही मृतक तुल्य है। अच्छा कहा गया है।

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते घनान्धकारेष्विव दीप दर्शनम्।
सुखेन यो याति नरो दरिद्रतां धृतः शरीरेण मृतः स जीवति।

यह श्लोक मृच्छकटिक में खर्च करते २ दरिद्र हो जाने पर चारूदत्त के सम्बन्ध में कहा गया है। पहिले दुःख झेल पीछे सुख भोगना सोहता है पर धनवान् रह पीछे जो दरिद्र निष्किंचन हो जाता है वह शरीर धारण किये हुये भी मानो मरा हुआ है। सुनने में आता है लखनऊ और दिल्ली में अब भी कितने ऐसे फिजूल खर्च चटोरे हैं कि कपड़े बेंच मिठाई खाते हैं। यह भी एक प्रकार का नशा है सबेरे से सांझ तक में जब तक रूपया दो रुपया उड़ा न लेंगे तब तक उन्हे कल न पड़ेगी। हमारी समझ में तो जुआ के समान यह भी एक दुर्व्यसन है मुफ्त खोर दूसरों के माल पर चैन उड़ाने वाले ऐसों को खूब ठगते हैं। अपनी चाप लूसी के ढर्रे पर उसे फसाय थोड़े दिन में उसका सर्वस्व गटक बैठते हैं॥ डाक्टर जानसन का मत है कम खर्ची आदमी को जल्द स्वच्छन्द कर देती है। ठीक है जो किफायत से चलता है उसका सदा रुपया जमा करने की ओर लक्ष्य रहता है। जो रुपये वाला और सब भांत पुष्ट है वह स्वछन्द रहा चाहे इस लिये कि वह रुपये पैसे के लेन देन में किसी से दबा नही है तब वह क्यों किसी की मातहती पसन्द करे। अपव्यय करने वाले को तो हर जून रुपये का तरद्दुद रहता है तब न जानिये कितनों का बाधित सदा पराधीन उसे रहना पड़ता है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय विचार॥

लार्ड रिपन महोदय नगर २ में म्युनिसिपालिटी इस लिये स्थापित कर गये थे कि हमलोगों में आत्म शासन का माद्दा आवे न कि इस लिये कि म्युनिसिपालिटी चुङ्गी आदि अनेक टैक्सों के ज़रिये हलाकू और चङ्गेज़ खां की ताई और चाची बन बैठें। चुङ्गी और दूसरे २ अनेक हलाक करने वाले टैक्सों से जब इसका खर्च न पुरा तो "हौस टैक्स" घर दुआरी लगाई गई अब इतने पर भी म्युनिसिपलिटी को घाटाही रहा तब मिरचा हींग आदि कई छोटी जिन्सों पर चुङ्गी घटाय घी पर चुङ्गी बढ़ा दी गई है। उस पर सन्तुष्ट न हो मेम्बरान म्युनिसिपालिटी ने अब गाय भैंस बकरी आदि जानवरों पर टैक्स लगाया चाहते हैं? प्रतिदिन गो धन की देश में कमी होने से दूध घी महा महगा होता जाता है अब यह "क्यटिल टैक्स" क्या किया चाहता है? क्या मेम्बरान म्युनिसिपल यही चाहते हैं कि दूध घी लोगों को मयस्सर न हो? म्युनिसिपलिटी क्यों बहुत सा फिजूल खर्च बढ़ाये है कि उसका घाटा नहीं पुरता। सेना विभाग इत्यादि में गवर्नमेंट की फिजूल खर्ची का म्युनिसिपलिटी क्यों अनुकरण कर रही है? गवर्नमेंट तो विदेशी है तब वह हर एक बहाने अपना पेट भरा चाहे उसे हिन्दुस्तान का रुपया व्यर्थ खर्च करते क्या मोह और अकरास हो। म्युनिसिपलिटी का सिद्धांत आत्मशासन है तब उसे फिजूल खर्ची के रोकने ही में भलाई है।

—:o:—

पूर्वीय बङ्गाल के नये छोटे लाट फुलर साहब ने जब देखा कि अब हमारी कोई कला नहीं लहती तब यह उपाय निकाला कि मुसल्मानों को हिन्दुओं के विरुद्ध उठाया चाहते हैं। सर्कारी नौकरियां हिन्दुओं के मुकाबिले पहिले मुसल्मानो को दी जांयगी तो इस में हिन्दू और मुसल्मान दोनो में स्पर्द्धा और विरोध अवश्यमेव बढ़ैगा और बङ्गाली लोग जो एका एका चिल्ला रहे हैं और स्वदेशी की धूम मचाये हैं उस में कुछ न कुछ बाधा अवश्य पड़ैगी। पालिसी इसी को कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी तरक्की की अनेक बाधाओं में कर्मचारियों की पालिसी भी एक है ॥

--:०:--

हमे अपनी हिन्दी की प्रतिदिन उन्नति देख बड़ा हर्ष होता है अब इस समय इसके बहुत अच्छे २ प्रौढ़ लेखक हर एक प्रान्तों में तैयार होते जाते हैं। बहुधा प्रत्येक नगर से साप्ताहिक कहीं २ मासिक दो एक पाक्षिक और दैनिक भी निकल रहे हैं। जिन्मे हर एक तरह के उत्तम से उत्तम प्रौढ़लेख निकलते हैं। साप्ताहिकों में लखनऊ से आनन्द हास्य रसपूर्ण बहुत अच्छा निकलता है और लाहौर से स्वदेशबन्धु। इस के संपादक राजकीय विषय में बड़ी स्वच्छन्दता के साथ लिखते हैं आशा है इस के ग्राहक बहुत जल्द बढ़ जांयगे और यह उत्तम श्रेणी के पत्रों में गिना जायगा ॥

हिन्दू कालेज के लड़कों को स्वदेशी आन्दोलन में शरीक न होने देने की भूल को श्रीमती एनी बिसेंट हर तरह पर तोपा चाहती हैं पर वास्तव में यह उन से नहीं बन पड़ा और इस से बहुतों को उनकी ओर से अश्रद्धा और खटक हो गई है। स्कूल और कालेजों के लड़के पोलिटिकल मामिलों में शरीक न हों इस के तो कोई माने ही नहीं मालूम होते। केवल संस्कृत या केवल फारसी पढ़े हुओं के समान अङ्गरेज़ी की शिक्षा का तब फल क्या हुआ। न यह कभी संभव है कि तालीम की झलक पाये हुये को हमारा देश हमारी कौम हम किस तरह स्वच्छन्दता प्राप्त करैं इत्यादि खयाल न पैदा हों। गवर्नमेंट तो यह चाहती ही हैं कि स्कूल के लड़को में कौमीयत का जोश ज़रा न आने पावे और इसी हिकमत अमली से स्कूल का कोर्स भी वैसाही कर रही है कि लड़कों की तबियत में उभाड़ न हो। एनी बिसेंट महोदया ने भी यदि गवर्नमेंट की उसी पालिसी को पसन्द किया तो लाभ क्या? हम उनके विरोधी नहीं हैं वे अपनी समझ के अनुसार जो कर रही हैं उस से अवश्य भारत का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याण है पर यह काम उन से नहीं बन पड़ा सो माननाही पड़ता है। कतिपय बङ्गदेशियों को छोड़ युक्त प्रदेश जिनकी जन्म भूमिसी हो गई है बाकी बङ्गाली मात्र श्रीमती से सहमत नहीं हैं। अब वह इसे कितनाही छिपावैं ताड़बाज़ों ने उनका हार्दिक्य क्या है सो टटोल लिया ॥

--०--

नैपाल का संक्षिप्त इतिहास।

आषाढ़ के प्रवासी में "नैपाल में काट मांडू" शीर्षक लेख में नैपाल राज्य का छोटा सा वर्णन वहां की बहुत सी बातों की वाकफीयत हमें देता है। यह विस्तीर्ण पर्वत स्थली की लम्बाई ५२० कोस की है और चौड़ाई ९० कोस से १५७ कोस तक है। इस के उत्तर की सीमा तिब्बत पूर्व की सिक्किम पश्चिम को रोहेल खण्ड और कुमायूं और दक्षिण की ओर हिन्दुस्तान है। किसी समय नैनीताल और मनसूरी प्रभृति पर्वत प्रदेश सन् १८१६ ईस्वी के पूर्व इसी में शामिल थे। अब इन दिनों सब भांत परम स्वच्छन्द राज्य हिन्दुस्तान में केवल नैपाल बच रहा है। २१ सौ वर्ष पूर्व यह हिन्दू राजा के अधिकार में न था बरन तब वहां का राजा एक बौद्ध था। १७८९ ईस्वी में गोरखा वंशीय पृथ्वी नारायण नाम का एक हिन्दू राजा उन बौद्ध राजाओं को युद्ध में जीत आप समस्त नैपाल का राजा हो गया। नैपाल के वर्त्तमान नरेश राजाधिराज पृथ्वीबीरविक्रम इन्हीं के वंशधर हैं। एक समय महाराष्ट्र राज्य के सदृश वहां भी मंत्री प्रधान राज्य था। काट माण्डू वहां की राजधानी समुद्र की सतह से ४५०० फुट ऊंची है। यह एक विस्तीर्ण उपत्यका में बसा हुआ है जो लम्बाई में पूरब से पश्चिम को प्रायः ८० मील के है। और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को प्रायः १५ मील है। काटमाण्डू को आते समय चन्द्र गिरि के शिखर देश से यह विस्तीर्ण उपत्यका चित्रपट के समान दिखाई देती है। यह चारो ओर पर्वत श्रेणी से मानो रूंधा सा है। ऐसी किम्बदन्ती है कि पूर्व समय नागवास नाम की एक बिस्तीर्ण पहाड़ी झील यहां थी चीन देश से आये हुये बोधिसत्व एक महात्मा यहां आय तलवारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चोट से पर्वत भेद कर इस झील की समस्त वारिराशि के निर्गमन की रास्ता कर इसे पर्पट मैदान कर डाला। तब से यह मनुष्यों के रहने योग्य हो गया। यह किम्बदन्ती सर्वथा अमूलक नहीं मालूम होती क्यों कि यह उपत्यका बिल्कुल समतल है और कंकर रहित नदीतल सदृश ठौर २ इस में कीचड़ पाये जाते हैं। बाघमती नदी के जल का निर्गम किसी तरह रोक दिया जाय तो यह उपत्यका फिर झील हो जा सक्ती है। राजा गुण रामदेव ने ९२३ ईस्वी में कान्तीपुर को बसाया एक समय यह राजा महा लक्ष्मी की पूजा कर रहे थे कि देवी ने उन्हें स्वप्न में दर्शन दे कहा बाघमती और विष्णुमती नदी के संगम में आप एक नगर बसावैं। इस नये नगर की आकृति खड्ग के समान होगी और प्रतिदिन यहां १ लक्ष का कार वार होगा। महा लक्ष्मी की आज्ञा अनुसार कान्तीपुर को बदल राजा गुण राम ने इसे अपनी राजधानी बनाया। नगर के मध्य भाग में पुरातन राज मन्दिर के निकट काटमण्डू नाम का एक काष्ठ निर्मित घर अब तक बना है। १६९६ में यह घर वहां के राजा की ओर से फकीरों के रहने के लिये बनाया गया था और उस में अब तक फकीर रहते हैं। इसी से इस नगर का नाम काटमण्डू है। बाघमती और विष्णुमती ये दोनो नदियां इसे चारो ओर से घेरे हैं। शहर के ठीक मध्यभाग में बौद्ध राजाओं का पुराना महल अब तक विद्यमान है अब इसे हनुमान ढोका कहते हैं। इस महल के सिंह द्वार के आगे हनूमान जी की एक विशाल मूर्ति है। इस राज महल का फाटक स्वर्ण निर्मित है। इसके चारो ओर बहुत से देव मन्दिर हैं। यह स्थान बड़ा रमणीक है। हनुमान ढोका के समीपही भैरव की एक अतिवीभत्स मूर्ति है। हनुमान ढोका से प्रायः ४०० हाथ की दूरी पर कोट नाम के एक नये ढङ्ग के बने मकान में १८४६ ईस्वी १४ सितम्बर को यहां एक बड़ा खून खराबा हुआ था। उस दिन नेपाल के अधिकांश रईसों के घराने प्रधान पुरुषों के मारे जाने से नायक हीन हो गये। उसी दिन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैपाल के सुप्रसिद्ध मंत्री जङ्गबहादुर के गौरव का प्रारंभ हुआ। इस स्थान के देखने से आज भी उस भीषण घटना को याद कर रोंघटे खड़े हो जाते हैं। काटमांडू के चारो ओर दुर्भेद्य आकार की उन्नत पर्वत श्रेणी जिस के दिगन्त प्रसारी हिमानी मण्डित शिखर समूह और उनके प्रान्त भाग में सुनील नभोमण्डल तथा श्यामल पुष्पितवृक्ष और लता मन को हरे लेती हैं। हिमालय के एक २ स्थल में प्रकृति देवी ने प्राकृतिक सौन्दर्य को मानो कुरे सा दिया है। नैपाल राज्य का खयाल कर हमलोगों की गरदन ऊंची होती है और क्षण भर के लिये गुलामी का भाव अन्तर्लीन हो जाता है। हिन्दुओं की पुरानी रीति नीति का यह देश आदर्श हो रहा है। सुनते हैं व्यभिचार और चोरी दो बुराइयां जैसी यहां कम हैं ऐसा कहीं न होंगी। विलाइती वस्तुओं का प्रचार यहां भी अधिकाई से पाया गया है। हमारे संशोधकों को उचित है कि वहां पहुंच महाराज तथा यहां की प्रजा को सुझावें कि इसके प्रचार को रोकें। लोग यहां के चतुर्थांश के लगभग बौद्ध होंगे, जो हिन्दू हैं वे विशेष कर शाक्त हैं। इस राज्य में पशुपति महादेव का ज्योतिर्लिङ्ग बड़ा पुराना तीर्थ है। खानिक द्रव्य इस राज्य में बहुत हैं और उस से राज को बड़ी आमदनी होती है। उत्तम कस्तूरी का तो यह उत्पत्ति स्थान है। बड़ी इलाइची भोज पत्र दालचीनी आदि बहुत तरह के गरम मसाले भी यहां कसरत से पैदा होते हैं। भाषा यहां की बङ्ग भाषा से कुछ २ मिलती है। संस्कृत का प्रचार यहां अधिक है और राज काज सब पुराने धर्मशास्त्र के अनुसार किया जाता है। अस्पृश्य अन्त्यज जाति वाले बहुधा नगर के बाहर बसाये जाते हैं। अङ्गरेज़ी शिक्षा का प्रचार फैलता जाता है हमें सन्देह है कि नई सभ्यता का विष यहां भी कहां तक न फैलेगा और पुरानी रीति-नीति को धक्का पहुंचावेगा। जङ्गबहादुर यहां बड़ा वीर पुरुष पैदा हुआ और राज्य का उत्तम प्रबन्ध कर नैपाल राज्य को बहुत लाभ पहुंचाया ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौअजान एक सुजान॥

यह एक प्रवन्धकल्पना है जिसे हिन्दीप्रदीप की पिछली जिल्दों से संग्रहीत कर हमने अलग छपवाया है - इस में ऐयारी और तिलिस्म इत्यादि कुछ नहीं है जिस से हिन्दी में उपन्यास बदनाम हो रहे हैं। सुयोग्य पढ़ने वाले ऐसे उपन्यासों से घिन करते हैं और ऐसी पुस्तकों को हाथ से नहीं छुआ चाहते इसी से मैंने निरी उपदेशात्मक कल्पना में इसे बांधा है। विशेष इस का रस केवल पढ़ने ही से मिल सक्ता है। मूल्य ॥) अधिक है इस की शिकायत बहुधा लोग करेंगे किन्तु जिन्हे मेरा लेख पढ़ने का रस है उन्हें यह मूल्य कभी न अखरैगा। प्रदीप के समान मुझ में पढ़ने वाले दूसरे लोगों से कोई आशा नहीं कि उनसे मुझे सहारा पहुंचै न केवल खबर पढ़ने वालों पर मेरा लक्षय है कि उन्हें यह रुचैगा। इस में यदि हम कृतकार्य हुये और इस की छपाई का खर्च निकल आया तो ऐसे ही बहुत से लेख प्रदीप की पिछली जिल्दों में निकल चुके हैं क्रमशः उन सबों को पृथक् मुद्रित करा देने का यत्न करैंगे॥

--०--

पुस्तकों की जांच।

याकूती तख्ती या यमजसहोदरा॥

श्री किशोरीलाल गोस्वामी ने अपनी उपन्यास मासिक पुस्तक में बङ्गला उपन्यास हमीदा का छायानुबाद कर छापा है। इस के सम्बन्ध में केवल इतनाही कहेंगे कि इस समय इसे पढ़ लोग स्वदेशानुराग और स्वधर्मानुराग क्या वस्तु हैं सो जानै। इस पुस्तक के पढ़ने से मालूम हो जाता है कि एक जङ्गली अफरीदी जाति में कितना अधिक स्वदेशानुराग तथा स्वधर्मानुराग है। यहां सभ्यता का दम्भरने वालों में भी जो दुर्लभ है। गोस्वामी जी से हमारा यही अनुरोध है कि ऐसा ही एक उपन्यास आज कल की पालिटिक्स पर लिख लोगों के नेत्र खोलैं तो बहुत अच्छा हो मूल्य।=) है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्तचर ।

उक्त गोस्वामी जी ने छोटे साइज़ के ३२ पृष्ठ में इसे छापवना आरंभ किया है। यह जासूसी ढङ्ग का एक उपन्यास है पहिले नम्बर में "ज़िन्दे की लाश" है प्रति कापी का दाम =)॥ और साल भर के १२ नम्बरों का दाम मैं पोस्टेज १॥=) है। किन्तु जो उपन्यास मासिक पुस्तक के ग्राहक होंगे उन से मैं डाक व्यय केवल १) लिया जायगा॥

——:o:——

मंजरी ।

यह उपन्यास एस. एल. आर्य ऐन्ड को से मिल सक्ता है। इस उपन्यास के किस्से में चाहो जो हो हर एक पेज के फुट नोट में कम्पनी ने टका कमाने की हिकमत बहुत अच्छी निकाली है। अपने कारखाने की सूची और विज्ञापन खास कर दवाइयों का दै भरपूर लाभ उठाने की संभावना कंपनी को है। स्वार्थ कैसे साधना होता है यह पुस्तक इसका उदाहरण है। जो स्वदेश प्रेमी हैं और जिन को स्वदेशी आतशक या उपदंश मंगाना हो वह इस कंपनी से मंगा सक्ते हैं। दवाइयों का विज्ञापन महा भद्दे अश्लील शब्दों में दिया गया है॥

————

जापानीय स्त्री शिक्षा ।

महेन्दु लाल गर्ग रचित। जो देश आज दिन अपनी असीम उन्नति को पहुंचा हुआ है वहां की सबी बात सीखने लायक है। जापान में स्त्री शिक्षा किस तरह की है स्त्रियां वहां की विद्या में कहां तक उन्नति किये हैं इस पुस्तक के अवलोकन से विदित हो जाता है। स्त्री मात्र इसे आद्योपान्त पढ़ उचित शिक्षा प्राप्त कर अपने को सुधारैं। मिलने का पता पं० महेन्दु लाल गर्ग सुख संचारक कंपनी मथुरा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आल्हा रामायण ॥

उत्तर कांड की कथा के आधार पर आल्हा छन्दों में यह पुस्तक लिखी गई है रचयिता इसके हज़ारीबाग ज़िलह में जोरी ग्राम के रहने वाले पं० वीरेश्वर उपाध्याय हैं मूल्य ।=)

मन तरंग रामायण ॥

बाबूलाल प्रयागवाल रचित । हमें विशेष हर्ष इस का है कि तीर्थ की पंडे जो निरक्षर होते आये उन में भी विद्या की चर्चा का फैलना देश की भावी भलाई का सूचक है। ग्रन्थ कर्त्ता ने इस पुस्तक को अपना बहुत सा व्यय कर मुफ़्त में बांटा इस लिये विशेष धन्यबाद है ॥

गणेश गंज आर्य समाज लखनऊ का इतिहास । जब से वहां समाज स्थापित हुई तब से आज तक का पूरा २ इतिहास समाज का इस में है-आर्य समाज कहां तक तरक्की पर है सो इस से स्पष्ट है ॥

दो शोक सम्बाद ॥

गत दो मनहूस महीनों में हमारी समाज के दो प्रसिद्ध बड़े आदमियों का हम लोगों के बीच से उठ जाना हमारे लिये बड़ा हानिकारक हुआ । काशी से पं० राम मिश्र शास्त्री और प्रयाग से बरावांधिपति राय महाबीर प्रसाद नारायण सिंह बहादुर । ये दोनों रामानुज सम्प्रादाय के खंब थे। बहुधा देशहित के कामों में अग्रणी हो जाते थे । मिश्र जी अपने पांडित्य से और बरावांधिपति धन से सहायता यथा शक्ति करते थे। शास्त्री जी ऐसे स्पष्टवक्ता थे कि वक्तृता के समय जोश में आय जो स्वष्ट होता था उसी को कह डालते थे इसी से काशी के और पंडितों से इनकी खटपट रहती थी। ऐसा ही बरावंधिपति भी वैष्णव सिद्धान्त में अटल थे इस नई सभ्यता के ज़माने में सनातन क्रम के बड़े पोषक थे । वय इन दोनों का ६० के लगभग का था हमें इन दोनो के उठजाने का सोच है ईश्वर परलोक में इन की आत्मा को सुख दे ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचरज भरी खूबियां ॥

हिन्दुस्तान तो इन दिनों अचरज भरी न जानिये कितनी खूबियों का नमूना बन रहा है जिस की पूरी लिस्ट देना पाठकों का समय नष्ट करना है इस लिये जो खास २ खूबियां हैं उन्हें गिनाते हैं॥

पहिली खूबी धर्म सम्बन्ध में। जो जितना ही अधिक माला खटकाने वाला होगा वह उतना ही पल्ले दरजे की मक्कारी और और दंभ में धुरन्धर होगा। ऐसे लोग जब नरकपुर के पाहुना होंगे तो इन का इनसाफ करने में धर्म राज की भी अकिल चक्कर में आ जायगी॥

पुरानी रिवाजों में बाल्य विवाह एक खूबी है। इस के जारी रहने से देश में क्या २ बुराइयां बरपा हुईं और हिन्दू की कौम कहां तक गिर गई हज़ार समझाओ पुराने खयाल वालों के मन में एक नहीं धंसती॥

पुराने क्रम की अनेक अनेक खूबियों में दान देने की बड़ी खूबी है जितना दान हिन्दू धर्म में दिया जाता है उतना किसी धर्म में नहीं। पर वह सब का सब व्यर्थ जाता है उससे कोई ऐसा लाभ नहीं होता कि देश का कोई चिरस्थायी उपकार हो। जिन्हें बड़े २ दान दिये जाते हैं वे उस दान को बहुधा ऐसे कुकार्य में लगाते हैं जो मानो दान देने वालों को घोर नरक में गेरने की सूचना या इश्तिहार है।

यहां की प्रजा में राजभक्ति आदि अनेक प्रकार की बड़ी २ खूबियों में एक सहन शीलता भी है। गवर्नमेंट जो इन के साथ प्रतिद्वन्दी का सा वर्ताव कर रही है इस का कुछ खयाल न कर अनेक कष्ट और दुःख सहते हुये एक जून आधेपेट खाकर रह जाते हैं पर सब बरदाश्त करते जाते हैं जोश और सर गरमी किसे कहते हैं सो जानते ही नहीं। दूसरी बड़ी खूबी अनैक्य और स्वार्थ है। जितने लोग सब अलग २ हर तरह पर डेढ़ चावल की खिचरी पका रहे हैं एक दूसर के साथ सहमत कभी हों ही गे नहीं केवल अपना मतलब गंठै इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे सब कुछ बिगड़ देश छार में मिल गया कोई परवाह नहीं अपना स्वार्थ न बिगड़ने पावे इसकी ओर से नहीं चूकते ॥

नये २ मत और संप्रदायों में सन्तमत भी बड़ी ही खूबी का है जहां विषम भाव का ओर छोर है। जन समूह के साथ प्रेम और हमदरदी का क्या उसूल है राधा स्वामी ने अपने चेलों को बताया ही नहीं। हकीर से हकीर राधा स्वामी के मत का हो और कष्ठ में पड़ा हो उसको उस कष्ट से उद्धार करने को ये लोग जान तक दे डालेंगे पर और कोई चाहो कैसा ही लोकोपकारी मनुष्य वह हो और सर्व साधारण का उस से बड़ा भला होता हो उसे कष्ठित देख कान पूछ न हिलाय उसकी उपेक्षा कर देंगे। प्लेग के उपद्रव में कई बार ऐसा देखा गया है। दूसरे यह कि हम को इस समय ऐसेही एक धर्म की पैरबी करना उचित है जिस के चलने से गिरी दशा में पड़े भारत का उद्धार हो और लोगों में मुल्की जोश पैदा हो पर देखते हैं तो झुण्ड के झुण्ड लोग इस मत में टूटे पड़ते हैं जिन की एक रेजिमेंट तैयार हो सकती है। अफ़सोस भारत के ऐसे गिरे दिन में इस लोक के बनने की उपेक्षा कर परलोक बनाने की लोगों को सूझी है॥

जितनी खूबियां सबों की क़िबलेगाह हिन्द में इस समय फेशन परस्ती की धूम और यहां की हर एक बातों में धींग धीगा है। जहां और जिस में विलाइत और अङ्गरेज़ीयत की गन्ध भी आ गई वह सब भांत कदर के लायक जहां उसका अभाव है वह विहिश्त और वैकुण्ठ से भी चाहो अपना लगाव रखता हो किसी को पसन्द न होगा। स्वदेशी वस्तु के प्रचारक कितनाही सिर पीटते हैं कि हमलोगों में देश की बनी चीज़ों का प्रचार हो पर फेशन परस्तों के मन में उनका कहना किसी भांत नहीं धंसता। ऐसा ही हमारी सामाजिक तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकीय बातों का अस्तव्यस्त होना हमलोगों के दिल की कमज़ोरी का इश्तिहार है। हमारे में दृढ़ता होती तो अङ्गरेज़ कर्मचारी गण बहुधा जैसा चाहते वैहा धींग धींगा कभी न करने पाते। पूर्वी बङ्गाल के नये लाट फुलर बहादुर में अब वैसा धींग धींगा मचाने की हिम्मत बाकी न रही सो इसी लिये कि वहां के लोगों में उतनी दिल की कमज़ोरी नहीं है॥

अन्त में पायोनियर के समझ की एक खूबी अपने पाठकों को सुनाय इस लेख को समाप्त करते हैं। फुलर साहब के नये सरक्युलर पर पायोनियर लिखता है In actual administrative capacity the Mahame'an is generallay speaking a better man than his Hindu rival "वास्तविक शासन योग्यता मुसल्मानो में अपने हिन्दू प्रतिद्वन्दियों से बहुत अधिक है इस लिये मुसल्मानों को सर्कारी नौकरी पहले मिलनी चाहिये"—ठीक है मुसल्मान जैसा खुशामद करना जानते हैं हिन्दूओं में उस का माद्दा कहां। मुसन्मानों में हुकूमत करने का जोश भी थोड़ा बहुत बना है हिन्दुओं में बिल्कुल बुझ गया है। मुसल्मान उत्कोचप्रिय भी बहुधा हिन्दुओं की अपेक्षा अधिक हैं। ज़ाहिरदार और धोखा देने का माद्दा भी हिन्दुओं में उतना नहीं है॥

—:o:—

बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन।

इस साबुन के मलते ही सुफेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं। एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफी है। मूल्य प्रति टिकिया १) रुपैया।

इस ने दुनियां के ख़िजाबों (कल्फों) की कदर घटा दी।

केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गेरेंटी ३ साल मुफ़ मिलेगी॥

मिलने का पताः—

मेनेजर हेअर डाई सोप कम्पनी—लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा—

Always get the Emulsion with this mark—the Fishman—the mark of the "Scott" process!

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट—लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

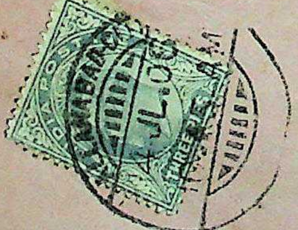

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २८ } प्रयाग { अगस्त
सं० ८ } { सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) —०*०— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ } प्रयाग { अगस्ट
सं० ८ } { सन् १९०६ ई०

हुकूमत और बनियई।

इस नई सभ्यता के ज़माने में जहां सबी बातें बदल कर और की और हो गईं और होती जाती हैं वहां शासन के क्रम में भी सभ्यता ने अपना फैलाव फैला रक्खा है। पहिले एक राजा समस्त देश का शासन करता था; हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में रख शुद्ध क्षात्र धर्म पर आरूढ़ रह प्रजा का पालन पोषन करता हुआ उन से कर उगाह उन के सुख और आराम की भरपूर फिकिर के बाद जो बचता था उसे अपने ख़ज़ाने में रखता था। वह क्रम विल्कुल गया अब एक जाति दूसरी जाति का शासन करती है और वह शासन बनियई के उसूल Commercial principle पर है। किन्तु इस क्रम के शासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जो जाति शासित होती है वह सब भांत नुकसान में रहती है। ईश्वरेच्छा कुछ ऐसी ही हुई कि भारत का शासन इस समय ऐसे लोगों के हाथ में आ गया है जो "आम के आम गुठलियों के दाम" इस कहावत पर अमल करने वाले हैं। ३१ करोड़ आदमियों के जान और माल की रक्षा या विनाश; उन की मौत या ज़िन्दगी की कुंजी जिन के हाथ में है। जिन का प्रसादोन्मुख एक बार का दृष्टि पात निष्किंचन महाकङ्गाल को सम्राट् कर देता है और क्रोधाध्मात जिन के कुटिल कराल भ्रू विक्षेप से बड़ा सम्राट् भी निष्किंचन हो जाता है। वणिक् वृत्ति जिन में स्वाभाविक है बल्कि यों कहें कि जिसे वे माके पेट से ले जन्मते हैं इसी से बनियों का सा संकुचित भाव बचपने ही से उन में भर जाता है। हमारे तो ये सर्वेश्वर हैं, जेता हैं; प्रभुवर हैं; पथ प्रदर्शक गुरू या उस्ताद हैं; सब्ज़बाग दिखलाने वाले हैं; क्या ताकत कि ज़बान पर उन की शान में कोई बात ला सकें किन्तु उन्हीं के समकक्ष और बराबरी का दावा रखने वाला नेपोलियन बोनापार्ट अपनी बीरता और क्षत्रियत्व के घमण्ड में आय इन्हें A nation of shop keepers दुकान रखने वालों की एक जाति कह गया है। मुसल्मान शासन कर्ता मुगल पठान जो ८ सौ वर्ष तक हमें अपने अधीन किये थे; इस में सन्देह नहीं उन्हों ने मन मानता नोच खसोट किया पर थे शुद्ध क्षत्री। पहले तो अपने बीरत्व के ज़ोस में कई बार काट मार कर कराय लूट पाट जो कुछ हाथ लगा ले लिवाय चल खड़े हुये किन्तु जब यहां बस गये यहां के असली बासिन्दों के साथ इन की खिल्त मिल्त हो गई और इसी भूमि को घर मान लिया तब यहां वालों के साथ उन का सब बर्ताव घरेलू हो गया। वे ऐयाश थे; विषयी तथा भोग लिप्सू थे, लंपट थे; कोई२ उन में ज़ालिम तअस्सुबी और कट्टर भी थे पर शुद्ध क्षत्रियों का गुण उन में अवश्य था। बनिये न थे कि तुच्छ सी तुच्छ बातों में अपनी बनियई आदत के ज़ाहिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में न चूकें। यह जुदी बात है कि यह समय दौड़धूप का है हर एक बात की वास्तविक उपयोगिता practical utility देखी जाती है नहीं तो कूड़ा करकट और जानवरों की हड्डी चमड़े तक बेंच शासनकर्ता पैसा वसूल कर लेते हैं। अपने कौल के अनुसार शासन के अधिकारी तालीम की बरकत से हमारे नेत्र खोल दिये; सभ्यता सिखलाय जानवरों से हमें आदमी बना दिया; शेर और बकरी दोनों एक घाट पानी पिलाते हमारा इन्साफ़ करते हैं किन्तु अपनी स्वाभाविक वणिक् वृत्ति से नहीं चूकते। दावा तो इनका ऐसा भारी और बड़े बोल का है कि हम हिन्दुस्तान को सुधारने आये हैं; हिन्दुस्तान के लोगों को अपने स्वरूप का ज्ञान तथा अपने स्वत्व की पहिचान सिखाते हैं; जिस में ये अपना शासन अपने आप करने लग जांय। यहां का रुपया यहीं के फ़ाइदे में लगाते हैं। इस तरह के बड़ बोल से यही मालूम हुआ कि ये तो बड़े परोपकारी कोई ऋषिमुनि हैं, हमारे आर्य ऋषियों के दादागुरू हैं श्वेतद्वीप से यहां हमें कृतार्थ करने और संकट से उबारने आये हैं। कौन जानता था कि अन्त में यह सब वणिक् व्यापार निकलेगा और स्वार्थ से खाली कोई बात न होगी। शासन के अनेक जुदे २ बड़े २ महकमों में एक भी ऐसा न निकलेगा जिस में उस महकमे का ख़र्च बर्च दे देवाय अन्त में फाइदा न रहै। उस फाइदे के अलावे कि बड़े २ ओहदे जिन की तनखाह ५०० से अधिक हैं सब उन्ही में बटे हैं; हम इस योग्य होने पर भी कि उस पर नियत किये जांय बहुधा मुहताकते रह जाते हैं। पोस्ट आफ़िस आदि कई एक महकमें तो बड़े ही फाइदे के हैं। अदालतों को लीजिये इन्साफ ज़रूर होता है किन्तु स्टैम्प का खर्चा इतना अधिक बढ़ा दिया गया है और Litigation क़ानून की पेचीदगी इतनी होती जाती है कि इनसाफ चाहने वाले का चूर ढीला हो जाता है; मुकद्दमा लड़ने वाले दोनों फ़रीक दरिद्र हो जाते हैं; जो जीतता है वह भी हारे हुये के समान अन्त में ठहरता है। अच्छा किसी ने कहा है। "जो नहि मानो हमरी सीख। जावअदा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लत मांगो भीख" इस को इनसाफ कहेंगे? यह तो खासा रोज़गार है। एक स्टैंप की विक्री के फ़ाइदे से खर्चा सब निकल अन्त में फाइदा रहता होगा। एक दिन ऐसा आवेगा कि चेतते चेतते जब लोग चेतैंगे तो अदालतों से भी वैसाही घिनाने लगैंगे जैसा इस समय विलाइती चीज़ों से घिनाते हैं। एक शिक्षा विभाग अलबत्ता ऐसा है जिस में सर्कार को कोई फाइदा नहीं है और जो शुद्ध हिन्दुस्तान के फाइदे और तरक्की के लिये है। सो वही सब भांत खटक रहा है और रोज़ एक न एक हिन्दी की चिन्दी इस में ऐसी निकला करती हैं कि जिस में शिक्षा के भार से गला छूटै। सच पूछो तो शिक्षा विभाग में भी पास का नहीं लगता ज़मीदारों से स्कूल का ख़र्च उगाह लिया जाता है। फीस इतनी अधिक कर दी गई और होती जाती है कि पास का न जाता होगा। इस में मुनाफा नहीं है इस से इस की ओर अरुचि है।

भारत विदेशी शासन में है तब स्वदेशी शासन की सी भलाई की आशा ही करना भूल है। विदेशी शासन में भी राजाही सब कुछ हो सो नहीं बरन एक जाति दूसरी जाति का शासन कर रही है और वह भी बनियई को लिये हुये तब शासक और शासित में परस्पर की स्पर्द्धा और प्रतिद्वन्दिता अनिवार्य है। शासक जाति के साथ शासित जाति की प्रतिस्पर्द्धा भी कहना भूल है इस लिये कि वहां क्षात्रधर्म और वैश्य कर्म हुकूमत और बनियाई भर पूर है यहां दोनों में एक भी नहीं केवल सेवकाई। न जानिये कब से जिन की नर्स २ में गुलामी और दास्य भाव पैठा हुआ है तब जो निरा सेवक है वह किस मुह से ज़र्रारी तर्रारी के रोब को अपने में ला सक्ता है और हुकूमत कर सक्ता है। अथवा व्यापार कुशल बड़ा सेठवन बनिज व्यौपार की काट छांट समझ सक्ता है। उस समय का ओर छोर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह शासित जाति जब से सेवा वृत्ति करते २ कर्म से सर्वथा शूद्र हो गई किन्तु इन के परिस्कृत मस्तिष्क की शक्ति का ह्रास न हुआ कर्मणा शूद्र होकर भी दिमागी ताकत में किसी सभ्य जाति से हेठें न रह दुष्प्राप्य वस्तु के लिये भी हाथ लपकाते हैं "प्रांशुलभ्ये फले मोहादुद्बाहुरिव वामनः"

अस्तु इस में सन्देह नहीं हमारे वर्त्तमान शासनर्ता और उन की शासन प्रणाली सराहने योग्य है यदि बनियाई का यह निकृष्ट भाव उस में से अलग कर लिया जाता तो जैसा उदार शासन वृटिश जाति का और गवर्नमेंट इङ्गलीशिया का है शायद वैसा इस भू मण्डल पर दूसरा न निकलता। किन्तु योरोप के कई सभ्य देशों का यह क्रम कि राजा को वैसा पूरा अधिकार राजकाज का नहीं रहता जैसा Absolute monarch सर्वतो मुखी प्रभुता रखने वाले नृप को होना चाहिये। एक रशिया को छोड़ बाकी छोटी या बड़ी रियासतें वहां बहुधा इसी क्रम की हैं जिस में प्रजा को राजकाज में अनेक तरह का स्वत्व प्राप्त है। इस दशा में शासित जाति पर उस देश की प्रजा को शासन का बहुत सा अधिकार हुआ ही चाहे उसी में अपने देश के बनिज व्यापार की तरक्की भी है और उन के लिये जो तरक्की है वह हमारे लिये तवज्जुली का बाइस है। हम नहीं चाहते कि विलाइत का पैसा हमारे लिये खर्च किया जाय वरन हमारे देश का धन हमारे ही फाइदे में उठाया जाय। बड़े २ अधिकार विलाइत के लोगों को न दे हमी को दिये जांय तब अलबत्ता कहा जायगा कि बनियाई नहीं है। इङ्गलैंड का छोटा सा टापू जहां की पृथ्वी भी शीत प्रधान देश होने से विलकुल उपजाऊ नहीं है वरन अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर पर्वत स्थली है सो इस समय सोने के फूलों से फूल रहा है, समग्र भारत की सम्पत्ति सिमिट २ वहां इकट्ठी होती जाती है प्रफुल्ल अरविन्दानना महा लक्ष्मी ईषत् हास्य युक्त कटाक्ष पात से एक अनोखा प्रलोभन दिलाती हुई इस जङ्गम जगत् में कौन ऐसा होगा जिस का मन उस ओर न खिंच जाय। यह सब उसी का फल है कि भारत का शासन इस के अधिकार में है। पर इस बात को भूल जाना मन में कभी इसका खयाल न होना यह उसी बनियई आदत वणिक् व्यापार और २ संकुचित भाव का परिणाम है। नहीं तो शुद्ध क्षात्र धर्म केवल हुकूमत में इंगलैण्ड की इतनी श्री वृद्धि असम्भव थी। अस्तु इस वणिक् व्यापार में थोड़ा उदार भाव रहता तो हमारी इतनी हानि न होती लाचारी है॥

--०--

वायु।

जगदीश जगदाधार ५ तत्वों में वायु जो सबों में प्रधान है हमारे शरीर में सन्निवेशित कर हमे प्राणवान् किये हैं। वायु पांचोतत्वों में प्रधान है इस के प्रमाण में तैत्तरीय उपनिषद् की यह श्रुति है।

"तस्मादेतस्मादात्मनः आकाशः सम्भूत आकशा-
द्वायुर्वायोरग्निरग्नेराप अद्भ्यः पृथिवी।"

"उस परमात्मा की सत्ता से पहले आकाश हुआ आकाश से वायु वायु से अग्नि अग्नि से जल जल से पृथिवी हुई। अग्नि वायु जल इन तीनों में वायु सबों में प्रधान है। शरीर के एक २ अवयव हाथ पांव नाक कान आंख इत्यादि में किसी एक के न रहने से भी हम जी सक्ते हैं। पर शरीर में वायु न रहे तो न जियेंगे। हमारे हाथ पांव रस और मांस तथा मेदा के बने हैं। विशेष कर जल और पृथिवी इन्ही दो तत्वों से इन का निर्माण है न भी हों तो मनुष्य लूला और लङ्गड़ा हो जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सक्ता है। ऐसा ही हमारे दोनो नेत्र तैजस सदार्थ हैं नभी हों तो हम अन्धे हो जीते रहेंगे किन्तु एक मिमिट भी मुह और नाक बन्द कर वायु का गमनागमन बन्द कर दिया जाय तो तत्क्षण हम मूर्छित हो जांयगे। प्राणी मात्र के लिये वायु तो जीवन हई है वरन उद्भिज्ज पेड़ पालव भी हवा न लगने से हरे भरे नहीं रह सक्ते। वायु क्या पदार्थ है उसे हम नेत्र से नहीं देख सक्ते किन्तु विचित्र शक्ति अद्भुत कल्पना शाली सर्वेश्वर उस के ज्ञान के लिये त्वगन्द्री हमे दी है और किसी दूसरी इन्द्री से वायु को हम प्रत्यक्ष नहीं कर सक्ते। नैयायिकों के मत केअनुसार शब्द और स्पर्श यह दो इस के विषय हैं। दार्शनिकों ने शब्द गुण आकाश माना है। मछली आदि जल चर जन्तु जिस तरह अनन्त अगाध समुद्र में रहते हैं वैसाही हम विपुल वसुन्धरा के ऊपर इसी विशाल वायु सागर में रहते हैं। मृदुमन्द गामी समीरन वृक्षों के पत्तों को कंपाते थके मान्दे मनुष्य को शीतल और पुलकित गात्र करता हुआ चलता है तब हम उस की गति का अनुमान करते हैं किन्तु प्रत्यक्ष नहीं कर सक्ते कि वायु क्या पदार्थ है। जब यह घोर गम्भीर गर्जन से दिङ्मण्डल को पूरित करते अपने प्रवल आघात से ऊंचे २ पेड़ों को उखाड़ डालता है उस समय हम वायु के केवल अस्तित्व मात्र से नहीं वरन इस की असाधारण शक्ति से परिचित होते हैं। संस्कृत दर्शनकार शब्द गुण आकाश मान गये हैं किन्तु यूरोप के विज्ञान वेत्ताओं ने परीक्षा द्वारा प्रमाणित कर दिया है कि शब्द आकाश का गुण नहीं है किन्तु शब्द भी वायु का गुण है। एक बोतल जिस की हवा वायु निष्काशन यन्त्र द्वारा निकाल ली गई हो उस में कंकड़ भर हिलाओ तो शब्द न होगा। इस से यह बात स्पष्ट है कि बोतल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भीतर आकाश के होते भी जो शब्द नहीं होता तो शब्द वायु का गुण है ॥

केवल इतनाही नहीं कि वायु जगत् का प्राण प्रद है अमर मे "जगत्प्राण समीरणः" ऐसा वायु का नाम लिखा है अपिच इस में और अनेक गुण हैं। यह आर्द्र को सूखा कर देता है उत्तम गन्धि बहन कर प्राण इन्द्री को तृप्त करता है "सुरभिर्घ्राणतर्पणः" यह सुगन्धि का नाम वायु ही के कारण पड़ा है। इस भूपृष्ठ पर ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां वायु न हो अतल स्पर्श सागर अन्धकार पूरित शून्य गुफा अत्युच्च पर्वत शृङ्ग सब ठौर इस का अस्तित्व है। भूपृष्ठ से ४० मील ऊपर तक वायु का संचार अच्छी तरह अनुभव किया गया है। ज्यों २ ऊंचे स्थान में जाइये त्यों २ वायु पतला होता जायगा यहां तक कि बहुत ऊंचे स्थान में जैसा हिमालय के अत्युच्च शिखर पर इतनी कम हवा है कि हम वहां श्वास नहीं ले सक्के। सूर्य सिद्धान्त में लिखा है समस्त राशि चक्र प्रवह वायु द्वारा आकृष्ठ हो अपनी २ कक्षा में निरन्तर भ्रमण करता है। उसी राशि चक्र में बंधे हुये सूर्यादिग्रह अपनी २ नियमित कक्षा पर नियमित चाल से चला करते हैं। "भूचक्रं ध्रुवयोर्नद्ध माक्षिप्तं प्रवहानिलैः पर्यात्यजस्रं तन्नद्धाग्रहकक्षा यथा क्रमः" सिद्धान्त शिरोमणि में लिखा है पृथिवी के बाहर १२ योजन तक जो वायु है उसी में मेघ और बिद्युत रहते हैं ऊपरान्त प्रवह नाम का वायु है और उसकी गति सदा पश्चिमाभिमुख रहती है उसी में ग्रह और नक्षत्र सब हैं। वामन पुराण में सात प्रकार का वायु लिखा है वही मरूत् के गण हैं। जिन के नाम ये हैं प्रवह, निवह, उद्वह, संवह, बिवह, प्रवह, परिवह। इन्द्र ने इन सातों वायु का आकाश में पथ विभाग निश्चित कर दिया है। पुराण में वेही मरूत् के गण कहे गये हैं। ये मरूद्गण क्या हैं सो फिर कभी लिखैंगे ॥

---:०:---

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त-समागम।

ठाकुर सूर्य कुमार वर्मा रचित

कबीर दास॥

सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरैं सौ वार।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार के एकै धका दरार॥

संसार में सब चीज़ें सुलभ हैं, परन्तु सज्जन, साधु महात्मा लोगों का दर्शन बहुत ही दुर्लभ है कारण इस का यह है कि बहुधा लोग पाखंडियों के जाल में फस कर असली सज्जन साधुओं पर भी बिश्वास नहीं करते। जब मनुष्य किसी से ठगा जाता है, तब उस का उस पर विश्वास कम हो जाता है। इसी लिये वर्तमान समय में साधुओं की निन्दा सुनने में आती है। यदि सौ साधुओं में कोई एक सज्जन निकल आया तो उस पर भी लोग विश्वास नहीं लाते। इसी से कहना पड़ता है कि साधुओं का दर्शन आज कल बहुत दुर्लभ है। खाली गेरुआ वस्त्र पहरने से मनुष्य में साधुता नहीं आती। साधुता का लक्षण एक पण्डित ने इस प्रकार किया है:--

उपकारिषुयस्साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः
अपकारिषुयस्साधुः ससाधुः सद्भिरुच्यते।

मतलब यह है कि जो अपकार के बदले में उपकार करे वही सच्चा साधू है। तब इस में कोई सन्देह नहीं है कि अपकार के बदले में उपकार करने की सद्बुद्धि विना ईश्वरीय कृपा के प्राप्त नहीं हो सकती, इस कार्य के लिये ईश्वर कृपा की अधिक ज़रूरत है। खाली निज पराक्रम से मनुष्य इस कार्य को साधन नहीं कर सकता। क्योंकि जो काम राजा की बड़ी सैना; लाखों मनुष्य मिल कर नहीं कर सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह काम साधु की वाणी द्वारा सहज में पूरा होता है। इसी से कहते हैं कि राजा लोग अपना प्रभुत्व, अधिकार मनुष्य के केवल शरीर पर कर सकता है; परन्तु महात्मा लोग मनुष्य के मन पर अपना अधिकार जमा लेते हैं। और यही कारण है कि राजा की अपेक्षा साधु का मान संसार में अधिक है। जब कभी किसी साधु ने चाहा तब उसने अपने विचारों से राजाओं के राज्य को उलट पलट दिया। संसार की काया पलट कर दी। भारतवर्ष में तो इस की सैकड़ों मिसालें मौजूद हैं; परन्तु यूरप भी इन मिसालों से खाली नहीं है। लूथर की जीवनी इस का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अतएव आज हम लाखों मनुष्यों के हृदय पर अधिकार करने वाले महात्मा कबीर का जीवन चरित संक्षेप से नीचे देते हैं॥

कबीर जी के माता पिता का ठीक ठीक पता नहीं चलता। किसी किसी का कथन है कि काशी में नूरअली नाम का एक जुलाहा रहता था; उस की स्त्री का नाम नीमा था। उसी के पेट से कबीर का जन्म हुआ। और कोई लोग यह कहते हैं कि नूरअली गङ्गा के किनारे सूत धो रहा था; वहां पर उसे एक बालक बहता हुआ आता दिखाई दिया; उसने उसे गङ्गा से निकला; और जीता हुआ बालक देख उसे अपने घर लाया। उस की स्त्री के निज सन्तान न होने के कारण उसने बालक को पाल पोष बड़ा किया। इसी प्रकार और भी कई एक आख्यायिकायें हैं। कबीर का जन्म सन् ११४८ के लगभग हुआ ऐसा अनुमान किया जाता है। उसी समय भारत में हिन्दुओं की स्वतंत्रता का सूर्य पश्चिम में अस्त हो रहा था भारतवर्ष के अग्नि वंशीय अन्तिम राजा की स्वतंत्रता की अग्नि उस समय पर बुझ रही थी और मुसल्मानों के भाग्य का उदय हो रहा था॥

उस समय भारत में बहुत ही कम मुसल्मान रहते थे। ख़ास कर काशी शहर में उस समय ज्यादातर हिन्दुओं की बस्ती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतएव बालक कबीर, हिन्दू बालकों के साथ ही खेला कूदा करते थे। इसी कारण हिन्दुओं की रीति रिवाज और उन के देवताओं के नाम से कबीर को बहुत कुछ परिचय हो गया था। राम कृष्ण शिव का नाम वे सहज ही में जान गये थे। उनका मन लड़कपन से ही भक्ति पक्ष की ओर था उन्हें किसी मत मतान्तर की अधिक परवाह न थी। परन्तु यह बात उन के पालन कर्ता नूरअली व मुसलमानों को नहीं भाती थी। अतएव वे लोग उनसे घृणा करने लगे। परन्तु जब घृणा करने से भी उनका मन भक्ति की ओर से वे लोग न फेर सके तब उन लोगों ने कबीर को दुःख देना आरम्भ किया। वे लोग नाना प्रकार के उन्हें कष्ट पहुंचाने लगे। अन्त में यहां तक नौबत पहुंची कि स्वयम् नूरअली उसका बध करने को तय्यार हुआ जब कबीर ने यह दशा देखी, तब वे विरक्त होकर, घर से निकल गये और कौन धर्म या मत सच्चा है इस की वे खोज करने लगे। उन्हों ने मुसलमान क़ाज़ी, मौलवियों और हिन्दू पण्डित पुजारियों से इस मामले में खूब बहस की। परन्तु उनका किसी से समाधान न हुआ। चित्त की अशान्ति से वे व्याकुल रहने लगे। अन्त में वे स्वामी रामानन्द के पास गये। इनका उनका खूब बादा बिबाद हुआ। रामानन्द स्वामी रामानुज के अनुयायी थे। ये बहुत बड़े विद्वान दार्शनिक पण्डित थे। इनकी बातों से कबीर जी को कुछ समाधान हुआ। रामानन्द का उपदेश इन्हे ग्राह्य हुआ। अतगव कबीर ने इन्हे अपना गुरू बनाया। परन्तु तौ भी ये किसी एक धर्म के अनुयायी न हुए। हिंदू मुसलमान दोनों की वे निन्दा करते थे। कबीर जी ने जो उनके मत में बात सच जंची उसे साफ़ साफ़ कह दिया। उन्हो ने हिन्दू मुसलमान दोनो में दोष देख यह कहाः—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सन्तो देखत जग बौराना ।
सांच कहों तो मारन धावैं झूठे जग पतियाना ।
नेमी देखे, धर्मी देखे प्रात करहिं असनाना ।
आतम मारि पाषाणहि पूजैं, उन में कछू न ज्ञाना ।
बहुतक देखें पीर औलिया, पढ़ैं किताब कुराना ।
कर मुरीद तदबीर बतावैं, उन में उन्हे जो ज्ञाना ।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना ।
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना ।
माला पहिरे टोपी दीन्हे, छाप तिलक अनुमाना ।
साखी शब्दे गावत भूले, आतम ख़बर न जाना ।
हिन्दू कहैं मोंहि राम पियारा, तुरक कहैं रहिमाना ।
आपुस में दोउ लरि लरि मूये । मर्म न काहू जाना ।
घर घर मंत्र जे देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना ।
गुरुवा सहित शिष्य सब बूड़े, अन्त काल पछिताना ।
कहैं कबीर सुनो भाई सन्तो ई सब भर्म भुलाना ।
केतिक कहों कहा नहि माने, आपहि आप समाना ।

इस पद में कबीर जी ने यहां तक कह दिया है कि जो लोग साखी शब्द गाते फिरते हैं और आत्मा को नहीं पहचानते उस से भी कुछ लाभ नहीं । इस से यह भी अनुमान होता है उन्हीं के ज़माने में लोग उनकी बताई साखी और शब्दों की क़दर करने लगे थे । बिना आत्मा को चीनहे ही लोग साखी और शब्दों द्वारा लाभ उठाना चाहते थे । उनके इस काम की बाबत उन्हे निषेध किया है ॥

कबीर हिन्दू मुसल्मान दोनों के मत की निन्दा करते हैं जब यह ख़बर बादशाह को पहुंची वब बादशाह ने उनको बुला कर इस बाबत पूछा कि क्या कारण है जो आप दोनो धर्म वालों की निन्दा करते हैं! आप का क्या धर्म है ? इस पर कबीर ने कहा:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाई रे! दुइ जगदीश कहां ते आए कहु कौने भरमाया।
अल्ला राम करीम केशव हरि हजरत नाम धराया।
गहना एक कनक ते गहना तामें भाव न दूजा।
कहत सुनत को दुई कर थापे यक निमाज यक पूजा।
वही महादेव वही मुहम्मद ब्रह्मा आदम कहिये।
कोइ हिन्दू कोइ तुरक कहावै एक ज़मी पर रहिये।
वेद किताब पढ़े वे कुतबा वे मौलाना वे पांड़े।
बिगत बिगत के नाम धरायो यक माटी के भांड़े।
कह कबीर वे दोनों भूले रामहि किनहुं न पाया।
वे खसिया वे गाय कटावें बादै जन्म गंमाया"॥

यह सुन कर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उन का चेला हो गया। सुनते हैं कि बादशाह के कोई ऐसी बीमारी थी जो बहुत कुछ दवा दारू करने पर भी नहीं जाती थी। परन्तु वह बीमारी केवल, कबीर के आशीर्बाद से जाती रही।

कबीर के बहुत से शिष्य हुए। उन सबों में धर्मदास मुख्य था। इसी ने कबीर पंथी मत स्थापन किया! कबीर साहब एक ईश्वर बादी थे। उन्हों ने जो जो शब्द अपने मुंह से निकाले, उनको, बिलकुल सच्चा सिद्धांतवत् मान कर उनके शिष्य लोग उन पर अमल करते थे। उन शब्द साखी इत्यादि कविता में प्रसाद गुण अधिक है। उन्हों ने रमैनी शब्द, कहरा, वसंत, चौतीसी, विप्र मतीसी, चाचरि, हिंडोला, बेलि और साखी इत्यादि बहुत सी पुस्तकें बनाई हैं; जो सब मिल कर "कबीर दास का बीजक" कहलाती हैं। सुनते हैं कि कबीर ने ३२००० दोहे और १४००००० शब्द बनाये थे परन्तु अब उनके इतने दोहों अथवा शब्दों का पता नहीं लगता।

कबीर साहब ने अपनी पुस्तकों में सब बातें अनुभव सिद्ध लिखी हैं वे अपने विश्वास के पड़े पक्के थे। सच कहने में वे कभी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डरते थे। परन्तु बादा-विबाद उनको पसन्द न था उन्हों ने एक स्थान पर अपनी पुस्तक रमैनी में लिखा है:—

"बोलाना कासों बोलिये भाई। बोलत ही सब उम्र नसाई।
बोलत बोलत बाढ़ विकारा। सो बोलिय जो परे विचारा॥
पंडित सों बोलिय हितकारी। मूरख सों रहिए झख मारी।
कह कबीर ई अध घट बोले। पूरा होय विचार लै बोले।

मालूम होता है कि कबीर अवतार-बाद के भी पक्षपाती न थे, अर्थात् वे ईश्वर का अवतार लेकर संसार का उनके द्वारा उद्धार होना नहीं मानते थे; उन्हो ने इस बारे में भी कहा है:—

सन्तो आवे जाय सो माया।
है प्रतिपाल काल नहि वाके ना कहुं गया न आया।
क्या मक़सूद मच्छ कच्छ होता शङ्खासुर न संहारा।
अहै दयाल द्रोह नहि वाके कहहु कौन को मारा।
वे कर्ता नव राह कहावें धरणि धरें नहि भारा।
ये सब काम साहब के नाहीं झूंठ कहै संसारा।
खम्भ फारि जो बाहर होई।ताहि पतिज सब कोई।
हिरणा कुश नख उदर विदारे; सो नहि कर्ता होई।
बामन होय न बलि को यांचे। जो यांचे सो माया।
बिना बिवेक सकल जगजड़ है, माया जग भरमाया।
परशु राम क्षत्री नहिं मारा, ई छल माया कीन्हा।
सत् गुरु भक्ति भेद नहिं जाने। जीव अमिथ्या दीन्हा।
सिरजन हार न व्याही सीता। जल पषाण नही बंधा।
वे रघुनाथ एक के सुमिरे। जो सुमिरे सो अंधा।
गोपी ग्वाल गोकुल नहि आये। करते कंस न मारा।
है मेहरबान सबन को साहब। नहिजीता नहि हारा।
वे कर्ता नहि बौद्ध कहावैं। नहीं असुर को मारा।
ज्ञान हीन कर्ता सब भरमें। माया जग संहारा।
वे कर्ता नहि भए कलंकी। नहीं कलिंगहि मारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये छल बल सब माया कीन्हा । पतित सतित सबद्वारा।
दश अवतार ईश्वरी माया । कर्ता कै जिन पूजा ।
कहैं कबीर सुनो भई संतो । उपजै खपै सो दूजा ।

उन के इस शब्द से साफ़ मालूम पड़ता है कि उन को हिन्दू के अवतारों पर बिलकुल विश्वास न था। उन का मत ऐसा मालूम होता है कि जो वस्तु उत्पन्न हुई वह नाशवान् ज़रूर है और जिस का नाश हो; वह ईश्वर नहीं। ईश्वर विकार रहित है; उस में माया का लेश नहीं। माया का लेश होने से वह ईश्वर नहीं रह सकता; जो जन्म मरण के दुःख को भोगता है; वह ईश्वर नहीं, उस से भिन्न कोई दूसरा ही है ॥

हम ऊपर लिख आए हैं कि कबीर साहब भक्ति पक्ष के अनुयायी थे; अतएव वे रोज़ा निवाज पूजा व्रत की कुछ परवाह नहीं करते थे। दोनों जातियों के धर्म में जो अवगुण उन्हें दीख पड़ते थे उस की वे निन्दा करते थे; एक स्थान पर उन्हों ने लिखा है।

सन्तो राह दुनो हम दीठा ।
हिन्दू तुरुक हठी नहीं माने स्वाद सबन को मीठा ।
हिन्दू ब्रत एकादशि राखें दूध सिंघाड़ा सेती ।
अन को त्यागे मन नहिं हरकें पारन करें सगोती।
तुरुक रोज़ा निमाज गुजारे बिसमिल बांग पुकारें ।
उनकी भिश्त कहां ते हुई है। साझैं मुर्गी मारें ।
हिन्दुन दया मेहर तुरुकन वे दोनों घट सें त्यागी।
वे हलाल वे झटका मारें, आग दोहुन घर लागी ।
हिंदू तुरुक कि एक राह है, सद्गुरु यही बताई ।
कहैं कबीर सुनो भई संतो, राम न कहयो खुदाई ।

अहिंसा धर्म की ओर उनको बहुत ही ज्यादा ख़याल था उन्होंने इस बाबत बहुत से पद बनाये हैं और उस में ब्राह्मणों की निंदा भी की है। उन पदों में से एक पद हम नीचे देते हैंः-

सन्तो पांड़े निपुण कसाई !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बकरा मारि भैंसा को धावैं दिल मे दर्द न आई।
करि असनान तिलक करिबैठे, विधि सों देव पुजाई।
आतम राम पलक सों बिनशे, रुधिर की नदी बहाई।
अति पुनीति ऊंचे कुल कहिये; सभा मांह अधिकाई।
इतने दिक्षा सब कोई मांगे; हसि आवे मोहि भाई।
बाप कहन को कथा सुनावैं, कर्म करावैं नीचा।
बूड़त दोउ परस्पर देखा, गहे हांथ यम घींचा।
गाय बधैं ते तुरुका कहिये, उनते वे का छोटा।
कहहिं कबीर सुनो भई सन्तो। कलिका ब्राह्मन खोटा।

बलि प्रदान में हिंसा के कारण कबीर जी ने ब्राह्मणों को बहुत कुछ कुवाच्य कहें हैं। मालूम होता है उस ज़माने में ब्राह्मण लोग बहुत ज्यादा पशु यज्ञ करते थे; क्योंकि यह सब बातें पशु यज्ञ देख कर ही कबीर साहब ने कही हैं॥

कबीर साहब ने राम की महिमा पर सैंकड़ों हज़ारों पद लिखें हैं उन में से एक हम नमूने के तौर पर नीचे देते हैं।

"राम गुण न्यारो न्यारो न्यारो।
अबुझा लोग कहा लो बूझैं बूझन हार बिचारो।
केते रामचन्द्र तपसी सों जिन जग यह बिरमाया।
केते कान्ह भए मुरली धर तिन भी अन्त न पाया।
मत्स्य कच्छ बाराह स्वरूपी बामन नाम धराया।
केते बौद्ध भए निकलंकी तिन भी अन्त न पाया।
जाकी गति ब्रह्मा नहिं पाई। शिव सनकादिक हारे।
ताके गुण नर कैसे पैहो। कहे कबीर पुकारे।

यहां पर हम कबीर की कबिता के वारे में भी कुछ कहना चाहते हैं; उन के बाज़ बाज़ पदों की कविता बड़ी ही उत्तम मनोहारिणी है और बाज़ की बड़ी भद्दी; इस बाबत मेरा अनुमान है कि कबीर नाम के कई एक साधु हुए हैं। जिस प्रकार प्राचीन समय में वशिष्ट नारद व्यास इत्यादि पदवियां थीं उसी तरह कबीर नाम की भी लोगों ने पदवी धारण की; अथवा लोगों ने कबीर अपना उपनाम रक्खा। इसी कारण कविता और भावी में भेद जान पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर साहब ने कबीर पंथी मत चलाने का कभी उद्योग नहीं किया। इस पंथ को उन के शिष्य धर्म दास ने चलाया। कबीर साहब का विचार किसी मत अथवा पंथ चलाने का न था; यह बात उन के पदों से प्रगट होती है परन्तु संसार में लोग कब मानते हैं। इन के मत का संसार में खूब प्रचार हुआ। कबीर पंथी लोग पृथ्वी पर बहुत दूर दूर फैले हुए हैं। खास कर मध्य प्रदेश के छत्तीस गढ़ ज़िले में इनकी तादाद बहुत ज्यादा है। इस के अलावा जमैका मरिशश वृटिशगैना डच गैना इत्यादि देशों में भी इन की बहुत आबादी है। सन् १८९१ ईस्वी की मरदुम शुमारी के अनुसार इन की कुल तादाद अड़तालीस लाख थी। कबीर साहब के वंशजों के पास रीवां राज्य की ओर से ४००८० की जागीर लगी हुई है जो अब तक बराबर जारी है।

कबीर साहब के पास एक बार एक दुःखी पुरुष ने आकर कुछ याचना की इस पर कबीर ने कहाः—

जो देखा सो दुखिया देखा तनु धरि सुखी न देखा।
उदय अस्त की बात कहत हों ताकर करहु बिवेका।
बाटे बाटे सब कोई दुखिया क्या गिरही बैरागी।
शुकाचार्य दुखही के कारण गर्भहि माया त्यागी।
योगी दुखिया जंगम दुखिया तापस को दुख दूना।
आशा तृष्णा सब घट थापे कोई महल न सूना।
सांच कहौं तो सब जग खीजे झूठ कहो नहिं जाई।
कहत कबीर तेई भे दुखिया जिन जह राह चलाई।

कबीर साहब का यह कहना कि संसार में दुःख ही दुःख है बहुत ठीक है। उस ग़रीब पुरुष को कबीर साहब की यह बाणी सुन कर बहुत सन्तोष हुआ। कबीर के जन्म की बाबत जिस तरह ठीक ठीक पता नहीं चलता उसी तरह उनकी मृत्यु काशी के समीप मगहर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई यह बात तो ठीक है; परन्तु कब हुई, इस का ठीक ठीक पता नहीं लगता। कोई लोग कहते हैं कि उन्होंने १२० वर्ष के हो कर तनत्यागा, कोई कहता है कि ३०० वर्ष के हो कर परलोक सिधारे। मृत्यु का सन् १४४८ लोग अनुमान करते हैं। उनकी मृत्यु की बाबत यह दन्त कथा प्रसिद्ध है कि जब वह मरे तब मुसल्मान उन की लाश को गाड़ना और हिन्दू जलाना चाहते थे। दोनों के आपस में खूब झगड़ा हुआ। अन्त में जब उनकी लाश पर से कपड़ा या कफ़न हटाया गया तो उनकी छाती पर तुलसी पत्र और सब्जा दो चीजें निकलीं। यह देख कर दोनों ने अपनी अपनी परिपाटी के अनुसार उनका अन्तिम संस्कार किया। मगहर में उनकी समाधि बनी है। वहीं पर मुसल्मानो ने उनकी क़बर बनवाई है। एक ओर समाधि दूसरी ओर कबर है; बीच में एक दीवाल खड़ी है॥

मुसल्मानी राज्य की ओर से ७००० की जागीर समाधि के खर्च के लिये अब तक बराबर चली आती है। हिन्दू मुसल्मान दोनो में झगड़ा होने के कारण वृटिश-सरकार ने दोनों को आधी आधी जागीर बांट दी। उनकी समाधि पर हरसाल अगहन सुदी ११ को बहुत बड़ा मेला लगता है। हिन्दू मुसल्मान दोनों धर्म के हज़ारों लोग वहां दूर दूर से यात्रा के लिये आते हैं। वहां एक बहुत बड़े आश्चर्य की बात देखने में आती है कि हिन्दू यात्री कबीर साहब की क़बर के पास भी दर्शन करने जाते हैं; परन्तु एक भी मुसल्मान समाधि की ओर दर्शन करने नहीं आता!

कबीर पंथी लोग एक ही जाति के नहीं होते; अर्थात् कबीर पंथ में हर जाति के लोग शामिल हो सकते हैं। हिन्दू मुसल्मान दोनों उन के अनुयायी हैं। इस पंथ को स्वीकार करने पर धर्म त्याग नहीं करना पड़ता, न तो विप्तस्मा ही लेना पड़ता है; न सुन्नत की ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़रूरत है। जो लोग मद्य मांस का सेवन नहीं करते असत्याचरण नहीं करते पाप नहीं करते उन्हीं को उस धर्म में प्रवेश करने का अधिकार है। जो उपरोक्त बातों के त्याग की क़सम खाता है वही कबीर पंथी हो सकता है। सदाचार का संस्कार ही कबीर पंथी होने के लिये काफ़ी है। जाति बदलौवल की इस में ज़रूरत नहीं। कबीर पंथी होने के लिये स्वयं कबीर साहब ने तरकीब लिखा है;—

भूलो भोग मुक्ति जन भूलौ। योग युक्ति तन साधो हो।
जो यहि भांति करहु मत वारी। तामत के चित बांधो हो।

कबीर पंथी लोगों का ऐसा विश्वास है कि कबीर साहब ने कभी विवाह नहीं किया। कबीर साहब के कमाल नाम का एक पुत्र था; यह बात कई एक ग्रन्थों में लिखी है पर वे लोग इस बात पर विश्वास नहीं करते उनका कथन है कि कमाल उनका पुत्र नहीं शिष्य था। वह भी कबीर साहब के ही समान विरक्त और भक्ति मार्ग का उपदेशक था।

कबीर साहब की पुस्तकें पढ़ने है चित्त को शान्ति मिलती है; ईश्वर की भक्ति उत्पन्न होती है, बुरे कर्मो से उदासीनता और संसार की असारता से बिरक्ति उत्पन्न होती है। अब हम यहां पर उनकी साखी से कुछ दोहे लिख उनकी जीवनी को समाप्त करते हैं।

हंसा बक यक रंग लखिय चरें एक ही ताल।
क्षीर नीर तें जानिये बक उघरें तेहि काल।
पांच तत्व का पूतरा मानुष धरिया नाउं।
एक कला के बिछुरते विकल भया सब ठाउं। २।
सब तें सांचा है भला जो सांचा दिल होय।
सांच बिना सुख नाहिंना कोटि करे जो कोय। ३।
सांचा सौदा कीजिये, अपने मन में जानि।
सांचे हीरा पाइये, झूठे पूरी हानि। ३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन सागर मनसा लहरि, बूड़े बहे अनेक।
कह कबीर ते बाचिहैं, जिन के हृदय विवेक। ५।
चक्की चलती देखिकै रहा कबीरा रोय।
दो पट भीतर आय के साबुत गया न कोय। ६।
पक्षा पक्षी कारणों सब जग रहा भुलान।
निरपक्षे ह्वै हरि भजैं तेई सन्त सुजान। ७।
माया त्यागे क्या भया, मान तजा नहि जाय।
जेहि माने मुनिवर ठगे, मान सबन को खाय। ८।
मूरख के समुझावते, ज्ञान गांठि को लाय।
कोयल होय न ऊजरी, नौ मन साबुन खाय। ९।
हीरा वही सराहिये, सहे घनन की चोट।
कपट कुरङ्गी मानवा, परखत निकला खोट। १०।
हीरा तहां न खोलिये, जहं कुंजरी की हाट,।
सहजे गांठी बांधि के, लगी आपनी बाट। ११।
मूरख सों क्या बोलिये, शठ सों कहा बसाय।
पाहन में क्या मारिये, चोखा नीर नशाय। १२।
ऊपर की दोऊ गईं, हिय की गईं हेराय।
कह कबीर चारों गईं, तासों कहा बिसाय। १३।
हम जान्यो कुल हंस हो, तातें कीन्हो संग।
जो जनतो बक वरण हो, छुवत न दे तो अंग। १४।
गुणिया तो गुण को गहे, निरगुण गुणहि घिनाय।
बैलहि दीजै जायफर, क्या बूझै क्या खाय। १५।
काजर केरी कोठरी बूड़न्ता संसार।
बलिहारी तेहि पुरुष की, पैठि निकासन हार। १६।
हद्द चलै सो मानवा, बेहद्द चलै सो साध।
हद बेहद दोनों तजे, ताको मता अगाध। १७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मो रक्षति रक्षितः।

"धर्म की जो रक्षा करता है उस की धर्म स्वयं रक्षा करता है।" धर्म शास्त्र के इस बचन के अनुसार वर्ताव हमारे जीवन के सफल होने का हेतु है। जिस से हम इसी शरीर से देवत्व को प्राप्त कर सक्ते हैं। निज कल्याण की इच्छा रखने वाला धर्म के काम में पक्का न हुआ तो उस के आत्मा को शान्ति और चित्त में प्रसन्नता कभी हो ही गी नहीं। जिन की आत्मा निष्पाप और जिन का चित्त विमल है उनको उबलता हुआ तेल का कड़ाहा भी बर्फ़ का सा ठंढक देने वाला है मलिन अन्तःकरण और पापात्मा कोजूहीका हार भी जलते हुये अङ्गार का सा व्यथा देता है। इस धर्म के कई एक साधन हैं जिन में सब से बड़ा साधन आत्म मर्यादा है जिसे अपनी मर्याद बनाये रखने का ध्यान है उस का आचार और वर्ताव उच्च श्रेणी का होता है। जितना ही अधिक आत्म मर्यादा की ओर दृष्टि रहेगी उतनाही उस का शुद्ध आचरण होगा निन्द्य कर्म की ओर उतना ही अधिक उसका कम चित्त जागगा। आत्म मर्यादा का सोपान आत्म गौरव है और इस कल्याण करी विद्या की वर्णमाला सदाचार है जो एक ऐसा धन है कि संपद् और विपद् दोनों में घटता बढ़ता नहीं। इस ऐश्वर्य्य से जो समृद्ध हैं वे अभ्युदय की मोह मदिरा से मतवाले नहीं होते। जगत् पूज्या जनकजा वैदेही इसका आदर्श स्वरूप हो गई हैं जिन का हिमालय सा अचल हृदय और सागर गंभीर मन बनबास का दुःख सहते हुये भी आत्म मर्यादा से विमुख न हुआ। रावण के अनेक प्रलोभन पर भी पातिव्रत की मर्यादा को न छोड़ा। दमयन्ती सावित्री प्रभृति कितनी स्त्रियां इसी आत्म मर्यादा पालन ही से ललना गणो में सर्व श्रेष्ठ हो गई हैं। पुरुषों में राम और युधिष्ठिर तथा आवाल ब्रह्मचारी भीष्म इसी मर्यादा पालन के कारण सर्व मान्य हुये। तो सिद्ध हुआ कि आत्म मर्यादा धर्म का प्रधान अंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और "धर्मोरक्षतिरक्षितः" इस वाक्य का तात्पर्य अधिकतर आत्म मर्यादा की रक्षा है ॥

जयनारायण सहाय ।
रांची ।

योग दर्शन भोज वृत्ति सहित।

गुरुकुल सेवि-पं-भीमसेन शर्मा अनुवादित। उक्त पण्डित जी ने इस के अनुबाद में अपनी पूरी योग्यता प्रगट कर दिखाई है। जैसा स्पष्ट अनुवाद यह किया गया है वैसा और दो एक अनुवाद योग दर्शन के जो पहिले और २ लोगों ने किये नहीं हुआ। भोज की वृत्ति का भी साथ ही साथ यथोचित स्पष्टार्थ मानो सुवर्ण में हीरा सा जड़ दिया गया है। दर्शनों में रुचि रखने वालों को इस का संग्रह अवश्य करना चाहिये। मूल्य १॥) है सद्धर्म प्रचारक प्रेस जालन्धर में पं० अनन्तराम जी द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ॥

व्यय।

इस नाम की पुस्तक को मिश्र उपाधि धारी भ्रातृ जुगल ने रच सर्व साधारण का बड़ा उपकार किया है। इस पुस्तक का पाठ उन को अवश्य सुनाना चाहिये जिन की आंख में धन के मद की गरमी छाई हुई है। जैसा इसी पुस्तक में लिखा है १००) के नोट में "वर्ड्स आई" लपेट लखनऊ के एक कुलकंटक पी गये। हम मिश्र युगल से अनुरोध करते हैं कि इस पुस्तक के दूसरे संस्करण में दो एक तरह के व्यय जो इस निष्किंचन हिन्दुस्तान में सीमा के बाहर हो गये हैं उनका भी ज़िकिर कर देंगे। जैसा हाल में महाराज काश्मीर ने ३६ घण्टे में ६ लाख रुपये पर पानी फेर दिया। पुस्तक में एक जगह लिखा है "चीन दोही एक ज़क उठा सम्हल रहा है हम हज़ारों ज़कें उठाते हुये भी नहीं सम्हलते"। ग्रन्थकर्ता महाशय यह किसे जोश दिला रहे हैं। क्या यह चेत उन्हें नहीं है कि यह हिन्दुस्तान है यहां आप का जोश दिलाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी कारगार नहीं हो सक्ता। हमें तो कुछ ऐसा ही भावता है कि जो कुआं में गिरता हो उसे उस कुआं से निकलने के बदले एक पत्थर उस के ऊपर कुये में और फेंक दें जिस में वह डूब ही जाय और कुछ कसर बाकी न रहे। अस्तु पुस्तक यह बड़ी उत्तम है मूल्य।)

दो।

काशी के भारतेन्दु में एक लेख एक के महत्व का निकला है उसे पढ़ हम आज दो के विस्तार की निराली बेसुरीली तान छेड़ बैठे हैं। चलिये पहिले चर अचर इस दो प्रकार की रचना से आरम्भ करते हैं। प्रकृति और पुरुष दो न होते तो पुरुष पद वाच्य एक अकेला क्या कर सक्ता। प्रकृति और पुरुष दोनों मिले तब सृष्टि की यह चर अचर सब रचना रची गई। एक की एकाई तभी तक है जब दो नहीं हुये। "इस लिये तस्वीर जाना हम ने खिचवाई नहीं। एक से जब दो हुये तो लुत्फ़ एकताई नहीं" बिना एक दूसरा प्रतिद्वन्दी हुये एक कभी शोभा नहीं पाता या कदर के लायक होता है। उजाले की कदर कब होती जो दूसरा उसके मुकाबिले का अंधियारा न होता। एक और एक ११ भी तभी है जब एक को दो बार लिखते या काम में लाते हैं। एक अकेला कैसाही प्रबल और समर्थ हो जब तक दो उस के और सहायक न हों कुछ नहीं कर सक्ता किया भी तो उसका काम अधूरा रहता है। कहा भी है "सर्वज्ञस्यापि एकाकिनो निर्णयाभ्युपगमोदोषाय" कैसा ही सर्वज्ञ हो पर अकेला बिना दूसरे की सलाह के या बिना किसी दूसरे से पूछे किसी बात को तै कर डाले तो वह उसका काम दोष से खाली नहीं है। सृष्टिकर्ता ने सर्जित पदार्थों को बहुधा दो दो का एक जोड़ा सृजा है उन का फुट हो जाना फिर किसी काम का नहीं रहता। इस से निश्चय हुआ कि एक को एक दूसरे की आपेक्षा अवश्य रहती है। बहुत कम ऐसे पदार्थ हैं जो अपने मुकाबिले का दूसरा न रखते हों तो सिद्ध हुआ कि एक यह पह संख्या अवश्य द्वितीय सापेक्ष है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वदेशी कजली।

अब जनि बिलम लगावहु कछु तुम शुभ अवसर यह आयो रामा
हरि हरि घर घर करहु स्वदेशी को प्रचारा रे हरी। टेक॥ १
काहे निपट निकम्बी वस्तुन लेवन मां चित लायो रामा
हरि हरि दै विदेश, धन जनि फूंकौ घर सारा रे हरी॥ २
हा! चटकीली वस्तु विदेशी भारत भर है छायो रामा।
हरि हरि सब भारत वस्तुन गारत करि डारा रे हरी॥ ३
भये विदेश-विलासी क्यों सब का तुम को भरमायो रामा?
हरि हरि करत घृणा निज देश, विदेश पियारा रे हरी॥ ४
जेहि के बल जग सभ्य भयो सब जेहि जग ज्ञान सिखाया रामा
हरि हरि नाम धाम सो डूबो सबहि हमारा रे हरी॥ ५
ताली दै दै हंसत हमैं, सब नीच असभ्य बनाया रामा।
हरि हरि तौहूं धिक! तुम करत विदेश पियारा रे हरी॥ ६
जानहु का नहिं पुन्य भूमि भारत हरि अहै बनायो रामा।
हरि हरि होत जहां तृण शस्य अनाज अपारा रे हरी॥ ७
जल थल सरिता सर उपबन बन मुनि मन लेत लुभायो रामा
हहि हरि प्रकृति देवि की छवि है जहं सुख द्वारा रे हरी॥ ८
सुख सम्पति दाता-भारत की सेवा ध्यान लगाओ रामा।
हरि हरि धन जन मन अर्पण सब करहु तुम्हारा रे हरी॥ ९
स्वास वायु जब लौं जीवन महं 'जय श्री भारत' गाओ रामा।
हरि हरि देवहु तुरत विदेशी वस्तुन जारा रे हरी॥ १०
"खाओ, पहिनौं ओढ़ौ, देओ, लेओ जो मन भायो रामा"।
हरि हरि सो सब होय स्वदेशी यहि प्रण धारा रे हरी॥ ११

पाण्डेय लोचन प्रसाद (बालपुर)

सौ अजान एक सुजान।

यह एक नये प्रकार का उपन्यास है जिस के सम्बन्ध में इस समय के प्रायः सवी सुलेखकों ने अपनी उत्तमोत्तम सम्मति से हमे बाधित किया है; जिन की अनुमति हम क्रमशः प्रकाशित करेंगे। दाम मैं पोस्टेज ॥) आना है।

मिलने का पता
मेनेजर हिन्दीप्रदीप
प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा—

Always get the Emulsion with this mark —the Fishman—the mark of the "Scott" process

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट—लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० २८ } प्रयाग { सितम्बर
सं० ९ } { सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहांय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ सं० ९ | प्रयाग | सितम्बर सन् १९०६ ई०

भारत का काया पलट।

जैसा कोई एक करवट सोते २ थक कर दूसरी करवट बदलता है वैसाही भारत अनादि काल से एक ही ढङ्ग पर ढुलकता हुआ करवट बदलने की भांत अपनी काया को पलट रहा है। और यह काया पलट किसी एक अंश में हुआ सो नहीं वरन धर्मनीति समाजनीति राजनीति जिस में टटोलो उसी में आकाश और पाताल का अन्तर देख पड़ता है। सब छोड़ पहिले हम भारत की धर्मनीति की आलोचना करते हैं। यहां के धर्म में क्या २ काया पलट हुई और होती जाती है सो दिखलाते हैं। पहिले तो धर्म एक ऐसा विषय है जो केवल समाज के आधार पर चलता है। समाज जहां तक परिस्कृत, सभ्य और बुद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैभव में आगे बढ़ी होगी धर्म भी उस समाज का उतनाही परिस्कृत प्रभावशाली सत्य और उत्कृष्ट होगा। इस तरह का हमारा शुद्ध आर्य वैदिक धर्म है; उस समय सब का एक धर्म; एक तरह की विचार प्रणाली; एक प्रथा; एक रीति नीति थी। सब लोग एक मत थे और आध्यात्मिक क्रम पर एक ईश्वर की आराधना ध्यान और धारणा के द्वारा करते थे। उस समय समाज उन्नति की अन्तिम सीमा को पहुंची हुई थी। इस समय के विविध विज्ञान और अनेक कलाओं की चाहो इतनी तरक्की न रही हो पर सब लोग बड़े सच्चरित्र, साधु भाव पूर्ण, सच्चे, बात के धनी, अध्यवसायी, अलोलुप, गम्भीर प्रकृति उत्साह और पौरूषेयगुण विशिष्ट थे। ऋग्वेद की अनेक ऋचायें हैं जिस से स्पस्ट है कि भौतिक पदार्थों का ज्ञान उन आर्यों को भरपूर था, कहीं २ आधुनिक विज्ञानों की भी झलक पाई जाती है भारत के वे दिन कैसी तरक्की के रहे होंगे यह सोच, चित्त चकृत होता है। पर ऐसा समय बहुत दिन तक न रहा केवल आध्यात्मिक आराधना छोड़; सूर्य मण्डल, अग्नि, जल, और स्थंडिलों में ईश्वर की आराधना करने लगे। यज्ञ का क्रम निकला, पशु के वलिदान की प्रथा चल पड़ी किन्तु उनके किसी पौरूषेय गुण में कहीं से त्रुटि न हुई। इसी समय यज्ञ में अधिक हिंसा देख संशोधन के ढङ्ग पर जैन और बौद्ध मत का प्रादुर्भाव हुआ; पीछे गौतम बुद्ध के नाम से बड़े पूर्ण विद्वान् और जैन मत के कई एक तीर्थंकर पैदा हो जैन और बौद्ध धर्म की बड़ी उन्नति की। इस समय तक राजनैतिक विचार या प्रवन्ध में कोई तरह का टूटा न आया था न हिन्दुस्तान में कौमीयत पर कोई ज़वाल आया था किन्तु द्वैविध्य का बीज बो गया और शुद्ध वैदिक आर्य धर्म पर कुल्हाड़ा चलना आरम्भ हो गया। आर्य लोग पीछे अग्नि सूर्य जल और स्थंडिलों पर ईश्वर को पूजने लगे थे जैन और बौद्धों ने मूर्ति बनाना आरम्भ किया और पौत्तलिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारम्भ हुई इसी समय Six Schools of Philosophy षट् दर्शनों की नेवपड़ी जिस में कपिल कणाद और अक्षपाद तो बहुत पहिले हुये जैमिनि पतञ्जलि और व्यास पीछे हुये उस में भी व्यास देव ऐसा मालूम होता है कि सब के पीछे हुये। भाषा भी एक नई प्रकार की प्राकृती के नाम से प्रचलित हुई वेद की भाषा अलग कर दी गई। इसी समय एक और भाषा संस्कृत के नाम से निकली स्मृति और पुराणों की सृष्टि भी इसी समय हुई। पुराण सब इसी संस्कृत में लिखे गये और यह लोककी भाषा कही गई "सर्वत्रविभाषागोः" इस सूत्रकी वृत्तिमें दीक्षित ने सर्वत्र को साफ कर दिया है "लोके वेदे चैङन्तस्य गोरतिवा प्रकृतिभावः स्यात् पदान्ते" "लोक और वेद दोनों में एङन्तगो शब्द को प्रकृति भाव ही विकल्प कर पदान्त में"। तो निश्चय हुआ कि संस्कृत लोक भाषा उस समय मानी गई थी और बराबर इस की तरक्की होती गई। उपनिषद् और गृह्यसूत्रों को छोड़ जिस में कहीं २ पर वैदिक लिखावट का अनुकरण किया गया है बाकी समग्र संस्कृत ग्रन्थ समूह छहो दर्शन, पुराण, काव्य, कोष, अलंकार; ज्योतिष, वैद्यक, षड़ंग के सब ग्रन्थ, इसी भाषा में हैं। सच पूछो तो वेद की भाषा हम लोगों के लिये इस समय अजनबी सी हो रही है। संस्कृत का सुबोध पण्डित वेद के तात्पर्य को कुछ नहीं समझ सक्ता। यद्यपि पाणिनि महामुनि ने अपना व्याकरण इसी उद्देश्य से बनाया था कि उन का व्याकरण जानने वाला लोक और वेद दोनों भाषाओं में सुवोध और प्रवीण हो जाय किन्तु इन दिनों का पठन पाठन कुछ ऐसे क्रम का हो गया है कि हमलोग वैदिक भाग विलकुल अलग कर व्याकरण पढ़ते हैं। दीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी में स्वर वैदिकी का प्रकरण ही अलग कर दिया। तिङन्त में लेट् पंचम लकार को विलकुल छोड़ देते हैं इस लिये कि लेट् का रूप केवल वेद में होता है लोक में नहीं। दीक्षित ने लिख भी दिया है "एषुपंचमोलकारश्छन्दोमात्र गोचरः"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराण की सृष्टि के साथ ही साथ देश में एक धर्म एक मत में जैसा लूतसी सवार हो गई। हम पहले कह आये हैं जैन और बौद्ध मत के साथही साथ द्वैविध्य शुरू हो गया था; पुराणों ने पंचायतन पूजन निकाली शैव शाक्त वैष्णव गाणपत्य और सौर ये भिन्न २ टुकड़े आर्यमत के हो गये। पुजाने वाले लोभी ब्राह्मणों की बन पड़ी जो अब तक नये २ पुराण बनाते जाते हैं। अपना महत्व स्थापित करने और गुरु बनने की मजा में जिस की जैसी रुचि देखा तदनुकूल गीत पुराणों में गा चले। पांच तो ये प्रधान टुकड़े थे अब इन की शाखा प्रशाखा कितनी है उसे कौन गिना सक्ता है। एक वैष्णवोंही की ४ संप्रदाय हैं और उस चार के भी न जानिये कितने टुकड़े हैं। रामोपासक और कृष्णोपासक के दो बड़े टुकड़े तो हई हैं कृष्णोपासक आपस में एक दूसरे से बड़ा विरोध रखते हैं। पुष्टिमार्ग वाले कृष्ण की किसी दूसरी मूर्ति को प्रणाम करना और उन का प्रसाद खाना अपनी अनन्यता की बड़ी हानि मानते हैं। परिणाम में गोकुलस्थी गुसाइयों की वैष्णवें की और संप्रदायवालों से नहीं बनती। कहने को ये सब वैदिक धर्म के अनुयायी अपने को मानते हैं पर वैदिक क्रम के अनुसार की इन में बहुत थोड़ी बात है। चारो वेद चाहो पढ़ा हो और वैदिक कर्मों का अनुष्ठान भी करता हो पर कण्ठी न बांधे हो या चक्रांकित न हो तो उस के हाथ का पानी न पियेंगे। शूद्र भी कण्ठीवन्ध या चक्रांकित उनके यहां ब्राह्मणों से श्रेष्ठ माना जाता है॥

पुराणों के उपरान्त तन्त्रों की कल्पना की गई और उस के दक्षिण और वाम के भेद से दो खण्ड किये गये; पुराण वालों ने तो फिर भी वेद को आड़ में रख जैसा समय देखा और जैसी रूचि प्रजा की पाया उसी के अनुसार थोड़ा नोन मिर्च उस में मिलाया पर तांत्रिकों ने तो वेद को उखाड़ ही डालने का प्रयत्न किया जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि उनके बीज मंत्रों में जो शक्ति है वह वेद की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋचाओं में नहीं है। अस्तु पुराण और तंत्रोंही से धर्म सम्बन्ध में हमारे अधःपात का ओर आ गया हो सो नहीं कबीर, नान्हक, दादू, रइदास, हाल में सन्त मत; ये सब वेद और धर्म में हमारे ऐक्य पर बराबर चोट देते गये। और नीचे चलिये तो भूत प्रेत गाज़ीनियां और पांच पीर हमारे धर्म के अंग होते देख पड़ते हैं। हमारे विज्ञ पाठक जान गये होंगे कि धर्म सम्बन्ध में कहां तक भारत का कायापलट होता गया अब समाज को लीजिये॥

पुराने लेख को टटोलने से प्रगट होता है कि वैदिक ऋषियों के समय समाज हमारी सर्वथा निर्दोष थी चार वरण की प्रथा जब से निकली तब से जिस का जो काम था उसे करते सुख से समय बिताते थे। भारत की उर्वराभूमि और वर्ष में तीन बार ऋतुओं के अदल बदल का फाइदा उठाते हुये अपने ही देश के राजा से शासित हो प्रजा राजा से सन्तुष्ट रहती थी और राजा प्रजा से। हजारों वर्ष तक हमारी सुस्थिर समाज में किसी को किसी से किसी बात की शिकायत न थी, अशान्ति कैसी होती है कोई जानता ही न था। इन दिनों की सी जुआ चोरी का तब कहीं नाम भी न था; जाल फरेब लोगों में स्थान न पाये था न इस समय के अनेक अपराध Crimes तब समाज में प्रचलित थे। इस लिये कानूनों की इतनी बारीकी भी तब न थी अब के समान तब लोग ज़रा २ सी बात के लिये अदालत में नहीं दौड़ते थे न स्टैम्प और कार्ट फीस का इतना जब्र तब इंसाफ और न्याय ढूंढ़ने वालों पर था। विदेशियों का कहीं से संपर्क भी तब न था इस से इन की सब रीति नीति रहन सहन खान पान शुद्ध आर्य क्रम का था। आपस में एक को दूसरे के साथ भरपूर सहानुभूति थी, स्वार्थ की तब गन्धि भी न थी अपना देश अपनी समाज का पक्षपात कैसा वरन मनुष्य मात्र के साथ अपनापन था "उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्" यह उसी समय की शिक्षा है। सामाजिक बल जब उन में इतना था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बाहरी शत्रुओं में किसी का इतना साहस न होता था कि आक्रमण करे; कभी किसी ने आक्रमण किया भी तो मुह की खा हार कर यहां से लौटते ही बनता था। देवासुर संग्राम आदि कई किस्से इस के उदाहरण हैं। फूटी भरे भरी ढरकावै वाली कहावत के अनुसार परमात्मा का न जानिये कैसा कर्तव्य हुआ करता है कि उर्वराभूमि में कांटे के समान जैन और बौद्ध यहां आप से आप पैदा हो गये और वैदिक समय का सा ऐक्य न रह गया समाज में आपस की सहानुभूति के दो तीन टुकड़े हो गये। और अब जो बाहर का आक्रमण यहां हुआ उन के मुकाबिले इन की हार होती गई। इस समय सिकन्दर आदि कई एक जगद्विजयी वीर पश्चिम के देशों में उपज खड़े हुये। उपरान्त महम्मद हुये जिस ने अरब के आस पास के देशों में अपना मुसलमानी मज़हब स्थापित किया। जब कोई नया मज़हब कायम होता है तो थोड़े दिन उस का पूरा जोश रहता है उसी जोश के सबब मध्य एशिया में कई सौ वर्ष तक मुसलमान बराबर जयी होते गये। इधर हिन्दुस्तान में महाभारत के कराल युद्ध के उपरान्त बड़ी निर्बलता छा गई प्रसिद्ध २ वीर बांकुरे सब इस महासंग्राम में कट मरे; समाज जर्जरित सी होने लगी; ईश्वराराधन का वेदोक्त क्रम घट चला था; पौत्तलिकता देश भर में व्याप्त हो गई थी; अनेक मत और अनेक दर्शनों के हो जाने से कौमीयत और मुल्की जोश कहीं न बच रहा। शंकर और रामानुज प्रभृति दार्शनिक विद्वान् आपस के खण्डन मण्डन में लग गये घर के द्वार पर यवनों ने आकर क्या २ उपद्रव और अत्याचार फैला रक्खा किसी को कुछ खबर न रही। इधर सोमनाथ का मन्दिर लुटता था उधर साहित्य अलंकार व्याकरण और दूसरे २ शास्त्रीय विषय के वाचस्पति सरीखे महा पण्डित बाद के अनेक ग्रन्थ तैयार कर रहे थे। समाज बिल्कुल छिन भिन्न हो गई थी वैदिक समय के पौरूषेय गुणों का विसर्जन हो चला था। देश की ऐसी क्षीण दशा में मुसलमानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को यहां अपना राजत्व स्थापित करना बहुत सहज हो गया। यह सदा का क्रम चला आया है कि शासित जाति अपनी हर एक बातों में शासनकर्ता के अनुकरण को बड़ी प्रतिष्ठा और गौरव का हेतु मानती है; इस दशा में हम अपनी हर एक बातों में मुसल्मानों का अनुकरण करते २ अर्द्ध यवन हो गये। पुरानी आर्यता अब केवल आभास मात्र को बच रही है। हमलोगों का समाज में यावनिक वर्ताव सिद्ध करता है कि हम कहां तक अपने स्वरूप को भूल गये। कौमीयत तथा मुल्की जोश कहां तक हमारे में विलुप्तप्राय हो गया। आगे बढ़ने और तरक्की के लिये पहिले हमे खोये हुये अपने स्वरूप की पहचान पहली बात है। अस्तु इन मुसल्मानों ने कर बल छल से जैसे बना देश से हिन्दुआनी को मिटाने और जड़ से उसे उच्छिन्न कर देने में कोई बात छोड़ न रक्खी पर "हूवै है वही जो राम रच राखा" मुसल्मानों ने जितना ही मूर्ति पूजन को उखाड़ना चाहा उतनाही इस की जड़ पुष्ट होती गई। वल्लभाचार्य चैतन्य महाप्रभु हित हरवंश सनातन गोस्वामी आदि महानुभाव सूर तुलसी ऐसे परम भक्त कवि इसी समय हुये। जिन्हो ने नवधा भक्ति और आराध्य देव की सेवा का क्रम निकाल मूर्ति पूजन की जड़ पुष्ट कर दिया। अब इस समय के लोग मूर्ति पूजन को चाहो जितना बुरा कहैं और उस के खण्डन में चाहो जितनी लियाकत और विद्वत्ता प्रगट करें पर मुसल्मानों के ॥महा अत्याचार के समय हिन्दुआनी जीवित रखने को यही अमृत संजीवनी हुई नहीं तो हमारी आर्यता का अंकुर भी न रह जाता। जब पेड़ मुरझाने से बच रहा और कायम है तब उसे सींच कर बढ़ा देना कौन सा मुशकिल काम है। इस समय मुसल्मानों के अत्याचार से प्राण की रक्षा कठिन हो गई थी तब समाज में मुल्की जोश का होना कैसा ? और न तब मुल्की जोश की इतनी ज़रूरत थी इस लिये कि ये मुसल्मान अपने मुल्क में बस गये थे यहां का धन यहीं रहता था केवल धर्म सम्बन्ध में उन का अत्याचार था इसी से मज़हबी जोश की रोज़ २ तरक्की अलबत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती गई जो अब तक क़ायम है। किसी धर्म सम्बन्ध में देश का देश टूट पड़ता है मुल्क के नफा नुकसान की बड़ी से बड़ी बात बड़े से बड़े क़ानून चुपचाप पास हो जाते हैं किसी को मालूम नहीं होता। अस्तु अंगरेज़ों के आने पर ये मुसल्मान भी अपनी सब बहादुरी भूल हमी लोगों के समान भेड़ बकरी से हो गये पर समाज सर्वथा अस्त व्यस्त हो गई। अब जो दशा हमारी समाज देश तथा जाति की है सब पर प्रगट है विशेष पल्लवित करना पाठकों का बहुमूल्य समय नष्ट करना है॥

अब राजनीति में भारत का क्या काया पलट हुआ सो विचार करते हैं। राजनीति में ऐसी काट छांट जैसी इस समय यूरोप के देशों में है भारत में कभी न थी। Monarchy "ऐसा राज्य जिस में राजा जो चाहे सो कर डाले" शासन का यह क्रम मुसल्मान बादशाहों के समय तक यहां रहा। पुराणो में दो एक ऐसे भी इतिहास पाये जाते हैं जिस में प्रजा प्रभुत्व शासन Republic Government भी दो एक बार हो गया था पर बहुत ही थोड़े समय तक यह प्रजा प्रभुत्व शासन रहा। रामायण के समय से भारत के समय तक में राज्य लिप्सा और नीति कुटिलाई में कितना अन्तर हो गया था कि रामायण में जिस राज्य को भरत ने भाई रामचन्द्र को देने के लिये उन की बड़ी खुशामद किया और रामचन्द्र स्वीकार न कर १४ वर्ष बन में रहे। महाभारत में उसी राज्य के लिये भाई २ कौरव पाण्डव कट मरे। यह अंगरेज़ी शिक्षा का प्रभाव है कि हम राजनीति की बारीकियां समझने लगे हैं। यद्यपि पेशवाओं के समय महाराष्ट्रों में नाना फ़ड़नवीस सखा राम बापू ऐसे, और हाल में सर सालार जंग, सर टी माधवराव, नेपाल में जङ्गबहादुर, ऐसे कई एक परिस्कृत मस्तिष्क के लोग हो गये हैं जो यूरोप के बड़े २ नामी राजनीतिज्ञों से कम प्रवीण न थे। किन्तु अब इस समय एक २ घराने में ऐसे नीति कुशल पुरुषों की ज़रूरत है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक ऐसा न होगा तब तक देश के उद्धार की कम संभावना है। जिस समय यहां ईस्ट इण्डिया कम्पनी स्थापित हुई उस समय यहां के लोग प्रति दिन की राज विराजी से इतना भरे पचे थे कि कोई स्थिर शासन चाहते थे। उधर कम्पनी के अधिकारीपुरुष नीति की काट छांट में परम प्रवीण छटे छैइयां यहां के अत्यन्त बुद्दूड़ और ऐयाशी में डूबे हुये वालियान मुल्क बड़े २ नौवाब और राजाओं को उल्लू बना मुल्क पर मुल्क निगलते गये। अब जो हमें कुछ चेत आई है तो हाथ मलते हुये पछता रहे हैं पर हमारे शासकों ने हमें ऐसा जकड़ रक्खा है कि हमारी एक नहीं चलती। स्मरण रहे यह ईस्ट इण्डिया कम्पनी विलायत के व्यौपारियों की थी इसी से इनके शासन में वणिक् व्यापार प्रधान है। जब तक स्वच्छन्दता के साथ अपने मन की कर गुज़रने वाले गोरे अधिकारियों की राज सत्ता में स्वच्छन्दता कुछ संकुचित न हो और जब तक यहां वालों को शासन के कुछ अधिकार प्राप्त न हों तब तक हमें राजनीतिज्ञता के लिये प्रयत्न से न चूकना चाहिये और इसी को भारत का राजनैतिक काया कल्प कहेंगे। वैदिक समय के राज नैतिक क्रम से अब के क्रम में बड़ा अन्तर हो गया है। उस समय तपोबन के समीप पूज्य ऋषियों के पुनीत आश्रमों में स्वाधीनता सम-बुद्धि निर्लोभ इत्यादि नीति के उत्तम २ गुण सिखाये जाते थे प्रजा को पुत्र समान पालना और उन से इतना थोड़ा कर लेना राजाओं को बताया जाता था कि जिस में सर्व साधारण में उद्वेग न पैदा हो। न्याय का अब की भांत इतना भारी स्टैम्प भी नहीं लिया जाता था। नीति क्या है? अनीति क्या है? राजा का धर्म क्या है? प्रजा का कर्तव्य क्या है? राज्य में स्थिरता प्रजा के प्रसन्न और सुखी रहने पर निर्भर है। इत्यादि की शिक्षा दी जाती थी। मुसल्मानों के राज्य में पुराना आर्य क्रम सब उलट पलट गया था सही पर ईमानदारी इत्यादि की स्थिरशैली ऐसी बँध गई थी कि लेन देन में बेईमानी का कोई फरियादी हो कर बादशाह और नौवाबों के दर्बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नहीं जाता था। लूट और बटमारी थी पर चोरी नहीं होती थी सब लोग खुश हाल थे तब क्या पड़ी थी कि कोई दूसरे का माल चुरावे। चोरी अधिकतर तभी होती है जब लोग भूखों मरने लगते हैं। अस्तु इस समय राजनैतिक विषयों में भारत का जैसा काया पलट हुआ सो किसी से छिपा नहीं है विशेष पल्लवित करने से क्या लाभ। यह हमने प्रधान २ विषय काया कल्प के दिखाये। छोटी २ बातें भारत के काया कल्प की दिखाने लगें तो न जानिये कितने पेज रंग जा सक्ते हैं और लेख भी फीका हो जाने से पढ़ने वालों को ऊब होवेगी इस से यहीं समाप्त करते हैं।

--:o:--

ठकुर सुहाती।

ठकुर सुहाती कहना वह विद्या है जिसे वही जानते हैं जो कपट कापटिक ज़ाहिरदारी में चुस्त और चालाक हैं। यह वह जादू है जिस का असर कभी खाली जाता ही नहीं। खुशामदी चापलूस को स्वार्थ साधन का यह ऐसा महामंत्र है जिस का अनुष्ठान कभी व्यर्थ होता ही नहीं। अपनी पालिसी के पक्के नीति निपुण लोग कह गये हैं "मूर्खञ्छन्दानुवृत्तेन" जिस का तात्पर्य यह हुआ कि चतुर सयाने जिन का सिद्धान्त है "स्वार्थं समुद्धरेत्प्राज्ञः स्वार्थभ्रंशो हि मूर्खता" आंख का अन्धा गांठ का पूरा कोता अकिल वाले के साथ ऐसा मिल बजते हैं कि उसकी हां में हां मिलाते हुये ठकुर सुहाती कह उस से भरपूर अपना मतलब निकाली लेते हैं। उन्हें इस से क्या गर्ज़ कि इस काम से इस मूर्ख की सर्वथा हानि है। उस मूर्ख के विरुद्ध कहते हैं या उस को उस का काम के करने से रोकते हैं तो वह बिगड़ खड़ा होता है तब क्यों तत्व कथन से नाहक अपनी हानि करें। इसी से कहा है "मूर्खछन्दानुवृत्तेन" मूर्ख को उस के मन की कह राज़ी रक्खे। और भी कहा है॥

"सुवर्णपुष्पां पृथ्वीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम्॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पृथ्वी सोने के फूलों से फूली हुई है उस फूल को तोड़ तीनहीं आदमी सोना इकट्ठा कर सक्के हैं। शूर अर्थात् योद्धा जो रणभूमि में पीछे पांव न रख हथेली पर अपनी जान रख शत्रु से जा भिड़ता है; या वह जो कृतविद्य सकल शास्त्र पारंगत बहु दर्शी आलिम फाज़िल है; अथवा वह जो ठकुर सुहाती कहने में प्रवीण सेवकाई अच्छी तरह जानता है। भारत में इस सेवकाई का कहनाही क्या जहां यह एक हुनर सा हो रहा है बरन देश का देश इस समय कूर और कायरों की जन्म भूमि या उत्पत्ति स्थान है शूरबीर का तो जहां उच्छेदही हो गया। जहां किसी समय वीरसूर और वीर प्रसविनी मा हुआ करती थीं वहां अब पिल्ले पैदा करने वाली शुनी और गीदड़ों को जनने वाली सियारिन बहुत सी हैं। जितनी बीर सूबीर प्रसविनी थीं सब जापान चली गईं और वहां बीर तथा उत्साही पुत्रों को पैदा कर रही हैं। तात्पर्य यह कि जब शूरवीर का अभाव है तो ठकुर सुहाती जो हमारी सेवकाई का सहकारी है उसे रहना ही चाहिये ॥

--:o:--

समालोचक और ग्रन्थकार।

सन्ध्या होने को अब करीब है सूर्य भगवान् अपने कर सहस्रों को समेट अस्ताचल के पाहुने हुआ ही चाहते हैं दिन का अन्त और रात्रि का आगम दोनों एक स्थान में मिले हुए हैं मानों एक दूसरे से अलग होने के भय से प्रेमालिङ्गन करते अपनी २ मण्डली को दुखित व हर्षित कर रहे हैं। इन के सँयोग सुख में सभी योग दे रहे हैं मानों इनके वियोग रोग के दूर करने को ईश्वर से चिर उपभोग रूपी औषधि मांग रहे हैं। प्रकृति देवी के गोद में जिनके मोद प्रमोद के विविध दृश्य खिले हुए हैं ॥

इसी समय झपाटे के साथ दोनों हाथ हिलाते, कभी २ अपना माथ छूते, एक पुरुष चला जा रहा है। बदन में कोपीन के सिवाय दूसरा वस्त्र नहीं है। सिर में एक भी बाल नहीं है। दाहिने हाथ में पादत्राण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बायें में एक कटोरा है। तेल शरीर में चुवचुवा रहा है एक आंख बहुत ही बड़ी है जिस में एक बड़ा सा चश्मा लगा हुआ है। दूसरी आंख बिलकुल छोटी है और उस में चश्मा नहीं है। मूछें बड़ी २ हैं और वे ऐंठ कर बांधी गई हैं। हाथ में रिस्टवाच और पीठ में एक बड़ा भारी गड्ढा है। पैर में चमचमाते हुए विलायती बूट हैं। चलने में यह बड़ा तेज़ है इतना कि मद्रास मेल भी इस के सामने मेंढक है। उम्र इस की जवानी से खसक गई है। इस का मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा समान सुन्दराई का घर है। इस प्रकार के विचित्र चित्र को देख चकित हो किसी पुरुष ने पास जा कर पूछा कि 'महाराज आप कौन हैं ?' कृपा पूर्वक अपना वृत्तान्त सुनाइये ॥

विचित्र चित्र—हहहहहा (खूब हंसता है) बच्चा तू मुझे नहीं जानता कि मैं कौन हूं। नहीं तो अभी तक तू मेरे पैरों पर गिर पड़ता तू ग्रन्थकार है न ?

वह पुरुष सुन कर—डर सा जाता है और कहता है "महाराज हां" परा आप कौन हैं ? यह बताने की कृपा शीघ्र कीजिये, मैं आप को हाथ जोड़ता हूं।

वि० चि०—अभी तू नया लेखक है। पक्का होने को तुझे अभी कई घाट का पानी पीना है। जूते और गालियां भी खाना है। और इसी से नहीं जानता कि मैं कौन हूं। अच्छा तो तुम्हारी यह भूल हम इस बार माफ कर देते हैं। परन्तु याद रहे कि दूसरे बार देखते ही दूर से हमें साष्टङ्ग दण्डवत् कर हमारी प्रशंसा करने में कभी न चूकना नहीं तो तू क्या तेरा बाप भी बचने न पावेगा। नहीं जानता मैं समालोचक हूं-सब ग्रन्थकारों का बूढ़ा बाप।

ग्रन्थकारः—आप की उत्पत्ति कहां से हुई ?

समालोचक—तू निपट अजान है, इसी से अपना सब वृत्तान्त तुझ से कहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता हूं। पर चेत रखना इसे किसी दूसरे से कभी न कहना। सुनो हमारे बाप दादे पहिले दिल के बड़े तंग थे। वे किसी की बढ़ती न देख सकते; बड़े ही ईर्षी थे। पर साथ २ अपने मालिक और आश्रयदाताओं की प्रशंसा भी कभी २ खूब किया करते थे। जब प्रशंसा और ईर्षा से काम न निकल सका तो वे ठठोलबाज़ हो गये। जब कोई अच्छा कपड़ा लत्ता पहिनता उत्तम कोई काम करता तो ज़ीट उड़ाते हुये उस के काम में कुछ न कुछ कमी बताते और मसखरी के साथ कभी उस की तारीफ भी कर देते। इस प्रकार यह गुण परम्परा से हमारे कुल में है, पर यह उन के इस हुनर की बाल्यावस्था थी। जब सभ्यता की रगड़ से बन्दरों की पूंछ तक कट गई और वे भी सभ्य कहेजाने लगे तब ये हमारे बाप दादे तो मनुष्य ही थे इस समय तक उन्हों ने खूब उन्नति कर ली। और अब उस गुण की यौवनावस्था आ पहुंची। तब वे मसखरे के बदले समालोचक (अर्थात् सम=तुल्य भाव से, आलोचक = देखने वाला) कहलाने लगे। उत्तम से उत्तम लेखों में त्रुटि निकालते विशारद तथा बड़े गुणी हो हंसवृत्ति अनुसार ग्रन्थकारों तथा मनुष्यों के गुण दोष (क्षीर नीर) को अलग कर साहित्य की उन्नति करने लगे। पर साथ ही साथ हंसी और व्यङ्ग भी उन के लेखों में देख पड़ते थे।

किन्तु समय ने फिर पलटा खाया। लोग अपनी चाल ढाल बदलने लगे। फेशन और सिबिलिज़ेशन का स्टेशन घर २ द्वार २ हो गया। रीति नीति आदर सत्कार आचार व्यवहार कर्म धर्म के मर्म का किसी को खयाल न रहा। पुरानी राह की चाह किसी को न रही। सभी बातों के अदल बदल में लोग बल छल करने लगे तो यह कब सम्भव कि हम उसी पुरानी लकीर के फरीर बने रह कर धीर बीर कहला सके। हमने भी दुनिया के लोगों के ढङ्ग पर बेवफाई, वेहयाई ढिठाई, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुराई के सांचे के ढले हुए पुतले बन कर अपने अङ्ग अङ्ग का रूप रंग बदल; कुसंग रूपी भंग पान कर अपने दिल को ऐसा तंग कर लिया कि कहीं सहृदयता और महानुभावता का लेश भी शेष न रहा। बस तब हम हुए समालोचक (अर्थात सम् = आ×घुसघुस के; लोचक देखने वाला, घुस घुस के केवल दोषों का देखने वाला और उच्चासन में बैठ लगे पुकार२ सभी को यह कहने कि हम Best समालोचक हैं अपनी पुस्तकों की समालोचना हम से कराइये। कभी किसी के ग्रन्थ की समालोचना मनमानी बिना उस की आज्ञा के कर डालते। कभी पत्र लिख २ उन्हें रगड़ा करते कि अमुक २ पुस्तकें भेजो हम उन की समालोचना करें और अभाग्यवश जब हम किसी पत्र के सम्पादक न रहे और न कोई पत्र ही हमारी समालोचना छापने को राज़ी हुआ तो चट, उस को पुस्तकाकार छपाने लगे V. P द्वारा बिना मांगें मंगाये सब के पास भेजने और अपना नाम प्रख्यात करने लगे।

ग्रन्थकारः–धन्य हो प्रभो ! आप भिन्न २ भाषा की पुस्तकों की समालोचना कैसे कर सक्ते हैं ?

समा० (हंस कर) कुछ पूछो मत। हम लोग सभी भाषा जानते हैं:— संस्कृत, हिन्दी, मराठी, बंगला, उड़िया, टामिल, अंगरेज़ी, फ्रेञ्च लेटिन इत्यादि।

ग्रन्थः–आप को तब तो फिर इतनी भाषा जानने के लिये कोड़ियों वर्ष चाहिये।

समा० नहीं, नहीं, प्यारे ! हम एक २ महीने में एक २ भाषा सीख लेते हैं; दो महीने में अङ्गरेज़ी पढ़ लिया और आनर पाये हुये B. A. M. A. को भी हमने मात कर दिया। कोई पुस्तक समालोचनार्थ आई और वह भाषा यदि हम

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं जानते हैं तो झट लिख दिया कि आप की पुस्तक दो महीने बाद देखी जायगी। इस बीच में उस भाषा की पहिली किताबें ले लगे उसे पढ़ने। बस जहां कुछ थोड़ा बहुत पढ़ना आय कि लगे उस शामत के मारे लेखक को सज़ा चखाने; इसी प्रकार हम Jack of all trades, Master of none, हैं। हम में और एक यह गुण है; हम लोग बड़े खुशामदी होते हैं। अपने मित्रों की बड़ी खुशामद करते हैं। उन से लिखा २ कर यह बात पत्रों में छपाते हैं कि "अमुक महाराज संस्कृत, मराठी, गुजराती बंगाली के बड़े भारी पण्डित हैं। हिन्दी में तो इन के नाम का डंका ही बज रहा है, सच्चे समालोचक हैं। बड़े भारी कवि हैं" इत्यादि और कभी २ उनके नाम देकर हम स्वयं ऐसा लिखते हैं ताकि हमारी कीर्ति कौमुदी चारो ओर फैले। हम लोग बड़े कठोर हृदय के होते हैं क्रूरता हमारा एक प्रधान गुण है। मसखरापन तो हमारे नस२ में कूट कर भरा हुआ है। ग्रन्थकारों को ऐसे व्यङ्ग वचन बाण समान बींधते हैं कि पढ़ने वाले हमारी बाहवाह करने लगते हैं हम झूठों के बाप और ग्रन्थकारों के ताप हैं।

ग्रन्थ०—महाराज, यह सब बातें तो मालूम हुईं। पर आप इतने ज्ञानी मानी होकर क्यों असभ्यों की नाईं दीखते हैं ?

समा०—मै असभ्योंकी नाई क्यों रहता हूं इसका कारण तुम्हें सुनाता हूं सुनोः—

हमारे शत्रु संसार के चारो ओर फैले हुए हैं वे लोग मुझे अपने फन्दे में ला बदला चुकाने को जोहते रहते हैं। इसी लिये मैंने सब कपड़ा उतार कर बाल भी कटा डाले ताकि वे मुझे पकड़ें तो मैं उनसे लड़ सकूं और वे मेरे बाल तक भी न पकड़ सकें। तेल शरीर भर में इस लिये पोते हूं कि उन के हाथ मेरी देह से बिछल जांय और मार पीट कर सकुशल बच जाऊं। उन ग्रन्थकारों का जो हमारे मित्रों में से नहीं हैं इस हाथ के उपानह से उनका स्वागत करते हैं; खूब गालियां दे-दे कंटाप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी पूजा करते हैं। वे चाहे कैसे भी उद्भट विद्वान् क्यों न हों उन्हे सज़ा चखाते ही हैं। कुछ नहीं मिला तो भाव ही पर अथवा प्रूफ की अशुद्धियों को ले उन्हें मूर्ख बनाते हैं। और हमारे मित्र ग्रन्थकारों को दूसरे हाथ में जो अमृत से भरा कटोरा है उसे दे खूब अमृत पिलाते हैं। सुरेश गणेश से भी ऊंचे आसन पर बिठादेते हैं। झूठी प्रशंसा द्वारा उनकी कृपा जीतते हैं। उनकी कैसी भी भद्दी कविता हमें वह कालिदास की कविता के तुल्य विशुद्ध और सरस जंचती हैं। इस बड़ी आंख के बल हम हज़ारों पुस्तकों की समालोचना क्षण भर में कर डालते हैं। बस पेज उलटते गये चश्में के बल से केवल दोष ही देखते गये और लिख मारा; पेज की संख्या इतनी, ग्रंथकार अमुक, छपाई और कागज़ उत्तम, आकार ऐसा पर इसकी भाषा दोष रहित नहीं है ग्रंथकार को ब, व, श ष, स, का ज्ञान नही सन्धि तक उन्हें नहीं आती है।

कविता शायद किसी २ को न रुचे। खड़ी बोली और ब्रजभाषा की खिचड़ी हो गई है। कहीं २ यतिभंग दोष है इत्यादि इत्यादि। हम समय के बड़े पाबन्ध हैं इसी से 'रिस्टवाच' हाथ में बांधा गया है। जल्दी इस लिये चलते हैं कि हमें अनेक स्थानमें जाना पड़ता हैं और इस बूट से ज़मीन को ठोकर देते खटखटाते चलते हैं ताकि उस की आवाज़ से ग्रंथकार जान जांय महाराज जी आ रहें हैं और हमारे स्वागत को दौड़ें। मोछें इस लिये बांधी गई हैं कि कोई हमारी वय न जान सके। यह जो गट्ठा पीठ पर लदा हुआ है उस में हमारे प्रशंसा पत्र हैं जिन्हें सर्व साधारण को बता कर हम आदर पाते हैं। यही हमारी कहानी है।

ग्रन्थ० खूब कहा जी खूब कहा।

नहीं और कुछ बाकी रहा॥

लोचनप्रसाद पांडेय॥

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम पञ्चायतन ।

कबित्त ।

सुन्दर सुखद सनीर नीरद सी कान्ति सो है,
कमल दल शोभा को दलन नैन कीन्हे हैं ।
नासिका को नीकोपन देखि तिलपुष्प लाजैं
किरीट अरु कुण्डल मनु भानुतेज लीन्हें हैं ॥
गनराज, कमललोचन श्रीराम दरस लेन गए, ।
देखे अभिराम राम, भक्त सुख दीन्हैं हैं ।
पीत पटवारे अरु धनुष बान धारे प्रभु
शोभमान होइ सकल विश्व धन्य कीन्हे हैं ॥ १ ॥
व्रीड़ातें आनत ह्वै रह्यौ है मुखचन्द्र जाको,
मधुर चितवन सांचि जन मन हरि लेनी है ।
मङ्गल मुद देनी मृदु हास युत बैनी वह ।
रामा अरु रति को मनु गर्व हर लेनी है ॥
गनराज, अवधराज महाराज प्रिया देखि देखि ।
मन ही मन मुदित होय याहि जिय मानी है,
रामवाम अङ्क पै बिराजमान जनक सुता
सीयरूप मूर्तिमयी सुहाग ही की खानी है ॥ २ ॥
भरत जी से भ्रात बड़ भागिन हू के भए कहूं,
भ्रात चरण भक्ति अरु पूरन प्रेम पागे हैं ।
सहित महोदर कर सत्रुहन चमर धरे,
हरुए अति स्नेह भरे राम सिर ढारे हैं ॥
गनराज, उतै ठाढ़े हैं सुमित्रा के हिय सरोज,
रामपद सेवन करि उज्वल जस धारे हैं ।
वीर सू सुपूतप्यारे, बनवास साथ देन वारे;
बन्धुहित करनहारे, सो मोर पिच्छधारे हैं ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमितबल, अजातशत्रु, अतिविनीत भाव भरो,
अञ्जनि को अमरपूत कर जुगल बांध्यो है ।
असुरन के सासन हेत लङ्का सी उजारी जिन,
राम काज माथ धरि रत्नाकर लांघ्यो है ॥
गनराज, स्वामिकाज हेत चन्दन सो छीज छीज,
निज परिवार सहित सेतु बन्धबांध्यो है ।
मनोवेगवारो, बुद्धिमत सिरधारो वही,
राम अरु सुग्रीव प्रीति सन्धि जिन सांध्यो है ॥ ४ ॥
अहा ! श्रीरामचरन सोभा कही जात नहीं,
अरुनहुं की आभा अलि फीकी करन हारे हैं ।
दरसन तें सकल दुरित दारुनहूं दलित होत,
सुमिरन तें नाम निज धाम देन वारे हैं ॥
गनराज, महाराज श्रीरघुराज चरन विलसैं तहं
सन्त भक्त भृङ्गन के वृन्द रमन हारे हैं ।
रघुवंश के दुलारे, अति पुनीत चरित वारे वही
मुनिमख रखवारे, श्रीराम जी पधारे हैं ॥ ५ ॥

गणपत जानकीराम दुबे । ग्वालियर.

--:o:--

दुनियां दिन २ तरक्की करती जाती है ।

सरस्वती के सुयोग्यतम सम्पादक ने सरस्वती के इस बार के अंक में विकाश सिद्धान्त Evolution theory पर एक लेख प्रकाशित किया है जिस में उक्त संपादक ने यूरोप के आधुनिक वैज्ञानिकों का विकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सम्बन्ध में क्या मत है और कैसे विकाश का आरम्भ हुआ यह सब बहुत अच्छी तरह दरसाया है। यह विकाश ही की महिमा और विस्तार है कि दुनिया दिन २ तरक्की करती जाती है। सौ वर्ष पहिले जो बात कभी किसी के खयाल में भी न आई थी अब प्रत्यक्ष है एक २ आदमी में फैली है और सब लोग उस का फायदा उठा रहे हैं। तिस में भी बीती हुई उन्नीसवीं शताब्दी तो मानो वैज्ञानिक उन्नति की सीमा हो गई। दर्शन या विज्ञान का जो नया सिद्धान्त या उसूल ईजाद होता है वह अटल रहता है जिस भूमि में उस का आविर्भाव हुआ वहां से चाहो उस का लोप हो जाय पर एक जगह से उखाड़ दूसरे ठौर लगाये गये नये पौधों की भांत दूसरी भूमि में उस का फैलाव बड़े विस्तार से होता जाता है। रेखा गणित के परमाचार्य युल्कैदिस यूनान या मिसिर देश में न जानिये कब हुये किन्तु उन के निकाले हुये युक्लिद के सिद्धान्त अब तक कायम हैं और उन सिद्धान्तों को मूल में रख गणित के त्रिकोण मिती आदि नजानिये कितने ग्रन्थ और भी बने। इसी तरह किसी नये सिद्धान्त का आविष्कार आविष्कर्ता पहिले बीज बोने के समान करता है पीछे विचार शील विद्वान् उस बीज को अंकुरित और पल्लवित करते हुये संसार का बड़ा उपकार साधन करते हैं। किन्तु सम्पूर्ण करतूत उस विषय की उस प्रथमाविष्कार कर्ता की रहती है इस लिये विशेष धन्य बाद का पात्र वही होता है। बहुधा पहिले पहिल किसी नये सिद्धान्त का आविष्कार करने वाला लोगों में हंसा जाता है; सबलोग उस की ज़ीट उड़ाते हैं; उस से घिनाते हैं; यहां तक कि कभी २ ऐसा मनुष्य पीटा गया है कहां तक कहें लोगों ने उसे मार डाला है। पर वह अपने अटल सिद्धान्त से न हट अन्त को कृत कार्य होता है और उस के आविष्कार से संसार का बड़ा उपकार होता है। न्यूटन गेलिलियो जेम्सवाट आर्किमिडीज़ आदि कितने ऐसे हो गये हैं जिन के आविष्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से संसार का कायापलट गया दुनिया और की और ही हो गई। यद्यपि पुराने लोग यही गीत गा रहे हैं कि पहिले की अपेक्षा अब घटाव और तनज्जुली है। हिन्दुस्तान ऐसे पुराने जर्जरित देश की जैसी गिरी दशा है उसका खयाल कर जी में आता है कदाचित् उनका यह कहना सही हो पर इस समय के नये २ विद्वानों के नये २ आविष्कार और कल्पना पर ध्यान जमाओ तो यही बात पुष्ट पड़ती है कि साधारण रीति पर ज्ञान का भण्डार बढ़ताही जा रहा है और नहीं मालूम किस सीमा तक बढ़ैगा ॥

जब यह बात सिद्ध है कि दुनिया रोज़ २तरक्की कर रही है तो जैसा डारविन ने विकाश सिद्धान्त निकाला है वैसाही कोई दूसरा बड़ा वैज्ञानिक और पैदा हो वह कोई दूसरी "थिओरी" निकाले जिस से यह सिद्धान्त कट जाय या और अधिक पुष्ट पड़ जाय पर यह संसार एक ढङ्ग पर ढल-कता हुआ जो उन्नति कर रहा है उस में त्रुटि न होगी और आशा है कि मनुष्य की ज्ञान शक्ति बढ़ती ही जायगी। चिरस्थायी हो जाने की सुगम उपाय छापा न रहने से बहुत से पुराने आविष्कार विलुप्त प्राय हो गये हैं पर इस से हमारा तरक्की वाला सिद्धान्त कट नहीं सक्ता यह वैसा ही हुआ कि जैसा कोई दस सीढ़ी वाले मकान पर चढ़ता हुआ ५ सीढ़ी डाकने पर कोई ऐसा रूकाव मिला कि वहां उसे चिरकाल तक ठहरना पड़ा या मान लो एक सीढ़ी नीचे गिर गया पर वहां वह सम्हल कर फिर ऊपर चढ़ने का उद्योग करने लगा। हिन्दुस्तान की इस समय ठीक ऐसी ही दशा है। तालीम का असर लोगों पर इतना व्यापा है कि अपना गिरना उन्हे मालूम होने लगा है और अपने पुराने स्थान पर पहुंचने को तन मन से उत्सुक हो रहे हैं। अब बहुधा सामाजिक बिवाद इस बात का है कि पुराने क्रम के अनुसार उस पद पर पहुंचना सुगम और अच्छा होगा कि नये ढङ्ग और नये आविष्कारों के द्वारा? जो हो पर यह सर्वथा सिद्ध है कि दुनिया दिन २ तरक्की कर रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तरक्की की दौड़ में निःसन्देह हम और २ देश तथा जाति से पीछे पड़े रहते हैं और इतना पीछे रह जाते हैं जो तरक्की न करने की भांति है। उसका आर्थिक फाइदा और लोग खातिर खाह उठा लेते हैं तब हमारा ध्यान उस ओर जाता है पर मसल है "देर आये दुरुस्त आये" तरक्की की दौड़ में पीछे तो हैं किन्तु जहां तक बढ़े हैं उस से अब पीछे न हटेंगे यह निश्चय है। क्या अचरज एक दिन ऐसा आवै कि इन दिनों की परम सभ्य जाति के समकक्ष हो केवल झूठे उपाधि वाले नहीं वरन भारत के सच्चे चमकीले तारे हो हम भी उन्नति के आकाश मण्डल मे चमक उठैं ॥

--:o:--

॥ चार ॥

काशी के भारतेन्दु तथा प्रदीप में एक और दो की गाथा देख जगत के चतुर्भुजी रूप नारायण शर्म्मा मुस्तफापूर ज़िलह पटना ने भारतजीवन में तीन पांच कर तीन की मर्यादा केवल तीन ही जन्म की रक्खा है अब हम चार की महिमा गाते हैं। सावन से भादों दुबला नहीं है इस चार की गाथा चारयुग (सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) तक बराबर चतुर्मुख ब्रह्मा अपने चार मुख से गाने लगैं तो अन्त में हार मान उन को भी लाचार हो जाना पड़ेगा चलिये लीजिये इस चार पर विचार करिये।

पहिले इस संसार की चारो दिशाओं तथा चारो उपदिशाओं की ओर ताकिये जहां गणना में चारही चार पाइयेगा। लड़का पैदा हुआ नहीं कि चारो तरफ इस चराचर के भव जाल से छुटकारा पाने का कोई चारा न देख रोने लगता है अथवा माये की चौखुटी तख्ती में विधिना के ढाई अक्षर पर विचार कर सन्ना जाता है। इस चार के बटवारे में ब्राह्मण ही नें चारो वर्णों में अपना बर्ण श्रेष्ठ रक्खा; जिसे देख नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के वर्ण वाले हसद से जले जाते हैं। चार वरण के साथ २ चार आश्रम भी पीछे लगे हुये हैं। चार वेद में नहीं मालूम कितने चार २ मंत्र के सूक्त घुसे हुये हैं। चतुष्पदों में सिंह को नारायण ने अपनाही रूपमाना है फिर चार पैर वालों में गौ की रक्षा करना धर्म्म की चार टांगों में मुख्य एक टांग मानना चाहिये ॥

दशरथ जी के चारो पुत्रों को देख शत्रु की चतुरङ्गिणी सेना थर कर चारो कोने दबक जाती थी। दुनियां में चार ही मज़हब की अधिक ख्याति है:--हिन्दू; मुसलमान; बौद्ध और ईसाई। मनु महाराज ने पातको मे चार पातक को महापातक कहा है:—यथा। ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः और इन चारों का सरताज वह है जो इन चारो में से किसी एक का साथ करै। आजकल पुराने ख्याल वालों में जो चारो धाम क्या हो आये मानो चारो अपवर्ग धर्म्म (अर्थ) काम और मोक्ष को पागये हों चाहो कर्म्म उन के कैसे ही निकृष्ट क्यों न हों। University में लड़कों के कोर्स में चारही Subject का बोझ लाद दिया जाता है। महीने में चार हफ़्ते से ज़ादा भला एक दिन भी तो हो ले। एक वर्ष अपने चार तिहाई में बंटा हुआ है। भोजन में चारही बस्तु अधिक तर रक्खी गई है दाल भात रोटी और तरकारी। वैष्णव लोगों ने भगवान् का चतुर्व्यूह रूप माना है यथा वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न और अनिरुद्ध नीति में भी चार मुख्य मानी गई हैं जैसे राजनीति, धर्मनीति, समाज नीति, चौथी अनीति। राजा का राजनीति में मुख्य काम चार (दूत) से ही निकलता है राजा इसी से चार चक्षु कहे जाते हैं। मनुष्य अपनी भलाई चाहै तो सदाचार, अनाचार, दुराचार, अत्याचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार के इन चारों में से सदाचार को ग्रहण करै और दुराचार अनाचार अत्याचार को कोढ़ समान अपने से अलग करै किसी नीतिज्ञ ने कहा है:—

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्व मविवेकिता ।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥

चतुर्भुज विष्णु के चार भुजाओं में चार शस्त्र हैं शंख चक्र गदा पद्म विषणु के चारोयुगों में चार रूप बदलते हैं। और भी महाराज के रथ के चार घोड़े प्रसिद्ध हैं शैब्य, सुग्रीव मेघपुष्प बलाहक़ इस संसार में भी ऐसा ही कोई भाग्यशाली होता है जिस को चौकड़ी की सवारी मिलती है। सृष्टि कर्ता ने सृष्टि भी चार ही प्रकार की रचा है अण्डज, स्वेदज, पिण्डज, उद्भिज्ज, सायन्स वालों ने हवा में चार बस्तु को मुख्य माना है Oxygen, Nitrogen, Hydrogen andCarbonic acidgas उर्दू के किस्से में चहार दरवेश किस ने न पढ़ा होगा इस प्रयाग में बड़े २ दफ़्तरों की चार कोने में चार ईमारतों High Court, Secreteriate, Accountant and Board. को देख किस नौकरी ख्वांहां का जी न ललकता होगा कि मुझे भी यहां की नौकरी मिलै। कामशास्त्र में स्त्रियां भी चार ही प्रकार की मानी गई हैं पद्मिनी शंखिनी चित्रिणी हस्तिनी इन ४ स्त्रियों के जोड़ के नर भी ४ ही हैं। गीता में ४ ही को ईश्वर के भजन का अधिकारी माना है। "आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीच भारतवर्षभ" इस चार में उकार की मात्रा जोड़ दो तो चारू (मन भावन) बन जाता है। अस्तु इस चार की गीत बहुत गा चुके इस टिमटिमाते प्रदीप की ज्योति को भी जुग जुगाते ४ सते २८ वर्ष हो गये। जितनाही सोचते जाइये छितराये हुये चिड़ियों के चारे की भांत चार ही का विस्तार पाते जाओगे कहां तक कहे याद रहे इस क्षणिक नश्वर संसार से कूच करने पर भी ४ के कन्धे पर चढ़ के जाना होगा। M. P.

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल में कांटा

लश्कर ग्वालियर निवासी बाबू रामदास वैश्य रचित। इस उपन्यास में वाल्य बिवाह आदि समाज में प्रचलित बुराइयों का अच्छा चित्र खींचा गया है जिस से यह पढ़ने मे रोचक हो गया है। उपन्यास यह अवश्य शिक्षा प्रद है और संग्रह करने योग्य है मूल्य ॥=) है।

मिलने का पता रामदास जी वैश्य लश्कर ग्वालियर।

—:०:—

सौ अजान एक सुजान।

यह एक निराले ढङ्ग की प्रवन्ध कल्पना प्रदीप की पुरानी जिल्दों से छांट अलग छपाई गई है। जिस के सम्बन्ध में साप्ताहिक तथा मासिक सवी सामयिक पत्रों ने अपनी २ अनुमति प्रगट की है और सवों ने इस की प्रशंसा की है। जिसे हम यथा स्थान और यथावकाश प्रदीप में प्रकाशित करैंगे। हिन्दी पढ़ने वालों को यह अवश्य मेव बहुत रोचक है। मूल्य मैं डाक व्यय ॥) प्रदीप के ग्राहक नागरी प्रचारिणी सभा के मेम्बर तथा असमर्थ विद्यार्थियों को यह पुस्तक डाक व्यय सहित ।=) में मिलैगी। मिलने का पता—

मेनेजर हिन्दी प्रदीप प्रयाग

—:०:—

बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन।

इस साबुन के मलते ही सुफेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं। एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफी है। मूल्य प्रति टिकिया १) रुपैया।

इस ने दुनियां के ख़िजाबों (कल्फों) की कदर घटा दी।

केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गेरेंटी ३ साल मुफ़ मिलेगी॥

मिलने का पताः—

मेनेजर हेअर डाई सोप कम्पनी—लाहौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा—

Always get the Emulsion with this mark —the Fishman—the mark of the "Scott" process.

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिम्टिड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट-लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जि० २८ सं० १०	प्रयाग	अक्टबर सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार
पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से
यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ सं० १० } प्रयाग { अक्टूबर सन् १९०६ ई०

प्रतिभा ।

प्रतिभा बुद्धि का वह गुण और मनुष्य में वह शक्ति है जो स्वाभाविक होती है और अभ्यास से अधिक २ बढ़ती जाती है । काव्य रचना इस की कसौटी है। यह कहना कि बिना प्रतिभा के कबि हो ही गा नहीं सर्वथा सुसङ्गत है । ऐसा मनुष्य अभ्यास के बल दो चार पद गढ़ लेगा किन्तु प्रतिभा न होने से वह निरी गढ़न्त रहेगी रस उस में कहीं से न टपकैगा । "काव्यं रसात्मकं वाक्यम्" मम्मट भट्ट का काव्य का यह लक्षण न उस गढ़न्त में सुघटित होगा । इस प्रतिभा में भी तारतम्य है । कालिदास में जैसी प्रतिभा थी वैसी भवभूति भारवि और श्रीहर्ष में न थी; सूर तुलसी बिहारी में जो प्रतिभा रही वह केशव मतिराम भूषण और पद्माकर में न थी । शेक्सपियर और मिल्टन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान प्रतिभा अंगरेज़ी के और कबियों में कहां है। आधुनिक कबि टेनिसन की रचना चाहो अधिक गम्भीर और शिक्षा प्रद Instructive हो पर वह रस इन के काव्य में नहीं टपकता जैसा शेक्सपियर की रचना में है। अस्तु प्रत्येक कवि की प्रतिभा का तारतम्य एक जुदा विषय है जिसे हम कभी अलग दिखावेंगे आज केवल प्रतिभा का स्वरूप मात्र दिखलाने का हमारा प्रयत्न है। फिर भी इतना यहां सूचित किये देते हैं कि प्रतिभा का प्रसादगुण के साथ बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। कालिदास की प्रतिभा जो सब से अधिक मानी गई सो इसी लिये कि उन की रचना प्रसाद गुण पूर्ण है। जो दाखरस के तुल्य है कि स्वाद में मिसरी से अधिक मीठा मुख के किसी अवयव को ज़रा भी क्लेश न हो जीभ पर रक्खा नहीं कि घूंटगये। और कबियों की रचना में चाहो रस हो भी तो पद और भाव इतने क्लिष्ट कि बिना थोड़ी देर सोचने के रस नहीं मिलता॥

प्रतिभा केवल कबिता ही में नहीं वरन कितनी बातें हैं जिस में यह अपना दखल जमाये हुये है। यह प्रतिभा ही है कि यहां के अपढ़ लुहार बढ़ई ऐसी २ कल और पुरज़े बना देते हैं कि उनकी बुद्धि कौशल पर बिलाइत के बड़े २ इंजिनियर और आरटिस्ट दंग हो जाते हैं। यहां के प्रसिद्ध चित्रकार रविवर्मा में चित्रकारी की अद्भुत शक्ति प्रतिभाही का परिणाम है। रोम के प्रसिद्ध विजयी कई एक सीज़र्स, सिसिरो हानिवाल, नेपोलियन बोनापार्ट, रणजीतसिंह आदि सब प्रतिभा शाली थे और उन की प्रतिभा युद्ध कौशल की थी। बुद्ध देव, शङ्कर रामानुज गुरु नानक स्वामी दयानन्द ईसा और महम्मद आदि सब प्रतिभा वाले महा पुरुष थे और इन की प्रतिभा नया २ धर्म चलाने की थी। बहुधा ऐसा भी देखा जाता है कि यह प्रतिभा बराबर वंश परम्परा तक आती गई है। हमारे यहां जो एक २ पेशेवालों की अलग २ एक २ जाति कायम कर दी गई है उसका यही हेतु है कि उस जाति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य में उस पेशे की प्रतिभा बराबर दौड़ती आती है। किसी २ में पूर्ण रीति से झलक उठती है। और उतने अंश में यत्किंचित् विच्छित्ति विशेष प्रतिभा ही कही जायगी। मनुष्य में प्रतिभा का होना पुनर्जन्म का बड़ा पक्का सबूत है। क्या कारण कि एकही शिक्षक दो बालकों को पढ़ाता है एक को प्रतिभा विशेष रहने से वह बात जो गुरु बतलाता जल्द आती है और उस विद्या में वह विशेष चमकता है। दूसरे को गुरु का बतलाना आताही नहीं आया भी तो देर में और अधिक परिश्रम के उपरान्त। तो निश्चय हुआ कि एक को पूर्व संस्कार जो अब प्रतिभा के नाम से बदल गया है स्वच्छ और विमल था दूसरे का मलिन था इसी से प्रतिभा उसमें न आई। "आल्पायासं महत्फलम्" परिश्रम थोड़ा फल बहुत अधिक यह प्रतिभा ही में पाया जाता है। छात्र सन्सद में बहुत ऐसे पाये जाते हैं जो थोड़े परिश्रम में बड़े दार्शनिक पण्डित और कवि हो गये। वही कितने घोख २ कर थक जाते हैं पर अन्तःपात या बोध उन्हे यथावत् नहीं होता। गीता में भगवद् विभूति को गिनाते २ भगवान् ने कहा। हे अर्जुन अब हम कहां तक तुम से अपनी विभूति गिनाते रहैं जिस मनुष्य में कोई बात असाधारण और लोकोत्तर पाओ उसे भगवद् विभूति ही मानो। यह लोकोत्तर चमत्कार प्रतिभा ही है जिसे कृष्ण भगवान् ने अपनी विभूति कहा है। धन्य हैं वे जिन में किसी तरह की प्रतिभा है सफल जन्म उन्ही का है॥

--:0:--

सुशिक्षितों का कर्त्तव्य।

हमने जुलाई के नंबर में शिष्य की परख शीर्षक एक लेख लिखा था आज यह दिखाते हैं कि शिष्य का कर्त्तव्य क्या है और किस तरह यह कर्त्तव्य बुद्धि आवै। इस समय स्कूल और कालिजों में जो शिक्षा दी जाती है उस में कहां तक इसका अंकुर है। उस लेख में हमने यह भी दिखलाया है कि उस समय छात्रों में कैसी दृढ़ गुरु भक्ति गुरु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा शान्ति और सहन शीलता थी। विद्या पढ़ाने के अतिरिक्त गुरू अपने शिष्य को यह भी बतलाता था कि चरित्र क्या है? चरित्र पालन क्या है? और वह कैसे आ सक्ता है। न केवल बतलाता ही था वरन उसका अभ्यास उन से कराता था। जिस का परिणाम यही होता था कि जब वह स्नातक अर्थात् पूर्ण विद्वान् हो अपना ब्रह्मचर्य समाप्त कर आश्रम से लौट समाज में आता था तो अत्यन्त स्वाधीन चित्त, तेजस्वी, और अपने कर्त्तव्य को पहचानने वाला होता था। गुरु भी ज्ञान संपन्न निस्पृह परोपकारी और निष्कपट होते थे बड़े २ चक्रवर्ती जब उनके राज काज में कोई कठिनाई पड़ती थी तो इन्हीं से उस कठिनाई को हल करने की सलाह पूछते थे। अब इस समय विद्या तो निःसन्देह पढ़ाई जाती है पर चरित्र की रक्षा का ध्यान जब गुरु में नहीं है तब शिष्य में क्यों होने लगा। अङ्गरेज़ी पढ़ने वालों के चित्त में स्वाधीनता का अंकुर जमता है पर वह अंकुर तभी तक जमा रहता है जब तक अपनी शिक्षा समाप्त कर नोन तेल लकड़ी की फिकिर में हम नहीं फंसे। अस्तु यह दोष तो हमारी घिनौनी समाज का है शिक्षा प्रणाली ने क्या किया? हां यह सच है किन्तु तब की शिक्षा प्रणाली निःस्वार्थ थी अब के समान उसका क्रय नहीं किया जाता था; गुरू लोग बिना निज के स्वार्थ के शिष्य को पढ़ाते थे इसी से शिष्य भी निष्कपट और सच्चे जी से गुरु की भक्ति करता था। अब शिक्षा का क्रय किया जाता है जिस में ऐसा स्वार्थ आ समाया है कि गुरु शिष्य दोनों में सच्ची सहानुभूति होती ही नहीं। न वह तेजस्विता या जोश और स्वाधीनता उनके चित्त में स्थान पाती है जैसी सुशिक्षित में होनी चाहिये। इधर समाज के अनेक बंधन से हम जकड़े हुये हैं उधर हमारी शिक्षा में इस बात की बड़ी कोशिश शिक्षा विभाग के अधिकारियों की रहती है कि इनमें कहीं पर किसी अंश में स्वाधीनता का बीज न जमने पावे। परिणाम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह शिक्षा केवल पेट पालने मात्र के लिये रहती है। पढ़ लिख ऊंची तनखाह की कोई अच्छी नौकरी मिल जाना ही उत्तम शिक्षा का जहां फल समझा गया है वहां हमारा कर्तव्य क्या है इसकी चर्चा ही चलाना व्यर्थ है। देश अपने उद्धार के लिये इन्हीं सुशिक्षित नव युवकों का मुह ताक रहा है। कितने का यह मत और समझौता है कि पढ़ लिख सुशिक्षित हो हम अपने घराने की बात और प्रतिष्ठा बनाये रहें मानो अपने यावत् कर्तव्य के छोर तक पहुंच गये। किन्तु जो भाव उन को केवल अपने घराने की उन्नति का है वही जो समस्त भारत के साथ हो जाय और उस के खोये हुये गौरव के पुनः संस्थापन की ओर झुक जाय तो कर्त्तव्य बुद्धि का प्रादुर्भाव माना जायगा। जिस के लिये शिक्षा का इस समय का क्रय विक्रय का क्रम बड़ा बाधक है। जब स्कूल में लड़के रहते हैं तभी से स्वार्थ संपादन Self iuterest की बुद्धि दृढ़ होती जाती है। इस लिये कि हमारी तालीम में इतना रुपया ख़र्च हुआ है तो उसका बदला हम अपने घर वालों को तभी चुका सकेंगे जब नौकर हो रूपया पैदा कर मा बाप का हाथ गरम कर सकेंगे। केवल इतनाही इसका फल है तो कर्तव्य क्या है केवल दांत किट्टन मात्र रहा। यही कारण है कि इस समय देश के एक छोर से दूसरे तक तालीम की धारा बह निकलने पर भी सैकड़ा पीछे ५ में भी कर्तव्य बुद्धि नहीं आती और न ऐसी शिक्षा सुशिक्षा कही जा सक्ती है॥

--:o:--

प्राचीन ग्रन्थकार पहले के आगे से।

भानु दत्त मिश्र॥

'रस मञ्जरी' नामक ग्रन्थ भानु मिश्र कृत छप गया है जिस में कई एक श्लोक और २ ग्रन्थकार के भी उद्धृत देखने में आते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे ग्रंथ अमरु शतक, शिशुपाल बध और बिकट नितम्बा आदि के हैं। अमरु, माघ और विकट नितम्बा आदि सब प्राचीन कवि हैं। अदिव्य नायक और अदिव्या नायिका का उदाहरण देते समय भानुदत्त ने माधव और मालती नाम लिखे हैं जिस से विदित होता है कि भवभूति का मालती माधव उन के समय में प्रचलित था। रस मञ्जरी के अन्त में भानुदत्त ने अपना परिचय यों दिया है॥

इनके पिता का नाम गणेश्वर था। इनकी निवास भूमि मिथिला (तिरहुत) थी॥ रस मञ्जरी के अतिरिक्त और भी कई एक ग्रन्थ इनके बनाये हैं जिन के नाम कुमार भार्गवीय चम्पू, रस तरङ्गिणी और गीत गौरीपति काव्य हैं।

भानुदत्त के रस मञ्जरी रचने के विषय में एक दन्त कथा सुनने में आती है वह यह है।

पण्डित भानुदत्त अपने पुत्र का विबाह करा के भी उसे विद्याध्ययन ही कराते जाते थे वह साधु पुत्र नहीं जानता था कि पत्नी के साथ मेरा सांसारिक कर्त्तव्य क्या है। वह केवल शास्त्रीय विचार में दत्त चित्त था। उसकी स्त्री तरुणी हो आई थी। किसी दिन वह स्त्री गृहाङ्गण में गृहस्थी का धन्धा कर रही थी कि एक बकरा उसके पीठ पर पांव धर के खड़ा हो गया। भानुदत्त की पतोहू ने उस समय परिहास में कुछ बचन कहे जिन्हें कवि आनन्द घन ने यों लिखा है।

जैहै सबै सुधि भूलि तुम्हें फिर भूलि न मोतन भूरि चितै है।
एक को आंक बनावत मेंटत पोथिय कांख लिये दिन जैहै॥
सांची हौ भाषति मोहि कका की सौं पीतम की गति तेरीहू ह्वै है।
मोसों कहा अठिलात अजासुत कैहौं बबाजू सें तोहिं सिखै हैं॥

पं० भानुदत्त उस समय वहीं पर थे किन्तु पतोहू को यह बात विदित न थी। निदान पण्डित जी ने रस मञ्जरी नाम पुस्तक बना के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र को पढ़ाया। तब पुत्र ने संसार को जाना और अपनी पत्नी के मनोरथ को पूर्ण किया।

जनार्दनभट्ट ने निज रचित ग्रन्थ में रस मञ्जरी का उल्लेख किया है जिस से स्पष्ट है कि उनके समय में भानुदत्त प्रसिद्ध हो चुके थे। कवि आनन्दघन भी प्रायः १८ वीं शताब्दी के हैं अतएव भानुदत्त इन लोगों की अपेक्षा प्राचीन और माघ आदि की अपेक्षा नवीन हैं। इनका समय खीष्टीय १४ वीं शताब्दी का पूर्व भाग मान लेना सर्वथा युक्ति से असङ्गत नहीं है। इन के दो ग्रन्थ रस मञ्जरी और रस तरङ्गिणी अद्भुत चमत्कारी दरसाते हैं उसमें भी रस तरङ्गिणी तो काव्य प्रकाश आदि के टक्कर का ग्रन्थ है। भानुदत्त ने इन दो ग्रन्थों को रच संस्कृत साहित्य के भण्डार में एक नये प्रकार का चमत्कार प्रगट कर दिया। इसका यथावत् ज्ञान और अनुभाव विभाव आदि की बारीकियों का यथास्थित परिचय एक शास्त्र कर दिया है। ऐसा ही नायिका नायक का निरूपण रस मञ्जरी में जैसा है उस से प्रौढ़ा मध्या धीरा ज्ञात यौवना अज्ञात यौवना खण्डिता मुग्धा बासक सज्जा आदि के भेद से नायिका भेद भी एक जुदा शास्त्र हो गया है कोकिल कण्ठ जय देव का गीत गोविन्द पढ़ने से जिस की वारीकियां प्रगट होती हैं॥

:०:

भाव मिश्र।

ये महाशय एक प्रसिद्ध वैद्यक ग्रंथ के रचयिता हैं। उस ग्रन्थ का नाम भाव प्रकाश है। इस ग्रंथ पर इन्हीं महाशय ने टीका भी की है। भाव मिश्र के समय और देश के विषय में मथुरा निवासी श्रीकृष्ण लाल ने अपनी छपाई चरक संहिता की भूमिका में लिखा है। "यह सन् १५५० ई० में मध्य प्रदेश में उत्पन्न हुआ था"। भाव मिश्र के पिता का नाम श्री मल्लटकन मिश्र था। भाव मिश्र का भाव प्रकाश नाम ग्रन्थ बहुत उपयोगी है और वैद्यों के बीच में उस का सविशेष आदर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णलाल भी आगे चल के लिखते हैं। "भाव प्रकाश में पृथक् २ विषयों की छांट करके सब विषय एक जगह इकट्ठे किये गये हैं जो विषय जहां चाहिये वहां ही पूर्ण रीति से लिख दिया है उस विषय के लिये अन्यत्र दौड़ने का काम नहीं पड़ता है। भाव मिश्र के समय में यूरोप के लोग यहां आने जाने लग गये थे इस से इन के ग्रन्थ में फरङ्ग रोग का भी वर्णन किया गया है। भावमिश्र ने भी अपने भाव प्रकाश में निघण्टु लिखा है यही हरीतक्यादि निघण्टु कहाता है। इस में द्रव्यों के नामान्तर और गुण लिखे हैं। इस ग्रन्थकार के समय में मुसल्मानों का पूर्ण प्रताप विद्यमान था और हकीमों की चिकित्सा प्रचलित थी इस से उन के द्रव्य भी जैसे खुरासानी अजवायन खुरासानी बच आदि मिला दिये गये हैं" ॥

—:o:—

भास ॥

ये महाशय एक अत्यन्त प्राचीन कवि जान पड़ते हैं क्योंकि मालविकाग्निमित्र की प्रस्तावना में कालिदास इन का नामोल्लेखन कर प्रगट कर दिया कि उस समय इनका यश संसार में व्याप्त था। इसी वाक्य से यह भी अनुमित होता है कि भास के बनाये ग्रन्थ कालिदास आदि के समय में प्रचलित थे। बाण ने भी हर्ष चरित के प्रारम्भ में भास का उल्लेख किया है यथा ॥

सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः।
सपताकैर्यशो लेभे भासो देवकुलैरिव ॥

राज शेखर ने भी अपने ग्रंथ में जो प्राचीन कवियों की नामावली दी है उस में भास का नाम सब से पहिले है। भास के रचित ग्रन्थों के अब नाम तक नहीं मिलते पर कुछ श्लोक शार्ङ्गधर पद्धति में उन के रचे उठाये गये हैं इन्हें पढ़ने से भास की कविता शक्ति का परिचय मिलता है यथा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपाले मार्जारः पय इति करांल्लेढ़ि शशिनः ।
स्तरुच्छिद्रप्रोतान्बिसमिति करी सङ्कलयति ॥
रतान्ते तल्पस्थान्हरति वनिताप्यंशुकमिति ।
प्रभामत्तश्चन्द्रो जगदिदमहो विभ्रमयति ॥
यदपिविबुधैः सिन्धोरन्तः कथञ्चिदुपार्जितं ।
तदपि सकलं चारुस्त्रीणांमुखेषु विलोक्यते ॥
सुरसुमनसः श्वासामोदे शशीच कपोलयो ।
रमृत मधरे तिर्यग्भूते विषंच विलोचने ॥

प्रसन्न राघव में कौण्डिन्य जयदेव ने भी इन का नाम दिया है।
"भासोहासःकविकुलगुरूः कालिदासो विलासः"

भास्कराचार्य।

ये एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। उज्जैन के ज्योतिषियों ने हण्टर साहिब को वहां के प्राचीन ज्योतिषियों के समय का एक सूची पत्र दिया था उस में भास्कर का भी नाम आया है और उन का समय १०७२ साल अर्थात् सन् ९९४ ई० लिखा है। निदान खीष्टीय १० वीं शताब्दी इनका समय निर्णीत होता है। इनका रचित सिद्धान्त शिरोमणि नाम का ग्रंथ सविशेष प्रसिद्ध है और भी कई एक ग्रन्थ भास्कर के बनाये हैं यथा लीलावती बीज गणिताध्याय इत्यादि।

पण्डित सुधाकर जी ने निज रचित गणकतरङ्गिणी में भास्कर का जन्म स्थान सह्य पर्वत का बीजापुर नाम ग्राम बतलाया है। ये शांडिल्य गोत्रोत्पन्न हैं इन के पिता का नाम महेश्वर था ऐसा भास्कर ने निज रचित बीज गणित मे लिखा भी है। कुछ लोग भास्कर की पत्नी का नाम लीलावती बतलाते हैं। किसी २ के मत में भास्कर की कन्या का नाम लीलावती था। इन का जन्म सन् ९५८ ई० में हुआ था॥

--:0:--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजराज (१)।

हरिमोहन प्रामाणिक के कथनानुसार ये वृद्ध भोजराज हैं। ये कर्णाट देश के राजा थे और प्रसिद्ध प्रमरवंशी विक्रमादित्य के थोड़े ही पीछे इनका उदय हुआ था। कई एक संस्कृत के प्रसिद्ध कबि इनकी सभा में थे जिस में बररुचि, सुबन्धु, बाण, मयूर, कबिराज; कालिदास माघ, आदि भी हैं पर इस बात की सत्यता सिद्ध करने में बड़ी बाधाएं पड़ती हैं। यद्यपि वररुचि, सुबन्धु, कालिदास आदि विक्रम के पीछे वृद्ध भोजराज की सभा में उपस्थित हो सकते हैं पर बाण, मयूर, कबिराज और माघ का इनकी सभा में उपस्थित होना नितान्त असम्भव है। कालिदास ने महापद्य नाम स्वरचित पुस्तक में वृद्ध भोजराज की सभा में अपने प्रवेश का वर्णन लिखा है और उसी से विदित होता है कि ये वृद्ध भोजराज कर्णाट देश के राजा थे। ये अन्ध्र वंशी राजा और प्रमरवंशी राजपूत थे। विक्रमादित्य के लगभग ५० वर्ष पीछे इनका उदय हुआ। अतएव इनका समय ख्रीष्टीय छठी शताब्दी का अन्तिम भाग स्वीकार किया जा सकता है। राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द इतिहास तिमिर नाशक के तीसरे भाग में लिखते हैं। प्रसिद्ध धारापति भोज के अतिरिक्त, भोज नाम के दो राजा और भी हुए हैं एक सन् ५६७ ई० और दूसरा सन् ६६५ ई० में। निदान यह अनुमान चित्त में धसता है कि ५६७ ई० वाले भोजराज कर्णाटक के वृद्ध भोजराज ही होंगे। ये महाराज गुणी जनो का बड़ा आदर करते थे और इनके रचित ग्रन्थ का नाम चम्पू रामायण है।

भोजराज (२)।

ये महाशय मालवाधीश प्रसिद्ध भोजराज हैं इनकी राजधानी धारा नगरी थी जो आज कल मालवा की धार नामक छोटी रियासत में गिनी जाती है। भलाई सुशासन और बिद्वानों की कदर करने में बहुधा लोग भोज और विक्रम की उपमा देते हैं; उपमा के योग्य भोज यही हैं। भारत में विक्रम के अनन्तर इन्ही भोजराज की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसिद्धि है। ये परम् विद्वान् और गुण गृहीता थे। इनके रचित ग्रन्थों के नाम सरस्वती कण्ठाभरण रसकौमुदी और युक्ति कल्पनाद्रुम आदि हैं। सरस्वतीकंठाभरण में विशाख दत्त विरचित मुद्राराक्षस से दो श्लोक उद्धृत देख पड़ते हैं जिस से भोज विशाख दत्त से पिछले सिद्ध होते हैं। मम्मट ने काव्य प्रकाश में एक श्लोक भोजराज के दान की प्रशंसा का उठाया है यथा।

मुक्ताःकेलिविसूत्र हारगलिता सम्मार्जनीभिर्हृताः।
प्रातः प्राङ्गणसीम्निमन्थरचलद्बालांघ्रिलाक्षारुणाः॥
दूराद्दाड़िमबीज शङ्कितधियः कर्षन्ति केली शुकाः।
यद्विद्वद्भवनेषु भोजनृपतेस्तत्त्याग लीलायितम्॥

इस श्लोक की टीका में वामनाचार्य झलकीकर लिखते हैं कि इसी उदाहरण द्वारा सूचित होता है कि सरस्वतीकंठाभरण के रचने हारे भोजराज मम्मट भट्ट की अपेक्षा अधिक प्राचीन जन हैं। यह बात सर्वथा युक्ति सङ्गत जान पड़ती है।

भोज के पिता का नाम सिन्धुराज और पितामह का नाम वाक्पति श्रीराजदेव था ऐसा प्राचीन माला के एक लेख से जो संबत् १०७८ अर्थात् सन् १०२१ ई० में लिखा गया प्रकट होता है! इन के पितृव्य का नाम मुञ्ज था। कथा प्रचलित है कि मुञ्ज ने किस प्रकार राज्यासन गृहण करके ज्योतिषियों से भोज के भावी प्रताप का वर्णन सुना और गुप्तरीति से उन के मरवा डालने की चेष्टा की। पर भोज के प्रान बच गये। मुञ्ज को अपने विचार पर पछतावा हुआ भोज को राज्य सौंप स्वयं बन में जा बसा और तपस्वी हो गया। विद्वज्जनों ने निर्णय किया है कि भोजराज का धारा में राज्य० काल, सन् ९९६ ई० तक था अर्थात् भोज ख्रीष्टीय ११ वी सदी के पूर्वभाग के व्यक्ति हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा शिव प्रसाद भी भोज के विषय में लिखते हैं।

सन् ९९३ ई० में धार के राजा भोज के समय में संस्कृत विद्या ने बहुत उन्नति पायी! उसका दर्बार संस्कृत के सूर्य का मानो मध्याह्न था एक २ श्लोक के लिये एक २ लाख देता था अपने राज में किसी को भी मूर्ख रखना नही चाहता था। भोज कोई बड़ा राजा न था परन्तु विद्या की क़दर करने से इसने बड़े २ महाराजाधिराजों को मात कर दिया उस का नाम आज तक चला जाता है। सच कहा है! "कीर्त्तिरक्षरसंबद्धा स्थिरा भवति भूतले" ॥

--:0:--

मिस्टर मारली और हिन्दुस्तान।

जब तक मिस्टर ब्राडरिक हिन्दुस्तान के सेक्रटरी थे उस समय तक यही जी में बसा था कि भारत के कुदिन कभी दूर न होंगे। उपरान्त यह समाचार मिला कि Balfour बाल फर दल सहित ब्राडरिक मंत्रि पद को छोड़ बैठे। कुछ दिन बाद यह ख़बर आई कि अब मारली साहब हिन्दुस्तान के मंत्री हुये हैं। इस खबर के सुनतेही समाचार पत्रों के संपादक और राजनीतिज्ञ परस्पर एक दूसरे को बधाई देने लगे। ऐसा जान पड़ता था कि हिन्दुस्तान के दुर्ग्रह का एक बारगी नाश होने वाला है और मानो जन्म जन्मान्तर के नारकिक अब पुष्पक विमान पर चढ़ २ स्वर्ग जाया चाहते हैं। या यों कहिये कि जैसी दशा दुर्भिक्ष पीड़ितों की उस समय होती है जब एक मूठी भर चावल उनके हाथ लग जाता है। या नदी में उस डूबते हुये मनुष्य की जिसे किनारे पर जमे पेड़ की टेहनी हाथ आ जावे; वैसी ही दशा भारत वासियों की मारली के मंत्रिपदागमन पर हुई थी, परन्तु हा हमारे भाग्य में नैराश्य ही लिख दिया गया है वही मिस्टर मारले जिन्हों ने जब तक इस पद पर न आये थे सदा स्वातंत्र्य का पक्ष किया करते थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जिन की प्रतिभा शालिनी लेखनी ने केवल भारत ही के मनुष्यों में क्या वरन समस्त संसार के लोगों में स्वतंत्रता का जोश कितनी बार पैदा कर दिया है; उन से यह कब संभव था कि वे अपनी पुरानी लिखी हुई बातों पर हरताल फेरदेंगे और स्वयं इस कहावत के उदाहरण बनैंगे कि हाथी के दांत दिखाने के और होते हैं और खाने के और-यदि हमारा यह नैराश्य और मारली के सम्बन्ध में यह कटु कथन झूठा है तो हम उन से क्षमा चाहेंगे और यदि मारली साहब अपने कामों से हमारे नैराश्य को झूठा सिद्ध कर दें तो हम से अधिक दूसरा मनुष्य संसार में प्रसन्न न होगा। किन्तु अब तक तो मिस्टर मारली ने अपने कामों से हिन्दुस्तान के लिये कोई ऐसी बात नहीं दिखाया जिस से हमारी वे अभिलाषायें जो उन के आने के समय हुई थीं पूरी होती देख पड़ें। इन के आने के ६ वर्ष पहिले से हिन्दुस्तान ऐसे २ राजनैतिक कष्ट भोग रहा था कि ब्रिटिश गवर्नमेंट की भलाई चाहने वाले यही कहते थे कि हा जगदीश यह घोर व्यापार कब तक चल सक्ता है। उपरांत जब यह मंत्रिपद पर पूरी तरह नियुक्त हो गये उस समय वंग विच्छेद के सम्बन्ध में कई बार कई सहस्र मनुष्यों ने निवेदन पत्र भेजा किन्तु मारली ने सर्वथा उस की उपेक्षा कर दिया। फुलर साहब के इस्तीफा देने पर ईस्टर्न बङ्गाल की लफटिनेंटी में हेयर साहब के नियत हो जाने के पहिले हमलोगों को पूरी आशा थी कि गुप्ता जो बङ्गाल के सिविलियनों में इस समय सब से सीनियर हैं फुलर के स्थानापन्न किये जांयगे किन्तु मारली साहब को इतना साहस न हुआ कि एक हिन्दुस्तानी को ऐसे ऊंचे पद पर नियत कर देते। तब कैसे सिद्ध हो कि मारली ब्राडरिक के सदृश केवल वाक् चपलता मात्र नहीं रखते। अस्तु अभी लिबरल दल विलाइत में आशा है कई साल तक रहैगा देखैं आगे मारली साहब क्या करतूत कर दिखाते हैं। लिबरल हों चाहो कनसरबेटिव हों हमारे लिये दोनों एक से हैं जैसे नाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाथ वैसे सांप नाथ जहां तक बस चलेगा हिन्दुस्तान को उभड़ने न देंगे। न हमलोग अपनी भावी भलाई के लिये शासकों का मुह जोहना छोड़ अपने निज बल पर काम करने में प्रवृत्त होंगे अस्तु ।

--:o:—

बड़े लाट के कौंसिल की मेम्बरी ।

हमारे इस प्रान्त हत भाग्य यू० पी० को बङ्गाल और बम्बई के मुकाबिले सदा पीछे हटे रहना ही बदा है तब तो हमारे यहां से जो चुने जाते हैं वे ऐसे ही होते हैं जिन की नज़र के सामने स्वार्थ वासना सदा प्रत्यक्ष नाचा करती है और पबलिक के कार्य का प्ररोह मुरझाया हुआ परोक्ष में पीठ के पीछे पड़ा रहता है । इस बार बड़ी आशा लगाये थे कि कौंसिल में एक ऐसे चुने जांयगे जो सर्वसाधारण के कार्य में बराबर दत्त चित्त रहे और अपने अनेक सर्वहित कामों के नमूना बन चुके हैं किन्तु इस नये इलेक्शन में स्वार्थ इतना ज़ोर पकड़ गया और परस्पर की स्पर्धा इतनी बढ़ी कि जिस का अंजाम यही हुआ कि कौंसिली लोगों को डिनर पारटी भर पूर मिलने का सुबीता हो गया । चलो हमारा कुछ फाइदा न हुआ नहीं सही हमारे श्वेताङ्ग महा प्रभु प्रसन्न रहेंगे यही क्या कम है "सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः" यह जुदी बात है कि कौंसिल में ऐसा मनुष्य होना चाहिये जिसे गोखले के समान शुद्ध देश-हित की वासना हो और जो अपनी तर्रार तकरीर का लाट साहब के जी में असर पहुंचा सके । जो महाशय हुये हैं वे केवल हां में हां मिलाने में प्रवीण अलबत्ता है देश के दुर्भाग्य ही ऐसे हैं तो क्या बस है ॥

—:o:—

यह दुनिया एक मजलिस है ।

अगर आप किसी मजलिस में जाइये तो देखोगे कि लोग निराली सजधज से सजे बजे मजलिस की रौनक बढ़ा रहे हैं; जिन के मन में यही समाया हुआ है बस इस मजलिस की शोभा हमी से है। ऐसा ही सिरजन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार उस बड़े खालिक की खिलकत या रचना में यह दुनिया एक मजलिस है। जिस में गूलर के फल में कीड़ों की भांत तरह २ की सूरत शकल या रूप रंग के ऐसे मखलूक भरे पड़े हैं जो अपने २ ढंग और अन्दाज़ में एक दूसरे से बिल्कुल निराले हैं और अलग २ अपने को दूसरे के मुकाबिले लासानी और एकता मानते हुये यही तै किये बैठे हैं कि बस सिरजन हार की इस समस्त रचना की रौनक केवल हमी से है। हम न होते तो यह मोहफिल वीरान पड़ी रहती. हम कहते हैं हां सच है "मोहफिल वीरान जहां भांड़ न वाशद"। चाहो जिस नाम से पुकारो तुम्हें अधिकार है इसे मोहफिल कहो महा सभा कहो या महा मण्डल कहो इसकी शोभा पूर्णतया बस इन्ही से है। इनकी शानो शौकत और तर्ज़ आज दिन अमीरी की नाक है। नहीं साहब आप भूलते हैं नाक क्या बलिक नाक के भीतर की नाक हैं। फेशन परस्ती का तो वस यहीं से खातिमा है यह न होते तो इन रूपा जीवाओं के रूप की लवनाई का खरीदार कहां मिलता। आप के खड्डे दार बुल्ले में सेर भर मांस हो तो रफू किया जाय तौ भी हसीनों के शुमार में आप अपना औवल दरजा कायम किये हुये हैं। कोटि कन्दर्प लजावन आपही की रूप माधुरी का एक छिट्टा पाय भूलोक में राजा नल अथवा पुरुरवा इत्यादि और स्वर्ग में अश्विनी कुमार रूपवानो की गड़ना में अग्रगण्य हुये। आप की तरह दारी की नकल में मटियाबुर्ज़ वाले नौवाब जन्म भर हैरान परेशान रहे पर पूरी नकल न उतारसके। मालूम होता है भारतमित्र के सुयोग्य संपादक ने हाल में ये चन्दसतरें आपही के सुयश के गान में लिखी हैं क्या। "पद्मिनी घर में है पर कुछ उस से सुख मिलता नहीं। उस के कोरे प्रेम से दिल का कमल खिलता नहीं। नाचना गाना तो क्या करना न जाने वह हंसी-प्रेम दिखलाती है कोने में बिठा कर घर बसी। घर के धन्धे काम सब उस ही से चलते हैं सदा-और जी से चाहती है वह सदा मेरा भला। दुःख पड़ने पर नही उस के बिना निर्वाह है। ऐसी खुश बख्ती में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस की कहीं कुच चाह है" । और भी "चार दिनकी है जवानी घर में है दौलत भरी । जो नं सुख लूटा तो फिर किस काम की है ज़िन्दगी । हां चढ़े प्याला दमादम रात जाती है चली । गाड़ दो अब सुख के झंडे खोल दो दिल की कली । सूप हो चप हो नटनहो कोरमा हो केकहो आज बोतल बासिनी का खूबही अभिषेक हो । मात हकहक नादिनी जय शोक ताप निवारिणी । लाल शोभा धारिणी जय जयति भव भय हारिणी । कसबियां गुड़ हैं हमें उस गुड़ की जानो मक्खियां । रात दिन करते हैं भिन २ उनपै लेते चक्खियां । जूतियां भी खा के उन की खिल खिलाते हैं सदा । पर किसी कंगाल को देखें तो हों उस से खफा । साहबों को सब तरह पर खूब रखते हैं प्रसन्न । उन के कामों में न चन्दा दें तो कब पचता है अन्न । झाड़ते लेक्चर हैं लिखते लेख अब बतलाइये । देश हित के वास्ते क्या क्या करें फरमाइये । देश हित कह २ के क्यों फाड़ ते नाहक गला । कौन पर हित में फसेगा छोड़ के अपना भला । देश किस का है ? भला किस का करें कतलाइये ? क्या हमारा फाइदा है सोहमे समझाइये ? ढालले लाओ चिलम ला बर्फ़ पानी पान दे । देशहित बक २ के नाहक कौन अपनी जान दे । हां चमेलीवी मधुर होठों को अब फरमाइये । राग नट हम्मीर केदारा ज़रा सुनवाइये । कर चुके करतव्य पूरा हां पड़े तबलेपै थाप । वह पड़े हत्थी कि चिल्लावे पखावज बाब बाप । कामिनो का हो झमकड़ा रंग का दरया बहै । हां चले प्याले पै प्याला जिस को जो भावे कहै । आइये अब सब जहन्नुम को चलें मिल जुल के साथ । नाम हिन्दू का बना रहने में क्या आयेगा हाथ" । आदाब जनाब बाबू साहब जुग जुग जीते रहो बस मजलिस की रौनक आप ही के हाथ है ।

अस्तु आगे चलिये एक छोर से दूसरे तक देख जाइये कतार की कतार यह मजलिस कैसी रौनक अफ़रोज़ है क्या जानिये ये किसी दूसरी दुनिया से आये हों । देर तक गौर करने के बाद पता लगा नहीं; ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो हमारे से हाथ पांव नाक कान वाले इसी दुनिया के मखलूक हैं। खालिक ने भूल से हमलोगों के बीच इन्हे भेज दिया। सूरत लंगूर मगर दुम की कसर है। कसर नही दुम शायद निकलवा डाली है। बहुत २ कोशिश की कि हमारा भी गोरों में शुमार किया जाय पर रंग गोरा न कर सके तो तैश में आय दुम कटवा डाली। खैर हैवान से इन सानों में तो दाखिल हुये डारविन का सिद्धांत कि आदमी बन्दर के औलाद हैं सच ठहरा। सभ्यता और शाइस्तगी की उफान के साथ ही साथ दुम आप से आप जब तक झर के गिरे नहीं तब तक दुम कटाय ये लोग विलाइती बनना चाहते हैं क्या करें काले रंग से वस न चला। हैट पैंट और मुह में फ़लीता रख साहब लोग हो गये मनो साबुन देह में पोत कारखाने खाली कर डाला रंग में तब्दील ज़रा न आई। रिफार्म और मुल्की तरक्की का ठीका लै उतरे थे पर साहब बन जाने की हबस में ऐसा उलझे कि सब भूल स्वार्थ लम्पट ता की पुड़िया बन बैठे। गुड मार्निंग सिस्टर सो ऐंड सो देखो चौकसी रखना कहीं से यह न ज़ाहिर होने पावे कि हम अहल हिन्दुस्थान हैं। नहीं तो चुल्लू भर पानी में मारे शरम के डूब जाना पड़ेगा अपने को हिन्दुस्तानी कहना बड़ी हतक है॥

अस्तु यह दूसरा दल मजलिस को सुशोभित किये हुये है। जैगुपाल लाला जी जै गोपाल। यह माला और लम्बातिलक खूबही टट्टी के आड़ में शिकार है। लम्बा टीका मधुरी बानी........औवल दरजे के रईसों में हैं लोहे तांबे उलट पुल्के जब कुछ और करने को न रहा तो भगतई पर आ टूटे। देखने में बड़े साधु और शील के सागर हैं किन्तु समस्त ऐगुण के आगार महापुरुषों में हैं। मेले अथवा मन्द्रिरों में बेतरह आंख सेकने का रोग लग गया है चलो अच्छा है एक पन्थ दो काज। आंख की आंख सिक गई और दरस परस हो जाने से हिन्दू धरम भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निभ गया। धन्य धन्य लगी रहे टक टकी। "लोचन रोम २ प्रतिमांगू एक टक रहैं निमिष नहिं लागैं। पद्धति नई चलाऊं। नैननि बहै रूप जो देखौं। तो ऊधो यह जीवन जग में सांच सुफल करि लेखौं। ज्यौं भुवङ्ग केचुरी बिसारत फिर नहिं ताहि निहारत। तैसेहि जाय मिले इकटक ह्वै उरते लाज निवारत" नेत्र रूप माधुरी को पीते २ अघाते ही नहीं। स्वर्ग में इन्द्र सहस्राक्ष हैं यहां हमारे ये मेम्बरान मजलिस दो ही नेत्र से टकटकी में सहस्राक्ष को परास्त करते हैं। क्या कहना भगत हीजी तो हैं। "काक चेष्टावकध्यानी" हाथ गो मुखी में मनमुखी में अस्तु इन के भक्तिभाव में क्यों बाधा डालें। आगे बढ़ें-ओ हो यह ठाठ तो इश्क़बाज़ों का है। नई उमङ्ग है इश्क के कूचे में पांव रखना अभी हाल में शुरू किया है। लुबरी सा मुह यह कौन हैं? ललना ललन। ऐंची तानी बांकी चितवन ये कौन हैं? ललिता ललित-"तिरछी चितवन पीतम प्यारे मन बैरागी मोरा रे" और ये बाबू बनिता दास हैं। "चुलबुल चालाक चतुर चर पर छिन २ में होत" और ये प्रमदा प्रमत्त जी हैं। बाह भैया यह सब आप ही के दम का जखेड़ा है। अस्तु इन्हें भी छोड़ो। यह देखो पण्डितों का दल मुर्ग और बटेर की लड़ाई का मज़ा लिया चाहो तो ज़रा इन्हें छेड़ बैठो। आगे चलो देखो यह झुण्ड पौराणिकों का है "शास्त्रेण हीना कवयो भवन्ति काव्येन हीनाश्च पुराण भट्टाः" नमस्कार व्यास जी। "नमो व्यासाय महते" "जयतिपराशरसूनुः सत्यवती हृदयनन्दनो व्यासः" श्लोक गढ़ने वाला भूल गया "नव युवति हृदयनन्दनो व्यासः" कहना था। गोपियों में कन्हैया जो चैन इन्हें है सो किसी को न होगा दम्भ को सहारा देने वाले लम्पटता के सहकारी। अस्तु जाने दीजिये हमें क्या प्रयोजन जो इन के युवति प्रेम में बाधा छोड़ैं। देखो यह बैद्यों का दल है "शतमारी भवेद्वैद्यः" और यह गरोह हकीमों की है इन की लम्बी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाढ़ी में तमाम तिब्ब भरा है । बगल में पंचाङ्ग दबाये यह समूह नक्षत्र सूचियों का है । काशीनाथ "अष्टवर्षा भवेद्गौरी" इन्ही के सहारे प्रर लिख गये हैं । ऐसे २ तो इस मजलिस में न जानिये कितने भरे हैं कहां तक गिनाते रहैं छोड़िये इन सबों को "कथापि खलु यायानामलमश्रेयसे यतः" यह देखिये दया दाक्षिण्य उदारभाव के साक्षात् मूर्ति नागरिक जनों के सिरताज सब गुन आगरी चातुरी जिस के रोम २ से टपक रही है अपने शुभागमन से इस मजलिस को सुशोभित करने को इधर ही आ रहे हैं चलो इन से मिलैं । इन्हें देखते ही सब लोग अपने २ कुचरित्रों पर लज्जित हो दबक कर बैठ गये और इन्हों ने कुछ कहना आरम्भ किया जिसे फिर लिखैंगे ॥

प्राप्तग्रन्थ—दो मित्र ।

एक कल्पित उपन्यास बालपुर निवासी पाण्डेय लोचन प्रसाद लिखित । इस में दो मित्रों की मनोहर कथा है बीच २ में सदुपदेश पूर्ण अंगरेज़ी के कोटेशनूस श्लोक और कुण्डलिया आदि अच्छे ढङ्ग से दिये गये हैं । मुरादाबाद लक्ष्मीनारायण प्रेस की छपी यह पुस्तक है ।

बालभारत दूसरा भाग ।

ठाकुर सूर्य कुमार वर्मा रचित—इस में उपदेश पूरित महाभारत के प्रधान २ इतिहासों को सविस्तार ग्रंथकारने अच्छे ढङ्ग पर सुललित भाषा में लिखा है बालक ही क्या यह तो प्रौढ़ जनों को पढ़ने में लाभ दायक है। महाभारत को इस भांत खंड २ कर कई भाग में लिखने का क्रम हमारे मित्र का सराहने के योग्य है मूल्य ॥) इंडियन प्रेस प्रयाग में यह पुस्तक मुद्रित हुई है ।

जीव दया ।

खंडवा निवासी माणिक्य लाल जैन रचित यह पुस्तक एक अंगरेज़ी की किताब के आधार पर लिखी गई है । ये जैन महाशय हिन्दी के होन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार सुलेखकों में हैं। नाम ही से सिद्ध है कि इस तरह की पुस्तक जैसी ही भाई के द्वारा निकल सक्ती है। पुस्तक बहुत ही शिक्षाप्रद है। यद्यपि ग्रंथकार ने अपनी सम्मति बहुत स्वतंत्रता पूर्वक दी है किन्तु जब हम विदेशियों के चंगुल में हैं तो केवल जीव दया ही पर सब कुछ निर्भर नहीं है। भाषा इस की सरल है पुस्तक संग्रह के योग्य है मूल्य।=) मिलने का पता मैनेजर स्वदेशोपकारक कार्यालय खंडवा।

एक लिपिविस्तार परिषत्।

कलकत्ते के मान्यवर महाशय जसटिस शारदा चरण मित्र का सदुद्योग कहां तक विस्तार पाया यह परिषत् के वार्षिक बिवरण से मालूम हो सक्ता है। नागराक्षर में बङ्ग भाषा की २ पुस्तक भी प्रकाशित हुई हैं एक हीरारमूल्य जो जासूसी ढङ्ग का एक उपन्यास है। प्रणेता इस के नगेन्द्रनाथ गुप्त हैं मूल्य ≡) है। दूसरी राज भक्ति यह भी एक रोचक उपन्यास है। दामोदर मुखोपाध्याय प्रणीत मूल्य ॥)

--:o:--

अलबेला रामिया॥

जौनपुर निवासी गोपाल लाल खत्री रचित। ऐसा मालूम होता है उपन्यास रचयिता ने किसी खास घराने के कुचरित्र Curruption पर लक्ष्य कर लिखा है। और इतना खुल पड़े हैं कि कहीं २ कुछ अश्लीलता आ गई है। तौ भी उपन्यास रोचक है। गोपाल लाल को चाहिये अपने लेख में गम्भीरता संपादन करें तो हिन्दी के सुलेखकों में गिने जांय। मूल्य।=) भारत जीवन प्रेस में मुद्रित।

शरदाकाश॥

पाण्डेय अनन्तराम लिखित।

अहो, शुभ्र आकाश शरद का, जग सुखकारी।
है वर्णन से दूर पराहत कला तुम्हारी॥
तू अनन्त, गुण भी अनन्त तेरा, यह कहना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थूल बुद्धि अस कहैं, नहीं जो पटु सुकल्पना ॥ १ ॥
भाव तुम्हारे दर्शन से जो २ हैं आये ।
मेरे मन में, आज मुझे वे अतिशय भाए ॥
किया चाहता हूं वर्णन उनका मैं क्रम से ।
निज निर्मलता देकर मुझे बचाना भ्रम से ॥ २ ॥
वर्षा ऋतु के बाद रूप तू ने दिखलाया ।
सचरा चर के मुख सरोज को सहज खिलाया ॥
जीव जन्तुओं का मन मधुकर चंचल होकर ।
उड़ने लगा स्वतंत्र कलेवर निज २ लेकर ॥ ३ ॥
तव स्वरूप का बड़ा उपासक बूढ़ा भारत ।
आरति में भी करता है तेरा सुस्वागत ॥
दुख दुर्गति वह भूल आज आनन्द मगन हो,
जोर करोरो हाथ दंडवत करता तुझ को ॥ ४ ॥
नयन मनोहर वर्ण तुम्हारा है नीलाम्बर ।
विष्णु अंग को कहते हैं तुझ सा ही सुन्दर ॥
अतः करें जो विष्णु रूप से पूजा तेरी;
उक्ति नहीं होगी यह अनुचित कुछ भी मेरी ॥ ५ ॥
मारतंड औ चन्द्र तुम्हारे शीर्ष देश के ।
हैं सुन्दर दो मुकुट सदन शुभगुण सुवेश के ॥
तेज पुंज है एक, दूसरा शीतलताधर ।
दिन रजनी के नायक और जगत् के हितकर ॥ ६ ॥
महाराज यड्वर्ड मुकुट मणि कोहनूर है ।
जिस के आगे अन्य नृपों का गर्व चूर है ॥
शरदाकाश, तुम्हारे इन मुकुटों की समता ।
कोहनूर क्या, कौस्तुभ भी करने से हटता ॥ ७ ॥
है राजाओं का राजा तू इस प्रकार से ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजा प्राण सम तेरी प्यारी है विचार से ॥
पूर्ण स्वतंत्रता देराखी है तू ने सब को ।
दिव्य बिलोचन खोल २ ये हंसतीं हम को ॥ ८ ॥
ये तारा गण-प्रजावर्ग, सब पहिले भी थे ।
कब आते, कब जाते थे, गो ज्ञात नहीं थे ॥
आज मनोहर छवि ये अपनी प्रगट दिखा कर ।
निज सुराज का सुख समझाते हमें कृपा कर ॥ ९ ॥
छितिज वृत्त से घिरा हुआ है राज्य तुम्हारा ।
दिव्य भूमि को देख व्यग्र है चित हमारा ॥
क्योंकि लोक का हृदय सरोवर है अति दुर्मल ।
प्रतिविंवित होता न कभी तज कर विकार छल ॥ १० ॥
निन्दित एक विकार प्रकृति में महा हमारी,
है जो गुण से विमुख, छिद्र की सेवा कारी ।
इसी वुद्धि से धरायान पर हम फिरते हैं ॥
अभिमुख तेरी ओर, दोष खोजा करते हैं ॥ ११ ॥
कभी २ तेरे सु अंग को घन युत पाते ।
पाते ही इस के हम मन में मोद बढ़ाते ॥
कहते हैं दोषांक इसे, पर ठीक नहीं है ।
साबुन फेन समान अंत मल हारक ही है ॥ १२ ॥
सज्जन जनकासा अति उत्तम गुण इस में है ।
चौमासे से अनुभव इस का मिले हमें है ॥
कृषि के लिये सुधा समान वह जल बरसाता ।
बाद विदा हो तेरा अनुपम रूप दिखाता ॥ १३ ॥
है कुंवार का घाम, सभी कहते हैं, तीक्ष्ण ।
पर इस से पकती है फसल सियारी क्षण क्षण ॥
दिन की गर्मी चन्द्र किरण से हट जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस सफल नव पौधों से भूलद जाती है ॥ १४ ॥
सब का कारण है वह तेरी स्वच्छहृदयता ।
नभ गंगा का स्वच्छ, नहीं क्यों, तन लख पड़ता ?
तेरा दिन औ रात उभय ही हैं सुख कारी ।
पर दिन से निशि को कहते अति शोभाधारी ॥ १५ ॥
कृष्ण चन्द्र ने तेरे नीचे रास मचाया ।
ऐक्य भाव का शुद्ध प्रेम से तत्व बुझाया ॥
स्वच्छ हृदय के बिना प्रेम बिलकुल कच्चा है ।
गाया हुआ पुराणों में यह मत सच्चा है ॥ १६ ॥
विजय चढ़ाई हेतु राम जी को तू भाया ।
शत्रु नाश कर जिन ने जग में यश फैलाया ॥
ऐसे २ महाजनों ने तेरा आदर ।
कर आदर्श बताया परिमलता का सुंदर ॥ १७ ॥
युगुल शक्तियां—सौर, चन्द्र, तेरी प्रसिद्ध हैं ।
जग की बहु उपका कारिणी स्वतःसिद्ध हैं ॥
उक्त मूर्त्ति—आराधन को दो शीस उठाये ।
बङ्ग देश ने मानो सुन्दर वेश बनाये ॥ १८ ॥
ज्येष्ठ पुत्र भारत माता के बङ्ग निवासी ।
ठंढे से ये पड़े, चान्द्रमस शक्ति उपासी ॥
आज नये उत्साह प्रेम औ भक्ति पुरस्सर॥
सौर शक्ति युत शारद पूजा करते घर घर ॥ १९ ॥
अति अचरज का काम और तुझ से होता है।
पावक को जल कौन भला जो कर सक्ता है ?
जब सूरज की दाह भूमि पर नहीं समाती,
व्याकुल हो गंभीर गर्भ में तेरे आती ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आते ही वह तुझ में प्रति छटा नरमाती है।
जल शीकर तुरत भूमि ठंढी करती है॥
होती जिस से हरी भरी भाजी तरकारी।
दिन दूनी बढ़ती जाती है फसल-उन्हारी॥ २०॥
कहने में साधारण तेरा रूप शून्य है।
निर्गुण ब्रह्म समान मूर्ख को भी सुगम्य है॥
पर जब तुझ में गुण विशेषता पा जाते हैं।
वर्णन करते पंडित गण भी थक जाते हैं॥ २२॥
तेरे ही उपकारों से पृथ्वी भारी है।
तुझ से पीछे यह रचना भौतिक सारी है॥
सब विधि से तू पूज्य; अहो, शरदम्बर प्यारे!
है वास्तव में सच अनन्त गुण ग्राम तुम्हारे॥ २३॥

—::—

बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन।

इस साबुन के मलते ही सुफेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं। एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफी मूल्य है। प्रति टिकिया १) रुपैया।

इस ने दुनियां के खिज़ाबों (कल्फों) की कदर घटा दी। केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गेरेंटी ३ साल मुफ़्त मिलेगी॥

मिलने का पताः—
मेनेजर हेअर डाई सोप कम्पनी-लाहौर

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन पोषक और दवा की दवा—

Always get the Emulsion with this mark —the Fishman—the mark of the "Scott" process.

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाकूरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट-लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४

स्नाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. A—303.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै ।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै ।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २८ } प्रयाग { नोवेम्बर
सं० ११ } { सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहाय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

स.न.यें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १।।≡)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०*०—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

—:००:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८
सं० ११

प्रयाग

नोवेम्बर
सन् १९०६ ई०

ऋण हत्या नमुच्यते ॥

जितने प्रकार के पाप और जितनी हत्या हैं सबों का प्रायश्चित्त और उनके छुटने का उपाय हमारे शास्त्रों में लिखा है पर ऋण हत्या को कहा यह नहीं छुटती। शास्त्र प्रवर्तक ऋषि कोई साधारण मनुष्य न थे बड़े अनुभवी थे, बहुत कुछ अनुभव के उपरान्त उन्हों ने यह निश्चय किया है जो बहुत ही ठीक मालूम होता है-जितना ऋण हो सब चुकता कर डालो कुछ हिस्सा ऋणका चुकता होनेसे बच रहे और उसकी ओर से बेफिकिर होबैठो तो थोड़े दिनों में वह ऋण फिर उतनेहीके लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायगा–लोगों का यह कहना भी कि ब्याज घोड़े की दौड़ दौड़ता है बहुत ठीक है–भारत पर इस समय १३८७९६६६०००का ऋण है, आरम्भ में कईबार ऋण लेनेके उपरान्त भारत गवर्नमेंट पर नाममात्र को थोड़ा सा ऋण था तबसे बराबर ऋण पर ऋण खुलताही गया और घोड़ेके दौड़ का ब्याज भी बढ़ता गया अन्त को यह ऋण इस समय अब इस छोर को पहुंच गया। अकबर और शाहजहां के समय में कर्ज़की कौन कहै उन्हों ने २४ करोड़ रुपया खज़ाने में छोड़ इस दुनियासे कूच किया था। औरंग ज़ेब ज़ालिम मशहूर था पर देश उसके समय में भी जैसा रंजा पुंजा था और जैसी खुश खुर्रमी छाई थी वह अब आगे को कौन आशा है कि हमको कभी मयस्सर होगी जब इतना रुपया कर्ज़ भारत के सिरे मिढ़ा हुआ है--इतना तो भारत गवर्नमेंट देनदार है बिलाइत में जो कर्ज़ हिन्दुस्तान के ज़िम्मे है वह अलग है, उससे इस ऋण से कोई सरो कार नहीं है। कर्मचारी गण हमें हंसते हैं और हमारी इस बेअकिली पर पछताते और अफसोस करते हैं कि यह उजालेसे अन्धकार की तुलना कर रहा है, वर्तमान सभ्य शासन का मुकाबिला पुराने समयके मुगलों के असभ्य शासनसे करना कैसी भूल है जिस्में अत्याचार अपने हद्द को पहुंचा था। मालूम होता है इस्की अकिल कहीं चरने चली गई क्या? ऋण है बला से भारत का शासन इस समय सभ्य शासनमें गिना जाता है। तो उचित है इस सभ्यता के शासन को शहद में पोत चाटा करैं। असंख्य धन का इतना ऋण होगया कुछ चिन्ता नहीं जो उसके चुकता होजाने की आगे को कोई उपाय देखने में आती या उस ऋण से भारत का शुद्ध उपकार हुआ होता। किन्तु अधिकांश इस ऋण का इंगलैंड और इङ्गलिश जाति के लोगों की भलाई से संबन्ध रखता है, भारत की यदि कोई भलाई हुई है तो वैसाही जैसा खेत सीचनेमें गेहूं के साथ ही साथ बथुआ भी सिच जाता है-अथवा तत्व कथनमें यदि कोई दोष न समझा जाय तो यों कहना चाहिये, कि इतने रूपये का अधिकांश इंगलैंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहां के लोगों की भलाई में समर्पण होचुका। तभी तो इंगलैंड इस समय परम उन्नति की दशा को पहुंचा हुआ है और हिन्दुस्तान में सोने का ढेर भी राख होगया। अस्तु हत्या अन्तको हत्याही है, जो कभी छूटेही गी नहीं इ—तना ऋण होने पर भी हमारी भारतीय प्रजा का कुछ नहीं बिगड़ा। अभी चार बर्ष यहां का रुपया बाहर जाना बन्द हो जाय देश धनधान्य से पूर्ण होउठे पर सो काहेको कभी होगा विदेशियों का जो दांत बूड़ा हुआ है कि वे कभी छोड़ेंगे। हमें असभ्य अर्द्ध शिक्षित कहते जाते है और चपत मार धन भी ढोये लिये जाते हैं। सभ्यता और न्याय की कसौटी है पर किसकी सामर्थ्य कि मुह खोल सकै Might is right।

--:०:--

मरज़ बढ़ता गया ज्यों २ दवा की

विलाइत में हिन्दुस्तान का रूपया बराबर खिचा जाता है यह एक ऐसा "मर्ज़ मुलहिक" असाध्य रोग है कि इसकी ज्यों २ दवा की जाती है त्यों २ यह रोग बढ़ता ही जाता है। कानग्रेस में बड़े २ रिज़ोल्यूशन प्रति वर्ष पास किये जाते हैं, कलकत्ते की पत्रिका सरीखे समाचार पत्रोंने इसके बारे में अपनी ओरसे कुछ नहीं छोड़ रक्खा जिसे न लिखा हो और गवर्नमेंटसे अपने इस दुःखका निवेदन न किया हो-बड़े लाट की कौंसिलके देश हितैषी मेम्बर न जानिये कै बार के तरह पर इसका उद्घाटन कर चुके-पवलिक मीटिंग और डिबेट में इसका बिचार और इसपर बाद विवाद हुआ ही करता है-बायकाट और स्वदेशी आन्दोलन का तो लक्ष्यही यह है। कम्पनी के राज्यकाल में लोग कहते थे ये विलाइत के बनिये हैं बनिये रुपये के लोभी होते हैं इसी से देश का रुपया खिचा जाता है। वहांका राजा जब अपने हाथ में भारत का शासन लेगा तो फिर यह शिकायत न रहैगी। सन् सत्तावन के बड़े बलवे के उपरान्त सो भी हुआ महाराणी ने राज्य अपने हाथ में लिया पर हमारे इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्ज़ में किफायत की कौन कहे अधिकतर बढ़ती होती गई। उदार भाव पूर्ण मिस्टर मारली का मंत्रिपदाधिस्ठान इस असाध्य रोग की दवा का ओर था सो भी देख लिया गया। विलाइत के नीति कुशल जुदाही अपनी पालिसी से नहीं चूकते नये २ काइदे और कानून गढ़ निपट भोंदू दास शांत और सुस्त तथा सरल चित्त यहां के लोगोंको फुसलाया करते हैं "तुम ऊबो मत सुसभ्य शासन से शासित होरहे हो विद्या वृद्धि करते रहो सभ्य बनते चले जाओ कुछ दिनों में अपना शासन अपने आप करने लगोगे"—हम पुकार २ कह रहे हैं हमें सभ्य शासन न चाहिये विद्या जितनी हमें पढ़ाई गई बहुत है अब हम अपने आप अपने को विद्वान् कर लेंगे। सभ्य भी नहीं हुआ चाहते जैसा अब तक रहे हम असभ्य रह पागुर करते हुये चैनसे ज़िन्दगी काटते यदि इस मर्ज़से हमारी रिहाई हो गई होती। निरे निस्किंचन परम दरिद्री सभ्यही हो हम क्या करैंगे? हरएक बहाने हमे फुसलाते और बहलाते जो हमारा रुपया खिचा जाता है सो नहो हम सब पा चुके। सो इस चिउंटिया ढोअन के घटने की कौन कहे प्रत्युत विलाइत की जन संख्या के साथ ही साथ बढ़ती जाती है और न कोई आशा है कि यह कभी घटै गी। क्योंकि विलाइत वाले जो हिन्दुस्तान के साथ छोह करैं तो उनकी जीवन यात्रा भी न चलै "खाद्यखादकयोः प्रीतिर्विपत्तेः कारणं महत्" भारत की नस २ ढीली पड़ गई पड़ा २ कांख रहा है किन्तु इस असाध्य रोग से अब भी इसका गला नहीं छुटता। जितनाही इलाज किया जाताहै उतनाही रोग बढ़ता जारहा है इसीसे कहते हैं "मरज़ बढ़ता गया ज्यों २ दवा की"

—::—

रमादेवी।

ललना कुल को गौरव देने वाली यह हमारी एक सजातीया उच्च कुल की कन्या थीं, तुलसीकृत रामायण तथा अन्यान्य देवनागरी भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पुस्तकों में इन्हे अच्छा अभ्यास था हिन्दी की पूर्ण पण्डिता थीं थोड़ा संस्कृत भी जानती थीं। जब यह अपनी पूरी यौवन अवस्था में थीं उस समय एक बालक और एक कन्या छोड़ पति ख्रीष्ठ मत स्वीकार कर विधर्मी होगया था। इनको अपना साथी बनाने में पति ने इन्हे सब तरह की लालच दिखाया और बहुत कुछ इनका पीछा किया पर यह अपने धर्म में पूरी दृढ़ रहीं। क्रिश्चन होने पर फिर पतिका मुख इन्हीं ने न देखा बड़े २ दुःख सह अपने चरित्र तथा धर्म की रक्षा में सदा दृढ़ रहीं। एक बात यह इनकी अति प्रशंसनीय है कि जिन अमीरों के घर इन्ही के घराने की तथा इनकी समान जातीया और समान वयस्का स्त्रियां सेवावृत्ति कर बड़ी बेकदरी से कदर्यता प्रगट किया करती थीं वहीं ये उन्हें शरम दिलाते अध्यापिका बन चरित्र पालन क्या है इसका नमूना होते सदा पूज्य बनी रहीं। जिन अमीरी घरानो में Corruption कुचरित्र दुराचार और दुर्वृत्त तिलेषुतैलम् दधिनिसर्पि सदृश व्याप रहा है वहां चरित्र क्या चीज़ है और कैसे उसकी रक्षा होसक्ती है यह उन्हे बतलाना और अपने सदुपदेश से स्त्रियों को भली राह की ओर झुका लाना इन्हीं की बिशाल बुद्धि का काम था।

६५ बर्ष की उमर में १६ सितम्बर को यह सुरधाम सिधार गईं पर सतीत्व धर्म में दृढ़ता का उदाहरण अपने पीछे छोड़ गईं। हमारे समूह वाले कदर्यों के पेशवा, जिन की प्रगट में भिक्षा वृत्ति है पर भीतर से कुबेर की संपत्ति को भी लात मारते हैं, अपनी स्त्रियों से कहते कि तुम भी रमा देवी का अनुकरण क्यों न करो क्यों भिखारिने बन बड़े २ घरानो में सबेरे से सांझ तक सेवा टहल कर कदर्य बनती हो तो कितना आत्म गौरव बढ़ता जाता। किन्तु बिना मेहनत दान दक्षिणा का धन खाते २ बुद्धि इन कदर्योंकी ऐसी कुण्ठित होगई है कि इन्हें यह ज्ञान ही न रहा कि सभ्य समाज में हमारी इस बल्लनई की कितनी निन्दा और हिकारत है। जिन के पूर्ब पुरुष देश के देश को अपनी मूठी में किये थे लोभ के पुंज उनके वंशधर धनियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिटकार सहते हुये भी केवल दक्षिणा पर निर्भर रह कर चरित्र और विद्या दोनों से शून्य हो लुंज पुंज बन बैठे लाचारी है ॥

--:o:--

बनस्पति बिबरण

यों तो इस पृथबी पर न जानिये कितने आश्चर्य पैदा करने वाले पदार्थ हैं जिन से ईश्वर की ईश्वरता प्रगट होती हैं पर बास्तव में अचरज पैदा करने वाले पदार्थ हम उन्ही को कहैंगे जिस में प्रकृति के नियम से संबन्ध रखने वाली नित्य के देखने की बस्तुओं के लक्षणों से कुछ ऐसे भिन्न लक्षण पाये जांय जो हमारी बुद्धि में न आसकें। पाठक आपने संसार के सात आश्चर्य Seven wonders of the world सुना होगा क्या संसार में बस सातही पदार्थ अचरज के हैं? इनमें ताज बीबी का रौज़ा भी एक है तो क्या ताज महल के पत्थर तो तअज्जुब दिलाने वाले हैं और आप के घर के दासे का पत्थर नहीं है ? क्या बेबीलोन का लटकना उद्यान Hanging garden of Balylon अचरज के पदार्थों में है आपकी गली में उगी हुई हरी दूब नही है ? थोड़ा भी ध्यान देने से मालूम हो जायगा कि पत्थर व दूर्वा रौज़ा या अधर उद्यान से कहीं बढ़ कर अचरज पैदा करने वाले हैं। ईश्वर की रचना का भेद पाजाना कठिन होने पर भी यह द्विपद जीव अर्थात् मनुष्य जो ईश्वर का आश्रित है और जिसे ईश्वर ने अपनेही रूप में सृजा है अर्थात् ज्ञान शक्ति दी है, अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग ही पकाता हुआ ईश्वर की ईश्वरता का भेद खोलने के लिये उद्योग कर रहा है अस्तु। इसी के अनुसार आज हम ईश्वर के कारखाने में टांग अड़ाते कुछ चमत्कृत चीज़ों का उल्लेख करते हैं। संसार में दो तरह के पदार्थ एक जंगम या सजीव दूसरा स्थावर निर्जीव या एक जड़ दूसरा चैतन्य है। जड़ कहां तक सजीव है सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर कभी कहेंगे आज वनस्पति के सम्बन्ध में कहते हैं जो जड़ कोटि में गिने जाते हैं-

प्रत्येक वृक्ष के ३ भाग होते हैं एक धड़ जो पृथवी के ऊपर थोड़ी दूर सीधा उठ कर फिर डालियों में विभक्त हो हवा में फैल जाता है- दूसरा जड़ जो पृथवी के नीचे चारो तरफ फैली रहती है-तीसरे पत्तियां जो डालियों के किनारों से निकल कम व बेश चौड़ी होकर हवा में लहराया करती हैं-इन तीनो भागों की बनावट और काम अलग २ हैं सो नीचे लिखे जाते हैं

डालियों व धड़ की बनावट

कोई डाली को आरी से आड़ी काटने पर उसमें तीन भाग दृष्टि पड़ेंगे बीचो बीच में गूदा इसके चारो तरफ एक जालदार झिल्ली सा दृढ़ काष्ट और फिर त्वक् या छाल जो पहले के दो भागों की बाहरी चोट आदि से रक्षा करती है। गूदे में बहुत ही छोटे कोष्ट (Cells) होते हैं जो मज्जा सन्वधी आड़ी नलियों द्वारा और बाहरी छाल द्वारा हवासे समागम पैदा करते हैं। झिल्लीदार काष्ट और छाल के भीतरी भाग में लंबी खड़ी नालियां होती हैं जिन में से तरल (Liquid) पदार्थ जड़ से पत्तियों और पत्तियों से जड़ तक आ और जा सकता है

जड़ की बनावट।

जड़ धड़ से छूटते ही मिट्टी में चारो तरफ फैल जाती है इसकी थोड़ी दूर तक की बनावट धड़ही के समान होती है पर जड़ के ज़रा अधिक लंबे होने पर गूदे का उस्मे से लोप होजाता है जड़ मोटी से क्रमशः पतली और दृढ होती जाती है। जड़ के सिरे बहुत ही पतले सुफैद रंग छिद्र युक्त स्पंज की तरह होते हैं। इनमें धड़के तीनों भाग कर लोप हो केवल एक नरम पदार्थ रह जाता है जिसमें काष्ट व खाल की खड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नलियां आ मिलती हैं। इन्ही नलियों के द्वारा यह तंतु रूप में पृथ्वी में गड़े हुए भी हवा में हिलती हुई पत्तियों के साथ मेल खाते हैं॥

पत्तियों की बनावट।

टहनियों का बिस्तार पत्तियां हैं पत्तियों में चारो तरफ फैली बहुत सी शिराएं या नसे हैं यही जालदार काष्ट का बिस्तार है यह भीतरी छाल के बिस्तार की नलियों से जो प्रायः इन के नीचे रहती है जुड़ी रहती है। एक पतला अस्तर इन शिराओं के ऊपरी और नीचे के हिस्सों को आच्छादित रखता है। यह अस्तर छाल के बाहरी अथवा कोष्टिक (Cellular) भागका विस्तार है और सछिद्र रहता है ये। छिद्र (Stoma) बहुत ही छोटे और असंख्य होते हैं यही वृक्ष के मुख और आखें इत्यादि हैं। एक बर्ग इन्च में प्रायः १२८००० छिद्र होते हैं जो वनस्पति केवल जल में उगते हैं उन्हें छोड़ स्थलज उद्भिजों के पत्तों में ऊपरी भाग की अपेक्षा नीचे के हिस्सों में अधिक छेद रहते हैं।

वृक्ष के प्रधान भागों के कर्म।

जड़ के कार्य्य—जड़ पानी और तरल खाद्य बस्तुओं के लिये मिट्टी में चारो तरफ तन्तु या प्ररोह को फैलाती है स्पंज सदृश जड़ का भाग जिसका ऊपर वर्णन हो चुका है पानी व खाद्य बस्तु को चूस कर काष्ट की खड़ी नालियों द्वारा इनको ऊपर भेज देता है यह खाद्य बस्तु पेड़ के रस में मिल जाती है और चारो तरफ घूमा करती है। इसी से जड़ पेड़ का अंश बनता है। जड़ पेड़ का पेट के रूप में है।

पत्तियों के कर्म-पत्तियों और जड़ के काम एकही तरह के हैं अर्थात् पोषणोपयोगी रस को तैयार करना। भेद केवल इतना ही है कि जड़ तो तरल (Liquid) और पत्र (Gaseivs) द्रब्य खीचते हैं। पत्ते पेड़ों के श्वास यन्त्र स्वरूप हैं, प्रयोजनीय तरल पदार्थ का परिशोषण और निकम्मे पदार्थों को भाफ रूपसे बाहर निकालना पत्तों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मुख्य कार्य है । दिन में हरी पत्तियां आंगारिकाम्ल (Carbonic acidgas) खोलती और अम्लजान (Oxygen) बाहर निकालती हैं अर्थात् कोयला (corbon) खाकर पेड़ को पुष्ट करती हैं। रात को यह कार्य विपरीत होता है आंगारिकाम्ल निकालती है यह वायु प्राणियों के लिये हानिकारक है इस से रात को पेड़ के तले न सोवे । नये हरे पौधों की डालियों में और घास के हरे डंठल में भी छिद्र रहते हैं जिनके द्वारा आंगारिकाम्ल (Corbonic acidgas) भीतर जाती है क्योंकि यह समय शीघ्र बढ़ने का है और बढ़ाव के लिये अंगार कोयला (Corbon) की आवश्यकता रहती है, पीले अथवा लाल पत्ते या पौधों का इस रंगका कोई भाग आंगारिकाम्ल निकालते हैं इसलिये यह पेड़ को हानिकारक हैं । एक दूसरा काम पत्तों का पानी को भाफ रूप में बाहर निकालना है । एकफसल में एक एकड़ भूमि से ३७५०० से ६२५०० मन तक पानी निकलता है ॥

धड़ व डालियों के कर्म–धड़ की खड़ी नालियां वृक्ष रस (Sap) को पत्ती में पहुंचाती हैं यहां यह रस पत्ती की शिराओं के द्वारा फैल जाता है फिर रस जब आंगारिकाम्ल सोख भाफ निकाल कर गाढ़ा व परिपक्व हो जाता है तो पत्तों के नीचे वाली नसों के द्वारा छाल की भीतरी नालियों में आ जाता है । रास्ते में छिद्रों से बायु सोखता निकालता है, धड़ में की नालियों में घूमता हुआ फिर जड़ में पहुंच जाता है जहां जड़ से सोखे तरल द्रव्य में मिल फिर ऊपर चढ़ जाता है ।

सिवाय सर्दी के सब ऋतुओं में यह रस चारो तरफ घूमा ही करता है यह मनुष्य के खून के तरह है। जैसे मनुष्य के शरीर मे खून से मांस चरबी इत्यादि बनता है वैसेही इस रस से पेड़ का गूदा गोंद इत्यादि बनता है । पेड़ से और जीव से कितनी समता है । पेड़ों के भी प्राण हैं उन्हें भी आघात लगता है वीमारी होती है इत्यादि । शेष फिर

एल.-एन.-नागर

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के भावी सुदिन ।

सृष्टि कर्ता अपनी सृष्टि को सदा एकही ढंग पर नहीं रहने देता अवश्य इसमें कुछ न कुछ परिवर्तन हुआ करता है और इस परिवर्तन को कालचक्र कहते हैं-यह कालचक्र चक्कर खाता हुआ क्या किया चाहता है इस को समझना सहज नहीं हैं-कुछ दिन पहले यहां के लोगों का यही ख-याल था कि हिन्दोस्तान ही नहीं वरन एशिया भर में कभी कोई देश उन्नति न कर सकैगा-किन्तु कालचक्र की प्रेरणा से इधर कुछ ऐसी २ घ-टनायें हुईं जिस्से अनुत्साह पैदा करने वाला यह खयाल अब लोगों के चित्त से जाता रहा और आशा होने लगी कि हम लोग भी अब कुछ करतूत कर दिखावैंगे--अभी तक विलायत के लोगों के मन में यही समाया था कि काले आदमी Coloured race को ईश्वर ने गुलामी ही के लिये सृजा है पर हाल में जापान के सत्पुत्रों ने यह स्पष्ट कर दिखा दिया कि काले आदमियों में अभी शासन करनेकी शक्ति विद्यमान है।

जापान ने जो कुछ उन्नति की है कौन नहीं जानता वरन जापान को उदाहरण में रख चीन और फारस देश में भी जातीय सभायें Natioual assembilies स्थापित होगई हैं, चीन के ५०० विद्यार्थी जापान में युद्ध शिक्षा पा रहे हैं-ऐसे तरक्की के ज़माने में भी अबतरी के हालत में पड़ा हुआ अगर कोई देश है तो हिन्दुस्तान ही है-जो महाभारत के समय तक पृथ्वी भर का शिरोमणि, समस्त सुसभ्य देशों का शिक्षा गुरू और अगुवा था वह अब ऐसी दीन दशा में आगया है कि इसकी अवस्था अब सब भांत शोचनीय है-पर काल चक्र जो नीचे को ऊंचा और ऊंचे को नीचा बात की बात में कर देता है इस ओर भी अपनी सौम्य दृष्टि फेरा है-डेढ़ साल पहले क्या कभी चित्त में आता था कि यहां के लोगों में भी जोश पैदा होगा, बीस वर्ष से कांग्रेस होती है पर कोई विशेष फल देखने में न आया-भूत पूर्व लाटकर्ज़न महोदय ने कुछ ऐसी कल उमेठी कि लोगों में स्वदेशी का जोश आप से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप आ समाना आशा होने लगी कदाचित् अचरज क्या कि इस गिरे हुये भारत का भी पुनः अभ्युत्थान हो और अन्य सुसभ्य देशों की भांति यह भी कुछ कर दिखावै-चीन और फारस को तरक्की करते देख मिस्टर स्टेड ने अपने पत्र Review of reviews में लिखा है कि जब आस पास के देश तरक्की कर रहे हैं तो भारत तरक्की की दौड़ में क्यों पीछे पड़ा है? हम मिस्टर स्टेड को इस हितैषिता के लिये धन्यवाद देते हैं और अपने पाठकों को सूचित करते हैं कि स्वदेशी अभी केवल थोड़े से पढ़े लिखे लोगों में व्यापा है अपढ़ों में इसका असर बहुतही कम पाया जाता है तौभी इस स्वदेशी का असर जैसा १ बर्ष में भया कदाचित् १०० बर्ष में भी होना संभव न था और यह सब उसी कालचक्र की प्रेरणा का परिणाम है-बंबई के कपड़ों की मिलैं जिनका अभीतक बड़ी कठिनाई से काम चलता था इस बर्ष स्वदेशी आन्दोलन के कारण १४ करोड़ के फायदे में रहीं यदि यह स्वदेशी आन्दोलन न हुआ होता तो निश्चय यह रकम विलायत के बनियों के पेट में गई होती॥

स्वदेशी को गवर्मेंट भी अच्छा समझती है। दूरदर्शी वाइसराय लार्ड मिन्टो और मदरास के गवर्नर तथा और २ कर्मचारियों ने भी अपनी सहानुभूति इससे प्रगट की है-हां थोड़े से स्वार्थी और संकीर्ण हृदय के कर्मचारी भी हैं जिन्हें यह आन्दोलन पसन्द नहीं है इस लिये कि उनके देश के जुलाहे और कारीगरों को इससे हानि पहुंचती है-पर यह उनकी नासमझी है यह तो एक दिन होनाही था एक पर्दा सा पड़ा था ईश्वरेछा कुछ ऐसी हुई कि सहसा यह आंख के सामने से उठादिया गया-यही नहीं कि स्वदेशी से भारत को करोड़ों रुपये साल की बचत हो वरन सरकारी इन्तिज़ाम में भी इससे उपकार पहुंचता है-बंगाल की पुलिस रिपोर्ट से विदित होता है कि उस प्रांत में गत बर्ष Crime चोरी चपाड़ाली बहुत कम भई कारण इसका यही है कि लोग जो भूखों मरते थे अपने २ घरों में Hand loom ले कर कालक्षेप करते हैं बहुत से जुलाहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कारीगर जिनका काम बंद होजाने से खेती तथा गुलामी करते थे अब अपने २ काम में फिर लग गये हैं अब इस समय इसकी बड़ी ज़रूरत है कि गोखले ऐसे पुरुष स्वदेश के हर एक प्रांत में पैदा हो सच्चे जी से देश सेवा के काम में तत्पर हों-अस्तु आसार तो ऐसेही देखे जाते हैं जिस से दृढ़ आशा है कि भारत के भावी सुदिन जल्द आने वाले हैं यदि काल-चक्र का चक्कर भी ऐसाही हमारे अनुकूल रहै । इत्यलमतिपल्लवितेन ॥

मूलचन्द

--:o:--

नये २ कारखानों की फिहरिश्त जो स्वदेशी आन्दोलन से खुले हैं

स्पिनिङ्ग वीविङ्ग मिल लाहौर	२ लाख
पाइनियर हेराल्ड लूम वीविङ्ग कम्पनी जलन्धर	५० हज़ार
इण्डियन गुड्स डिपो अहमदाबाद	१ लाख
कृष्णा डाइङ्ग (रङ्गकी मिल) ट्रेडिङ्ग ऐण्ड वीविङ्ग कम्पनी बाढ़ नगर	५० हज़ार
फिनले मिल्स कम्पनी बम्बई	२० लाख
स्वदेशी कोआपरेटिव स्टोर्स कम्पनी बम्बई ३ लाख	२५ हज़ार
पाटनकर कम्पनी बम्बई	१ लाख
आल इण्डिया इन्स्योरन्स कम्पनी बम्बई	५० लाख
भास्कर टेक्नो काटन मिल कम्ब्रे	१० लाख
दियासलाई का कारखाना बम्बई	१ लाख
आटे की मिल शोलापुर	५० हज़ार
इण्डियन् कोआपरेटिव सोसायटी बम्बई	१ लाख
स्पिनिङ्ग और वीविङ्ग मिल बारसी	१० लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रताप स्पिनिङ्ग वीविङ्ग कम्पनी अमलनेर	१० लाख
साहा स्टीम नेविगेशन कम्पनी बम्बई	३८ लाख
बैङ्क आफ इण्डिया बम्बई	१ करोड़
साहा छत्रपति स्पिनिङ्ग वीविङ्ग कम्पनी कोल्हापुर	१५ लाख
चीनी का कारखाना आबू	५ लाख
बरहानचुर ताप्ती मिल	१२ लाख
स्वदेशी मिल पूना	२ लाख ५८ हज़ार
शया जी सुगर वर्क्स गनाद्वी	३ लाख ५० हजार
स्टीम नेविगेशन कम्पनी बम्बई	६० लाख
स्वदेशी बङ्क बम्बई	१ लाख
साबुन का कारखाना बम्बई	१ लाख
बैङ्क आफ वेस्टरन् इण्डिया बम्बई	२५ लाख
चीनी का कारखाना हैदराबाद	१ लाख
चमड़े का कारखाना मदरास	१ लाख
यूनइटेड लैफ इंश्योरन्स	१ लाख
इण्डियन नेशनल ट्रस्टी एसोसियेशन लाहौर	५ लाख
सेण्ट्रल स्पिनिङ्ग वीविङ्ग कंपनी अकोला	७ लाख ५० हज़ार
सायराहफिक इण्डस्ट्रियल एसोसियेशन कलकत्ता	२ लाख
प्रिण्टिङ्ग पबलिशिङ्ग कंपनी दिल्ली	५ लाख
इण्डस्त्रियल् बैङ्क लुधियाना	५ लाख
एण्ड्रूयूल कंपनी कलकत्ता	
भारत हितैषी स्पिनिङ्ग वीविङ्ग मिल कलकत्ता	१० लाख
इण्डियन् स्पिनिङ्ग वीविङ्ग मिल कलकत्ता	१० लाख
लक्ष्मी काटन् मिल शिरामपुर	१२ लाख
देशी कारोबार कंपनी इलाहाबाद	५० हज़ार
तिपरा स्पिनिङ्ग वीविङ्ग मिल बङ्गाल	१५ लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिटागाङ्ग स्वदेशी स्टीम तूतीकोरन	१५ लाख
हाथरस स्वदेशी स्टोर	१२ लाख
स्वदेशी वीविङ्ग कंपनी अमृतसर	५० हज़ार

इनके अलावा दो वीविङ्ग मिल चन्दर नगर में और दो साबुन का कारखाना बङ्गाल में, स्वदेशी स्टोर और लक्ष्मी भाण्डार कलकत्ता मे, शोलापुर मिल, मिल्स इन बरोदा स्टेट, हैण्डलूम वीविङ्ग कंपनी शोलापुर, लूम और इण्डस्ट्रियल मेशीन वर्क्स बेलगांव, इत्यादि खुली हैं।

--:०:--

अलमस्ती का एक चित्र

कोइ दिन दूध मलाई ताजी, कोइ दिन सूखी रोटी भाजी।
कोइ दिन कन्द मूल फल राजी, कोइ दिन बिना अहार ॥ १
कोइ दिन घाम प्यास हैरानी, कोइ दिन जाड़ा जटिल हिमानी।
कोइ दिन सुखद नींद मन मानी, कोइ दिन पड़ती मार ॥ २
कोइ दिन प्रेम पन्थ के योगी, कोइ दिन राजा पण्डित भोगी।
कोइ दिन कुली व काहिल रोगी, कोइ दिन अपढ़ गवांर ॥ ३
कोइ दिन टमटम घोड़ा गाड़ी; कोइ दिन नगर दीप घर झाड़ी।
कोइ दिन सभा समुन्दर खाड़ी, कोइ दिन कारागार ॥ ४
कोइ दिन धोती भद्दी मोटी, कोइ दिन पैंट व पगरी छोटी।
कोइ दिन बलकल पत्ती खोंटी, कोइ दिन नंगे यार ॥ ५
जग झंझट का देख बहाना, रोना हसना आना जाना।
लोचन ध्यान न इन पर लाना, करना देश सुधार ॥ ६

लोचन प्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन रमाने वाली गप्प।

किसी डाकृर के पास एक घड़ी बहुत दिनों से पुश्तैनी थी जब २ बिगड़ती तब २ एक घड़ीसाज़ से जो उसका बंधा ग्राहक था मरम्मत करवा लेते थे—मरम्मती घड़ी कब तक चल सक्ती है। एक बार घड़ी के विगड़ने पर बनाने को दिया दो चार दिन चल कर रुक गई, घड़ी साज़ ने घड़ी के बनवाई की बिल भेजा डाकृर साहब बड़े तैश में आय घड़ी उसके सामने पटक कर बोले। घड़ी की बनवाई में घड़ी ही लेजाओ-घड़ी साज़ बेचारा घड़ी लै चुपचाप चला गया। इत्तिफाक से घड़ीसाज़ की बूढ़ी नानी बीमार पड़ी डाकूर साहब का इलाज शुरू हुआ अपनी विज़िट का रूपया डाकृर साहब बिलपर रोज़ २ चढ़ाते जाते थे। अचानक घड़ी साज़ की वह बूढ़ी नानी मरणासन्न होगई डाकूर चन्द्रोदय दे २ उसे जिलाते थे पर ऐसा मरीज़ कब तक चल सक्ता है प्राण पखेरू शरीर पंजर से अलग हो उड़ गया। डाकृर ने विज़िट का रूपया अदा करने को बिल भेजा। घड़ी साज़ बूढ़ी नानी का मृतक शरीर अर्पण कर बोला। फीस के बदले इसी को ले जाइये। डाक्टर यह सुन बड़ा लज्जित हुआ और फिर विज़िट का बिल अदा करने को उस से न कहा॥

फ्रान्स की राजधानी पेरिस में साइन बोर्ड का बहुत ही प्रचार है और साइन बोर्ड के तर्ज़ से दूकान अधिक चलती है इस लिये दूकानों के आगे नये तर्ज़ का साइन बोर्ड टांगना एक फेशन में हो गया है। इसी नये तर्ज़ की धुन में एक बार एक दूकानदार ने गदहे का सिर बनवा The ass अर्थात् गदहा ऐसा लिख दूकान के आगे टांग दिया। टांगतेही बेहद्द बिक्री होने लगी और वह बड़ा मालदार होगया। जब लक्ष्मी का अधिक प्रादुर्भाव होता है तो छोटी २ बातों की पर्वाह लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नहीं रहजाती दिमाग बढ़ जाता है। कुछ दिन बाद उसने गदहे का सिर निकलवा के फेंक दिया और वह सिर परोस के एक दूकानदार के हाथ लग गया उसने उसे अपनी दूकानमें टांग दिया। गांहक वही दूकान समझ उसी की दूकान पर जाने लगे अपने यहां एक गाहक न आते देख उसने एक वैसा ही सिर और बनवाय टांग कर उस पर The real ass या असली गदहा लिख टांग दिया। पहले तो खाली "गदहा" था पर इस बेवकूफी से अब "असिल गदहा" हो गया ॥

—:o:—

हिन्दुओं के नाम।

हिन्दी प्रदीप की किसी संख्या में नाम की कल्पना देख मुझे भी कुछ लिखने की इच्छा हुई है। आपने पहिले इसके सम्बन्ध में क्या लिखा है सो तो मुझे याद नहीं पर यह निश्चय है कि यह शब्द संसार में फैल रहा है। संसार में ऐसी कोई बस्तु नहीं है जिसका कुछ नाम न हो। यह सत्य है कि नामधारी ब्यक्ति सदा नहीं रहता अवश्य नाश वान् है इस शरीर के नाश होने पर भी अदृष्ट नाम का नाश नहीं होता। भगवान् के औतारों को ऋषि महर्षियों को बड़े राजाओं को हुये हज़ारों लाखों बर्ष बीत गये परन्तु उनका नाम कानमें पड़तेही वे हमारी आंख के सामने आ खड़े होते हैं। मिस्टर जान मारली विलाइत के इण्डिया आफ़िस में बैठे ३० करोड़ भारत बासियों को अपनी अंगुलियों पर नचाते हैं हमने उन्हें कभी देखा नहीं पर उनका नाम सुनते ही जान लेते हैं। आपके हि० प्र० को मैं २० बर्ष से पढ़ता हूं आपका नाम बर्षों से सुनता रहा परन्तु बम्बई के कानग्रेस पण्डाल में जब तक पण्डित श्रीकृष्ण जोशी ने आप का नाम न बतलाया तब तक मैं आप को न पहचान सका। गोस्वामी तुलसी दास जी ने नाम की महिमा में भगवान् मर्यादा पुरुषोत्तम राम चन्द्र जी के नामों का गुण बर्णन करते हुये लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिय रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नामबिहीना॥
रूप विशेष नाम बिनु जाने। करतल गत न परहि पहिचाने॥
सुमिरिय नाम रूप बिनुदेखे। आवत हृदय सनेह विशेखे॥
चहुं युग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिशेष नहिं आन उपाऊ॥
राम भक्त हित नर तनु धारी। सहि संकट किय साधु सुखारी॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा। भक्त होंहि मुद मंगल बासा॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
भंजेहु राम आप भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू॥
राम भालु कपि कटक बटोरा। सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा॥
नाम लेत भव सिन्धु सुखाहीं। करहु बिचार सुजन मन माहीं॥
नाम प्रसाद शम्भु अविनाशी। साज अमंगल मंगल राशी॥
शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी। नाम प्रसाद ब्रह्म सुख भोगी॥
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भक्त शिरोमणि भे प्रहलादू॥
ध्रुव सगलानि जपेहु हरि नामू। पाएउ अचल अनूपम ठामू॥
सुमिर पवन सुत पावन नामू। अपने बश करि राखेउ रामू॥
अमर अजामिल गज गणिकाऊ। भये मुक्त हरि नाम प्रतापू॥
कहहुं कहां लग नाम बड़ाई। राम न सकहिं नाम गुण गाई॥

इस तरह महात्मा तुलसीदासजी ने नाम को रामसे भी अधिक बतलाया है। वास्तव में नाम का महत्व कह नाम जपने की शिक्षा मनुष्यों को दी है। बड़े तपस्वी समाधि लगाय नामी का नाम सहित ध्यान करते हैं और सच पूछो तो संसार के सब काम नाम से ही होते हैं। सज्जन अपने भले कामों से अपना नाम कर जाते हैं दुर्जनों के दुर्जनता के काम देख लोग कहते हैं इसने अपने बाप दादों का नाम डुबो दिया। नाम की लाज रखने ही को भले आदमी खोटे कामों से बचते हैं। क्या वास्तव में हमारे देश वालों को अपने नाम का आदर है? यदि नाम ही का बिचार किया जाय तो मेरी समझमें न आजकलके ब्राह्मण ब्राह्मण हैं न क्षत्रिय क्षत्रिय हैं और न वैश्य वैश्य हैं। मैं भी आप की तरह पनारू कतवारू भोंदू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छदुमी छकौड़ी और घसीटे जैसा नाम रखना पसन्द नहीं करता। मुझे भी आप के समान बंगालियों के से सुरेन्द्र उपेन्द्र रमेश इत्यादि नाम प्यारे लगते हैं परन्तु क्या आप लेगों के काम सुधारे बिनाही नाम सुधारने से हिन्दू समाज की उन्नति समझते हैं? एक गवांरू मसल है "अमर मरन्ते मैं सुने निर्धनिया धनपाल-लक्ष्मी उपले बीनती अच्छा ठंठ गोपाल" एक रामचन्द्र नाम वाला फांसी पावै, दूसरा रमेश नाम धारी भीख मांगे, तीसरा धर्मपाल नाम सब अधर्म करै, तब भोंदू छदमी आदि नाम भी क्या बुरे हैं। जिन दिनों मैं श्री वेंकटेश्वर समाचार लिखता था पण्डित गंगा प्रसाद अग्निहोत्री ने अपने एक लेख में लिखा था कि अंगरेजी Slave "स्लेव" भी इसी तरह भले आदमियों को भी गुलाम बना देता है। जो जित जाति है वह जेताओं की दृष्टि में गुलाम ही समझी जाती है।

आज कल ब्राह्मणों की यहां तक दुर्गति है कि महाराज शब्द का अर्थ रसोईदार समझा जाता है यही बात क्षत्रिय और वैश्यों की भी है। यदि शुद्ध क्षत्रियता का जोश बचा रहता तो भारत पराधीन होता, वैश्यों में अपने देश और जाति के साथ सहानुभूति रख व्यवसाय करने की बुद्धि होती तो इस समय हमें स्वदेशी और बायकाट का आन्दोलन करना पड़ता। बस इसी तरह समझते जाइये और नाम के अनुसार काम मिलाते जाइये। हमारे नगर में एक पागल सा ब्राह्मण रहता था। वह कहता था देखो अजब तमाशा है नाम छोटे लाल और नापो तो ५ हाथ लम्बे। नाम गोरे लाल और मुंह ऐसा जिसपर मानो तवा रगड़ दिया गया। पुराणों के समय के नामों को जाने दीजिये बापा रावल सांगा राणा जैसे नाम इतिहासों मे एक नहीं बीसों मिलैंगे जिन्हों ने अपना नाम अच्छा न होने पर भी देश हित के कारण बड़ा नाम कमाया है। मैं तो यहां तक मानता हूं कि जब से क्षत्रियों ने अपने नाम के आगे सिंह लगाना आरंभ किया तबसे थोड़ेही ऐसे होंगे जिन्हें इस सिंह हो जाने का खयाल मन में रहता है नहीं तो उनका समूह का समूह गीदड़ होगया है। क्या आप शास्त्र पढ़ने के नाम काले अक्षर भैंस बरा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर समझने वाले शर्माओं को; बहादुरी में मेज़ पर चाकू से डरने वाले वर्माओं को, धन संपत्ति के बदले दाने दाने के लिये तरसने वाले गुप्तों को नहीं जानते हैं ? ऐसा कहने से मेरा यह प्रयोजन नहीं है कि लोग अपने बालकों का नाम अच्छा न रक्खें किन्तु इतना अवश्य कहूंगा कि जैसा नाम हो वैसाही काम भी हो क्योंकि नाम बड़ा दर्शन थोड़ा ही ने देश को धूलि मे मिलाया है। महाभारत के समय कुकर्म करने से ही सुयोधन का दुर्योधन और सुशासन का दुःशासन नाम पड़गया। इस लिये यदि लोगों को इस तरह समाज का भय रहै तो हमारे हिन्दू भाई अनेक बुरे कामों से बच सक्ते हैं। मुझे ऐसों से बड़ी घृणा है जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र को गड्ड बड्ड कर नई टकसाल से जाति का नया सिक्का चलाना चाहते हैं। मेरी समझ में उचित यही है कि जो जिस वर्णमें या कुल में पैदा हुआ है उसे उस वर्ण या कुल का सपूत कहलाने योग्य बनना चाहिये क्योंकि समाज का भय जैसा आदमी को बुरे कामों से बचाता है वैसाही जातिका अभिमान और कुलाभिमान भी। लज्जाराम शर्म्मा

प्राचीन ग्रन्थकार

मङ्ख

ये महाशय कशमीर निवासी प्राचीन कवि हैं। इनके रचित ग्रन्थ का नाम श्री कण्ठ चरित है जिसमें प्रारम्भ में बन्दना फिर सज्जन तथा खलों का स्वभाव वर्णन आदि बहुत अच्छी रीति से लिखा है। बूल्हर साहिब का मत है कि मङ्ख कवि श्री कण्ठ चरित को सम्भवतः सन् ११३५ ई० से लेके सन् ११४५ ई० तक के बीच में रचा होगा। निदान मङ्ख कवि ख्रीष्टीय १२ वीं सदी के पूर्वार्द्ध के व्यक्ति सिद्ध होते हैं। अलङ्कार सर्वस्व के रचयिता रूप्यक जिनका समय लोगों ने सन् ११२० ई० अनुमान किया है इन्हीं मङ्ख के गुरू हैं। ये कशमीर के महाराज जय सिंह के सभासद थे। इनके एक भाई का नाम अलङ्कार था जो कशमीर राज के मुख्य मन्त्री थे और दूसरे शृङ्गार थे जिसने जयसिंह के पिता की हर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव के साथ युद्ध करने में सहायता की थी। बूलहर साहिब ने मङ्ख के सम सामयिक कबियों के नाम भी दिये हैं जिनमें से कई एक सुप्रसिद्ध वैयाकरण और दार्शनिक हैं। मङ्ख प्राचीन कबियों में हैं पर इनकी कबिता वैसी चमत्कृत नहीं है जैसा कालिदास माघ और भारवि आदि की है यही कारण है कि सर्वसाधारण में इनका नाम कम प्रचलित है। वह इसी से इनके काव्य में रस बहुत कम है।

मध्वाचार्य

वैष्णवों के सम्प्रदाय प्रवर्त्तक परम विद्वान् स्वामी मध्वाचार्य अपने को वायु का अवतार बतलाते हैं। इनका नामान्तर आनन्द तीर्थ पूर्ण प्रज्ञ मध्व मन्दार भी सुनने में आता है। इन महाशय ने भगवान् व्यास कृत सूत्र पर जो भाष्य रचा है उसे लोग पूर्णप्रज्ञ दर्शन कहते हैं। इनका जन्म शाके १०४० वा सन ११११८ ई० में हुआ था। इनका निवासस्थान दक्षिण में तुलवदेश है। इनके पिता का नाम मधुजी भट्ट था। सर्व दर्शन संग्रह में माधवाचार्य ने भी इनको बायु का अवतार बतलाया है ब्रह्म सूत्र की टीका गीता भाष्य विष्णुतत्व निर्णय आदि कई एक ग्रन्थ इन महाशय ने बनाये। इनकी मृत्यु सन ११९९ ई० में हुई। ये यद्यपि वेदान्ती कहे जाते हैं तथापि इनका मत भगवान् शङ्कराचार्य के अद्वैत बाद के अनुकूल नहीं पड़ता प्रत्युत ये द्वैत बाद के पक्षपाती हैं। इनके शिष्यों के नाम विजय ध्वज ब्रह्मतीर्त और व्यासतीर्थ हैं।

विल्सन महाशय के मत से यह सन १३१२ ई० में वर्त्तमान थे। पर जो समय ऊपर बतलाया गया वही ठीक जान पड़ता है।

मनोरथ

ये महाशय कश्मीर के महाराज जयापीड़ के सभासद हैं। राज तरङ्गिणी में कल्हण ने इनका नाम और २ प्रसिद्ध पण्डितों के साथ लिखा है। महाराज जयापीड़ का समय सन ८१३६ के पूर्व का है ऐसा निर्णय होचुका है निदान जो समय चटक सन्धिमान और दामोदर गुप्त आदि का है वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरथ का समझना चाहिये। अभिनव गुप्त ने ध्वन्यालोक लोचन में मनोरथ को आनन्दवर्द्धन का सम सामयिक भी बतलाया गया है। श्रीधर दास ने षडूक्तिकर्णामृत में भी इनका नाम लिखा है इनके रचित किसी ग्रन्थ का पता नहीं है। जयापीड़ के समकालीन होने के कारण इनका समय ख्रीष्टीय आठवी सदी का पिछला और नवीं सदी का आरम्भ भाग मान लिया जासकता है।

मम्मट

काश्मीर में संस्कृत के अनुपम विद्वान् पण्डित हो चुके हैं। श्री मम्मट जी भट्ट भी उनमें से एक हैं। इनके बनाये काव्य प्रकाश नाम ग्रंथ को संस्कृत साहित्य का रसिक कौन न जानता होगा। लोग कहते हैं नैषध काव्य के रचयिता श्री हर्ष मम्मट के भाञ्जे थे और जब श्री हर्ष ने नैषध काव्य बना अपने मातुल को दिखलाया तो उनने इस बात पर खेद प्रकट किया कि यह मुझे पहिले ही क्यों न मिला। यदि मिला होता तो उदाहरणादि के लिये यह एक ही ग्रंथ पर्याप्त था कई एक ग्रंथों के देखने तथा उदाहरण चुनने का प्रयोजन न पड़ता। नैषध के 'तव वर्त्मनि वर्त्ततां शिवं' इस भाग को 'तववर्त्मनिवर्त्ततां शिवं' इस रीति से पढ़ मम्मट ने उसे अशुभ सूचक भी बता के दोष दिया था।

वास्तव में मम्मट ने काव्य प्रकाश के प्रत्येक बिषय के लिये उदाहरण चुनने में बड़ा श्रम किया होगा काव्य प्रकाश में भट्ट लोल्लट श्री शङ्कुक भट्ट नायक अभिनव गुप्त आनन्द बर्द्धन (ध्वनिकार) वामन रुद्रट और भट्टोद्भट का नाम आया हैं। ग्रन्थ में जहां तहां पतञ्जलि का त्यायन भरत आदि मुनियों के वाक्य उठाये गये हैं और गाथा सप्तशती महावीर चरित, मालती माधव, रघुबंश, कुमार सम्भव, मेघदूत, शकुन्तला, विक्रमोर्वशी, बाल रामायण, विद्धशालभञ्जिका, हनुमन्नाटक, ध्वन्यालोक कुट्टनी मतम्, महाभारत, विष्णु पुराण, किरातार्जुनीय, वेणीसंहार, काव्याद र्श, भर्तृहरि शतक, हयग्रीववध, रत्नावली; नागानन्द, अमरुशतक, माघ, पञ्चतन्त्र, सूर्यशतक, हर्ष चरित, भट्टिकाव्य इत्यादि अनेक प्राचीन ग्रन्थों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पद्य उदाहृत हैं। पर भवभूति कृत उत्तर चरित से कोई भाग उदाहृत नहीं देख पड़ता। क्या इसका यही कारण होगा कि उत्तर चरित सर्वथा निर्दोष ग्रन्थ है अथवा मम्मट के समय में कश्मीर में इस ग्रंथ की प्रसिद्धि नहीं हुई थी। जो हो वीर चरित और मालती माधव से मम्मट ने बहुत से श्लोक उठाये हैं जिस से स्पष्ट है कि भवभूति की प्रसिद्धि मम्मट के समय में कश्मीर में भलीभांति थी। शीला भट्टारिका विज्जिका आदि स्त्री कवियों के तथा भासके स्फुट पद भी काव्यप्रकाश में मिलते हैं मम्मट काव्य प्रकाश को समाप्त नहीं कर पाये थे। दशम उल्लास के परिकरालङ्कार तक रचने पाये थे शेष भाग को अल्लट सूरि ने रचके काव्य प्रकाश को पूरा किया। क्योंकि आनन्द कवि ने काव्य प्रकाश पर जो निदर्शन नाम की टीका रची है उसमें लिखा है।

कृतः श्री मम्मटाचार्य वर्यैः परिकरावधिः।
प्रवन्धः पूरितः शेषो विधायाल्लटसूरिणा॥

मम्मट के पिता का नाम जैयट और छोटे भाइयों के नाम कैयट और उव्वट वा औवट है। ये कैयट वही हैं जिन ने पतञ्जलि रचित महा भाष्य की टीका की है। मम्मट कश्मीर के निवासी हैं और काशी में जाके इनने विद्याभ्यास किया था। इनका मत शैव था। इनके पाण्डित्य की जो कुछ बड़ाई की जावे सव थोड़ी है। वैयाकरण और दार्शनिक तो ये हई हैं पर साहित्य में इनके विशेष ज्ञान का साक्षी काव्य प्रकाश ही है। काव्य प्रकाश की कारिका और वृत्ति मम्मट ही की रचित है पर उदाहरण प्रायः अन्य कबि बिरचित ग्रंथों से उठाये गये हैं। इस ग्रन्थ पर कई एक टीकाएं हैं।

काव्य प्रकाश का अंगरेज़ी भाषा में भी अनुबाद महानुभाव पण्डित वर गङ्गा नाथ जी झा एम. ए. संस्कृत प्रोफेसर म्योर सेन्ट्रल कालिज प्रयाग ने कर दिया है और काशी के पण्डित नामक पत्र में यह ग्रन्थ छप चुका है। उसकी भूमिका देखने तथा मूल काव्य प्रकाश पढ़ने से स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ कितना क्लिष्ट है। अनेकानेक टीकाओं के रहते भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ग्रन्थ बिना दारुण परिश्रम के नहीं पढ़ा वा समझा जा सकता। कहा भी है। "काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे गृहे टीका तथाप्येष तथैव दुर्गमः।"

काव्य प्रकाश की जितनी टीकाएं आज कल पाई जाती हैं उनमें सब से अधिक प्राचीन माणिक्य चन्द्र विरचित सङ्केत नाम की टीका है। यह माणिक्यचन्द्र जैन गुजरात का निवासी है और इसने सन ११६० ई० में काव्य प्रकाश की टीका रची। अतएव काव्य प्रकाश के रचे जाने का समय सन ११६० ई० से पूर्व में निर्णीत होता है।

मम्मट प्रायः मालवाधीश भोजराज के समकालीन हैं। काव्य प्रकाश में भोज राज के दान की प्रशंसा में जो श्लोक हैं उस से स्पष्ट है कि मम्मट भोज से पूर्व के व्यक्ति नहीं हो सकते निदान जब भोज राज का समय सन ९९६ ई० से सन १०५१ ई० तक माना जाता है तो मम्मट का समय उसी का पिछला भाग वा उसके तनिक पीछे मान लिया जावे। यों ख्रीष्टीय ११ वीं शताब्दी के पिछले भाग में मम्मट जी का विद्यमान रहना और काव्य प्रकाश की रचना करना सर्व वादि सम्म प्रतीत होता है।

भक्त माला नाम ग्रन्थ के १४६ अध्याय में मम्मट और गोविन्द ठक्कुर के परस्पर साक्षात्कार होने की कथा है। गोविन्द ठक्कुर मम्मट के बहुत पीछे हुए हैं ऐसा पूर्व में निरूपित किया जा चुका है इससे इन दोनों महाशयों की भेंट सम्भव नहीं जान पड़ती। काव्य प्रदीप काव्यप्रकाशही की टीका है कोई भिन्न ग्रन्थ नहीं है इस बात से भी भक्त माला के कथानक की सत्यता में सन्देह ही उपस्थित होता है। जो हो पाठकों के विनोदार्थ वह कथानक यहां पर लिख दिया जाता है।

एक बार श्रीगोबिन्द ठक्कुर यात्रा करते हुए कश्मीर में काव्य प्रकाश के रचयिता मम्मट पण्डित से भेंट करने के लिये पहुंचे। अम्मट मम्मट और कैयठ ये तीनों भाई थे कैयट ने पतञ्जलि के महा भाष्य पर टीका रची और अम्मट ने वेद का भाष्य लिखा है। गोबिन्द ठक्कुर उनके द्वार पर जा खड़े हुए और मम्मट की स्त्री से पूछा मम्मट कहां हैं। उनका दर्शन किया चाहते हैं। स्त्री ने उत्तर दिया कि तुम यहीं बैठो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्हे आते होंगे। यह देखो सामने एक कुआं है तब तक तुम वहां जाकर स्नान कर लो। ऐसा कह कर स्त्री चली गई। गोबिन्द ठक्कुर कुएं पर गये पर इसका पानी इतने नीचे था कि गोबिन्द ठक्कुर जल भर कर स्नान न कर सके। क्षण भर पीछे मूछ डाढ़ी जटा बढ़ाये पांव में चमड़े का जूता पहने मम्मट भी वहां आ पहुंचे। उन्हें देख गोबिन्द को सन्देह हुआ कि यह कोई मुसलमान तो नहीं है। इतने में मम्मट ने भक्ति पूर्वक उन्हे नमस्कार किया और कहा हे ब्रह्मन् मैं मम्मट हूं आप ने मुझपर कैसे कृपा की? गोबिन्द ने कहा कि यहां कुएं में पानी बहुत नीचे पर है उचित गुण (रस्सी) न होने के कारण मैं स्नान नहीं कर पाता हूं। यह सुन मम्मट तुरन्त घर के भीतर गये और डोल लेकर बाहर निकले। उनने हाथ में कुछ जल ले मन्त्र पढ़ा और कुएं में अभिमन्त्रित जल छोड़ा। उसके प्रभाव से कुएं के मुख तक पानी चढ़ आया मम्मट ने गोबिन्द से कहा आइये और स्नान कीजिये। ऐसा कह मम्मट डोल में पानी भर के स्वयं नहाये और गोबिन्द देखते रह गये। निदान प्रसन्नता पूर्वक गोबिन्द ने स्नान किया भगवान् की पूजा की भोजन प्रस्तुत किया और प्रसाद पाया। पीछे से फिर भाइयों सहित मम्मट गोबिन्द के पास आये और उन्हें काव्य प्रकाश नाम निज रचितग्रन्थ दिखाया गोबिन्द ने भी निज रचित काव्य प्रदीप उन्हें दिखाया और परस्पर उन दोनों ने एक दूसरे के ग्रन्थ लिख अपने पास एक२ प्रतियां रखली। इस प्रकार उन दोनों में बड़ा प्रेम बढ़ गया कुछ दिन पीछे गोबिन्द मम्मट से बिदा मांग मिथिला पुरी की ओर चल दिये।

बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन

इस साबुन के मलते ही सुफेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं। एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफी है। मूल्य प्रति टिकिया १) रुपैया।

इसने दुनिया के ख़िज़ाबों (कल्फों) की कदर घटा दी।

केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गेरेंटी ३ साल मुफ़्त मिलेगी।

मिलने का पताः–

मैनेजर हेअर डाई सोप कम्पनी लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा—

Always get the Emulsion with this mark —the Fishman—the mark of the "Scott" process.

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED NO. A—308.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि
के विषय में हर महीने की पहिली को छपता है ॥

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द [illegible]
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर [illegible]
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

जि० २८ सं० १२ } **प्रयाग** { दिसम्बर सन् १९०६ ई०

पं० बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक की आज्ञानुसार

पं० रघुनाथ सहांय पाठक के प्रबन्ध से

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥=)
समर्थों से मूल्य अग्रिम ३।=) ——०००—— पीछे देने से ४।=)

पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज ३)

——:००:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दीप्रदीप

जि० २८ } प्रयाग { दिसम्बर
सं० १२ } { सन् १९०६ ई०

संपादक की इति कर्तब्यता।

यूरोप और अमरिका के स्वतंत्र देशों में पत्रसंपादकता राज्य का एक प्रधान तन्त्र या सलतनत का एक पांव समझा जाता है। राजा, तब मंत्रि समूह, उपरान्त संपादक का मन्तब्य, इस तरह शासन की समस्त प्रभु शक्ति मे संपादकों की तृतीय श्रेणी Third power है। जो योग्यता पूर्वक संपादक का काम निबाहा जाय तो संपादक का बहुत बड़ा दरजा माना जासक्ता है। साथही संपादकता का वड़ा नाजुक काम भी है, इसमें,बड़ी गम्भीरता, पक्के सिरे की योग्यता, सहिष्णुता और युक्त अयुक्त के बिचार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना बहुत आवश्यक है, स्वार्थ त्याग और समभाव की भी ज़रूरत है। मानो ये दो खंभे हैं जिसके सहारे संपादक अपने विचार, तर्क वितर्क और ऊहा पोह की बड़ी से बड़ी इमारत खड़ी कर सक्ता है, या ये दो बड़े मैदान हैं जिसमें वह कलम के घोड़े दौड़ा सक्ता है "न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः" ॥ इसका पूरा उपयोग संपादक ही के काम में देखा जाता है। पक्षपात One sided view या एकाङ्गी होना संपादक के सुयश प्ररोह के नाश करने को मानो हिमपात है। सिविलियनों का एक मात्र औज़ार पायोनियर जब तब हम लोगों को जट्ट बट्ट सुनाया करता है और यही चाहता है कि हिन्दुस्तानी किसी तरह न उभड़ने पावें। हम जेताओं की जाति के हैं अपने इस जेतृत्वाभिमान को कैसी भद्दी तरह पर प्रगट कर रहा है। अभी हम लोग ऐसा किये होते तो पायोनियर हमें मूर्ख असभ्य और जंगली कह हमारा उच्छेद कर डालने में कसर न रखता।

संपादक को धुंधला तथा उजाला दोनों भाग दिब्य दृष्टि से देखना चाहिये कलकत्ते की पत्रिका सदृश न हो कि गवर्नमेंट के हर एक काम में दोष ही निकाला करे, अंगरेज़ी शासन में कुछ भलाई भी है कभी एक बार संपादक महाशय अपनी फुटही ज़बान से नहीं कहते। सुयोग्य संपादक के लिखने का असर राजा प्रजा दोनों पर भरपूर पड़ता है, सर्व साधारण के दुःख को राजा तथा राज कर्मचारियों तक पहुंचाने को संपादक का लेख अद्भुत द्वार है। जिसके निः स्वार्थ और पक्षपात रहित लेख का यातबार सबको रहता है। देश का सच्चा बन्धु जैसा सम्पादक है वैसा दूसरा नहीं है तब सम्पादक का जितना मान और प्रतिष्ठा की जाय सब कम है। केशरी के सम्पादक बाल गंगाधर तिलक जो इस समय पूना प्रान्त में देव तुल्य माने जाते हैं सो इसी से कि उन्हों ने कई बार कई तरह पर देश के साथ सच्ची सहानुभूति अपने लेखों में दिखलाया है। लोगों ने जब उन का आत्मत्याग देशानुराग की कसौटी में अच्छी तरह कस लिया तब उनमें ऐसा भक्ति का भाव दरसा रहे हैं। शासन के काम में सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजामात्र का राजा की ओर से प्रतिनिधि होकर प्रजा का उपदेशक और शिक्षक बन सक्ता है। इस लिये कि प्रजा की भलाई के लिये राजा ने जो कानून बनाये हैं या कोई नया कानून बनावे उसके मर्म को जैसा संपादक समझता है और तर्क वितर्क द्वारा उसका खण्डन मण्डन कर सक्ता है वैसा दूसरा नहीं। अपने लेख द्वारा सर्व साधारण को Law abiding कानून के अनुसार चलने वाला यही बना सक्ता है। इसी से वह राजा का प्रतिनिधि कहलाने योग्य है संपादकों के ज़ीट उड़ानेका डर न रहता तो ये राज कर्मचारी न जानिये क्या अपने मन की कर गुज़रते। सिविलियन तथा ऐंगलो इण्डियनो ने पायोनियर को अपना औज़ार इस लिये बना रक्खा है कि यह उनकी मन मानी कर गुजरने का भर पूर पोषण करता है। पत्रिका आदि पत्र इसका प्रतिवाद करते हैं इसी से पत्रिका आदि पत्र के हिन्दुस्तानी संपादक कर्मचारियों के आंख का काटा हो रहे हैं। नेपालियन का कथन है कि सम्पादक का प्रतिवाद हज़ार सिपाहियों की एक पलटन के बराबर है। जहां Public opinion सर्व साधारण के एक मत्य का अभाव है वहां पत्र सम्पादकों की राय सर्व संमत मानी जाती है। इस अंगरेज़ी शासन में समाचार पत्रों से जो कुछ लाभ होरहा है किसी से छिपा नहीं है जन समाज में सभ्यता तथा अंगरेज़ी राज की गूढ़ से गूढ़ पालिसी के प्रकाश का यह एक मात्र द्वार है किमधिकम्।

--:o:--

समालोचक और निन्दक ॥

आज कल दैव के सुयोग से हिन्दी साहित्य देश में समालोचकों का जिधर देखो उधर दर्शन हो रहा है। यह सुयोग हिन्दी साहित्य में भविष्यत् की भलाई का सूचक है। यह देख और सुन मातृ भाषा के प्रेमियों में कौन ऐसा होगा जो हर्षोन्मत्त न बन जाता हो। पर खेद है कि विज्ञ समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में समालोचक का नाम जितना आदरणीय है उतना उसके कार्यों से सिद्ध होता नहीं दिखाई देता। लोक में प्रसिद्ध है कि जब कोई किसी वस्तु का मान करने बैठता है तब वह उस साधन वा करण पदार्थ का ज्ञान पहिले कर लेता है जिस से वह मान सिद्ध होने वाला होता है। इसी "मानाधीना मेय सिद्धिः" न्याय के अनुसार जब २ हम समालोचक के परम गौरवान्वित नाम को प्रमाणित किया चाहते हैं तभी तब मन खिन्न हो मुरझा जाता है। हमारे इस कथन का सत्यासत्य जानने के लिये दूर न चल कर "अनस्थिरता" विषयक लेख जनित समालोचकत्व का झंडा थांभने वालों की लेखमालिका पक्षपात का पक्ष तोड़कर पढ़नी चाहिये। मतलब यह है कि जिन प्रशंसनीय गुणों से समालोचक को अलंकृत रहना चाहिये वैसा हम उन्हें नहीं पाते हैं वरन एक प्रकार के निन्दक के रूप में पाते हैं। अतएव इस लेख के द्वारा पाठकों को यह दिखा देना चाहते हैं कि समालोचक और निन्दक एक नहीं है, वरन भिन्न २ हैं, और उन दोनों के गुण कर्म स्वभाव भी भिन्न २ हैं। आशा है, कोई पाठक इसे किसी व्यक्ति विशेष पर आक्षेप न समझेंगे॥

पदार्थ वादियों ने पदार्थ के दो भेद माने हैं: एक सूक्ष्म और दूसरा स्थूल। इन द्विविध पदार्थों में जन्य जनक का ऐसा भारी सम्बन्ध है कि एक के बिना दूसरे का अभाव होजाता है। अर्थात् स्थूल से सूक्ष्म की उत्पत्ति होती है और सूक्ष्म से स्थूल की। सूक्ष्म पदार्थ-समूह को हम यहां परमाणु जगत् कहें तो कोई कठिनता न होगी। इस बात को और भी स्पष्ट कर दिखाया चाहें तो कहना पड़ेगा कि स्थूल पदार्थ वह है जिस को हम रंग रूप आकारादि से अवच्छिन्न होने पर भी अनायास देख सक्ते हैं। दूसरा जो सूक्ष्म पदार्थ है उसके अवयव, जो परमाणु रूप से हैं, हवा में सतत उड़ते रहते हैं। इस लिये इसका ज्ञान प्राप्त करने को हमें ध्यान और चेष्टा विशेष की आवश्यकता होती है। इन दोनों पदार्थों के सृष्टि तत्व पर विचार करने से स्पष्ट प्रगट होगा कि स्थूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थ में संयोगी पदार्थों के परमाणु एक दूसरे से सट कर ऐसे मिले रहते हैं कि उनका सहसा अलग करना मानवी श्रम से परे नहीं तो बहुत ही कठिन है। इसका कारण पदार्थ विद्या में स्नेहाकर्षण कहा गया है। स्नेह वा प्रेम का आकर्षण उन्हीं पदार्थों में होता है जिन में गुणों की कई अंशों में समानता हो। परमात्मा के इस व्यापक नियम का प्रभाव मानव समाज में भी तादृश ही पाया जाता है। जैसे सूक्ष्म से स्थूल पदार्थ की उत्पत्ति होती है वैसेही व्यक्तियों से समाज का जन्म होता है और जैसे स्थूल पदार्थ का रूपान्तर सूक्ष्म परमाणु निचय हैं उसी प्रकार समाज गत व्यक्ति सकल भिन्न २ हैं इस समाज के लिये भी जड़ पदार्थ की तरह प्रेम वा स्नेह की आवश्यकता है। यदि प्रेम न हो तो समाज के छिन्न भिन्न होजाने में ज़रा भी सन्देह नहीं। आशय यह है कि यह प्रेम ऐसी शक्ति है जिस से संसार स्वभावतः दृश्यमान् होरहा है। पुनः, इस प्रेम को गुण की सादृश्यता भी अवश्य मिलनी चाहिये। जिन मनुष्यों के गुण स्वभाव एक दूसरे से भिन्न होते हैं उनका वा उनसे समाज सङ्गठन करना असम्भव है। गुण की समानता में एक ऐसी शक्ति निहित रहती है जो चुंबक की तरह गुणी को अपनी ओर स्वतः आकर्षित करती है। इस से जाति में ऐक्य भाव का उदय होता है। जिस समाज में या जाति में अनेकता होती है वहां प्रेमी मनुष्य का एक दम अभाव दिखाई देता है कारण यह कि प्रेम का गुण है बहुत को एक करना और अप्रेम का गुण है एक को बहुत बनाना। इन्हीं दोनों, प्रेम और अप्रेम, के प्रवर्तक देवताओं को हम समालोचक और निन्दक की अभिधा देते हैं। यह तो हुई परिभाषा अब आगे चलिये।

सच कहा जावे तो समालोचक और निन्दक, दोनों अनन्त गुणवाले हैं। इनके गुणकीर्तन में कई ग्रंथ कई लेख बन चुके और अब तक बनते जाते हैं। ऐसे गुणी जीवों का मुझ सा क्षुद्र के द्वारा स्वभाव वा लक्षण वर्णित होना लेखक का साहस कहा जायगा। तौभी "करौं पवित्र हेतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज बानी" इनके गुणों का थोड़े में यहां दिग्दर्शन किया जाता है।

समालोचक और निन्दक ये दोनों मानवसमाज के मुकुट और कंटक के समान हैं। एक का स्थान ऊंचा और दूसरे का सब से नीचा है। समालोचक सब का हितैषी है निन्दक द्रोही और विश्व विद्वेषी है। समालोचक प्रेम और दया भरी चितवन से संसार को देखता है और निन्दक कुटिल दृष्टि से सर्प की तरह। समालोचक व्यक्तिगत दोष देख सशोक प्रियवाक्य का उपहार करता है। और निन्दक विषैली उक्तियों की बौछार भुजा ठोंक और मूंछ मरोड़ करता रहता है। समालोचक गुण दोष दोनों को देखता है निन्दक केवल दोषमात्र। समालोचक गुण की प्रशंसा करता है निन्दक आह की दीर्घ श्वास छोड़ता है। समालोचक की आलोचना से प्रेम के परमाणु एक दूसरे से मिलते जाते और गुण समानता बढ़ती जाती है पर निन्दक की आलोचना से वेही परमाणु पृथक् २ और हलके होकर हवा में उड़ जाते हैं। समालोचक का वचन असह्य और उत्साह का बढ़ानेवाला होता है और निन्दक का असह्य और उत्साह को हर लेता है। समालोचक का उद्देश्य सर्वतोभाव से श्रेष्ठ और सर्वमान्य है और निन्दक के घर में उद्देश्य का कोई रूप नहीं दिखाई देता। वे सर्वथा नीच बुद्धि और स्वार्थ पर होते हैं। समालोचक के दो ज्योति पूर्ण नेत्र होते हैं और निन्दक के नेत्रों में ईर्षामर्ष का जाला छाया रहता है। समालोचक देश काल और पात्र का विचार कर आगे पांव धरते हैं और निन्दक के पांवही नहीं होते। वह गोल गेंद सा लुढ़कता रहता और डंडे के सहारे चलता है और जब चलता है तब तीव्र गति से चलता है। समालोचक दिवालोक में स्वच्छन्द और सानन्द विचरण करता है और निन्दक उसी प्रकार तमसाच्छन्न गाढ़ निशा में उलूक की तरह। समालोचक पुष्प सौरभ का विशेष आमोदी है और निन्दक है दुर्गन्धि पूरित नरक कुण्ड का कीटराज। समालोचक समाज के ऊपर रहता है और निन्दक समाज से अलग पिशाच रूप में। समा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोचक दूसरों की सम्मति पर आनन्दित होता है निन्दक उससे जल उठता है। इस संसार में प्रत्येक सत्पुरुष की आकांक्षाओं की एक २ सीमा निर्दिष्ट रहती है किन्तु देखते हैं निन्दक में यह बात नहीं पाई जाती है। उसके कार्यों का उपक्रम तो होता है पर उपसंहार नहीं होता। समालोचक को सत्कार्य तथा साधुवाद से सन्तोष नहीं होता और निन्दक को निन्दित कार्य और कुत्साबाद से सन्तोष नहीं होता। दूसरों की बातों का सत्यासत्य जानने के लिये समालोचक के पास एक तराजू और एक कसौटी होती हैं पर निन्दक के पास सिर्फ एक सड़क का साधारण कंकड़, सो भी उसके पास सदा बना नहीं रहता प्रत्युत काम हो चुकने पर फेंक दिया जाता है इत्यादि कहां तक कहें इनके अनेक गुण हैं। यदि एक को सुगुणों का प्रकाशक मणि कहें तो दूसरे को अवगुणों का जन्मदाता विरञ्चि ब्रह्मा। इत्यादि इत्यादि।

जो कुछ दोनों का ऊपर गुण कीर्तन किया गया उस से प्रगट है कि समालोचक निन्दक से भिन्न है। दोनों की गति एकही ओर होने से और लोगों में पक्षपातिता आत्म श्लाघा आदि कुपथ्य का सेवन अधिक होने से कोई यह नहीं कह सक्ता कि कौन समालोचक है और कौन निन्दक है। लोग मन में तो जान लेते हैं कि अमुक समालोचक है और अमुक निन्दक, पर मुंह खोल नहीं कह सक्ते जो विज्ञ और परिणाम दर्शी समाज में एक बड़ा भारी दूषण है। आशा है साहित्य देश के राजा और समाज के नेता इस पर बिचार करेंगे।

अनन्त राम पांड़े-रायगढ़

प्रारब्ध और उद्योग।

उद्योग बादियों की आज कल धूम है बिना उद्योग के फल मिलना असंभव है। सच है उद्योग कारण है और फल परिणाम परन्तु बहुतेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योग करके भी फल को प्राप्त नहीं होते ऐसे समय पर प्रश्न होता है कि उद्योग सफल क्यों नहीं हुआ ? तब उसका उत्तर यह दिया जाता है कि "यत्ने कृते यदि न सिध्यति को ऽत्रदोषः" इसका अर्थ दो प्रकार का है एक प्रारब्ध बादी की दृष्टि से दूसरा उद्योग बादी की दृष्टि से। प्रारब्ध बादी कहता है यत्न किया तिसपर भी फल न हुआ तो इस में हमारा क्या दोष है हमने अपना काम किया यत्न करनाही हमारे अधिकार का है फल हमारे हाथ का नही। भगवान् श्री कृष्ण ने कहा ही है कि "कर्मरायेवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" यत्न बादी कहता है यत्न करके भी यदि सिद्धि न हुई तो देखो कि अब इस यत्न में कः दोषः क्या कसर रह गई उस त्रुटि को दूर करो और फिर यत्न करो तो सिद्धि अवश्य होगी। यत्न करने पर फल का मिलना कार्य कारण भाव के सिद्धान्त का उदाहरण है। अब प्रारब्ध बादी यदि यत्न कर के एक ही बार के प्रयत्न के पश्चात् बिरत होजाय तो समझना चाहिये कि वह गलती है पर है उसको चाहिये कि वह यत्न करता ही चला जाय। यत्न योग्य रीति से हो तो फल का मिलना अवश्य है। उस के लिए फल अदृष्ट है परन्तु यत्न के बिफल होने पर वह दुःखित नहीं होता। वह इस तत्व पर समाधान मानता है कि यत्न ही करना मेरे बस का है फल का देना तो ईश्वराधीन है यह प्रारब्ध बाद है परन्तु प्रारब्ध क्या है ? यह प्रश्न रहाही। प्रारब्ध वह है जो आरंभ होचुका है। मनुष्य क्या जीव मात्र पुनर्जन्म के चक्र पर सवार है। पूर्व जन्मों में आरंभ किए हुए काम उनके इस जन्म के कार्यों के कारण हैं। वे उन कार्यों को बलात् करते ही चले जायंगे। परन्तु इस में भी बाधाएं आती हैं विद्वानों के पुत्र सौ सौ यत्न करनेपर भी क्यों मूर्ख निकलते हैं ? सच है यदि उन्हें पूर्व जन्मों में विद्या का संस्कार ही न हुआ हो तो इस जन्म में विद्या में रुचि क्यों कर हो सकती है यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारब्ध प्रबल है एक राजा मर गया कोई गरीब लड़का जो उसकी वंश प्रणाली में जन्मा है राजा बना दिया गया वह राजा होगया क्यों ? पूर्व संचित के कारण। एक माता पिता के दो पुत्र एक से नहीं होते बुद्धि में, गुणों में शील में क्यों ? उनके पूर्व संस्कार भिन्न रहे होंगे। यह पूर्व संस्कार फल अदृष्ट है और यही प्रारब्ध वादियों का सहारा है परंतु इतना सब मान कर हम उद्योग बादियों की परिपुष्टि करेंगे सो कैसे ? प्रारब्ध बादियों का सिद्धांत कायम रख कर यदि पूर्व संचित और संस्कारों के अनुसार हमारी इस जन्म की परिस्थिति बनी है तो उस से यह सिद्ध है कि इस जन्म में हम जिस प्रकार बर्तेंगे कर्म करेंगे उसी के अनुसार आगामी जन्म में हमारा अदृष्ट होगा। इस से हमारे प्रारब्ध के हम मालिक हैं चाहे उसे बनावें या बिगाड़ें अगर आगे हमारा प्रारब्ध खोटा निकला तो उसके दोषी हमही होंगे न कि ईश्वर या और कोई। अर्थात् हम अपने प्रारब्ध के विश्वकर्मा हैं अगर चाहें तो उसे उत्तम से उत्तम बना सकते हैं हमारे यत्नों के परिणाम मिलेंगे ही वही प्रारब्ध है। इससे अपने भावी प्रारब्धों को यदि सुपरिणामी सुन्दर और सुखदाई बनाने की आप की इच्छा है तो सन्मार्ग में यत्न कीजिये ईश्वरत्व को देखिए उसकी इच्छा और उद्देश्य का अभ्यास कीजिये और उन्ही के अनुसार अपने जीवित कर्तव्य को स्थिर कीजिये फिर मृत होने पर भी आप अमर हैं Even in our ashes live our wonted fires

गणपति जानकी राम दुबे

Honesty ईमानदारी ॥

इस गिरी हुई दशा पर भी देश में धन की कमी नहीं है किन्तु नीयत का सच्चा ऐसे ईमानदार खरे आदमी की कमी अलबत्ता है जिसके विश्वास पर लाखों और करोड़ों का काम शुरू किया जाय और वह उस कारखाने का मेनेजर प्रबन्धकर्ता नियत किया जाय। इससे उचित जान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ा कि आज इसी का कुछ बिचार करैं और अनेक ऊहा पोह के द्वारा सिद्ध कर दिखावैं कि Honesty आर्जव या ईमानदारी आदमी के लिये बहुमूल्य धन है, पर उसी को जो सौंत के इस धन को रखना जानता हो या सीखे हो।

जो जितना चित्त का सरल और निष्कपट है उस मे उतनीही ईमानदारी होगी। जो जितनाही छल कपट और कुटिलाई जानता होगा वह उतनाही बदनीयत होगा। केवल रुपये पैसे के लेन देन मात्र से इसका सरोकार हो सो नहीं वरन हमारे हर एक काम प्रत्येक शब्द जो हमारे मुख से निकलते हैं सबों में इसकी परख होती है। पक्का ईमानदार उनसे बहुत घिनाता है जो डींग मारने वाले बात के धनी नहीं हैं। ऐसा मनुष्य जो कहता कुछ और करता कुछ और है सभ्य समाज में तो वह आदर के योग्य कभी होही गा नहीं सर्वसाधारण में भी उसका कोई विश्वास नहीं करता। मान लो कि कुटिल दुनियादार एकबार दोबार अपनी चालाकी में कामयाब होगया तो बस उसी एक बार दो बार के लिये काठ की हांडो क्या बार २ आग पर चढ़ाई जा सक्ती है ? आगे को सदा के लिये उसका विश्वास जाता रहता है। आदमी का इरादा या नीयत Intention हर एक काम में देखा जाता है। नीयत ईमानदार के मन रूप तख्त ताऊस पर राजा के समान सुशोभित हो जितने बाहरी काम हैं सबों में उसकी जागती ज्योति जगमगाती रहती है। "नीयत की बरकत" यह प्रचलित कहावत बड़े अनुभवी पुरुषों का दिया हुआ सार्टीफिकेट या प्रतिष्ठा पत्र के समान है। हम ऊपर कह आये हैं केवल रुपये के लेन देन में नीयत की परख नहीं है निदान हर एक बात में जो मुख से निकलती है इसकी परख होती है। दियानतदार जो अपनी बात का दृढ़ और कौल का सच्चा है बिना सोचे समझे कोई बात अपने मुख से नहीं निकालता जो कहता है उसे चाहे जो हो निभाता है "प्राण जांय बरु बचन न जाहीं"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदुषां वदनाद्वाचः सहसा यान्ति नो वहिः ।
याताश्चेन्नपराञ्चन्ति द्विरदानां रदा इव ॥

समझदार के मुख से सहसा कोई बात नहीं निकलती जो निकल गई तो फिर उसे वह लौटाता नहीं जैसा हाथी के दांत जो निकले सो निकले। चौहानों के सिर मौर हम्मीर मिट गये पर अपना हठ निबाहा अलाउद्दीन की इताल न कबूल किया। ऐसे का विश्वास करना जो अपने कौल का सच्चा नहीं है बड़ी भूल है किसी का कथन है "बिन दगा दुनिया का कार नहीं। दगा की ढाल रख तलवार नहीं" तात्पर्य यह है कि दगा या बेमानी किसी के साथ करै नहीं पर इस हुनर को जानै अवश्य। निश्चय यह दगा बाज़ों से अपने को बचाने का सहज लटका है। पर हम कहते हैं इतनी भी झुठाई की चालाकी अपने में क्यों आने दे। बात का धनी की बराबर कोई भी धनी संसार में नहीं है तब क्यों हम उस धन में बट्टा लगाने दें। हमें चाहिये हम इस खरापन और चुखाई को अपने हर एक काम में प्रगट करते रहैं-बहुत लोग अपने नित्य के वर्ताव की छोटी २ बातों में इस की उपेक्षा कर देते हैं। जब मामूली छोटी बातों में हम खरे और चोखे अपने को न दिखला सके तो कौन आशा है कि कोई बड़ा फर्म हमें सौंप दिया जाय और हम दियानतदार बने रहैं। अपनी गाढ़ी मेहनत की कमाई के सिवाय फर्म की उस बड़ी सम्पत्ति को मिट्टी का ढेला मानें और अपनी नीयत को डिगने न दें। ऐसे खरे सच्चे लोगों का हमारे यहां सर्वथा अभाव तो न कहैं गे पर ऐसों की कमी अलबत्ता है। हम इस स्वदेशी आन्दोलन में कृत कार्य तभी होसकेंगे जब ऐसे लोगों को अपने बीच पैदा करैं या बनावें। वाणिज्य या तिजारत की यह ईमानदारी मानो जान है जो देश तिजारत में चढ़ा बढ़ा है वहां ऐसों की अवश्यमेव अधिकाई होगी हमारे यहां का वाणिज्य अधिकतर माड़वारियों के हाथ में है इनमें कहां तक ईमानदारी है सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी से साफ़ ज़ाहिर है कि कोई साल खाली नहीं जाता जिसमें दो एक दिवाले न पिटते हों। बंगाल में पढ़े लिखे स्वदेशी के पीछे छटपटा रहे हैं पर जिनके हाथ में तिजारत की कुंजी है वे यही माड़वारी हैं जिनमें बिलकुल इसका असर नहीं पहुंचा न वे अपना स्वार्थ चावल भर कम कर सक्ते हैं तब कैसे कहैं कि बङ्गाल के लोग इसमें कामयाब होंगे। यही सब देख भाल बम्बई वाले रोज़गारी माड़वारियों को नहीं घसने देते और बराबर उन्नति करते जाते हैं। M. P.

वृत्तियां।

कापोती वृत्ति–है इत लाल कपोत ब्रत कठिन नेह की चाल। मुख सों आह न भाखि हैं निज सुख करो हलाल।

वैतसीवृत्ति–अनम्राणां समुद्धर्तुं स्तस्मात्सिन्धुरयादिव। आत्मासंरक्षितः सुह्मै र्वृत्तिमाश्रित्यवैतसीम्।

अजगरी वृत्ति–दैव और प्रारब्ध पर विश्वास किये अजगर के समान पड़े रहना।

मधुकरीवृत्ति–सारग्राही जैसा शहद की मक्खी थोड़ा २ फूलों से रस खीच इकठ्ठा करती है

श्ववृत्ति–सेवावृत्ति–दास्य-सेवकाई-नीचसेवा-श्ववृत्तिर्नीच सेवनम् "ऋतामृताभ्यां जीवेत ऋतेन प्रमृतेनच-सत्यानृताभ्यांजीवेत नश्ववृत्याकथंचन" "ऋतमुञ्छशिलं प्रोक्तं अमृतं यत् अयाचितम्। सत्यानृतंतु वाणिज्यं श्ववृत्तिर्नीच सेवनम्।

बक वृत्ति–दंभ, दिखाने मात्र को साधु, बगुला की तरह।

वन्यवृत्ति–बन के फल फूल खाके रहना "वन्यवृत्तिरिमांशश्वदात्मानुगमनेन्दगाम् रघु।

आकाशी वृत्ति–कहीं से कुछ निश्चित आमदनी का न होना।

शिलोंछ वृत्ति–खेत या मण्डई में गिरे पड़े दानाओं को बिन उसी को खाकर रहना-पहले के ब्राह्मण ऐसाही करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयुक्त विशेषण ।

चेष्टा-काकचेष्टा-ध्यान-बकध्यान-निद्रा-श्वाननिद्रा-सुख की नींद दीर्घ निद्रा-गाढी नींद-कुम्भकरण की नींद-कोकिलकण्ठ-कलकण्ठ-नाद-ग्रर्तनाद-स्वर-गम्भीरस्वर-ग्रीवा कम्बुग्रीवा-गरदन-शंख सी-सुराही सी नासिका-तिलपुष्प नासिका-सुग्गा की टोंट सी-कपोल-गोल कपोल Rosy cheeks ग्रधर बिम्बाधर-विद्रुम सा-बन्धुजीवप्रभाहर-"ग्रधरेऽमधीराल्या बन्धुजीवप्रभाहरः-ग्रन्यजीवप्रभांहन्त हरतीति किमद्भुतम्"-बाहु-ग्राजानुबाहु-भोगिभोग-हाथी की सूंड़ सी-छाती-किवाड़ सी "कपाट वक्षा परिणद्धकन्दरः" शिलोरस्क-पेट ताशा सा-ढोल सा-नगाड़ेसा-उदर दरी-इपनुदरद ी दुरन्त पूरा यदि न भवेदभिमान भंगभूमिः-हाथ मुक्तहस्त बद्धमुष्टि-रिक्तपाणि खालीहाथ-पाणिपल्लव-शोणपाणि-पंचशाख-सुख कुलिहया सा-बन्दर सा-मुग्ध मुखच्छवि-बदनारविन्द-प्रसन्न बदन-चन्द्र बदन-इन्दु मुख-मनहूस-चेहरा-उदास-घोड़ासा-लुखरी सा-हास्य-ईषत्हास्य-दन्त कुदमल मोती-से-ग्रनार के दाने से-केश रेशम के लच्छेसे-केशपास-केशकलाप कान सूप सा-कुंजर सा-माथा-चौड़ा-ललाटफलक-तख़ासा-शेष फिर कभी। जि-१५ के जनुग्ररी फेब्रुग्ररी ग्रौर मार्च के नम्बर में हम इसे सविस्तृत लिख चुके हैं ।

---:०:---

होता ग्राया है ।

ब्याह शादियों में गाली क्यों गाई जाती है ? होता ग्राया है । दिवाली में जुग्रा सब लोग क्यों खेलते हैं ? होता ग्राया है । होली के दिन फोश बातें क्यों बकी जाती हैं ? होता ग्राया है । विवाह में कन्या से कुम्हार का चाक क्यों पुजवाया जाता है, धोबिन से सुहाग क्यों दिलाया जाता है ? होता ग्राया है । निरक्षर भट्टाचार्य सब भांत ग्रवारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलाचार्य पुरोहित क्यों किये जाते हैं ? होते आये हैं । छोटे २ दुध मुहे नासमझ बालक बालिकायें सात भांवर फिराय क्यों मिला दिये जाते हैं ? इस लिये कि ऐसा होता आया है इत्यादि । श्रुति स्मृति पुराण धर्मशास्त्र के सब ग्रंथों को उलट डाला । पुराने ऋषि और मुनियों के वाक्यों का मर्म छानडाला । इतिहास की पुस्तकों के एक २ पत्रे पढ़ डाला पर इस होता आया का मूल कहीं न पाया । देश के किसी प्रमाणिक पुरुष ने इसे चलाया है सो भी नही, गतानुगतिक के क्रम पर ऐसा होता आया है तो कोई ज़रूरत नहीं कि तुम अपनी अकिल के घोड़े को भेड़िया धसान के मैदान में सरपट भगाओ । किन्तु अन्धी समाज को प्रसन्न रखना चाहते हो तो आंख मूंद अन्ध परंपरा पर बराबर चलते रहो ।

फारसी और संस्कृत ॥

मारस्पर्श समं सरोजशयनं मारांगना शुद निशा
हेहरगिज़ हितकारिणि मम गले हारोपि नारोप्यताम् ।
दूरे रफत पतिर्मनोभवहमी वाणैर्मरा मेज़नद् हाला मं
चिकुनं सुधापतिरसौ तापाय मे मेशवद् ।

--:०:--

उर्दू और संस्कृत ।

दृष्ट्वा तत्र विचित्रतां तरूलतां मै था गया बाग में
काचित्तत्र कुरंगशावनयना गुल तोरती थी खड़ी ।
उद्यद्भ्रू धनुषा कटाक्ष विशिखैर्घायल किया था मुझे
मज्जानी तव रूपमोहजलधौ हैदर गुज़ारे शुकुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा स्वामी रामतीर्थ ।

विरक्त और त्यागियों में स्वामी दयानन्द के उपरान्त यही महानुभाव सच्चा देश हित चाहने वाले हुये । इनमें तो बहुत से एसे गुण थे जो और ठौर कहीं नहीं पाये जाते । आत्मत्याग और दृढ़ संकल्पता की मूर्ति थे । पुराने क्रम की तपश्चर्या के नमूना थे। यों तो हिन्दू पन को लात मार कितने अंगाली बंगाली इङ्गलैण्ड और अमरिका होकर लौटे हैं, लेकचरों में बड़ी २ बातें झकोराकरते हैं पर कच्चा अन्न और फलखाकर इन्होंही ने अपनी हिन्दुआनी निबाहा । ऐसा दृढ़आचारवान् हम किसी को देखैं तो कभी समुद्र यात्रा का प्रतिवाद न करैं । हा कराल काल तू किसी को नहीं छोड़ता ।

राजा सर तन्जोर माधव राव के. सी. एस. आई.

भारत वर्ष में ऐसा कौन मनुष्य होगा जिसने सर टी माधव राव का नाम नहीं सुना हो ? भारत माता के ये वही सुसन्तान हैं जो अपने समय के सर्वोच्च नीतिवान्, विद्वान् और चरित्र वान् पुरुष थे। जिन्हें सरकार ने भारत का एक मात्र राजनीतिज्ञ और देश सेवी जानकर के. सी. एस. आई. की पदवी से सुशोभित किया था, जिन्हें समस्त भारतवासी अपना आदर्श गुरू और शिक्षक मानते हैं । देशी राजे जिन्हें अपना एक मात्र विज्ञ राज कार्य कुशल मन्त्री तथा प्रजा पालक जानते थे जिन्हें प्रजागण अपना अपूर्व सहायक और उपकारक समझते थे ।

आज हम इन्हीं पुरुषरत्न का जीवन चरित पाठकों को भेंट करते हैं।

जिस समय मुसलमान बादशाहों के अविवेक और अधर्मपूर्ण राजनीति से भारत थर्रा रहा था, जिस समय प्रान्त २ और ग्राम २ में राज द्रोह के चिन्ह दिखाई दे रहे थे, जिस समय अपने धर्म कर्म के नाश होने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय से धार्मिक हिन्दू नर्मदा, गोदावरी, यमुना और गंगा जी की गोद में शरण ले यवनों के हृदय विदारक पुराचार और पापों से मुक्ति पा रहे थे उसी समय कई एक उच्च कुल महाराष्ट्र-ब्राह्मण तन्जोर देश में आ बसे थे। कालान्तर में वे मद्रास प्रान्त के कई स्थानों में उपजीविका के हेतु बिखर गये थे। इन्ही कुलीनों के एक कुल दीपक अपने बाहु बल और दृढ़ अध्यवसाय से त्रावन्कोर के वेंकटराव राजा के इतने कृपा पात्र हुए कि राजा ने उन्हें दीवान की उच्च पदवी से सुशोभित कर इनपर अपने प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि बड़े आदमी के पुत्र पौत्रादि शुष्क अभिमान से ग्रस्त होकर विद्या तथा सत्संगति आदि की परवाह न कर स्वेच्छाचारी हो व्यभिचार इत्यादि दुराचार ही को अपने पूर्व पुरुषों की अर्जित कीर्ति की रक्षा का उपाय मान लेते हैं। और वे यही प्रगट करते रहते हैं कि एक दिन हम भी अपने पिता पितामह के उस उच्च पद पर आरूढ़ होंगे तब अपनेमन की कर गुज़रेंगे।

परन्तु इस स्थल में हमें यह बात आश्चर्य जनक मालूम होती है कि राजा वेङ्कट राव के पुत्र पौत्र भी उन्हीं के पद के अधिकारी होते हैं यहां आश्चर्य दूर करने के हेतु हमें यह कहना असङ्गत नही होगा कि यह सुशिक्षा और सावधानी का ही फल है। अस्तु राजा वेङ्कट राव के पश्चात् उनके भतीजे राजा रङ्गराव त्रावनकोर के दीवान नियत किये गये। यही हमारे इस चरित्र नायक के पूज्य पिता हैं।

हमारे चरित्र नायक का जन्म सन् १८२८ ई० को कुम्भ कोणम ग्राम में हुआ था जो दक्षिण देश में संस्कृत विद्या का घर है और जहां बड़े २ संस्कृत विद्वानों का बास है।

१३ वर्ष की अवस्था में माधव राव प्रेसीडेन्सी हाई स्कूल में भरती हुए ५ वर्ष के बाद फर्स्ट क्लास का डिप्लोमा प्राप्त कर लिया। उन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि और विद्या को देख कर मिस्टर ई. बी. पोवेल सी. एस. आइ. ने उन्हें एक चतुर और बिचित्र विद्यार्थी कहा था। थोड़े ही दिनों के पश्चात् वे पोवेल साहब की जगह में गणित और नेचुरल फिलासफी के 'एक्टिङ्ग' प्रोफेसर नियुक्त किये गये। यह पद दुर्लभ्य विख्याति का चिन्ह स्वरूप था॥

१८४७ में माधव राव ने मद्रास एकौनटेन्ट जनरल के आफिस में प्रवेश किया और अप्रैल १८४९ तक उसी काम को योग्यता के साथ करते रहे। इसी समय त्रावनकोर के राजा को अपने युवराजों को पूर्ण शिक्षा के हेतु एक योग्य अध्यापक की आवश्यकता पड़ी। माधवराव इस कार्य के हेतु शिफारिस करके भेजे गये। उस समय उनकी अवस्था केवल २१ बर्ष की थी। तथापि उन्होंने ऐसी योग्यता और सफलता के साथ कार्य-कुशलता दिखलाई कि महाराजा ने उन्हें १८५३ ई० में अपने यहां की 'पब्लिक सरबिस' में भरती किया।

डिप्टी पेशकार की जगह से वे राज्य के काम काज में सर्वोच्च पद दिवानी तक पहुंचे और इस पद पर १४ बर्ष तक बने रहे।

सन् १८५८ से १८७२ तक त्रावनकोर का राज्य शासन वस्तुतः सर माधवराव ही के हाथ रहा। उन्हों ने एक दम बड़े २ सुधार जारी किये जिस से उनमें एक योग्य और सफल शासक होने के चिन्ह पाये गए। सर माधवराव ने राज्य के ब्यापार की खूब उन्नति की दीवानी और फौज़दारी अदालत की प्रचलित प्रथा का पुनर्वार संशोधन किया। सर्वसाधारण सम्बन्धी शिक्षा के हेतु उत्तम नियम बनाये, औषधालयों की आवश्यकता की पूर्ति की और पबलिक वर्क्स की तरतीब भी उदार भाव सहित जारी की। यद्यपि इन सब कामों से राज्य का खर्च बहुत बढ़ गया तथापि वार्षिक आमदनी पहिले की अपेक्षा अधिक होने लगी।

३० अप्रैल सन् १८६६ ई० को सरकार ने माधवराव को के. सी. एस. आई. की पदवी से सुशोभित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास के गवर्नर नेपियर साहब ने तब कहा था । यह राजकृपा की चिन्ह स्वरूप पदवी जो आप को मिली है यह बात ज़ाहिर करेगी कि हमारी दयालु सरकार का ध्यान और उदारता अपने आश्रितों में ही बद्ध नहीं है किन्तु श्रीमती महारानी विक्टोरिया उनका भी मान करती हैं जो देशी राजा तथा वहां की प्रजाओं की ईमानदारी से सेवा करते हैं ।

परिश्रम और चतुराई के सहित महाराजा की सेवा में लगे रहिये और महाराजा के बुद्धिबल और सद्गुण का प्रभाव लोगों पर डालिये । जिस महत् कार्य में आप नियुक्त हैं वह स्थानीय और क्षणिक विख्याति से बढ़ कर है । स्मरण रखिये कि उत्तम हिन्दुस्तानी मंत्री के जो जो कर्तव्य आप कर रहे हैं उसका इङ्गलैण्ड की राजनीति और भावी नेटिव गवर्नमेण्ट (देशी राज्य शासन) में बड़ा भारी चिरस्थायी प्रभाव होगा ।

मई सन् १२७२ में सर माधव राव ने त्रावनकोर की दीवानी का इस्तीफा देदिया उनको तब ५००) मासिक पेन्शन मिलता था । इसी ई० में वाईसराय ने माधवराव को अपनी लेजिसलेटिव कौन्सिल में एक सीट देना चाहा । प्रान्तीय गवर्नर ने भी माधवराव की खूब बिनय की किन्तु खानगी कारणों के हेतु उन्हें इसे इनकार करना पड़ा ।

माधवराव सन् १८७५ से १८८३ ई० तक बरोदा के भी दीवान रहे । वहां भी उन्हों ने उत्तमोत्तम सुधार किये और राज्य का प्रबन्ध अच्छी तरह से किया ।

इन्दौर में भी वे ३ बर्ष तक दीवान थे यहां भी राज्य का प्रबन्ध और सुधार चतुराई से कर राजा प्रजा में खूब ही प्रेम बढ़ा दिया । बरौदा के दीवान का पद त्याग कर मद्रास में आकर रहने लगे । समय २ A Native Thinker और A Native Observer के नाम से छोटे २ लेख लिखते रहे और वहीं उनकी मृत्यु भी हुई । एक समय उन्हों ने कहा था । छोटे २ लेख लिखने वाले साधारण लेखक सर्वसाधारण की बहुत भलाई कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं जितनी बड़े २ लेखकों से नहीं हो सकती है। जिस प्रकार तीसरे दरजे के यात्रियों से दूसरे और पहिले दर्जे के यात्रियों की अपेक्षा रेलवे को अधिक पैसे मिल सकते हैं।

सर माधवराव की वक्तृतायें बड़े जोश की और सदुपदेशों से भरी हुई होती थीं। सफलता प्राप्त करने की दो बातें एक बार उन्होंने यह कही थीः—

Each individual should resolve to do some good according to his means and opportunities and as often as may be possible (प्रत्येक मनुष्य को अपने धन और अवसर के अनुसार जितनी बेर हो सके कुछ न कुछ उपकार करने को निश्चय कर लेना चाहिये)

सन् १८८१ ई० में अपने कानवोकेशन एड्रेस में उन्होंने विद्यार्थियों को बहुत अच्छा उपदेश दिया है हम अपने मित्रों से अनुरोध करते हैं। उसे पढ़ैं वह अतीव शिक्षाप्रद और प्रजारञ्जक है।

पांडेय लोचन प्रसाद

हम लोग गिरतेही जाते हैं।

समाचार पत्र और थोड़े से पढ़े लिखे लोग गला फाड़ २ चिल्ला रहे हैं और सिद्ध करते हैं कि हम लोग तरक्की कर रहे हैं और अब तो स्वदेशी ज़ोर पकड़ता जाता है देखतेही देखते देश उन्नति के शिखर पर लपक कर झट चढ़ जायगा। किन्तु यह तो महाजनों की बही का सा हाल हम पाते हैं "कागज़ देखे धन बहुत घन देखे धन नाहिं" मीटिङ्ग और सभाओं में बाबू साहब बक्तृता के जोश में ज़मीन और आसमान का कुलाबा मिलाते हुये सिद्ध कर देते हैं। "यह सभ्यता का समय है भारत भूमि और स्वर्ग का ४ अंगुल का अन्तर रह गया है घबड़ाइये नहीं बस अब लिया है" ईश्वर कुशल करे भारत भूमि का स्वर्ग के साथ "कोलीज़न" रगड़ होने पर क्या गज़ब होनेवाला है। हम तो भीतरही भीतर पोले पडे जाते हैं अकाल और प्लेग एक दिन के लिये चैन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेने देता विलाइत वाले जुदाही भारतमें कुबेर का खज़ाना गड़ा हुआ मान रहे हैं उधर लेक्चरार सिद्ध करते हैं हम उन्नति कर रहे हैं। इसकी पंचाइत हम अपने विज्ञ पाठकों पर छोड़ते हैं हकीकत हाल क्या है फैसला करले।

देश सेवा महत्व।

धन का महत्व, प्रभुता का महत्व, ऊचे पद पर पहुंचने का महत्व, उच्चकुल प्रसूत होने का महत्व, विद्या का महत्व, किसी तरह दुर्लभ नहीं है बहुतों को इस महत्व के कारण बड़े से बड़ा फायदा पहुंच रहा है। पर देश सेवा का महत्व ऐसे ही कोई बड़ भागी हैं जिन्हें मिला है। यूरोप और अमरिका के उन्नतिशाली देशों में कोई ऐसा घराना नायाब होगा जिसमें दो एक व्यक्ति उस घराने के इस महत्व को न पहुंचे हों। जापान में तो एक २ बालक प्राण पन से देश सेवा के लिये सन्नद्ध है। ऐसी बात से उन्हें घिन और चिढ़ है जिससे उनका जाती फायदा हो पर देश का उससे कुछ अकल्याण या नुकसान है। हमारे यहां अपने थोड़े से फायदे के लिये भड़ भूंजे के भार में देश को झोंक देने को लोग तैयार बैठे हैं। अफसोस इन पुरुषार्थ बिहीनों को मौका ही नहीं मिलता कि अपने इस हुनर को प्रगट कर दिखावें। जब कभी इस तरह की बात आ पड़ती है तो ये उतरा चढ़ी कर उस मौके को कभी हाथ से नहीं जाने देते और अपने भरसक नहीं चुकते। उनके निज का फायदा हो या न हो पर देश का बिगाड़ हो जाय कुछ परवाह नहीं। कलकत्ते के मारवाड़ी इसका उदाहरण हैं जो बड़े बड़े हौसों की दलाली में डिसकौंठ के थोड़े से फायदे के लिये देशी माल को नहीं बिकने देते। ऐसा ही यहां के महाजनो का क्रम देखा जाता है। ऐसी उतरा चढ़ी करते हैं कि अपना नुकसान तक सह लेते हैं और गवर्नमेंट उनकी इस मूर्खता का भरपूर फायदा उठाती है। ध्यान देने लायक है जापान सरीखे उन्नतिशाली देशों में सर्व साधारण को अपने देश के महत्व की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोट है यहां पढ़े लिखों में भी बहुत कम ऐसे लोग हैं जिनमें आत्म त्याग का अंकुर हो और देश के मुकाबिले अपने निजके महत्व को छोड़ बैठे हों। जब यह हाल है तो इतने बड़े देश में गोखले तिलक मालवीय सरीखे इने गिने देश सेवी हुये तो उतने से क्या होता है। एक चना कभी भार फोड़ सकता है। फिर भी देश सेवियों की ऐसी महर्घता में इन महात्माओं को धन्यवाद है। उसके अहोभाग्य हैं जिसे इन महा पुरुषों की चरण रज माथे पर चढ़ाने को मिल जाय। देश सेवा के कारण जो महत्व को पहुंचे हैं सफल जन्म उन्ही का है। जब देश में एक २ आदमियों को इस महत्व तक पहुंचने की चोट हो और इसके पाने का उत्साह बढ़े देश का सच्चा सुधार और मुल्क की सच्ची तरक्की तभी होगी।

पुस्तक समीक्षा

बाल रामायण

बाल भारत के ढङ्ग पर उसी इण्डियन प्रेस की छपी यह पुस्तक है प्रकाशक इसके ज़िला मेरठ निवासी रामजी लाल शर्मा हैं मूल्य ॥) भाषा इसकी सब के समझने लायक है मूल्य भी उचित रक्खा गया है।

हिन्दी ग्रन्थमाला

मासिक पुस्तक

हम उन दांभिकों को दूरही से नमस्कार करते हैं जिनको मातृ भाषा में केवल दिखलाने मात्र को प्रेम है जो इसके सच्चे प्रेमी हैं और अच्छे २ लेख से हिन्दी साहित्य का भंडार भरा चाहते हैं उन्हें अवश्य इसका ग्राहक बनना चाहिये इसका मूल्य ३) वार्षिक है। पता व्यवस्थापक हिन्दी ग्रन्थ माला नागपूर।

स्वदेशी आन्दोलन और बायकाट

माननीय तिलक महोदय ने इस पुस्तक में भारत की उन्नति का एक मात्र उपाय बतलाया है। यह प्रबन्ध पहले केशरी नाम के मराठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा के पत्र में प्रकाशित हुआ था जिसके सम्पादक श्रद्धास्पद तिलक महोदय हैं। माधवराव सप्रे ने हिन्दी में इसका उलथा कर पहले ग्रन्थ-माला में छापा था इसलिये इस पुस्तक रत्न के धन्यवाद पात्र सप्रे महाशय हैं मूल्य इसका =)॥ है। हमें यह प्रकाश करते बड़ा हर्ष होता है कि सप्रे महाशय हिन्दी साहित्य की उन्नति जी से चाहते हैं। इन्होंने रामराव स्मारकफंड खोला है जिसमें दो हज़ार रुपये की आवश्यकता है उसके ब्याज से हिन्दी के ग्रन्थ लिखने वालों को पारितोषिक दिया जायगा। जिसमें ६०८ रुपये इकट्ठे हो चुके हैं और ये रुपये बङ्गाल बङ्क नागपूर के सेक्रेटरी के पास जमा रहेंगे हिन्दी साहित्य के वृद्धि की यह उपाय सराहने योग्य है।

भारत की वर्तमान दशा

यह पुस्तक जगन्नाथ चतुर्वेदी कृत एक अङ्गरेज़ी किताब का अनुवाद है। इसे पढ़ हम जान सकते हैं इस वर्तमान् शासन में हमारी क्या दुर्दशा है और इतनी दुर्दशा सहकर भी गुलामी का झंडा उठाये नौकरी पाने के लिये कटे मरते हैं और स्वच्छन्द व्यवसाय नहीं किया चाहते। पता मेनेजर हिन्दी ट्रान्सलेटिङ्ग कम्पनी बड़ा बाज़ार कलकत्ता।

पीयूष प्रवाह

इस पीयूष का प्रवाह वहुत दिन हुए सुग्रहीत नामधेय पं० अंबिकादत्त ब्यास जी के समय प्रारंभ हुआ था। ब्यास जी जैसे सीधे सादे थे वैसा ही इसे भी प्रवाहित करते चले गये पर अब दो मास से बड़े चटकीले वेश भूषा के साथ इसमें स्वर्गीय पीयूष की फिर लहर आ गई है इस पीयूष रस का स्वाद चखना हो तो १॥) भेज कर इसके ग्राहक बनिये। लेख उत्तम होते हैं यदि बराबर ऐसे ही होते जांय।

स्वदेश प्रचार के उपाय

यह प्रबंध गङ्गाप्रसाद गुप्त की लेखनी का विकाश बड़ा ही चित्ताकर्षक है पर केवल स्वदेशी स्वदेशी रटने ही मात्र से काम न चलैगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों को स्वदेशी के बर्तने पर आमादा करना चाहिये । केवल स्वदेशी के बर्तने से भी हमारे देश का दरिद्र दूर न होगा जब तक Free trade वाली पालिसी के अनुसार हमारे देश की पैदावार बाहर जाना बन्द न होगी । थोड़े धन में कच्चा बाना हमसे लै लोहा लक्कड़ हमारे माथे मिढ़ बिलायत वाले बीस गुना भर लेते हैं । दूसरे यह कि रूई आदि कच्चा बाना जब न रहेगा तो हम स्वदेशी में कहां तरक्की कर सकेंगे । पूंजीवाले अपने थोड़े फायदे के लिये सब पैदावार खरीद विदेशों में भेज देते हैं मंहगी और अकाल अटल रूप में यहां छाया रहता है । अल्पवित्तवालों का मंहगी जिन्स खरीदते २ चूर ढीला होता जाता है मूल्य इस पुस्तक का -) है ।

स्मार्त मर्म

श्री मधुसूदन गोस्वामी रचित । वैष्णव धर्म तथा वैष्णव संप्रादय इसमें सर्वोत्कृष्ट सिद्ध की गई है । गोस्वामी जी ने अपने पाण्डित्य के मर्म को स्मार्त मर्म के ब्याज से बड़ी योग्यता के साथ इसमें प्रगट किया है । बिना मूल्य केवल पोस्टेज भेज देने से यह पुस्तक मिल सकती है । देवकी नन्दन प्रेस वृन्दाबन की छपी है ।

सुधासिन्धु

१ शीशी का दाम ।।) है । यह नाम ही की सुधा नहीं है वरन काम भी इसका नाम के अनुसार है जो इसके विज्ञापन से प्रगट है हाथ कङ्गन को आरसी क्या एक शीशी मंगाय अजमा लीजिये ।

विरक्त ऐसे होने चाहिये ।।

श्री स्वामी शंकराचार्य के मत का यहां एक मठ है मूल पुरुष इसके ब्याघ्राम्बर बड़े महात्मा हो गये हैं जिन्हों ने अपने बहुत से करामात दिखला अकबर आदि बादशाहों से मठ के लिये कई ग्राम माफी प्रस्त किये थे । पर बीच में इस मठ के जो अधिकारी होते गये उनकी बेपरवाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और आलस्य से ग्रामों का भरपूर इन्तिज़ाम न होसका और जहां तहां लोग उसे दबाने लगे थे कि ऐसे समय स्वामी पुरुषोत्तम गिरिजी मठाधिकारी हो अपने योग बल तथा अन्यान्य उपायों से मठ की सब जायदात को अच्छी तरह अपने पूरे अधिकार में लाये, प्रीवी कौंसिल तक मुकद्दमा लड़े अब इस समय मठ की सब जायदात एक छोटी सी रियासत हो रही है। पुरुषोत्तम गिरिजी बहुत दिनों से इस बिचार में थे कि कोई योग्य पुरुष मिले तो इसे सौंप जिसमें महात्मा की अर्जित यह जायदाद नष्ट न हो मै पूर्ववत् योग साधन में लगूं। ७ नवम्बर को अपना उत्तराधिकारी स्वमी रामकृष्ण जी को नियत कर आप पूर्ववत् योग साधन और देश २ धर्म प्रचार में प्रवृत्त हुये इसी को हम सच्ची विरक्ति कहेंगे। रामकृष्ण जी बड़े बिद्वान् और सच्चरित्र हैं आशा है पाठशाला तथा कई एक धर्म के कार्य जो पुरुषोत्तम गिरिजी स्थापित कर गये हैं उसकी बिशेष उन्नति करेंगे।

इसे भी पढ़ लीजिये।

ईश्वर को और ग्राहकों को धन्यवाद है जिनकी दया दृष्टि से यह अठ्ठाइसवां बर्ष भी समाप्त हुआ प्रार्थना है हमारे अनुग्राहक ग्राहक अपना २ मूल्य भेजदें जिसमें प्रतिमास तकाज़े का कार्ड हमें न भेजना पड़े और ग्राहक पीछे एक पैसे की बचत हो किमधिकम्।

बालों को स्याह करने का सुगन्धित साबुन

इस साबुन के मलते ही सुफेद बाल मानिन्द असल के स्याह हो जाते हैं। एक टिकिया साबुन की मुद्दतों के लिये काफी है। मूल्य प्रति टिकिया १) रुपैया।

इसने दुनिया के ख़िज़ाबों (कलफों) की कदर घटा दी।

केवल पहले ही ३ टिकिया के १०० ग्राहकों को टाइमपीस गेरेंटी ३ साल मुफ़्त मिलेगीं। मिलने का पताः—

मैनेजर हेअर डाई सोप कम्पनी लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा-

Always get the Emulsion with this mark —the Fishman—the mark of the "Scott" process

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इससे नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट-लण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri